



Trilok khothari

09 Sep 1964

09:00 PM

Bap

Model: Web-BhriguPatrika

Order No: 120849301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 09/09/1964
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 21:00:00 घंटे
इष्ट _____: 36:32:17 घटी
स्थान _____: Bap
राज्य _____: Rajasthan
देश _____: India

अक्षांश _____: 27:22:00 उत्तर
रेखांश _____: 72:23:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:40:28 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 20:19:32 घंटे
वेलान्तर _____: 00:02:39 घंटे
साम्पातिक काल _____: 19:34:22 घंटे
सूर्योदय _____: 06:23:05 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:52:04 घंटे
दिनमान _____: 12:28:59 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 23:36:18 सिंह
लग्न के अंश _____: 08:51:59 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: तुला - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: चित्रा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: मंगल
योग _____: ब्रह्म
करण _____: विष्टि
गण _____: राक्षस
योनि _____: व्याघ्र
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: री-रीतेश
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1886	भाद्रपद	18
पंजाबी	संवत : 2021	भाद्रपद	25
बंगाली	सन् : 1371	भाद्रपद	24
तमिल	संवत : 2021	आवनी	25
केरल	कोल्लम : 1140	चिंगम	25
नेपाली	संवत : 2021	भाद्रपद	25
चैत्रादि	संवत : 2021	भाद्रपद	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2021	भाद्रपद	शुक्ल 3

पंचांग

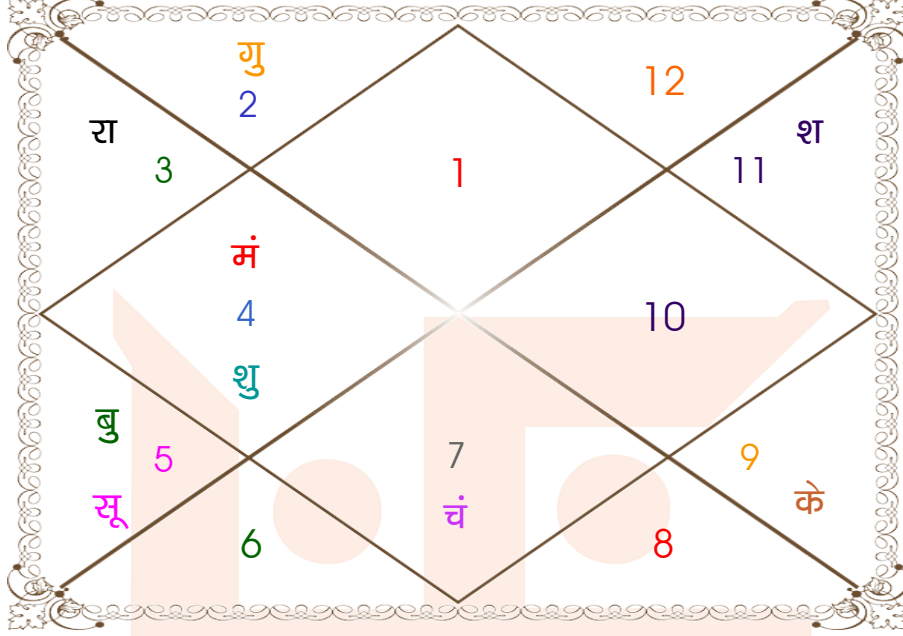
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
 तिथि समाप्ति काल _____ : 07:35:58
 जन्म तिथि _____ : 4
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : चित्रा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 21:52:23 घंटे
 जन्म योग _____ : चित्रा
 सूर्योदय कालीन योग _____ : ब्रह्म
 योग समाप्ति काल _____ : 27:12:25 घंटे
 जन्म योग _____ : ब्रह्म
 सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
 करण समाप्ति काल _____ : 07:35:58 घंटे
 जन्म करण _____ : विष्टि
 भयात _____ : 60:00:13
 भभोग _____ : 62:11:11
 भोग्य दशा काल _____ : मंगल 0 वर्ष 2 मा 27 दि

घात चक्र

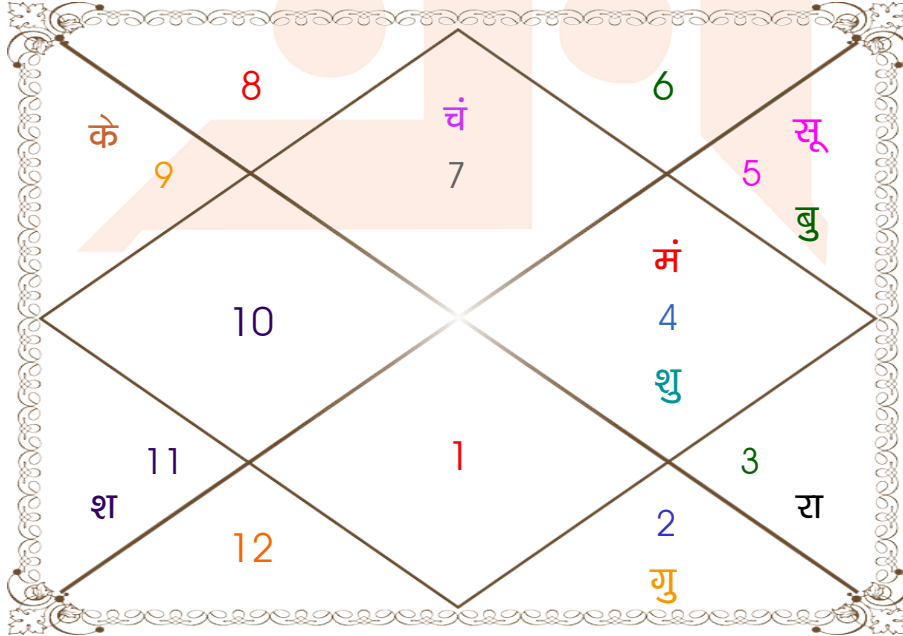
मास _____ : माघ
 तिथि _____ : 4-9-14
 दिन _____ : गुरुवार
 नक्षत्र _____ : शतभिषा
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : तैतिल
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : सिंह
 लग्न _____ : कन्या
 सूर्य _____ : कन्या
 चन्द्र _____ : धनु
 मंगल _____ : तुला
 बुध _____ : कर्क
 गुरु _____ : वृश्चिक
 शुक्र _____ : धनु
 शनि _____ : सिंह
 राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	ल	गु	रा
श			शु मं
			बु सू
के		चं	

लग्न कुंडली

गु	ल	
रा		श
शु मं		
सू बु	चं	के

विंशोत्तरी
मंगल 0वर्ष 2मा 27दि
मंगल

09/09/1964

07/12/2077

मंगल	07/12/1964
राहु	07/12/1982
गुरु	07/12/1998
शनि	07/12/2017
बुध	07/12/2034
केतु	07/12/2041
शुक्र	07/12/2061
सूर्य	08/12/2067
चन्द्र	07/12/2077

योगिनी
मंगला 0वर्ष 0मा 12दि
सिद्धा

22/09/2020

23/09/2027

सिद्धा	01/02/2022
संकटा	23/08/2023
मंगला	02/11/2023
पिंगला	23/03/2024
धान्या	22/10/2024
भामरी	03/08/2025
भद्रिका	24/07/2026
उल्का	23/09/2027

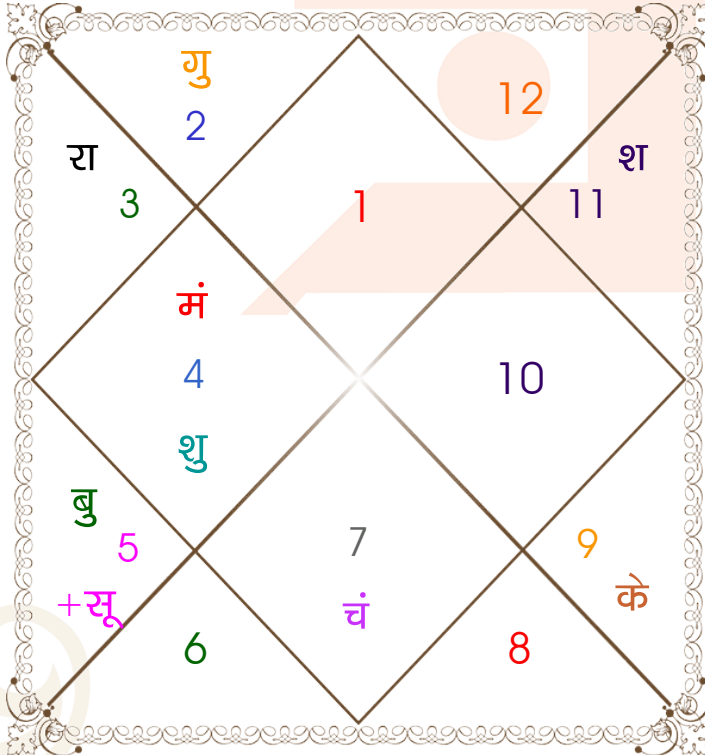
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	08:51:59	466:33:51	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	---
सूर्य			सिंह	23:36:18	00:58:20	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	शनि	स्वराशि
चंद्र			तुला	06:12:18	12:41:43	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	चंद्र	सम राशि
मंगल			कर्क	03:10:21	00:37:32	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	राहु	नीच राशि
बुध	व		सिंह	11:15:44	00:18:39	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	मित्र राशि
गुरु			वृष	02:43:32	00:01:02	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			कर्क	08:07:35	01:02:02	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
शनि	व		कुंभ	07:08:05	00:04:15	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	मूलत्रिकोण
राहु	व		मिथु	05:06:45	00:08:29	मृगशिरा	4	5	बुध	मंगल	सूर्य	उच्च राशि
केतु	व		धनु	05:06:45	00:08:29	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	उच्च राशि
हर्ष			सिंह	17:30:24	00:03:45	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	मंगल	---
नेप			तुला	22:13:12	00:01:22	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	---
प्लूटो			सिंह	20:44:06	00:02:07	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	गुरु	---
दशम भाव			धनु	28:28:18	--	उत्तराषाढ़ा	--	21	गुरु	सूर्य	मंगल	--

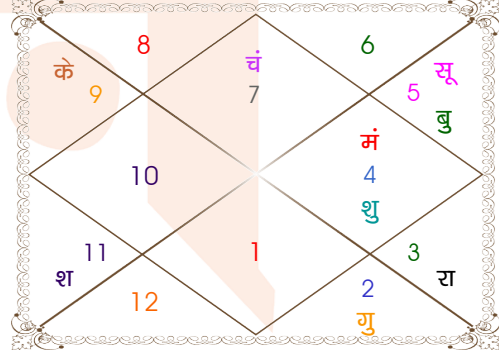
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:21:33

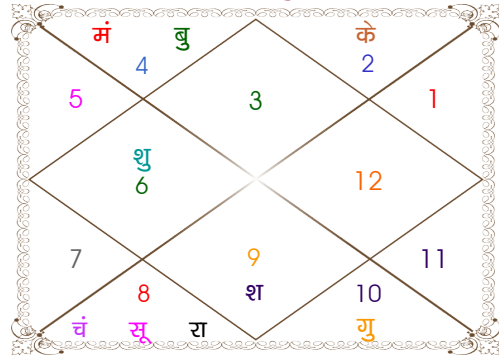
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 22:08:02	मेष 08:51:59
2	मेष 22:08:02	वृष 05:24:05
3	वृष 18:40:08	मिथुन 01:56:11
4	मिथुन 15:12:14	मिथुन 28:28:18
5	कर्क 15:12:14	सिंह 01:56:11
6	सिंह 18:40:08	कन्या 05:24:05
7	कन्या 22:08:02	तुला 08:51:59
8	तुला 22:08:02	वृश्चिक 05:24:05
9	वृश्चिक 18:40:08	धनु 01:56:11
10	धनु 15:12:14	धनु 28:28:18
11	मकर 15:12:14	कुम्भ 01:56:11
12	कुम्भ 18:40:08	मीन 05:24:05

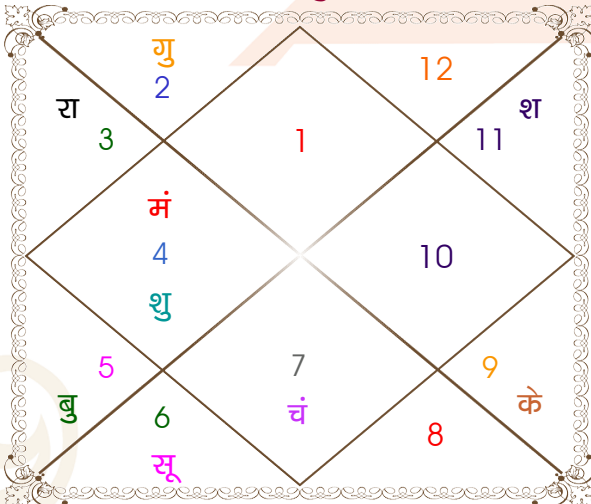
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	08:51:59
2	वृष	09:49:36
3	मिथुन	04:43:23
4	मिथुन	28:28:18
5	कर्क	25:04:44
6	सिंह	28:26:04
7	तुला	08:51:59
8	वृश्चिक	09:49:36
9	धनु	04:43:23
10	धनु	28:28:18
11	मकर	25:04:44
12	कुम्भ	28:26:04

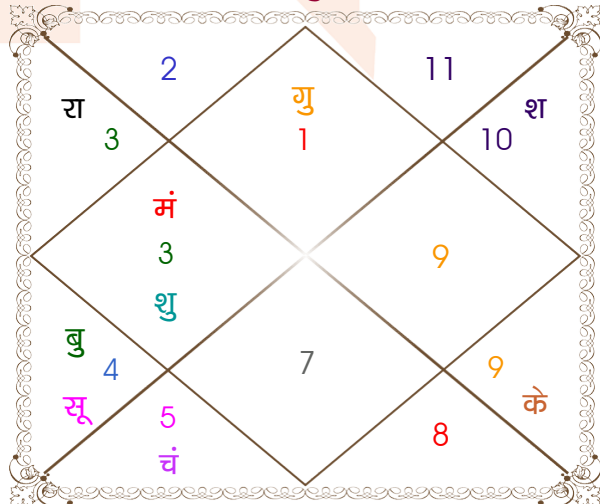
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



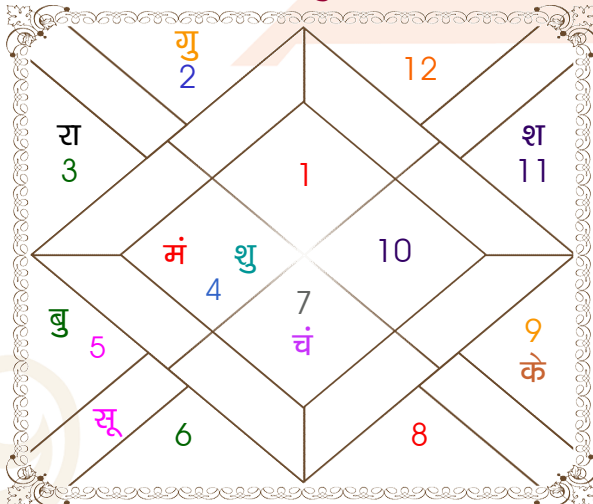
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	वृद्ध स्वस्थ सभा 3.87 58 %
चंद्र	पुत्र	मातृ	कुमार शान्त कौतुक 1.61 44 %
मंगल	ज्ञाति	भातृ	मृत भीत निद्रा 0.92 56 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	कुमार मुदित सभा 4.06 62 %
गुरु	कलत्र	धन	मृत खल आगमन 4.58 30 %
शुक्र	भातृ	कलत्र	वृद्ध खल नेत्रपाणि 3.51 49 %
शनि	मातृ	आयु	कुमार स्वस्थ नेत्रपाणि 4.05 57 %
राहु	---	ज्ञान	बाल दीप्त कौतुक 0.00 76 %
केतु	---	मोक्ष	बाल दीप्त भोजन 0.00 76 %
कुल			22.59

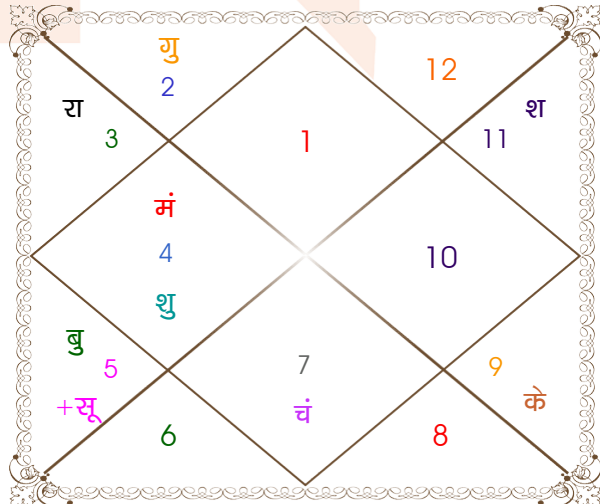
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण
धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी
मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त

चलित कुंडली



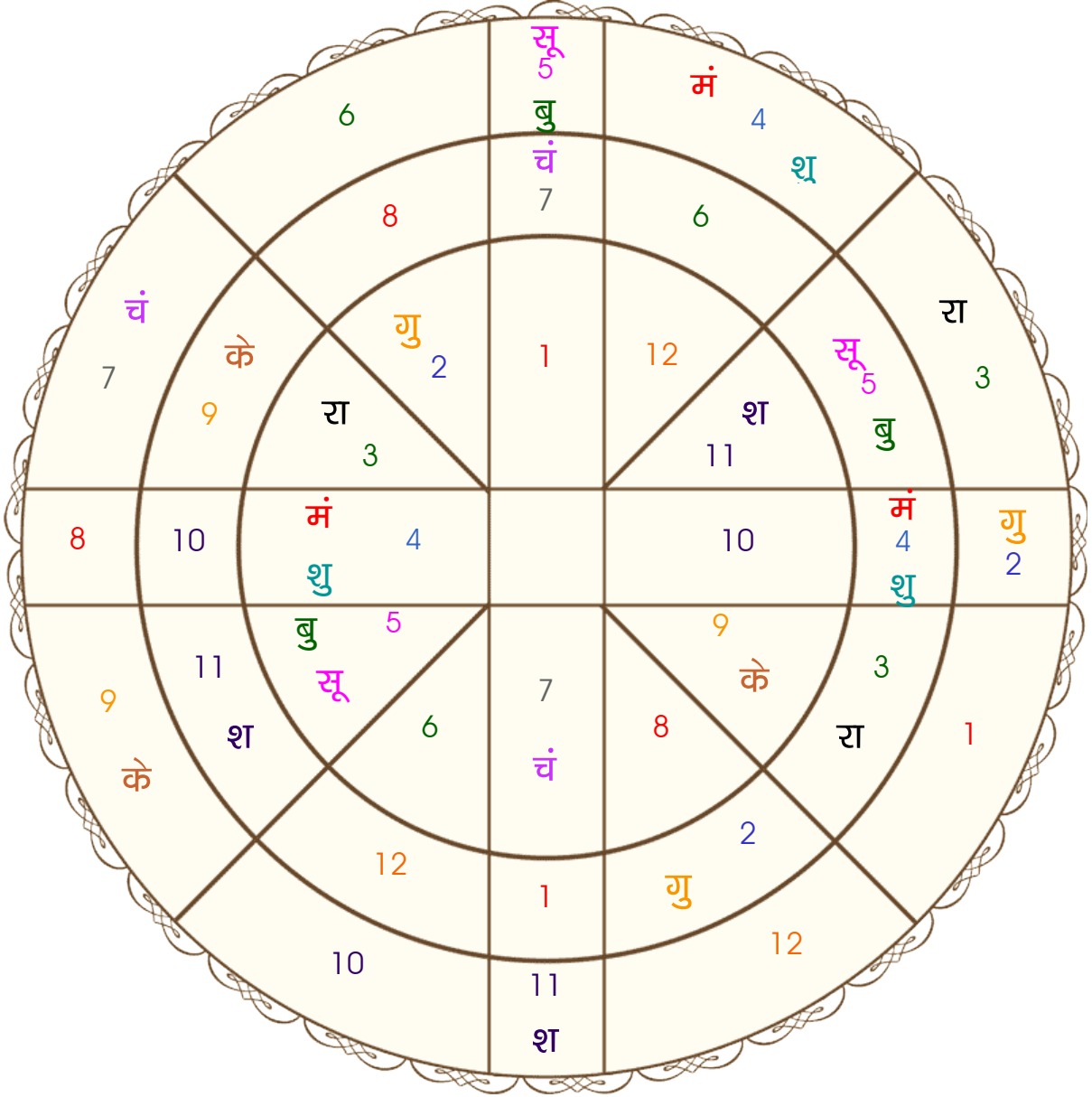
लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सुदर्शन चक्र



नोट: सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत्त से अन्तः वृत्त तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

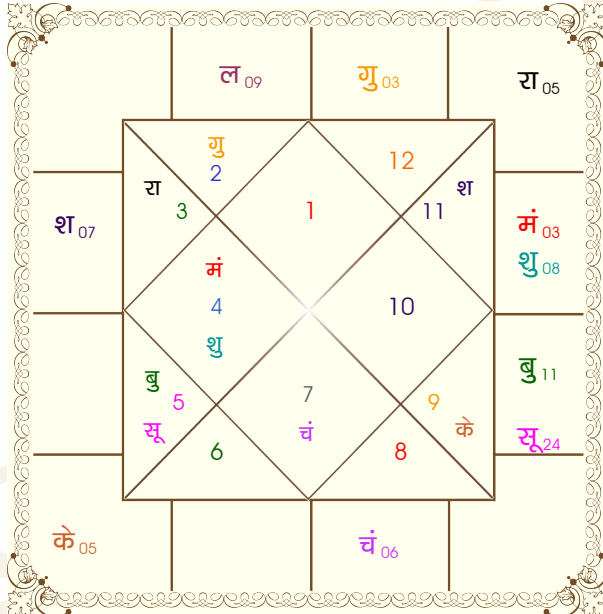
भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 2 मास 9 दिन

ग्रह								निरयण भाव						
ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.	भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		सिंह	23:42:06	सूर्य	शुक्र	शनि	राहु	1	मेष	08:57:47	मंगल	केतु	गुरु	मंगल
चंद्र		तुला	06:18:06	शुक्र	मंगल	चंद्र	बुध	2	वृष	09:55:25	शुक्र	सूर्य	शुक्र	केतु
मंगल		कर्क	03:16:09	चंद्र	गुरु	राहु	मंगल	3	मिथु	04:49:12	बुध	मंगल	शुक्र	केतु
बुध	व	सिंह	11:21:32	सूर्य	केतु	शनि	गुरु	4	मिथु	28:34:06	बुध	गुरु	शुक्र	बुध
गुरु		वृष	02:49:21	शुक्र	सूर्य	गुरु	राहु	5	कर्क	25:10:32	चंद्र	बुध	राहु	बुध
शुक्र		कर्क	08:13:24	चंद्र	शनि	शुक्र	शुक्र	6	सिंह	28:31:53	सूर्य	सूर्य	मंगल	राहु
शनि	व	कुंभ	07:13:53	शनि	राहु	राहु	गुरु	7	तुला	08:57:47	शुक्र	राहु	गुरु	शनि
राहु	व	मिथु	05:12:33	बुध	मंगल	सूर्य	शनि	8	वृश्चि	09:55:25	मंगल	शनि	शुक्र	बुध
केतु	व	धनु	05:12:33	गुरु	केतु	मंगल	बुध	9	धनु	04:49:12	गुरु	केतु	मंगल	मंगल
हर्ष		सिंह	17:36:12	सूर्य	शुक्र	मंगल	शनि	10	धनु	28:34:06	गुरु	सूर्य	मंगल	राहु
नेप		तुला	22:19:00	शुक्र	गुरु	शनि	बुध	11	मक	25:10:32	शनि	मंगल	राहु	बुध
प्लूटो		सिंह	20:49:54	सूर्य	शुक्र	गुरु	बुध	12	कुंभ	28:31:53	शनि	गुरु	शुक्र	बुध

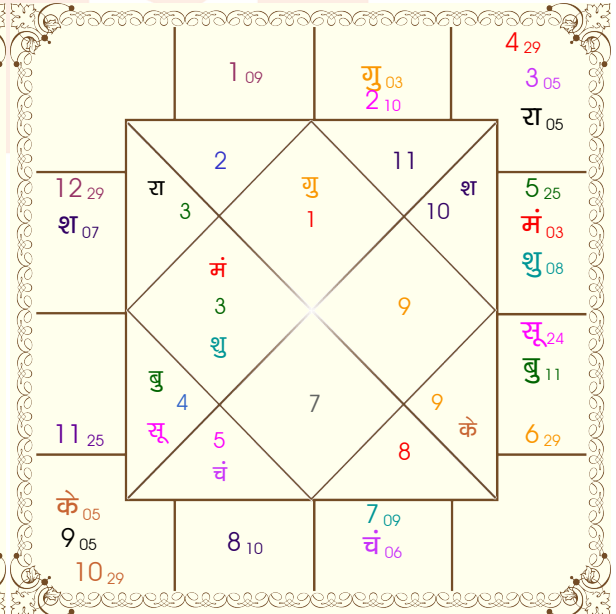
के.पी. अयनांश : 23:15:45

फॉरच्युना : वृष 21:33:47

लग्न कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020

Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	चंद्र- मंगल+ गुरु, राहु-
2	सूर्य- शुक्र-
3	बुध- शनि, राहु,
4	सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध- शुक्र, राहु,
5	सूर्य, चंद्र- बुध, गुरु,
6	सूर्य- चंद्र, गुरु-
7	सूर्य- शुक्र-
8	चंद्र- मंगल- राहु-
9	मंगल- बुध, गुरु- केतु+
10	मंगल- गुरु-
11	शुक्र+ शनि,
12	शुक्र- शनि-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	2- 4, 5, 6- 7-
चंद्र	1- 4, 5- 6, 8-
मंगल	1+ 4, 8- 9- 10-
बुध	3- 4- 5, 9,
गुरु	1, 5, 6- 9- 10-
शुक्र	2- 4, 7- 11+ 12-
शनि	3, 11, 12-
राहु	1- 3, 4, 8-
केतु	9+

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी
 लग्न राशि स्वामी
 राशि नक्षत्र स्वामी
 राशि स्वामी
 वार स्वामी
 लग्न अन्तर स्वामी
 राशि अन्तर स्वामी

केतु
 मंगल
 मंगल
 शुक्र
 बुध
 गुरु
 चन्द्र



FUTUREPOINT
 Astro Solutions



कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	मं	गु	चं रा	मं
2	--	--	सू	शु
3	श	रा	--	बु
4	सू चं रा	मं शु	--	बु
5	गु	सू बु	--	चं
6	--	चं	गु	सू
7	--	--	सू	शु
8	--	--	चं रा	मं
9	बु के	के	मं	गु
10	--	--	मं	गु
11	शु	श	शु	श
12	--	--	शु	श

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	6	2,6,10	सिंह	5
चंद्र	5	---	तुला	6
मंगल	1,8	3,11	कर्क	4
बुध	3,4	5	सिंह	5
गुरु	9,10	4,12	वृष	1
शुक्र	2,7	---	कर्क	4
शनि	11,12	8	कुम्भ	11
राहु	---	7	मिथुन	3
केतु	---	1,9	धनु	9

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	2,7	---	4	11,12	8	11
चंद्र	1,8	3,11	4	5	---	6
मंगल	9,10	4,12	1	---	7	3
बुध	---	1,9	9	11,12	8	11
गुरु	6	2,6,10	5	9,10	4,12	1
शुक्र	11,12	8	11	2,7	---	4
शनि	---	7	3	---	7	3
राहु	1,8	3,11	4	6	2,6,10	5
केतु	---	1,9	9	1,8	3,11	4



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह दृष्टि विचार

दृश्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	143.60	186.21	93.17	131.26	32.73	98.13	307.13	65.11	245.11	137.51	202.22	140.74
सूर्य	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	युति	तृती	युति
143.60	0.00	0.00	0.00	2.75	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.03	2.80	9.55
चंद्र	--	--	--	--	--	--	पंच	--	तृती	--	--	--
186.21	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.91	0.00	2.88	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	4था	--	--	--	युति	8वां	--	--	अष्ट	--	--
93.17	0.00	9.50	0.00	0.00	0.00	8.68	9.15	0.00	0.00	0.50	0.00	0.00
बुध	युति	तृती	--	--	--	--	सप्त	--	--	युति	--	युति
131.26	2.75	0.73	0.00	0.00	0.00	0.00	9.08	0.00	0.00	7.94	0.00	5.47
गुरु	5वां	--	तृती	--	--	तृती	--	--	--	--	सप्त	5वां
32.73	5.78	0.00	2.98	0.00	0.00	0.47	0.00	0.00	0.00	0.00	4.53	3.10
शुक्र	अष्ट	चतु	युति	--	--	--	--	--	--	नवां	--	--
98.13	0.73	2.63	8.68	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.56	0.00	0.00
शनि	--	--	--	सप्त	चतु	षष्ठ	--	पंच	--	सप्त	10वा	सप्त
307.13	0.00	0.00	0.00	9.08	1.21	0.01	0.00	2.59	0.00	4.66	0.09	1.46
राहु	--	पंच	--	--	--	--	--	--	सप्त	पंचा	--	--
65.11	0.00	2.88	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	10.00	0.81	0.00	0.00
केतु	--	--	--	--	--	--	तृती	सप्त	--	--	--	--
245.11	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.59	10.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	युति	--	--	युति	--	--	सप्त	--	--	--	तृती	युति
137.51	8.03	0.00	0.00	7.94	0.00	0.00	4.66	0.00	0.00	0.00	0.99	9.43
नेप	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--
202.22	0.00	0.00	0.00	0.00	4.53	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	युति	अष्ट	--	युति	--	--	सप्त	--	--	युति	तृती	--
140.74	9.55	0.74	0.00	5.47	0.00	0.00	1.46	0.00	0.00	9.43	2.78	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्ट्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	8.87	35.40	61.94	88.47	121.94	155.40	188.87	215.40	241.94	268.47	301.94	335.40
सूर्य	--	--	--	--	--	युति	अष्ट	पंचा	--	पंच	--	सप्त
143.60	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.29	0.92	0.95	0.00	0.88	0.00	3.29
चंद्र	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	पंच	षष्ठ
186.21	9.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.61	0.00	1.31	0.00	1.31	0.30
मंगल	--	--	--	युति	--	तृती	4था	पंच	--	सप्त	8वां	--
93.17	0.00	0.00	0.00	8.81	0.00	2.50	8.27	2.50	0.00	8.81	9.92	0.00
बुध	--	--	--	--	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--
131.26	0.00	0.00	0.00	0.00	5.60	0.00	2.43	0.11	0.00	0.00	5.60	0.00
गुरु	--	युति	--	तृती	--	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--
32.73	0.00	9.61	0.00	1.32	0.00	9.61	0.00	9.61	0.00	9.02	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
98.13	0.00	0.00	0.00	5.31	0.00	0.00	2.94	2.27	0.00	5.31	0.00	0.00
शनि	3रा	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--
307.13	9.84	2.70	0.63	0.00	8.55	0.00	0.00	9.84	0.00	0.00	8.55	0.00
राहु	--	--	युति	--	तृती	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--
65.11	0.00	0.00	9.45	0.00	2.02	2.99	1.66	0.00	9.45	0.00	0.00	0.00
केतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	तृती	चतु
245.11	1.66	0.90	9.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.02	2.99
हर्ष	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
137.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
नेप	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	नवां	--	--	--
202.22	1.72	1.89	0.00	0.00	0.00	0.00	1.72	1.89	0.90	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	--
140.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.35	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्ट्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	8.87	39.83	64.72	88.47	115.08	148.43	188.87	219.83	244.72	268.47	295.08	328.43
सूर्य	--	--	--	--	--	युति	अष्ट	--	--	पंच	--	सप्त
143.60	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.75	0.92	0.00	0.00	0.88	0.00	8.75
चंद्र	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	तृती	--	--	--
186.21	9.61	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.61	0.00	2.78	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	--	--	युति	--	तृती	4था	--	--	सप्त	8वां	--
93.17	0.00	0.00	0.00	8.81	0.00	0.97	8.27	0.00	0.00	8.81	6.62	0.00
बुध	--	--	--	--	--	--	तृती	चतु	--	--	--	--
131.26	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.43	2.79	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	युति	--	तृती	--	5वां	--	सप्त	--	9वां	--	--
32.73	0.00	7.36	0.00	1.32	0.00	9.01	0.00	7.36	0.00	9.02	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	युति	--	--	चतु	पंच	--	सप्त	--	--
98.13	0.00	0.00	0.00	5.31	0.00	0.00	2.94	2.71	0.00	5.31	0.00	0.00
शनि	3रा	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	10वा	--	--	युति	--
307.13	9.84	2.29	2.42	0.00	3.03	0.00	0.00	9.61	0.00	0.00	3.03	0.00
राहु	--	--	युति	--	--	--	पंच	--	सप्त	--	--	--
65.11	0.00	0.00	9.99	0.00	0.00	0.00	1.66	0.00	9.99	0.00	0.00	0.00
केतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	--	--
245.11	1.66	0.00	9.99	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	सप्त
137.51	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.14	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.14
नेप	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
202.22	1.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	1.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
प्लूटो	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--	--
140.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.92	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

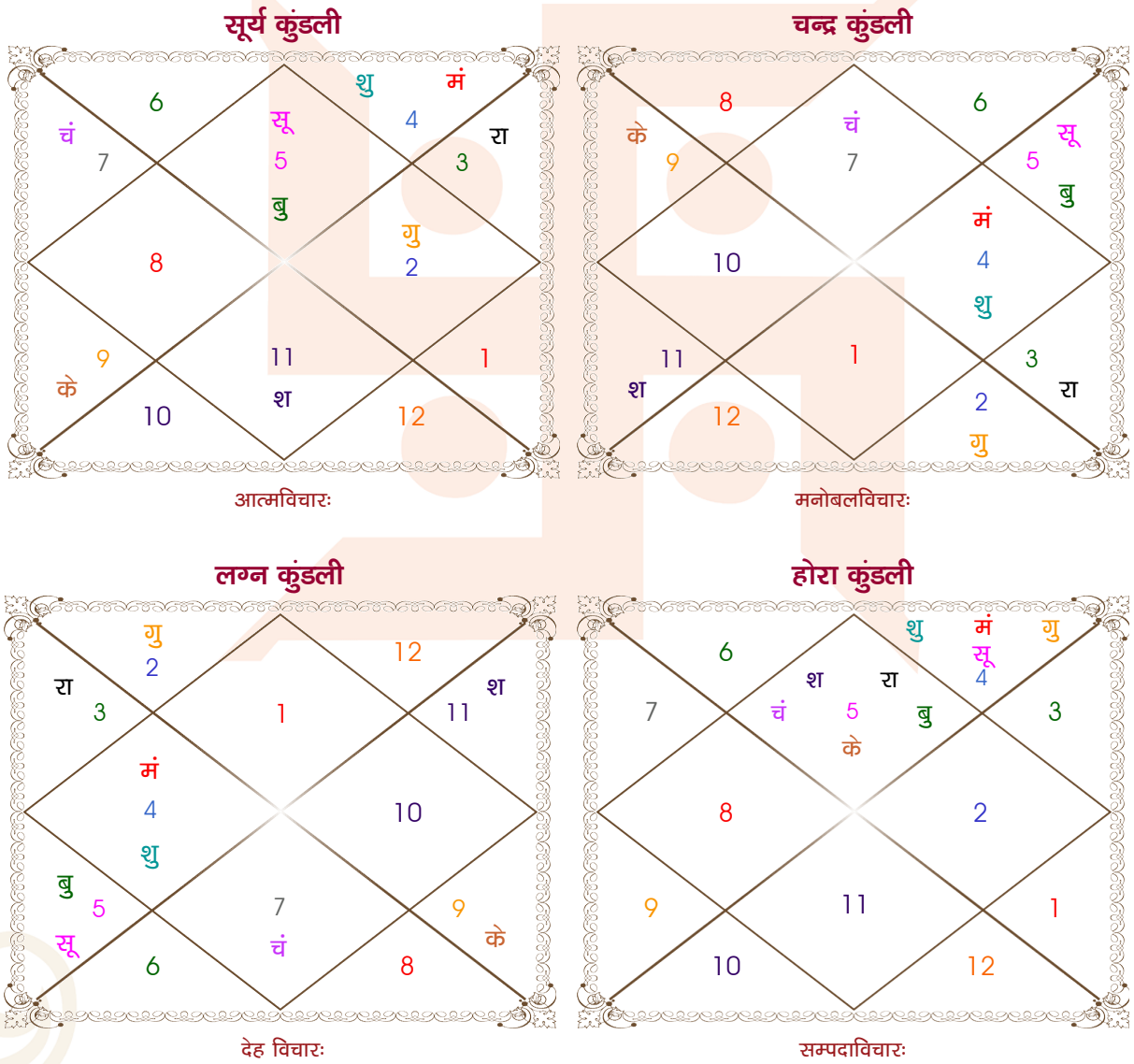
संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

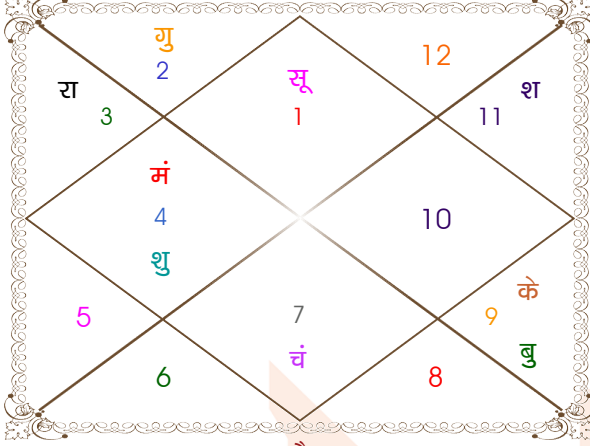
षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिए, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।



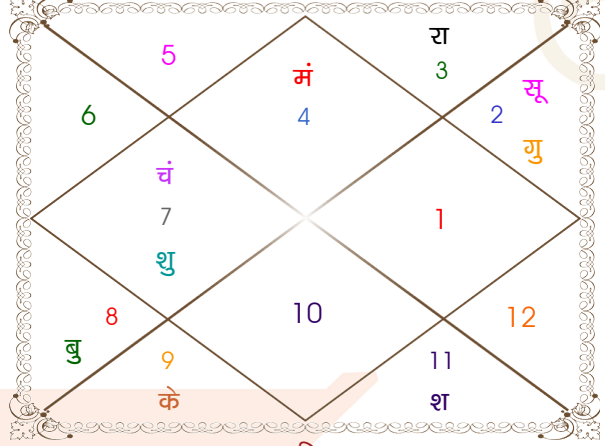
षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली



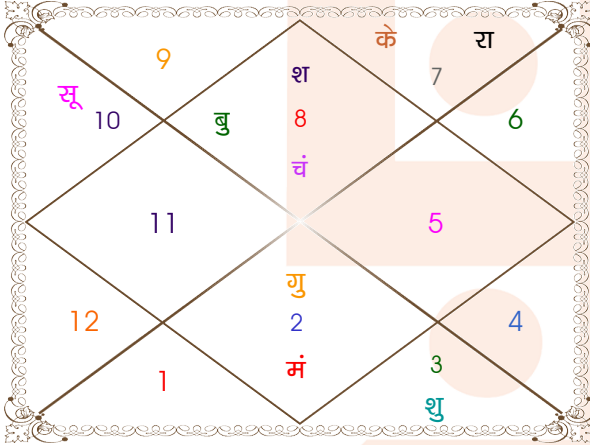
भातृसौख्यम्

चतुर्थाश कुंडली



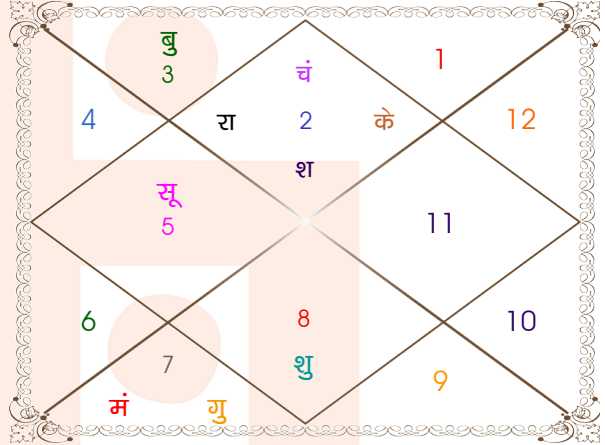
भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली



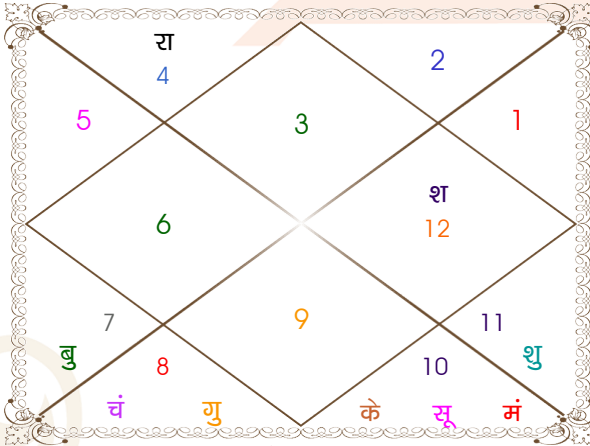
ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली



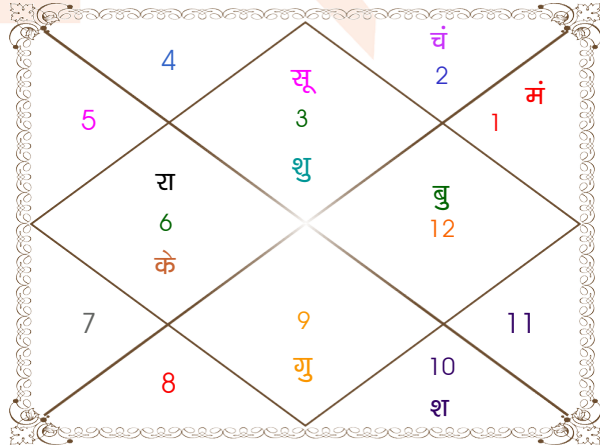
रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली



पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली



आयुविचारः

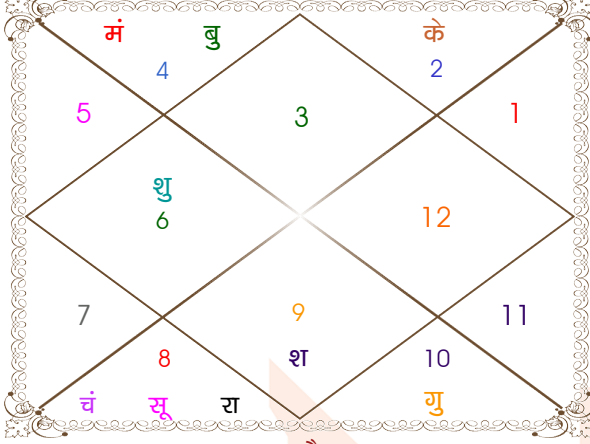


FUTUREPOINT
Astro Solutions



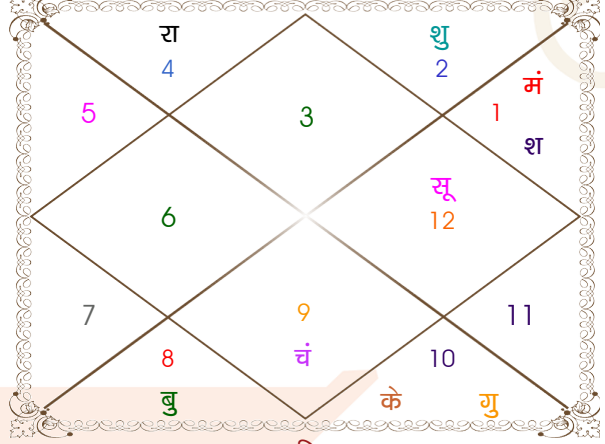
षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली



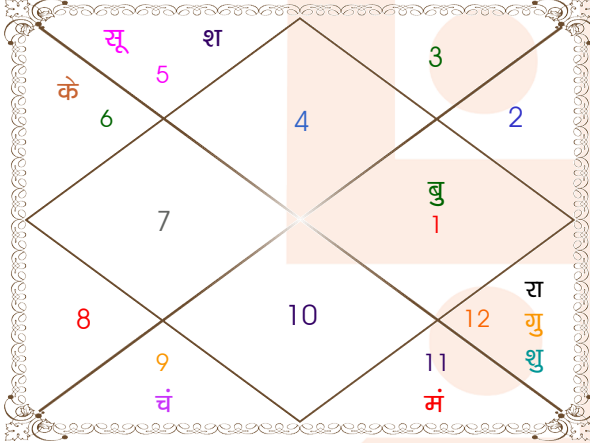
कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली



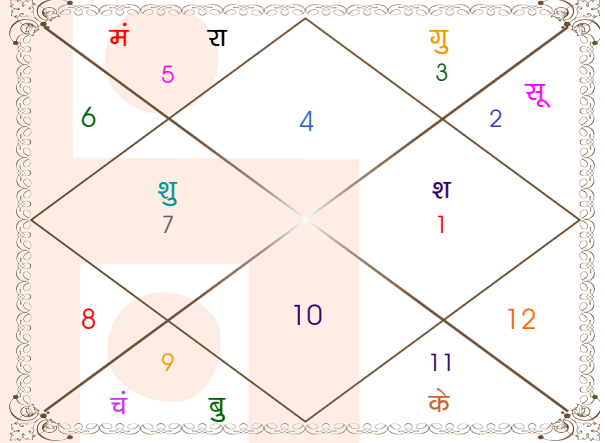
राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली



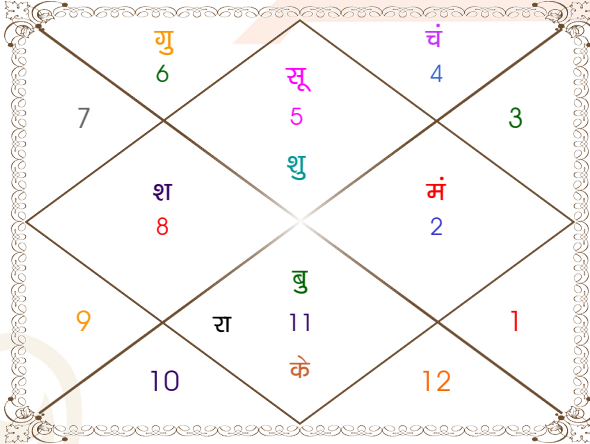
लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली



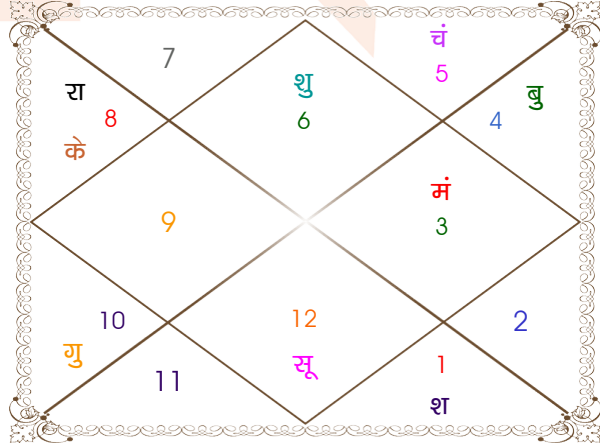
पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली



वाहनसुखविचारः

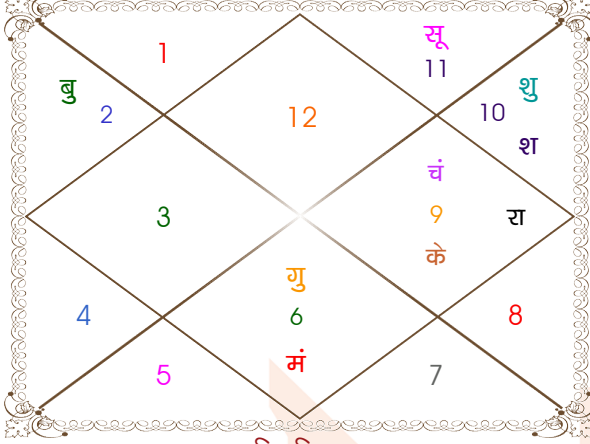
विंशांश कुंडली



उपासनाज्ञानम्

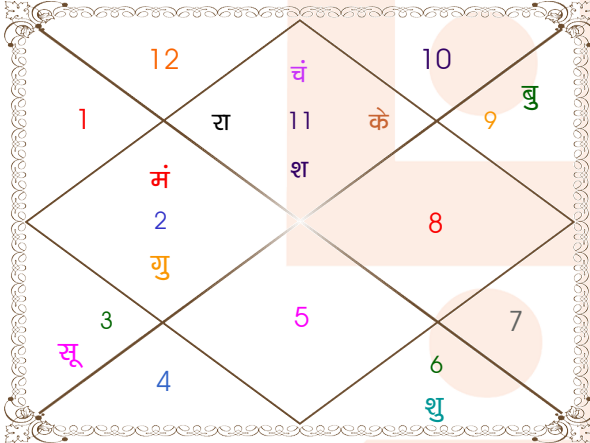
षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशश कुंडली



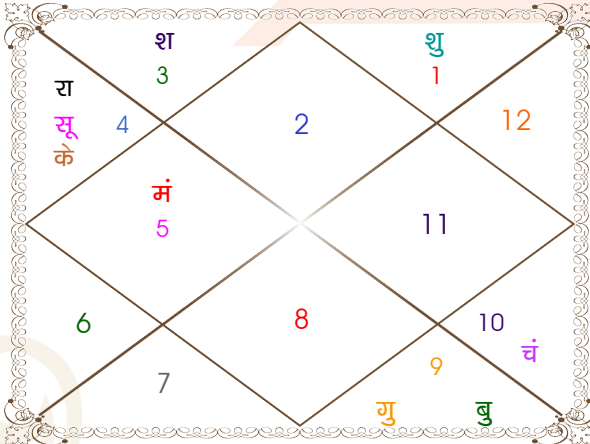
विद्याविचारः

त्रिंशश कुंडली



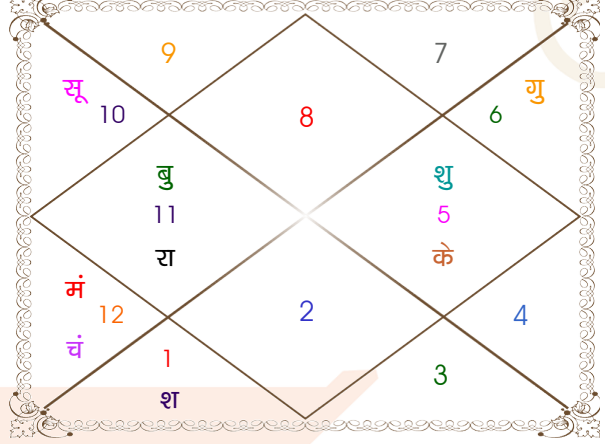
अरिष्टज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली



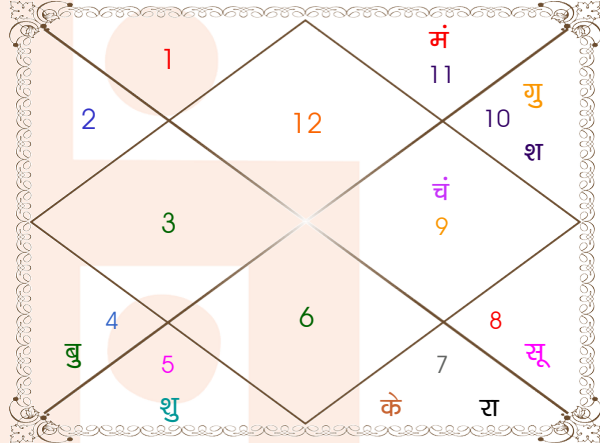
सर्वास्थितिविचारः

सप्तविंशश कुंडली



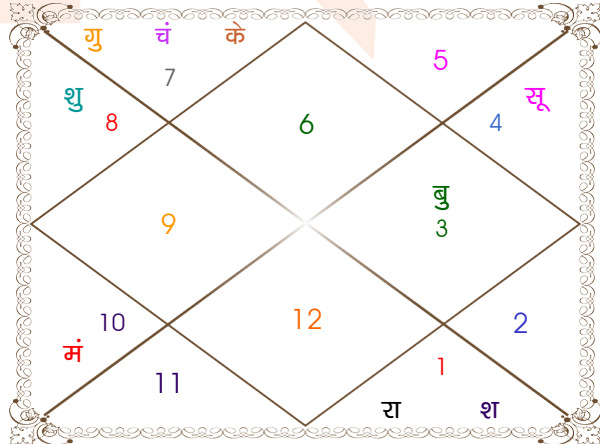
बलाबलज्ञानम्

खवेदांश कुंडली



शुभाशुभज्ञानम्

षष्ट्यंश कुंडली



सर्वास्थितिविचारः



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मेष	सिंह	तुला	कर्क	सिंह	वृष	कर्क	कुंभ	मिथु	धनु
होरा	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मेष	मेष	तुला	कर्क	धनु	वृष	कर्क	कुंभ	मिथु	धनु
चतुर्थांश	कर्क	वृष	तुला	कर्क	वृश्चि	वृष	तुला	कुंभ	मिथु	धनु
सप्तमांश	मिथु	मक	वृश्चि	मक	तुला	वृश्चि	कुंभ	मीन	कर्क	मक
नवमांश	मिथु	वृश्चि	वृश्चि	कर्क	कर्क	मक	कन्या	धनु	वृश्चि	वृष
दशमांश	मिथु	मीन	धनु	मेष	वृश्चि	मक	वृष	मेष	कर्क	मक
द्वादशांश	कर्क	वृष	धनु	सिंह	धनु	मिथु	तुला	मेष	सिंह	कुंभ
षोडशांश	सिंह	सिंह	कर्क	वृष	कुंभ	कन्या	सिंह	वृश्चि	कुंभ	कुंभ
विंशांश	कन्या	मीन	सिंह	मिथु	कर्क	मक	कन्या	मेष	वृश्चि	वृश्चि
चतुर्विंशांश	मीन	कुंभ	धनु	कन्या	वृष	कन्या	मक	मक	धनु	धनु
सप्तविंशांश	वृश्चि	मक	मीन	मीन	कुंभ	कन्या	सिंह	मेष	कुंभ	सिंह
त्रिंशांश	कुंभ	मिथु	कुंभ	वृष	धनु	वृष	कन्या	कुंभ	कुंभ	कुंभ
खवेदांश	मीन	वृश्चि	धनु	कुंभ	कर्क	मक	सिंह	मक	तुला	तुला
अक्षवेदांश	वृष	कर्क	मक	सिंह	धनु	धनु	मेष	मिथु	कर्क	कर्क
षष्ठ्यंश	कन्या	कर्क	तुला	मक	मिथु	तुला	वृश्चि	मेष	मेष	तुला

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	2 किंसुक	2 किंसुक	3 उत्तम	3 कुसुम
चन्द्र	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
मंगल	0 ---	1 ---	3 उत्तम	3 कुसुम
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	1 ---
गुरु	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
शुक्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	3 कुसुम
शनि	3 व्यंजन	3 व्यंजन	3 उत्तम	6 केरल
राहु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	3 कुसुम
केतु	2 किंसुक	2 किंसुक	2 पारिजात	4 नागपुष्प

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	17.25	14.10	17.45	11.75	11.25	13.40	15.75	12.50	8.00
सप्तवर्ग	15.53	14.10	16.08	12.50	12.13	13.20	15.25	11.38	8.30
दशवर्ग	16.05	13.80	12.93	14.38	11.35	11.95	11.00	10.38	8.95
षोडशवर्ग	16.63	14.13	13.25	13.03	11.58	11.88	12.13	11.20	8.80



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	शत्रु
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	सम	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	सम	अतिमित्र	सम	---	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	सम	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	मित्र	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	15	9	8	49	39	26	24
सप्तवर्गज बल	126	90	120	90	75	105	139
ओजयुग्मक बल	15	15	0	15	0	30	30
केन्द्र बल	30	60	60	30	30	60	30
द्रेष्काण बल	0	0	15	15	15	0	0
कुल स्थान बल	186	174	203	199	159	221	223
कुल दिग्बल	18	27	2	19	52	57	21
नतोन्नत बल	18	42	42	60	18	18	42
पक्ष बल	46	92	46	46	14	14	46
त्रिभाग बल	0	60	0	0	60	0	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	30	0	0	0	0	0
वार बल	0	0	0	45	0	0	0
होरा बल	0	0	0	60	0	0	0
अयन बल	74	45	57	43	55	56	45
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	152	268	144	254	147	88	132
कुल चेष्टाबल	0	0	24	38	40	35	55
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-5	-14	-1	-5	-44	1	-27
कुल षट्बल	412	507	390	530	389	444	412
रूप षट्बल	6.9	8.4	6.5	8.8	6.5	7.4	6.9
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.4	1.4	1.3	1.3	1.0	1.3	1.4
संबंधित पद	3	1	5	6	7	4	2

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	23.05	11.26	14.21	43.00	39.49	30.12	36.44
कष्ट फल	33.80	48.36	42.91	15.75	20.51	29.31	13.80

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	390	444	530	530	412	530	444	390	389	389	412	389
भावदिग्बल	30	20	40	30	10	10	0	50	20	60	40	20
भावदृष्टि बल	-8	-21	-14	6	31	45	14	88	56	27	75	35
कुल भाव बल	412	443	556	566	453	585	458	528	465	476	528	444
रूप भाव बल	6.9	7.4	9.3	9.4	7.6	9.8	7.6	8.8	7.7	7.9	8.8	7.4
संबंधित पद	12	11	3	2	9	1	8	4	7	6	5	10

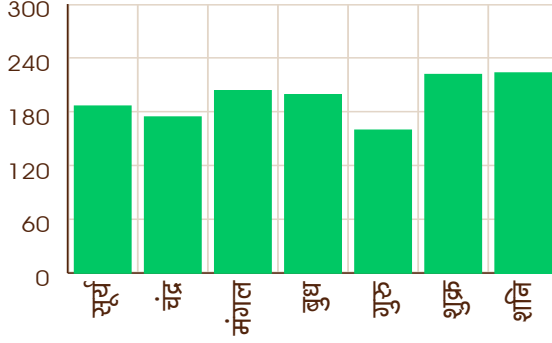


FUTUREPOINT
Astro Solutions

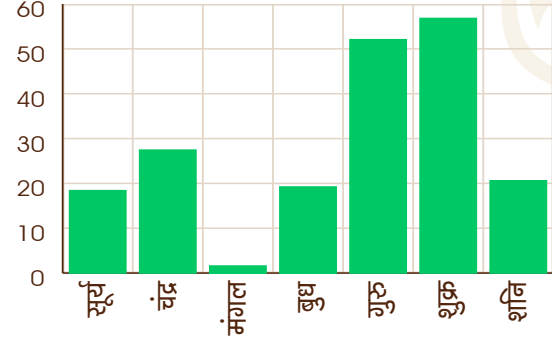


षट्बल ग्राफ

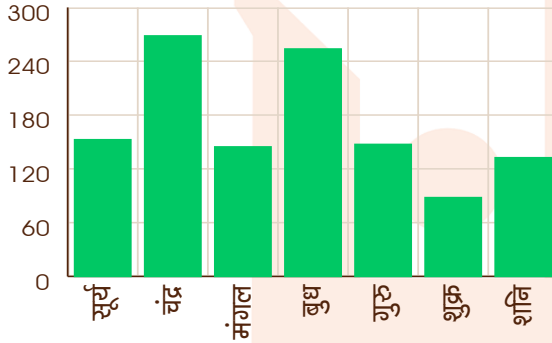
स्थान बल



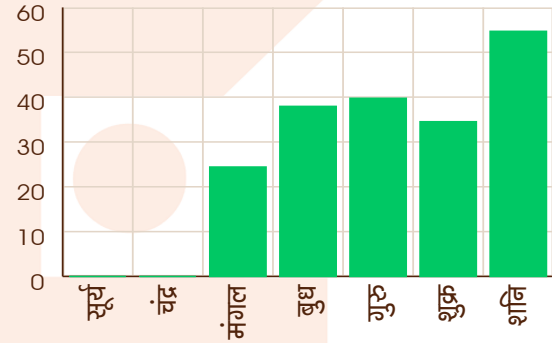
दिग्बल



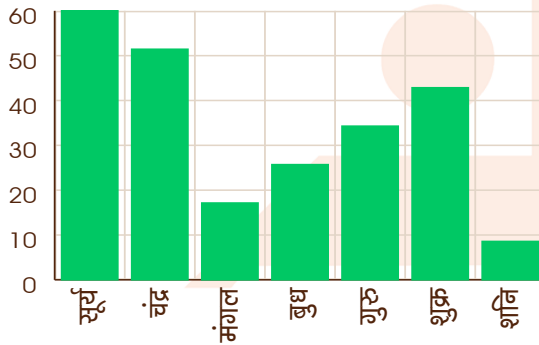
कालबल



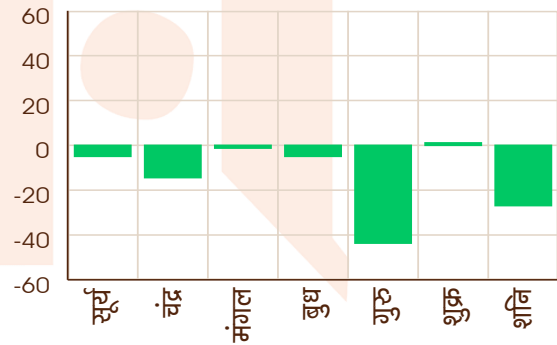
चेष्टाबल



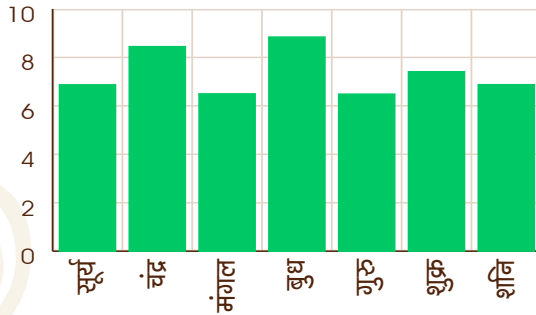
नैसर्गिक बल



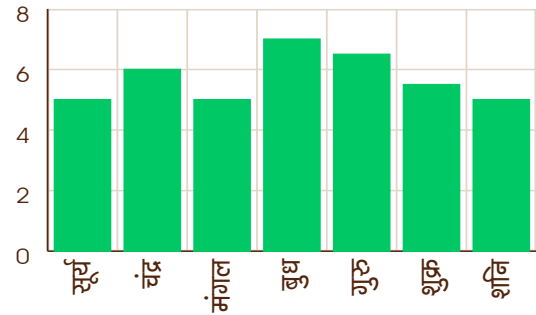
दृग्बल



रूप षट्बल



न्यूनतम षट्बल

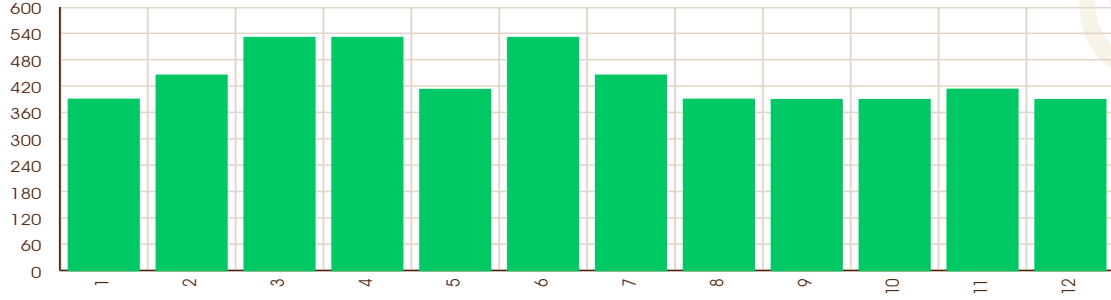


FUTUREPOINT
Astro Solutions

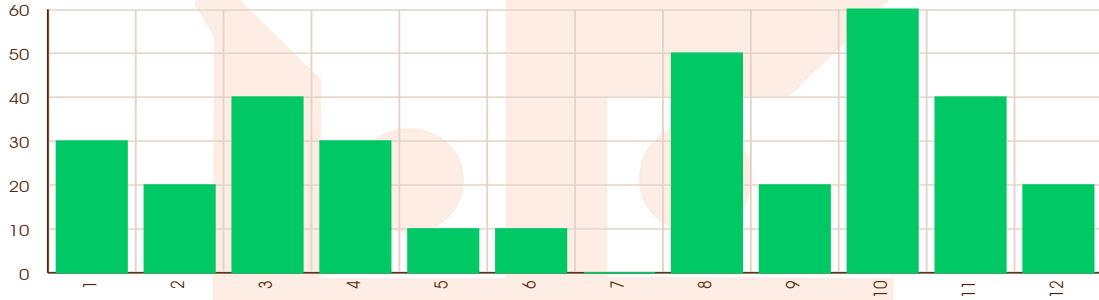


भाव बल ग्राफ

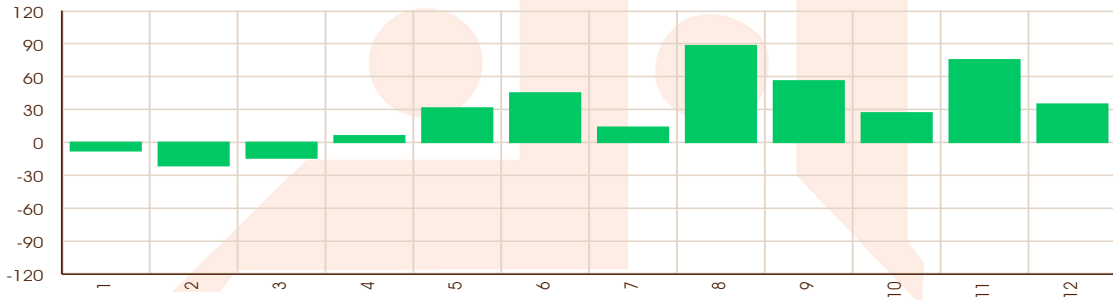
भावाधिपति बल



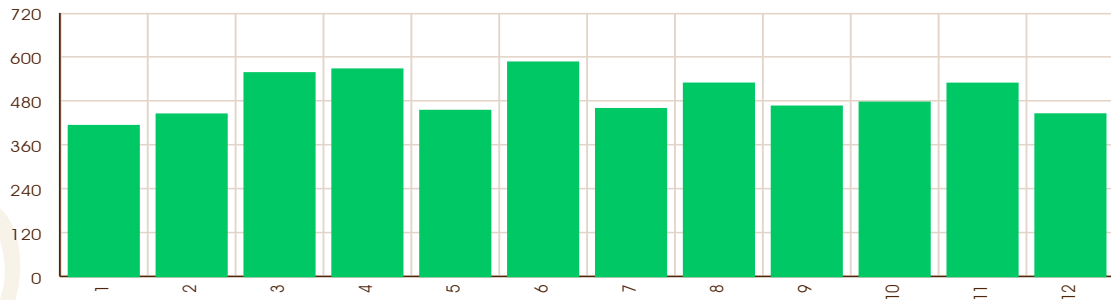
भावदिग्बल



भावदृष्टि बल



भाव बल

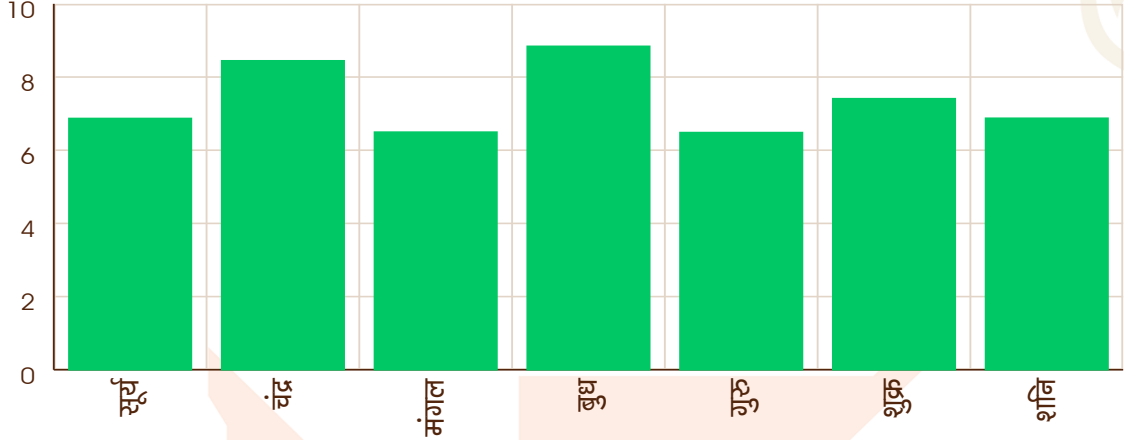


FUTUREPOINT
Astro Solutions

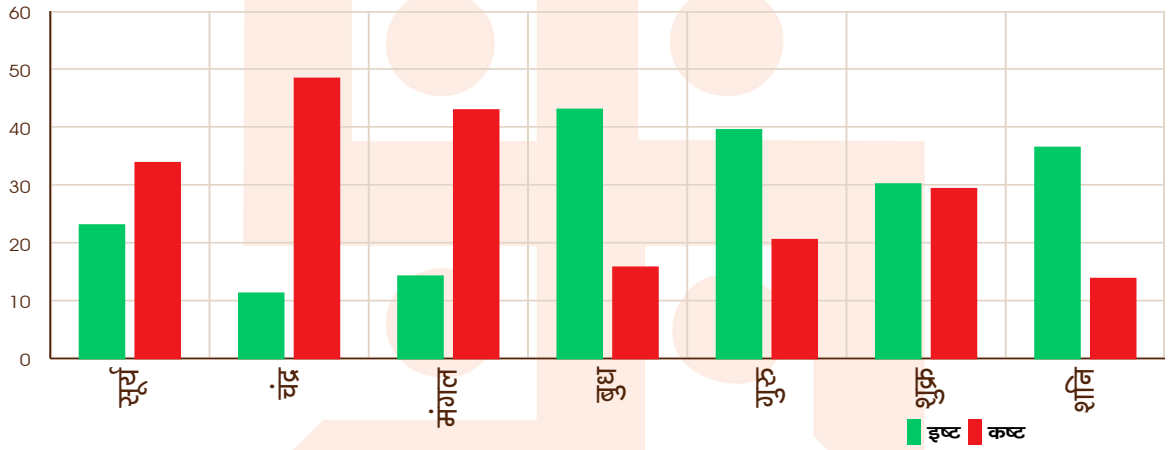


षट्बल तथा भावबल ग्राफ

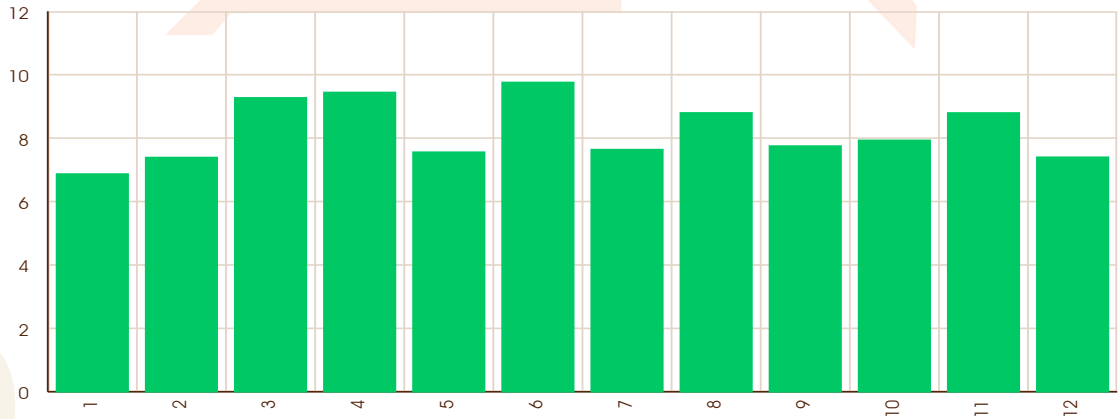
रूप षट्बल



इष्ट - कष्ट फल



रूप भाव बल



FUTUREPOINT
Astro Solutions

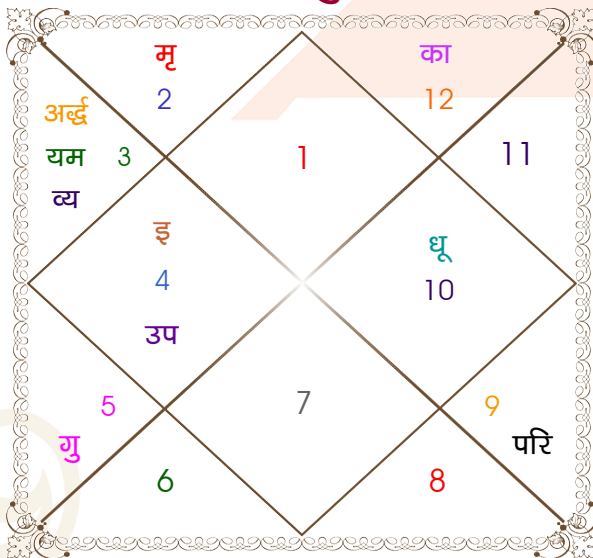


उपग्रह एवं आरुढ़

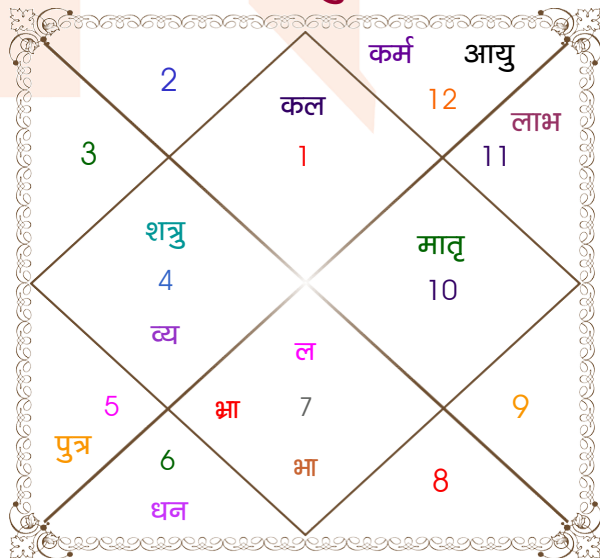
उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मेष	08:51:59	--	--	अश्विनी	3	1
गुलिक	गु	सिंह	04:16:18	--	--	मघा	2	10
काल	का	मीन	24:58:42	--	--	रेवती	3	27
मृत्यु	मृ	वृष	16:48:06	--	--	रोहिणी	3	4
यमघंटक	यम	मिथु	27:01:14	--	--	पुनर्वसु	3	7
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	मिथु	07:52:41	--	मूल	आर्द्रा	1	6
धूम	धू	मक	06:56:18	--	मूल	उत्तराषाढ़ा	4	21
व्यतिपात	व्य	मिथु	23:03:42	--	मूल	पुनर्वसु	1	7
परिवेश	परि	धनु	23:03:42	नीच	मूल	पूर्वाषाढ़ा	3	20
इन्द्रचाप	इ	कर्क	06:56:18	--	मूल	पुष्य	2	8
उपकेतु	उप	कर्क	23:36:18	--	मूल	आश्लेषा	3	9

प्राणपद	:	मिथु	28:10:28	कारकांश लग्न	:	वृश्चि	02:26:42
भाव लग्न	:	मेष	02:50:00	होरा लग्न	:	वृश्चि	12:03:43
घटी लग्न	:	कन्या	09:44:50	वर्णद लग्न	:	सिंह	09:04:18

उपग्रह कुंडली



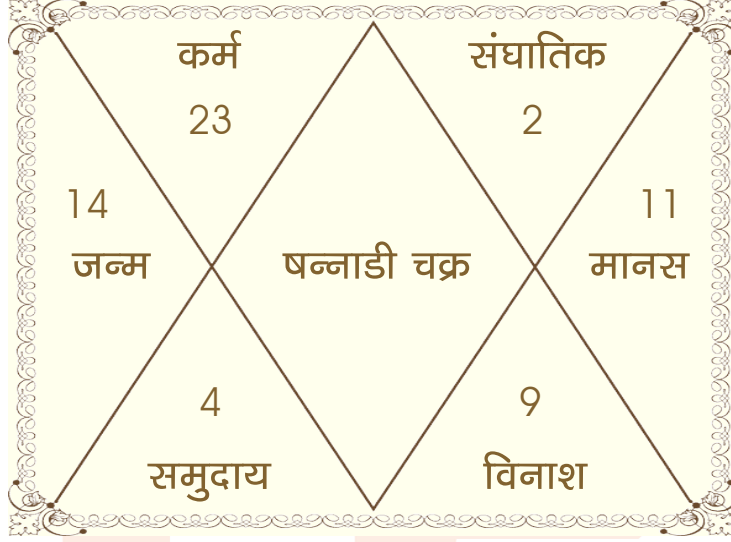
आरुढ़ कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षण्णाडी चक्र



त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु
प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
लग्न	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
कुल	4	4	4	2	4	5	4	6	3	4	4	4	48

चंद्र का अष्टकवर्ग

	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	कुल
शनि	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	4
गुरु	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
मंगल	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	1	6
सूर्य	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	6
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	4
कुल	4	4	5	3	4	5	4	5	6	2	4	3	49

मंगल का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	7
गुरु	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	5
शुक्र	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	4
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	4
चंद्र	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	5
कुल	1	3	2	5	1	5	4	5	2	3	4	4	39

बुध का अष्टकवर्ग

	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	कुल
शनि	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	8
गुरु	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
कुल	5	3	5	4	4	5	4	5	5	6	2	6	54

गुरु का अष्टकवर्ग

	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	कुल
शनि	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
सूर्य	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	9
शुक्र	1	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	6
बुध	1	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	8
चंद्र	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
लग्न	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	9
कुल	6	5	4	7	3	3	5	4	4	5	3	7	56

शुक्र का अष्टकवर्ग

	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	कुल
शनि	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	7
गुरु	0	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	5
मंगल	0	0	1	1	0	1	0	0	1	0	1	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	9
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
कुल	3	3	5	5	4	6	3	4	4	4	5	6	52

शनि का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	0	7
शुक्र	0	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	6
चंद्र	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
कुल	2	4	5	4	6	3	2	4	1	2	4	2	39

लग्न का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	1	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	6
गुरु	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
मंगल	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	5
सूर्य	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	6
शुक्र	0	0	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	7
बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	7
चंद्र	0	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	2	5	4	5	4	6	3	5	3	4	4	4	49



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	4	6	3	2	4	1	2	4	2	2	4	39
गुरु	7	6	5	4	7	3	3	5	4	4	5	3	56
मंगल	3	4	4	1	3	2	5	1	5	4	5	2	39
सूर्य	3	4	4	4	4	4	4	2	4	5	4	6	48
शुक्र	4	5	6	3	3	5	5	4	6	3	4	4	52
बुध	5	6	2	6	5	3	5	4	4	5	4	5	54
चंद्र	4	5	6	2	4	3	4	4	5	3	4	5	49
बिन्दु	31	34	33	23	28	24	27	22	32	26	28	29	337
रेखा	25	22	23	33	28	32	29	34	24	30	28	27	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	2	5	1	0	2	0	0	2	0	1	2	18
गुरु	3	3	2	1	3	0	0	2	0	1	2	0	17
मंगल	0	2	0	0	0	0	1	0	2	2	1	1	9
सूर्य	0	0	0	2	1	0	0	0	1	1	0	4	9
शुक्र	1	2	2	0	0	2	1	1	3	0	0	1	13
बुध	1	3	0	2	1	0	3	0	0	2	2	1	15
चंद्र	0	2	2	0	0	0	0	2	1	0	0	3	10
रेखा	8	14	11	6	5	4	5	5	9	6	6	12	91

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	क	सि	कं	बु	वृशि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	3	2	3	1	0	2	0	0	0	0	1	0	12
गुरु	1	3	2	1	3	0	0	2	0	0	2	0	14
मंगल	0	2	0	0	0	0	1	0	1	1	1	1	7
सूर्य	0	0	0	2	1	0	0	0	1	1	0	3	8
शुक्र	0	2	0	0	0	0	1	0	2	0	0	1	6
बुध	1	3	0	2	1	0	3	0	0	0	2	1	13
चंद्र	0	2	2	0	0	0	0	2	1	0	0	2	9
रेखा	5	14	7	6	5	2	5	4	5	2	6	8	69

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	68	85	64	110	125	57	90
ग्रह पिंड	40	20	30	95	85	25	40
शोध्य पिंड	108	105	94	205	210	82	130



FUTUREPOINT
Astro Solutions

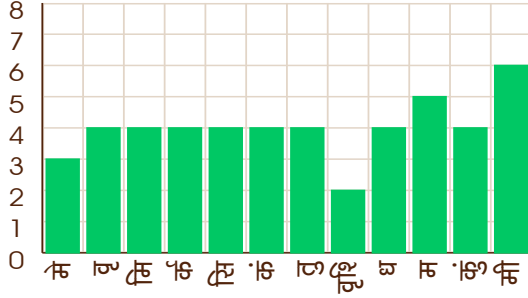


अष्टकवर्ग सारिणी

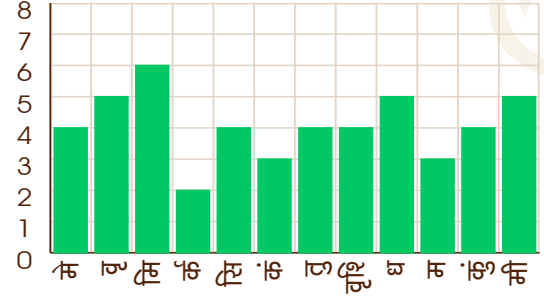
सूर्य का अष्टकवर्ग	सर्वाष्टकवर्ग	चंद्र का अष्टकवर्ग
मंगल का अष्टकवर्ग	बुध का अष्टकवर्ग	गुरु का अष्टकवर्ग
शुक्र का अष्टकवर्ग	शनि का अष्टकवर्ग	लग्न का अष्टकवर्ग

भिन्नाष्टक ग्राफ

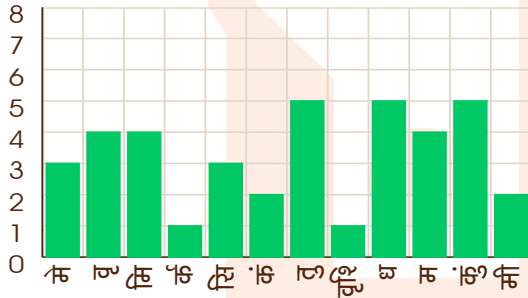
सूर्य



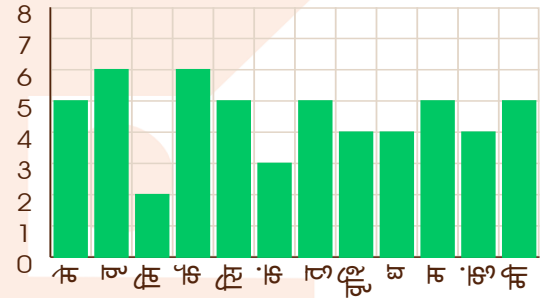
चन्द्र



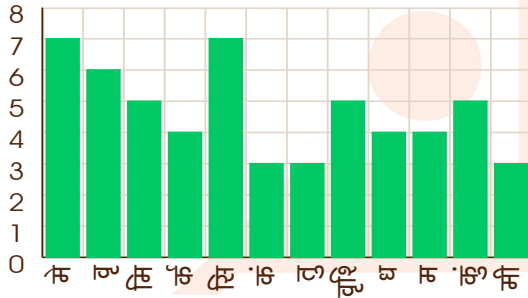
मंगल



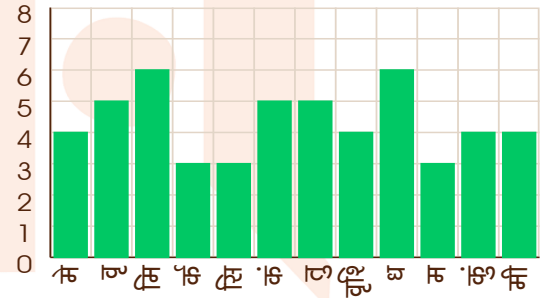
बुध



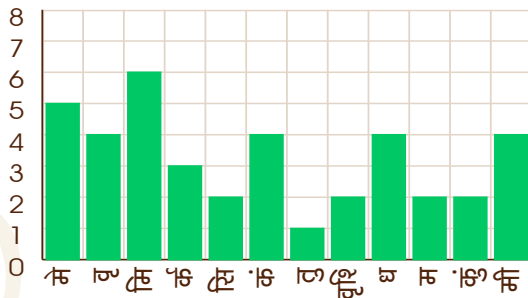
गुरु



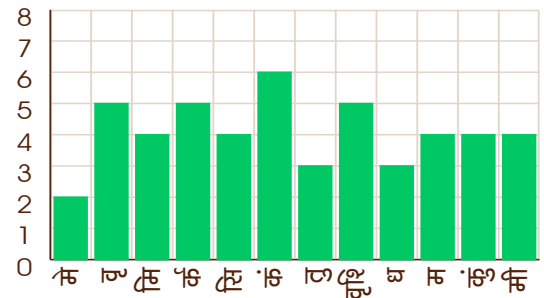
शुक्र



शनि



लग्न

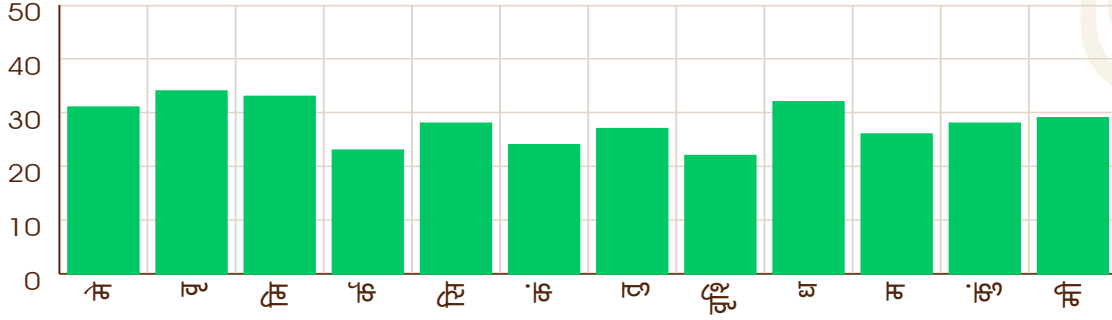


FUTUREPOINT
Astro Solutions

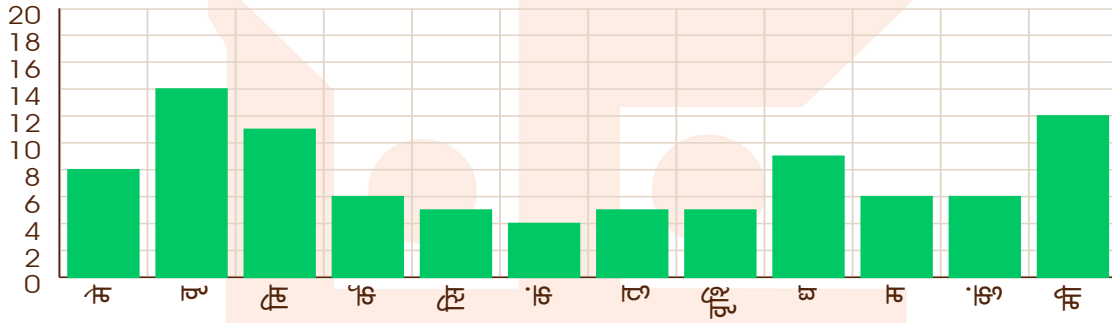


अष्टकवर्ग ग्राफ

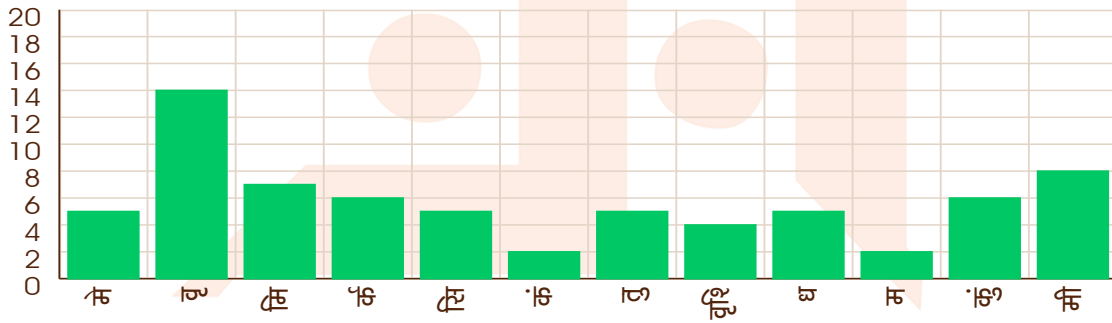
सर्वाष्टकवर्ग



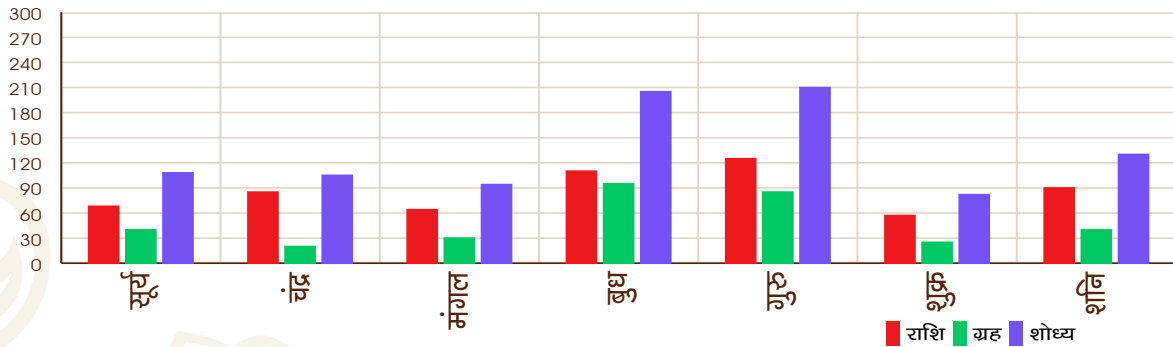
त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग



एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग



शोध्य पिंड



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 2 मास 27 दिन

मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष
09/09/1964	07/12/1964	07/12/1982	07/12/1998	07/12/2017
07/12/1964	07/12/1982	07/12/1998	07/12/2017	07/12/2034
00/00/0000	राहु 20/08/1967	गुरु 25/01/1985	शनि 10/12/2001	बुध 05/05/2020
00/00/0000	गुरु 13/01/1970	शनि 08/08/1987	बुध 19/08/2004	केतु 02/05/2021
00/00/0000	शनि 19/11/1972	बुध 13/11/1989	केतु 28/09/2005	शुक्र 02/03/2024
00/00/0000	बुध 08/06/1975	केतु 20/10/1990	शुक्र 28/11/2008	सूर्य 06/01/2025
00/00/0000	केतु 26/06/1976	शुक्र 20/06/1993	सूर्य 10/11/2009	चंद्र 08/06/2026
00/00/0000	शुक्र 26/06/1979	सूर्य 08/04/1994	चंद्र 11/06/2011	मंगल 05/06/2027
00/00/0000	सूर्य 20/05/1980	चंद्र 08/08/1995	मंगल 20/07/2012	राहु 22/12/2029
09/09/1964	चंद्र 19/11/1981	मंगल 14/07/1996	राहु 27/05/2015	गुरु 29/03/2032
चंद्र 07/12/1964	मंगल 07/12/1982	राहु 07/12/1998	गुरु 07/12/2017	शनि 07/12/2034

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
07/12/2034	07/12/2041	07/12/2061	08/12/2067	07/12/2077
07/12/2041	07/12/2061	08/12/2067	07/12/2077	09/09/2084
केतु 06/05/2035	शुक्र 08/04/2045	सूर्य 27/03/2062	चंद्र 07/10/2068	मंगल 05/05/2078
शुक्र 05/07/2036	सूर्य 08/04/2046	चंद्र 25/09/2062	मंगल 08/05/2069	राहु 24/05/2079
सूर्य 10/11/2036	चंद्र 08/12/2047	मंगल 31/01/2063	राहु 07/11/2070	गुरु 29/04/2080
चंद्र 11/06/2037	मंगल 06/02/2049	राहु 26/12/2063	गुरु 08/03/2072	शनि 08/06/2081
मंगल 07/11/2037	राहु 07/02/2052	गुरु 13/10/2064	शनि 07/10/2073	बुध 05/06/2082
राहु 25/11/2038	गुरु 08/10/2054	शनि 25/09/2065	बुध 09/03/2075	केतु 01/11/2082
गुरु 01/11/2039	शनि 07/12/2057	बुध 02/08/2066	केतु 08/10/2075	शुक्र 01/01/2084
शनि 10/12/2040	बुध 07/10/2060	केतु 07/12/2066	शुक्र 08/06/2077	सूर्य 08/05/2084
बुध 07/12/2041	केतु 07/12/2061	शुक्र 08/12/2067	सूर्य 07/12/2077	चंद्र 09/09/2084

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 0 वर्ष 2 मा 28 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र	राहु - राहु	राहु - गुरु	राहु - शनि	राहु - बुध
09/09/1964	07/12/1964	20/08/1967	13/01/1970	19/11/1972
07/12/1964	20/08/1967	13/01/1970	19/11/1972	08/06/1975
00/00/0000	राहु 04/05/1965	गुरु 15/12/1967	शनि 26/06/1970	बुध 31/03/1973
00/00/0000	गुरु 12/09/1965	शनि 02/05/1968	बुध 21/11/1970	केतु 24/05/1973
00/00/0000	शनि 15/02/1966	बुध 03/09/1968	केतु 21/01/1971	शुक्र 26/10/1973
00/00/0000	बुध 05/07/1966	केतु 24/10/1968	शुक्र 13/07/1971	सूर्य 12/12/1973
09/09/1964	केतु 01/09/1966	शुक्र 19/03/1969	सूर्य 03/09/1971	चंद्र 27/02/1974
बुध 09/10/1964	शुक्र 12/02/1967	सूर्य 02/05/1969	चंद्र 29/11/1971	मंगल 23/04/1974
केतु 22/10/1964	सूर्य 02/04/1967	चंद्र 14/07/1969	मंगल 29/01/1972	राहु 09/09/1974
शुक्र 26/11/1964	चंद्र 24/06/1967	मंगल 03/09/1969	राहु 03/07/1972	गुरु 12/01/1975
सूर्य 07/12/1964	मंगल 20/08/1967	राहु 13/01/1970	गुरु 19/11/1972	शनि 08/06/1975
राहु - केतु	राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल
08/06/1975	26/06/1976	26/06/1979	20/05/1980	19/11/1981
26/06/1976	26/06/1979	20/05/1980	19/11/1981	07/12/1982
केतु 30/06/1975	शुक्र 25/12/1976	सूर्य 13/07/1979	चंद्र 05/07/1980	मंगल 11/12/1981
शुक्र 02/09/1975	सूर्य 18/02/1977	चंद्र 09/08/1979	मंगल 06/08/1980	राहु 07/02/1982
सूर्य 21/09/1975	चंद्र 20/05/1977	मंगल 28/08/1979	राहु 27/10/1980	गुरु 30/03/1982
चंद्र 23/10/1975	मंगल 23/07/1977	राहु 17/10/1979	गुरु 08/01/1981	शनि 30/05/1982
मंगल 15/11/1975	राहु 04/01/1978	गुरु 29/11/1979	शनि 05/04/1981	बुध 23/07/1982
राहु 11/01/1976	गुरु 30/05/1978	शनि 20/01/1980	बुध 21/06/1981	केतु 14/08/1982
गुरु 02/03/1976	शनि 19/11/1978	बुध 07/03/1980	केतु 23/07/1981	शुक्र 17/10/1982
शनि 02/05/1976	बुध 23/04/1979	केतु 26/03/1980	शुक्र 22/10/1981	सूर्य 05/11/1982
बुध 26/06/1976	केतु 26/06/1979	शुक्र 20/05/1980	सूर्य 19/11/1981	चंद्र 07/12/1982
गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु	गुरु - शुक्र
07/12/1982	25/01/1985	08/08/1987	13/11/1989	20/10/1990
25/01/1985	08/08/1987	13/11/1989	20/10/1990	20/06/1993
गुरु 21/03/1983	शनि 20/06/1985	बुध 03/12/1987	केतु 03/12/1989	शुक्र 31/03/1991
शनि 23/07/1983	बुध 29/10/1985	केतु 20/01/1988	शुक्र 29/01/1990	सूर्य 19/05/1991
बुध 10/11/1983	केतु 22/12/1985	शुक्र 06/06/1988	सूर्य 15/02/1990	चंद्र 08/08/1991
केतु 26/12/1983	शुक्र 25/05/1986	सूर्य 18/07/1988	चंद्र 15/03/1990	मंगल 04/10/1991
शुक्र 03/05/1984	सूर्य 11/07/1986	चंद्र 25/09/1988	मंगल 04/04/1990	राहु 27/02/1992
सूर्य 11/06/1984	चंद्र 26/09/1986	मंगल 12/11/1988	राहु 25/05/1990	गुरु 06/07/1992
चंद्र 15/08/1984	मंगल 19/11/1986	राहु 16/03/1989	गुरु 09/07/1990	शनि 07/12/1992
मंगल 30/09/1984	राहु 07/04/1987	गुरु 05/07/1989	शनि 01/09/1990	बुध 24/04/1993
राहु 25/01/1985	गुरु 08/08/1987	शनि 13/11/1989	बुध 20/10/1990	केतु 20/06/1993

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य 20/06/1993 08/04/1994	गुरु - चंद्र 08/04/1994 08/08/1995	गुरु - मंगल 08/08/1995 14/07/1996	गुरु - राहु 14/07/1996 07/12/1998	शनि - शनि 07/12/1998 10/12/2001
सूर्य 04/07/1993 चंद्र 29/07/1993 मंगल 15/08/1993 राहु 28/09/1993 गुरु 05/11/1993 शनि 22/12/1993 बुध 01/02/1994 केतु 18/02/1994 शुक्र 08/04/1994	चंद्र 18/05/1994 मंगल 16/06/1994 राहु 28/08/1994 गुरु 01/11/1994 शनि 17/01/1995 बुध 27/03/1995 केतु 24/04/1995 शुक्र 15/07/1995 सूर्य 08/08/1995	मंगल 28/08/1995 राहु 18/10/1995 गुरु 02/12/1995 शनि 25/01/1996 बुध 14/03/1996 केतु 03/04/1996 शुक्र 29/05/1996 सूर्य 15/06/1996 चंद्र 14/07/1996	राहु 22/11/1996 गुरु 19/03/1997 शनि 05/08/1997 बुध 07/12/1997 केतु 27/01/1998 शुक्र 22/06/1998 सूर्य 05/08/1998 चंद्र 17/10/1998 मंगल 07/12/1998	शनि 30/05/1999 बुध 02/11/1999 केतु 05/01/2000 शुक्र 06/07/2000 सूर्य 30/08/2000 चंद्र 30/11/2000 मंगल 02/02/2001 राहु 17/07/2001 गुरु 10/12/2001
शनि - बुध 10/12/2001 19/08/2004	शनि - केतु 19/08/2004 28/09/2005	शनि - शुक्र 28/09/2005 28/11/2008	शनि - सूर्य 28/11/2008 10/11/2009	शनि - चंद्र 10/11/2009 11/06/2011
बुध 28/04/2002 केतु 25/06/2002 शुक्र 06/12/2002 सूर्य 24/01/2003 चंद्र 16/04/2003 मंगल 12/06/2003 राहु 07/11/2003 गुरु 17/03/2004 शनि 19/08/2004	केतु 12/09/2004 शुक्र 18/11/2004 सूर्य 09/12/2004 चंद्र 11/01/2005 मंगल 04/02/2005 राहु 06/04/2005 गुरु 30/05/2005 शनि 02/08/2005 बुध 28/09/2005	शुक्र 09/04/2006 सूर्य 06/06/2006 चंद्र 10/09/2006 मंगल 17/11/2006 राहु 09/05/2007 गुरु 10/10/2007 शनि 10/04/2008 बुध 21/09/2008 केतु 28/11/2008	सूर्य 15/12/2008 चंद्र 13/01/2009 मंगल 02/02/2009 राहु 26/03/2009 गुरु 12/05/2009 शनि 06/07/2009 बुध 24/08/2009 केतु 13/09/2009 शुक्र 10/11/2009	चंद्र 28/12/2009 मंगल 31/01/2010 राहु 27/04/2010 गुरु 14/07/2010 शनि 13/10/2010 बुध 03/01/2011 केतु 06/02/2011 शुक्र 13/05/2011 सूर्य 11/06/2011
शनि - मंगल 11/06/2011 20/07/2012	शनि - राहु 20/07/2012 27/05/2015	शनि - गुरु 27/05/2015 07/12/2017	बुध - बुध 07/12/2017 05/05/2020	बुध - केतु 05/05/2020 02/05/2021
मंगल 05/07/2011 राहु 03/09/2011 गुरु 27/10/2011 शनि 30/12/2011 बुध 26/02/2012 केतु 20/03/2012 शुक्र 27/05/2012 सूर्य 16/06/2012 चंद्र 20/07/2012	राहु 23/12/2012 गुरु 11/05/2013 शनि 23/10/2013 बुध 19/03/2014 केतु 19/05/2014 शुक्र 08/11/2014 सूर्य 30/12/2014 चंद्र 27/03/2015 मंगल 27/05/2015	गुरु 27/09/2015 शनि 21/02/2016 बुध 01/07/2016 केतु 24/08/2016 शुक्र 25/01/2017 सूर्य 12/03/2017 चंद्र 28/05/2017 मंगल 21/07/2017 राहु 07/12/2017	बुध 11/04/2018 केतु 01/06/2018 शुक्र 26/10/2018 सूर्य 09/12/2018 चंद्र 20/02/2019 मंगल 12/04/2019 राहु 22/08/2019 गुरु 18/12/2019 शनि 05/05/2020	केतु 26/05/2020 शुक्र 25/07/2020 सूर्य 12/08/2020 चंद्र 12/09/2020 मंगल 03/10/2020 राहु 26/11/2020 गुरु 13/01/2021 शनि 12/03/2021 बुध 02/05/2021

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र 02/05/2021 02/03/2024	बुध - सूर्य 02/03/2024 06/01/2025	बुध - चंद्र 06/01/2025 08/06/2026	बुध - मंगल 08/06/2026 05/06/2027	बुध - राहु 05/06/2027 22/12/2029
शुक्र 21/10/2021 सूर्य 12/12/2021 चंद्र 08/03/2022 मंगल 08/05/2022 राहु 10/10/2022 गुरु 25/02/2023 शनि 08/08/2023 बुध 02/01/2024 केतु 02/03/2024	सूर्य 17/03/2024 चंद्र 12/04/2024 मंगल 30/04/2024 राहु 16/06/2024 गुरु 27/07/2024 शनि 15/09/2024 बुध 28/10/2024 केतु 16/11/2024 शुक्र 06/01/2025	चंद्र 18/02/2025 मंगल 21/03/2025 राहु 06/06/2025 गुरु 14/08/2025 शनि 04/11/2025 बुध 16/01/2026 केतु 16/02/2026 शुक्र 13/05/2026 सूर्य 08/06/2026	मंगल 29/06/2026 राहु 22/08/2026 गुरु 10/10/2026 शनि 06/12/2026 बुध 26/01/2027 केतु 16/02/2027 शुक्र 18/04/2027 सूर्य 06/05/2027 चंद्र 05/06/2027	राहु 23/10/2027 गुरु 24/02/2028 शनि 20/07/2028 बुध 29/11/2028 केतु 23/01/2029 शुक्र 27/06/2029 सूर्य 12/08/2029 चंद्र 29/10/2029 मंगल 22/12/2029
बुध - गुरु 22/12/2029 29/03/2032	बुध - शनि 29/03/2032 07/12/2034	केतु - केतु 07/12/2034 06/05/2035	केतु - शुक्र 06/05/2035 05/07/2036	केतु - सूर्य 05/07/2036 10/11/2036
गुरु 12/04/2030 शनि 21/08/2030 बुध 16/12/2030 केतु 02/02/2031 शुक्र 20/06/2031 सूर्य 01/08/2031 चंद्र 09/10/2031 मंगल 26/11/2031 राहु 29/03/2032	शनि 01/09/2032 बुध 18/01/2033 केतु 17/03/2033 शुक्र 27/08/2033 सूर्य 16/10/2033 चंद्र 05/01/2034 मंगल 04/03/2034 राहु 29/07/2034 गुरु 07/12/2034	केतु 16/12/2034 शुक्र 10/01/2035 सूर्य 17/01/2035 चंद्र 30/01/2035 मंगल 08/02/2035 राहु 02/03/2035 गुरु 22/03/2035 शनि 14/04/2035 बुध 06/05/2035	शुक्र 16/07/2035 सूर्य 06/08/2035 चंद्र 10/09/2035 मंगल 05/10/2035 राहु 08/12/2035 गुरु 03/02/2036 शनि 10/04/2036 बुध 10/06/2036 केतु 05/07/2036	सूर्य 11/07/2036 चंद्र 22/07/2036 मंगल 29/07/2036 राहु 17/08/2036 गुरु 03/09/2036 शनि 24/09/2036 बुध 12/10/2036 केतु 19/10/2036 शुक्र 10/11/2036
केतु - चंद्र 10/11/2036 11/06/2037	केतु - मंगल 11/06/2037 07/11/2037	केतु - राहु 07/11/2037 25/11/2038	केतु - गुरु 25/11/2038 01/11/2039	केतु - शनि 01/11/2039 10/12/2040
चंद्र 27/11/2036 मंगल 10/12/2036 राहु 11/01/2037 गुरु 08/02/2037 शनि 14/03/2037 बुध 13/04/2037 केतु 25/04/2037 शुक्र 31/05/2037 सूर्य 11/06/2037	मंगल 19/06/2037 राहु 12/07/2037 गुरु 01/08/2037 शनि 24/08/2037 बुध 14/09/2037 केतु 23/09/2037 शुक्र 18/10/2037 सूर्य 25/10/2037 चंद्र 07/11/2037	राहु 03/01/2038 गुरु 23/02/2038 शनि 25/04/2038 बुध 18/06/2038 केतु 11/07/2038 शुक्र 13/09/2038 सूर्य 02/10/2038 चंद्र 03/11/2038 मंगल 25/11/2038	गुरु 10/01/2039 शनि 05/03/2039 बुध 22/04/2039 केतु 12/05/2039 शुक्र 08/07/2039 सूर्य 25/07/2039 चंद्र 22/08/2039 मंगल 11/09/2039 राहु 01/11/2039	शनि 04/01/2040 बुध 02/03/2040 केतु 25/03/2040 शुक्र 01/06/2040 सूर्य 21/06/2040 चंद्र 25/07/2040 मंगल 17/08/2040 राहु 17/10/2040 गुरु 10/12/2040

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध 10/12/2040 07/12/2041	शुक्र - शुक्र 07/12/2041 08/04/2045	शुक्र - सूर्य 08/04/2045 08/04/2046	शुक्र - चंद्र 08/04/2046 08/12/2047	शुक्र - मंगल 08/12/2047 06/02/2049
बुध 30/01/2041 केतु 20/02/2041 शुक्र 22/04/2041 सूर्य 10/05/2041 चंद्र 09/06/2041 मंगल 30/06/2041 राहु 24/08/2041 गुरु 11/10/2041 शनि 07/12/2041	शुक्र 28/06/2042 सूर्य 28/08/2042 चंद्र 07/12/2042 मंगल 16/02/2043 राहु 18/08/2043 गुरु 27/01/2044 शनि 07/08/2044 बुध 27/01/2045 केतु 08/04/2045	सूर्य 26/04/2045 चंद्र 26/05/2045 मंगल 17/06/2045 राहु 10/08/2045 गुरु 28/09/2045 शनि 25/11/2045 बुध 16/01/2046 केतु 06/02/2046 शुक्र 08/04/2046	चंद्र 29/05/2046 मंगल 03/07/2046 राहु 02/10/2046 गुरु 23/12/2046 शनि 29/03/2047 बुध 23/06/2047 केतु 29/07/2047 शुक्र 07/11/2047 सूर्य 08/12/2047	मंगल 02/01/2048 राहु 05/03/2048 गुरु 01/05/2048 शनि 08/07/2048 बुध 06/09/2048 केतु 01/10/2048 शुक्र 11/12/2048 सूर्य 01/01/2049 चंद्र 06/02/2049
शुक्र - राहु 06/02/2049 07/02/2052	शुक्र - गुरु 07/02/2052 08/10/2054	शुक्र - शनि 08/10/2054 07/12/2057	शुक्र - बुध 07/12/2057 07/10/2060	शुक्र - केतु 07/10/2060 07/12/2061
राहु 20/07/2049 गुरु 13/12/2049 शनि 05/06/2050 बुध 07/11/2050 केतु 10/01/2051 शुक्र 12/07/2051 सूर्य 04/09/2051 चंद्र 05/12/2051 मंगल 07/02/2052	गुरु 15/06/2052 शनि 17/11/2052 बुध 04/04/2053 केतु 30/05/2053 शुक्र 09/11/2053 सूर्य 27/12/2053 चंद्र 19/03/2054 मंगल 14/05/2054 राहु 08/10/2054	शनि 09/04/2055 बुध 20/09/2055 केतु 26/11/2055 शुक्र 06/06/2056 सूर्य 03/08/2056 चंद्र 07/11/2056 मंगल 13/01/2057 राहु 06/07/2057 गुरु 07/12/2057	बुध 03/05/2058 केतु 02/07/2058 शुक्र 22/12/2058 सूर्य 11/02/2059 चंद्र 09/05/2059 मंगल 08/07/2059 राहु 10/12/2059 गुरु 26/04/2060 शनि 07/10/2060	केतु 01/11/2060 शुक्र 11/01/2061 सूर्य 01/02/2061 चंद्र 09/03/2061 मंगल 03/04/2061 राहु 05/06/2061 गुरु 01/08/2061 शनि 08/10/2061 बुध 07/12/2061
सूर्य - सूर्य 07/12/2061 27/03/2062	सूर्य - चंद्र 27/03/2062 25/09/2062	सूर्य - मंगल 25/09/2062 31/01/2063	सूर्य - राहु 31/01/2063 26/12/2063	सूर्य - गुरु 26/12/2063 13/10/2064
सूर्य 13/12/2061 चंद्र 22/12/2061 मंगल 28/12/2061 राहु 14/01/2062 गुरु 28/01/2062 शनि 15/02/2062 बुध 02/03/2062 केतु 08/03/2062 शुक्र 27/03/2062	चंद्र 11/04/2062 मंगल 22/04/2062 राहु 19/05/2062 गुरु 12/06/2062 शनि 11/07/2062 बुध 06/08/2062 केतु 17/08/2062 शुक्र 16/09/2062 सूर्य 25/09/2062	मंगल 03/10/2062 राहु 22/10/2062 गुरु 08/11/2062 शनि 28/11/2062 बुध 16/12/2062 केतु 24/12/2062 शुक्र 14/01/2063 सूर्य 21/01/2063 चंद्र 31/01/2063	राहु 21/03/2063 गुरु 04/05/2063 शनि 25/06/2063 बुध 11/08/2063 केतु 30/08/2063 शुक्र 24/10/2063 सूर्य 09/11/2063 चंद्र 07/12/2063 मंगल 26/12/2063	गुरु 03/02/2064 शनि 20/03/2064 बुध 01/05/2064 केतु 18/05/2064 शुक्र 05/07/2064 सूर्य 20/07/2064 चंद्र 13/08/2064 मंगल 30/08/2064 राहु 13/10/2064



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि 13/10/2064 25/09/2065	सूर्य - बुध 25/09/2065 02/08/2066	सूर्य - केतु 02/08/2066 07/12/2066	सूर्य - शुक्र 07/12/2066 08/12/2067	चंद्र - चंद्र 08/12/2067 07/10/2068
शनि 07/12/2064 बुध 25/01/2065 केतु 14/02/2065 शुक्र 13/04/2065 सूर्य 01/05/2065 चंद्र 30/05/2065 मंगल 19/06/2065 राहु 10/08/2065 गुरु 25/09/2065	बुध 08/11/2065 केतु 26/11/2065 शुक्र 17/01/2066 सूर्य 01/02/2066 चंद्र 27/02/2066 मंगल 17/03/2066 राहु 03/05/2066 गुरु 13/06/2066 शनि 02/08/2066	केतु 09/08/2066 शुक्र 30/08/2066 सूर्य 06/09/2066 चंद्र 16/09/2066 मंगल 24/09/2066 राहु 13/10/2066 गुरु 30/10/2066 शनि 19/11/2066 बुध 07/12/2066	शुक्र 06/02/2067 सूर्य 25/02/2067 चंद्र 27/03/2067 मंगल 17/04/2067 राहु 11/06/2067 गुरु 30/07/2067 शनि 26/09/2067 बुध 16/11/2067 केतु 08/12/2067	चंद्र 02/01/2068 मंगल 20/01/2068 राहु 05/03/2068 गुरु 15/04/2068 शनि 02/06/2068 बुध 15/07/2068 केतु 02/08/2068 शुक्र 22/09/2068 सूर्य 07/10/2068
चंद्र - मंगल 07/10/2068 08/05/2069	चंद्र - राहु 08/05/2069 07/11/2070	चंद्र - गुरु 07/11/2070 08/03/2072	चंद्र - शनि 08/03/2072 07/10/2073	चंद्र - बुध 07/10/2073 09/03/2075
मंगल 19/10/2068 राहु 20/11/2068 गुरु 19/12/2068 शनि 22/01/2069 बुध 21/02/2069 केतु 05/03/2069 शुक्र 10/04/2069 सूर्य 20/04/2069 चंद्र 08/05/2069	राहु 29/07/2069 गुरु 10/10/2069 शनि 05/01/2070 बुध 24/03/2070 केतु 25/04/2070 शुक्र 25/07/2070 सूर्य 21/08/2070 चंद्र 06/10/2070 मंगल 07/11/2070	गुरु 11/01/2071 शनि 29/03/2071 बुध 06/06/2071 केतु 04/07/2071 शुक्र 24/09/2071 सूर्य 18/10/2071 चंद्र 28/11/2071 मंगल 26/12/2071 राहु 08/03/2072	शनि 08/06/2072 बुध 28/08/2072 केतु 01/10/2072 शुक्र 06/01/2073 सूर्य 03/02/2073 चंद्र 24/03/2073 मंगल 26/04/2073 राहु 22/07/2073 गुरु 07/10/2073	बुध 20/12/2073 केतु 19/01/2074 शुक्र 15/04/2074 सूर्य 11/05/2074 चंद्र 23/06/2074 मंगल 23/07/2074 राहु 09/10/2074 गुरु 17/12/2074 शनि 09/03/2075
चंद्र - केतु 09/03/2075 08/10/2075	चंद्र - शुक्र 08/10/2075 08/06/2077	चंद्र - सूर्य 08/06/2077 07/12/2077	मंगल - मंगल 07/12/2077 05/05/2078	मंगल - राहु 05/05/2078 24/05/2079
केतु 21/03/2075 शुक्र 26/04/2075 सूर्य 06/05/2075 चंद्र 24/05/2075 मंगल 05/06/2075 राहु 07/07/2075 गुरु 05/08/2075 शनि 08/09/2075 बुध 08/10/2075	शुक्र 17/01/2076 सूर्य 17/02/2076 चंद्र 07/04/2076 मंगल 13/05/2076 राहु 12/08/2076 गुरु 01/11/2076 शनि 06/02/2077 बुध 03/05/2077 केतु 08/06/2077	सूर्य 17/06/2077 चंद्र 02/07/2077 मंगल 13/07/2077 राहु 09/08/2077 गुरु 02/09/2077 शनि 01/10/2077 बुध 27/10/2077 केतु 07/11/2077 शुक्र 07/12/2077	मंगल 16/12/2077 राहु 07/01/2078 गुरु 27/01/2078 शनि 20/02/2078 बुध 13/03/2078 केतु 22/03/2078 शुक्र 15/04/2078 सूर्य 23/04/2078 चंद्र 05/05/2078	राहु 02/07/2078 गुरु 22/08/2078 शनि 22/10/2078 बुध 15/12/2078 केतु 06/01/2079 शुक्र 11/03/2079 सूर्य 30/03/2079 चंद्र 01/05/2079 मंगल 24/05/2079

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - चंद्र - बुध 04/11/2025 16:15 16/01/2026 23:32	बुध - चंद्र - केतु 16/01/2026 23:32 16/02/2026 03:57	बुध - चंद्र - शुक्र 16/02/2026 03:57 13/05/2026 09:42	बुध - चंद्र - सूर्य 13/05/2026 09:42 08/06/2026 06:37
बुध 15/11/2025 01:28 केतु 19/11/2025 08:06 शुक्र 01/12/2025 13:19 सूर्य 05/12/2025 05:17 चंद्र 11/12/2025 07:53 मंगल 15/12/2025 14:31 राहु 26/12/2025 14:24 गुरु 05/01/2026 08:59 शनि 16/01/2026 23:32	केतु 18/01/2026 17:47 शुक्र 23/01/2026 18:31 सूर्य 25/01/2026 06:45 चंद्र 27/01/2026 19:07 मंगल 29/01/2026 13:22 राहु 03/02/2026 02:02 गुरु 07/02/2026 02:37 शनि 11/02/2026 21:19 बुध 16/02/2026 03:57	शुक्र 02/03/2026 12:54 सूर्य 06/03/2026 20:23 चंद्र 14/03/2026 00:52 मंगल 19/03/2026 01:36 राहु 01/04/2026 00:04 गुरु 12/04/2026 12:02 शनि 26/04/2026 03:45 बुध 08/05/2026 08:57 केतु 13/05/2026 09:42	सूर्य 14/05/2026 16:44 चंद्र 16/05/2026 20:29 मंगल 18/05/2026 08:42 राहु 22/05/2026 05:50 गुरु 25/05/2026 16:38 शनि 29/05/2026 18:57 बुध 02/06/2026 10:55 केतु 03/06/2026 23:08 शुक्र 08/06/2026 06:37
बुध - मंगल - मंगल 08/06/2026 06:37 29/06/2026 09:42	बुध - मंगल - राहु 29/06/2026 09:42 22/08/2026 17:39	बुध - मंगल - गुरु 22/08/2026 17:39 10/10/2026 00:42	बुध - मंगल - शनि 10/10/2026 00:42 06/12/2026 09:06
मंगल 09/06/2026 12:12 राहु 12/06/2026 16:16 गुरु 15/06/2026 11:52 शनि 18/06/2026 20:10 बुध 21/06/2026 20:00 केतु 23/06/2026 01:35 शुक्र 26/06/2026 14:06 सूर्य 27/06/2026 15:27 चंद्र 29/06/2026 09:42	राहु 07/07/2026 13:18 गुरु 14/07/2026 19:09 शनि 23/07/2026 09:37 बुध 31/07/2026 02:20 केतु 03/08/2026 06:24 शुक्र 12/08/2026 07:44 सूर्य 15/08/2026 00:55 चंद्र 19/08/2026 13:35 मंगल 22/08/2026 17:39	गुरु 29/08/2026 04:11 शनि 05/09/2026 19:42 बुध 12/09/2026 15:54 केतु 15/09/2026 11:31 शुक्र 23/09/2026 12:42 सूर्य 25/09/2026 22:39 चंद्र 29/09/2026 23:14 मंगल 02/10/2026 18:51 राहु 10/10/2026 00:42	शनि 19/10/2026 02:38 बुध 27/10/2026 05:37 केतु 30/10/2026 13:55 शुक्र 09/11/2026 03:19 सूर्य 12/11/2026 00:08 चंद्र 16/11/2026 18:50 मंगल 20/11/2026 03:07 राहु 28/11/2026 17:34 गुरु 06/12/2026 09:06
बुध - मंगल - बुध 06/12/2026 09:06 26/01/2027 16:36	बुध - मंगल - केतु 26/01/2027 16:36 16/02/2027 19:41	बुध - मंगल - शुक्र 16/02/2027 19:41 18/04/2027 04:30	बुध - मंगल - सूर्य 18/04/2027 04:30 06/05/2027 07:09
बुध 13/12/2026 15:33 केतु 16/12/2026 15:24 शुक्र 25/12/2026 04:39 सूर्य 27/12/2026 18:13 चंद्र 01/01/2027 00:51 मंगल 04/01/2027 00:41 राहु 11/01/2027 17:24 गुरु 18/01/2027 13:36 शनि 26/01/2027 16:36	केतु 27/01/2027 22:10 शुक्र 31/01/2027 10:41 सूर्य 01/02/2027 12:03 चंद्र 03/02/2027 06:18 मंगल 04/02/2027 11:53 राहु 07/02/2027 15:57 गुरु 10/02/2027 11:33 शनि 13/02/2027 19:51 बुध 16/02/2027 19:41	शुक्र 26/02/2027 21:09 सूर्य 01/03/2027 21:36 चंद्र 06/03/2027 22:20 मंगल 10/03/2027 10:51 राहु 19/03/2027 12:10 गुरु 27/03/2027 13:21 शनि 06/04/2027 02:45 बुध 14/04/2027 16:00 केतु 18/04/2027 04:30	सूर्य 19/04/2027 02:14 चंद्र 20/04/2027 14:28 मंगल 21/04/2027 15:49 राहु 24/04/2027 09:01 गुरु 26/04/2027 18:58 शनि 29/04/2027 15:47 बुध 02/05/2027 05:22 केतु 03/05/2027 06:43 शुक्र 06/05/2027 07:09

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - मंगल - चंद्र 06/05/2027 07:09 05/06/2027 11:34	बुध - राहु - राहु 05/06/2027 11:34 23/10/2027 04:34	बुध - राहु - गुरु 23/10/2027 04:34 24/02/2028 09:00	बुध - राहु - शनि 24/02/2028 09:00 20/07/2028 20:16
चंद्र 08/05/2027 19:31 मंगल 10/05/2027 13:47 राहु 15/05/2027 02:26 गुरु 19/05/2027 03:02 शनि 23/05/2027 21:44 बुध 28/05/2027 04:21 केतु 29/05/2027 22:37 शुक्र 03/06/2027 23:21 सूर्य 05/06/2027 11:34	राहु 26/06/2027 10:31 गुरु 15/07/2027 01:35 शनि 06/08/2027 04:28 बुध 25/08/2027 23:29 केतु 03/09/2027 03:04 शुक्र 26/09/2027 09:54 सूर्य 03/10/2027 09:33 चंद्र 15/10/2027 00:58 मंगल 23/10/2027 04:34	गुरु 08/11/2027 17:57 शनि 28/11/2027 09:51 बुध 16/12/2027 00:05 केतु 23/12/2027 05:57 शुक्र 12/01/2028 22:41 सूर्य 19/01/2028 03:42 चंद्र 29/01/2028 12:05 मंगल 05/02/2028 17:56 राहु 24/02/2028 09:00	शनि 18/03/2028 17:23 बुध 08/04/2028 14:47 केतु 17/04/2028 05:14 शुक्र 11/05/2028 19:07 सूर्य 19/05/2028 04:05 चंद्र 31/05/2028 11:01 मंगल 09/06/2028 01:29 राहु 01/07/2028 04:22 गुरु 20/07/2028 20:16
बुध - राहु - बुध 20/07/2028 20:16 29/11/2028 19:00	बुध - राहु - केतु 29/11/2028 19:00 23/01/2029 02:56	बुध - राहु - शुक्र 23/01/2029 02:56 27/06/2029 08:29	बुध - राहु - सूर्य 27/06/2029 08:29 12/08/2029 22:09
बुध 08/08/2028 12:54 केतु 16/08/2028 05:37 शुक्र 07/09/2028 05:24 सूर्य 13/09/2028 19:44 चंद्र 24/09/2028 19:38 मंगल 02/10/2028 12:21 राहु 22/10/2028 07:22 गुरु 08/11/2028 21:36 शनि 29/11/2028 19:00	केतु 02/12/2028 23:03 शुक्र 12/12/2028 00:23 सूर्य 14/12/2028 17:35 चंद्र 19/12/2028 06:14 मंगल 22/12/2028 10:18 राहु 30/12/2028 13:54 गुरु 06/01/2029 19:45 शनि 15/01/2029 10:13 बुध 23/01/2029 02:56	शुक्र 17/02/2029 23:52 सूर्य 25/02/2029 18:08 चंद्र 10/03/2029 16:36 मंगल 19/03/2029 17:55 राहु 12/04/2029 00:45 गुरु 02/05/2029 17:30 शनि 27/05/2029 07:22 बुध 18/06/2029 07:10 केतु 27/06/2029 08:29	सूर्य 29/06/2029 16:22 चंद्र 03/07/2029 13:30 मंगल 06/07/2029 06:42 राहु 13/07/2029 06:21 गुरु 19/07/2029 11:23 शनि 26/07/2029 20:20 बुध 02/08/2029 10:40 केतु 05/08/2029 03:52 शुक्र 12/08/2029 22:09
बुध - राहु - चंद्र 12/08/2029 22:09 29/10/2029 12:55	बुध - राहु - मंगल 29/10/2029 12:55 22/12/2029 20:52	बुध - गुरु - गुरु 22/12/2029 20:52 12/04/2030 06:09	बुध - गुरु - शनि 12/04/2030 06:09 21/08/2030 08:10
चंद्र 19/08/2029 09:23 मंगल 23/08/2029 22:03 राहु 04/09/2029 13:28 गुरु 14/09/2029 21:50 शनि 27/09/2029 04:46 बुध 08/10/2029 04:40 केतु 12/10/2029 17:19 शुक्र 25/10/2029 15:47 सूर्य 29/10/2029 12:55	मंगल 01/11/2029 16:59 राहु 09/11/2029 20:35 गुरु 17/11/2029 02:26 शनि 25/11/2029 16:54 बुध 03/12/2029 09:37 केतु 06/12/2029 13:41 शुक्र 15/12/2029 15:00 सूर्य 18/12/2029 08:12 चंद्र 22/12/2029 20:52	गुरु 06/01/2030 14:06 शनि 24/01/2030 01:34 बुध 08/02/2030 16:53 केतु 15/02/2030 03:26 शुक्र 05/03/2030 12:59 सूर्य 11/03/2030 01:26 चंद्र 20/03/2030 06:13 मंगल 26/03/2030 16:45 राहु 12/04/2030 06:09	शनि 03/05/2030 00:16 बुध 21/05/2030 13:57 केतु 29/05/2030 05:28 शुक्र 20/06/2030 01:48 सूर्य 26/06/2030 15:07 चंद्र 07/07/2030 13:17 मंगल 15/07/2030 04:48 राहु 03/08/2030 20:42 गुरु 21/08/2030 08:10



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - गुरु - बुध 21/08/2030 08:10 16/12/2030 15:02	बुध - गुरु - केतु 16/12/2030 15:02 02/02/2031 22:05	बुध - गुरु - शुक्र 02/02/2031 22:05 20/06/2031 21:41	बुध - गुरु - सूर्य 20/06/2031 21:41 01/08/2031 07:10
बुध 06/09/2030 22:56 केतु 13/09/2030 19:08 शुक्र 03/10/2030 08:17 सूर्य 09/10/2030 05:02 चंद्र 18/10/2030 23:36 मंगल 25/10/2030 19:48 राहु 12/11/2030 10:02 गुरु 28/11/2030 01:20 शनि 16/12/2030 15:02	केतु 19/12/2030 10:38 शुक्र 27/12/2030 11:49 सूर्य 29/12/2030 21:46 चंद्र 02/01/2031 22:21 मंगल 05/01/2031 17:58 राहु 12/01/2031 23:50 गुरु 19/01/2031 10:22 शनि 27/01/2031 01:53 बुध 02/02/2031 22:05	शुक्र 25/02/2031 22:01 सूर्य 04/03/2031 19:36 चंद्र 16/03/2031 07:34 मंगल 24/03/2031 08:45 राहु 14/04/2031 01:29 गुरु 02/05/2031 11:02 शनि 24/05/2031 07:22 बुध 12/06/2031 20:31 केतु 20/06/2031 21:41	सूर्य 22/06/2031 23:22 चंद्र 26/06/2031 10:09 मंगल 28/06/2031 20:06 राहु 05/07/2031 01:08 गुरु 10/07/2031 13:35 शनि 17/07/2031 02:53 बुध 22/07/2031 23:38 केतु 25/07/2031 09:35 शुक्र 01/08/2031 07:10
बुध - गुरु - चंद्र 01/08/2031 07:10 09/10/2031 06:58	बुध - गुरु - मंगल 09/10/2031 06:58 26/11/2031 14:02	बुध - गुरु - राहु 26/11/2031 14:02 29/03/2032 18:28	बुध - शनि - शनि 29/03/2032 18:28 01/09/2032 10:22
चंद्र 07/08/2031 01:09 मंगल 11/08/2031 01:44 राहु 21/08/2031 10:07 गुरु 30/08/2031 14:53 शनि 10/09/2031 13:03 बुध 20/09/2031 07:37 केतु 24/09/2031 08:13 शुक्र 05/10/2031 20:11 सूर्य 09/10/2031 06:58	मंगल 12/10/2031 02:35 राहु 19/10/2031 08:26 गुरु 25/10/2031 18:59 शनि 02/11/2031 10:30 बुध 09/11/2031 06:42 केतु 12/11/2031 02:19 शुक्र 20/11/2031 03:29 सूर्य 22/11/2031 13:26 चंद्र 26/11/2031 14:02	राहु 15/12/2031 05:06 गुरु 31/12/2031 18:29 शनि 20/01/2032 10:23 बुध 07/02/2032 00:37 केतु 14/02/2032 06:29 शुक्र 05/03/2032 23:13 सूर्य 12/03/2032 04:14 चंद्र 22/03/2032 12:36 मंगल 29/03/2032 18:28	शनि 23/04/2032 09:59 बुध 15/05/2032 11:14 केतु 24/05/2032 13:10 शुक्र 19/06/2032 11:49 सूर्य 27/06/2032 06:37 चंद्र 10/07/2032 05:56 मंगल 19/07/2032 07:52 राहु 11/08/2032 16:15 गुरु 01/09/2032 10:22
बुध - शनि - बुध 01/09/2032 10:22 18/01/2033 17:01	बुध - शनि - केतु 18/01/2033 17:01 17/03/2033 01:24	बुध - शनि - शुक्र 17/03/2033 01:24 27/08/2033 21:55	बुध - शनि - सूर्य 27/08/2033 21:55 16/10/2033 01:41
बुध 21/09/2032 03:54 केतु 29/09/2032 06:54 शुक्र 22/10/2032 12:00 सूर्य 29/10/2032 11:08 चंद्र 10/11/2032 01:41 मंगल 18/11/2032 04:41 राहु 09/12/2032 02:04 गुरु 27/12/2032 15:46 शनि 18/01/2033 17:01	केतु 22/01/2033 01:18 शुक्र 31/01/2033 14:42 सूर्य 03/02/2033 11:31 चंद्र 08/02/2033 06:13 मंगल 11/02/2033 14:30 राहु 20/02/2033 04:58 गुरु 27/02/2033 20:29 शनि 08/03/2033 22:24 बुध 17/03/2033 01:24	शुक्र 13/04/2033 08:49 सूर्य 21/04/2033 13:27 चंद्र 05/05/2033 05:09 मंगल 14/05/2033 18:33 राहु 08/06/2033 08:26 गुरु 30/06/2033 04:46 शनि 26/07/2033 03:25 बुध 18/08/2033 08:31 केतु 27/08/2033 21:55	सूर्य 30/08/2033 08:55 चंद्र 03/09/2033 11:13 मंगल 06/09/2033 08:02 राहु 13/09/2033 17:00 गुरु 20/09/2033 06:18 शनि 28/09/2033 01:06 बुध 05/10/2033 00:14 केतु 07/10/2033 21:03 शुक्र 16/10/2033 01:41

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

बुध - शनि - चंद्र 16/10/2033 01:41 05/01/2034 23:56	बुध - शनि - मंगल 05/01/2034 23:56 04/03/2034 08:19	बुध - शनि - राहु 04/03/2034 08:19 29/07/2034 19:36	बुध - शनि - गुरु 29/07/2034 19:36 07/12/2034 21:37
चंद्र 22/10/2033 21:32 मंगल 27/10/2033 16:14 राहु 08/11/2033 23:10 गुरु 19/11/2033 21:20 शनि 02/12/2033 20:40 बुध 14/12/2033 11:13 केतु 19/12/2033 05:55 शुक्र 01/01/2034 21:38 सूर्य 05/01/2034 23:56	मंगल 09/01/2034 08:14 राहु 17/01/2034 22:41 गुरु 25/01/2034 14:12 शनि 03/02/2034 16:08 बुध 11/02/2034 19:07 केतु 15/02/2034 03:25 शुक्र 24/02/2034 16:48 सूर्य 27/02/2034 13:38 चंद्र 04/03/2034 08:19	राहु 26/03/2034 11:13 गुरु 15/04/2034 03:07 शनि 08/05/2034 11:30 बुध 29/05/2034 08:54 केतु 06/06/2034 23:21 शुक्र 01/07/2034 13:14 सूर्य 08/07/2034 22:12 चंद्र 21/07/2034 05:08 मंगल 29/07/2034 19:36	गुरु 16/08/2034 07:04 शनि 06/09/2034 01:11 बुध 24/09/2034 14:52 केतु 02/10/2034 06:23 शुक्र 24/10/2034 02:44 सूर्य 30/10/2034 16:02 चंद्र 10/11/2034 14:12 मंगल 18/11/2034 05:43 राहु 07/12/2034 21:37
केतु - केतु - केतु 07/12/2034 21:37 16/12/2034 14:25	केतु - केतु - शुक्र 16/12/2034 14:25 10/01/2035 11:00	केतु - केतु - सूर्य 10/01/2035 11:00 17/01/2035 21:58	केतु - केतु - चंद्र 17/01/2035 21:58 30/01/2035 08:15
केतु 08/12/2034 09:48 शुक्र 09/12/2034 20:36 सूर्य 10/12/2034 07:02 चंद्र 11/12/2034 00:26 मंगल 11/12/2034 12:37 राहु 12/12/2034 19:56 गुरु 13/12/2034 23:47 शनि 15/12/2034 08:50 बुध 16/12/2034 14:25	शुक्र 20/12/2034 17:51 सूर्य 21/12/2034 23:41 चंद्र 24/12/2034 01:23 मंगल 25/12/2034 12:11 राहु 29/12/2034 05:41 गुरु 01/01/2035 13:13 शनि 05/01/2035 11:41 बुध 09/01/2035 00:12 केतु 10/01/2035 11:00	सूर्य 10/01/2035 19:57 चंद्र 11/01/2035 10:51 मंगल 11/01/2035 21:18 राहु 13/01/2035 00:09 गुरु 14/01/2035 00:00 शनि 15/01/2035 04:21 बुध 16/01/2035 05:42 केतु 16/01/2035 16:08 शुक्र 17/01/2035 21:58	चंद्र 18/01/2035 22:49 मंगल 19/01/2035 16:13 राहु 21/01/2035 12:58 गुरु 23/01/2035 04:44 शनि 25/01/2035 03:58 बुध 26/01/2035 22:13 केतु 27/01/2035 15:37 शुक्र 29/01/2035 17:20 सूर्य 30/01/2035 08:15
केतु - केतु - मंगल 30/01/2035 08:15 08/02/2035 01:03	केतु - केतु - राहु 08/02/2035 01:03 02/03/2035 09:58	केतु - केतु - गुरु 02/03/2035 09:58 22/03/2035 07:14	केतु - केतु - शनि 22/03/2035 07:14 14/04/2035 21:59
मंगल 30/01/2035 20:26 राहु 01/02/2035 03:45 गुरु 02/02/2035 07:36 शनि 03/02/2035 16:39 बुध 04/02/2035 22:14 केतु 05/02/2035 10:25 शुक्र 06/02/2035 21:13 सूर्य 07/02/2035 07:39 चंद्र 08/02/2035 01:03	राहु 11/02/2035 09:36 गुरु 14/02/2035 09:11 शनि 17/02/2035 22:12 बुध 21/02/2035 02:15 केतु 22/02/2035 09:35 शुक्र 26/02/2035 03:04 सूर्य 27/02/2035 05:55 चंद्र 01/03/2035 02:39 मंगल 02/03/2035 09:58	गुरु 05/03/2035 01:36 शनि 08/03/2035 05:10 बुध 11/03/2035 00:47 केतु 12/03/2035 04:37 शुक्र 15/03/2035 12:10 सूर्य 16/03/2035 12:02 चंद्र 18/03/2035 03:48 मंगल 19/03/2035 07:39 राहु 22/03/2035 07:14	शनि 26/03/2035 00:58 बुध 29/03/2035 09:15 केतु 30/03/2035 18:19 शुक्र 03/04/2035 16:46 सूर्य 04/04/2035 21:07 चंद्र 06/04/2035 20:20 मंगल 08/04/2035 05:24 राहु 11/04/2035 18:25 गुरु 14/04/2035 21:59

विंशोत्तरी दशा - प्राण

बुध - चंद्र - बुध - शनि		बुध - चंद्र - केतु - केतु		बुध - चंद्र - केतु - शुक्र		बुध - चंद्र - केतु - सूर्य	
05/01/2026 08:59		16/01/2026 23:32		18/01/2026 17:47		23/01/2026 18:31	
16/01/2026 23:32		18/01/2026 17:47		23/01/2026 18:31		25/01/2026 06:45	
शनि	07/01/2026 05:05	केतु	17/01/2026 02:00	शुक्र	19/01/2026 13:55	सूर्य	23/01/2026 20:20
बुध	08/01/2026 20:33	शुक्र	17/01/2026 09:02	सूर्य	19/01/2026 19:57	चंद्र	23/01/2026 23:21
केतु	09/01/2026 12:47	सूर्य	17/01/2026 11:09	चंद्र	20/01/2026 06:00	मंगल	24/01/2026 01:28
शुक्र	11/01/2026 11:13	चंद्र	17/01/2026 14:40	मंगल	20/01/2026 13:03	राहु	24/01/2026 06:54
सूर्य	12/01/2026 01:09	मंगल	17/01/2026 17:08	राहु	21/01/2026 07:10	गुरु	24/01/2026 11:44
चंद्र	13/01/2026 00:21	राहु	17/01/2026 23:29	गुरु	21/01/2026 23:16	शनि	24/01/2026 17:28
मंगल	13/01/2026 16:36	गुरु	18/01/2026 05:07	शनि	22/01/2026 18:23	बुध	24/01/2026 22:36
राहु	15/01/2026 10:23	शनि	18/01/2026 11:48	बुध	23/01/2026 11:29	केतु	25/01/2026 00:42
गुरु	16/01/2026 23:32	बुध	18/01/2026 17:47	केतु	23/01/2026 18:31	शुक्र	25/01/2026 06:45
बुध - चंद्र - केतु - चंद्र		बुध - चंद्र - केतु - मंगल		बुध - चंद्र - केतु - राहु		बुध - चंद्र - केतु - गुरु	
25/01/2026 06:45		27/01/2026 19:07		29/01/2026 13:22		03/02/2026 02:02	
27/01/2026 19:07		29/01/2026 13:22		03/02/2026 02:02		07/02/2026 02:37	
चंद्र	25/01/2026 11:46	मंगल	27/01/2026 21:35	राहु	30/01/2026 05:40	गुरु	03/02/2026 14:54
मंगल	25/01/2026 15:18	राहु	28/01/2026 03:55	गुरु	30/01/2026 20:09	शनि	04/02/2026 06:12
राहु	26/01/2026 00:21	गुरु	28/01/2026 09:33	शनि	31/01/2026 13:22	बुध	04/02/2026 19:53
गुरु	26/01/2026 08:24	शनि	28/01/2026 16:14	बुध	01/02/2026 04:45	केतु	05/02/2026 01:31
शनि	26/01/2026 17:57	बुध	28/01/2026 22:14	केतु	01/02/2026 11:06	शुक्र	05/02/2026 17:37
बुध	27/01/2026 02:31	केतु	29/01/2026 00:41	शुक्र	02/02/2026 05:12	सूर्य	05/02/2026 22:27
केतु	27/01/2026 06:02	शुक्र	29/01/2026 07:44	सूर्य	02/02/2026 10:38	चंद्र	06/02/2026 06:30
शुक्र	27/01/2026 16:06	सूर्य	29/01/2026 09:51	चंद्र	02/02/2026 19:41	मंगल	06/02/2026 12:08
सूर्य	27/01/2026 19:07	चंद्र	29/01/2026 13:22	मंगल	03/02/2026 02:02	राहु	07/02/2026 02:37
बुध - चंद्र - केतु - शनि		बुध - चंद्र - केतु - बुध		बुध - चंद्र - शुक्र - शुक्र		बुध - चंद्र - शुक्र - सूर्य	
07/02/2026 02:37		11/02/2026 21:19		16/02/2026 03:57		02/03/2026 12:54	
11/02/2026 21:19		16/02/2026 03:57		02/03/2026 12:54		06/03/2026 20:23	
शनि	07/02/2026 20:47	बुध	12/02/2026 11:51	शुक्र	18/02/2026 13:26	सूर्य	02/03/2026 18:04
बुध	08/02/2026 13:02	केतु	12/02/2026 17:51	सूर्य	19/02/2026 06:41	चंद्र	03/03/2026 02:42
केतु	08/02/2026 19:43	शुक्र	13/02/2026 10:57	चंद्र	20/02/2026 11:26	मंगल	03/03/2026 08:44
शुक्र	09/02/2026 14:50	सूर्य	13/02/2026 16:05	मंगल	21/02/2026 07:33	राहु	04/03/2026 00:16
सूर्य	09/02/2026 20:34	चंद्र	14/02/2026 00:38	राहु	23/02/2026 11:18	गुरु	04/03/2026 14:03
चंद्र	10/02/2026 06:08	मंगल	14/02/2026 06:37	गुरु	25/02/2026 09:17	शनि	05/03/2026 06:27
मंगल	10/02/2026 12:49	राहु	14/02/2026 22:01	शनि	27/02/2026 15:55	बुध	05/03/2026 21:06
राहु	11/02/2026 06:01	गुरु	15/02/2026 11:42	बुध	01/03/2026 16:47	केतु	06/03/2026 03:08
गुरु	11/02/2026 21:19	शनि	16/02/2026 03:57	केतु	02/03/2026 12:54	शुक्र	06/03/2026 20:23



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा - प्राण

बुध - चंद्र - शुक्र - चंद्र		बुध - चंद्र - शुक्र - मंगल		बुध - चंद्र - शुक्र - राहु		बुध - चंद्र - शुक्र - गुरु	
06/03/2026 20:23		14/03/2026 00:52		19/03/2026 01:36		01/04/2026 00:04	
14/03/2026 00:52		19/03/2026 01:36		01/04/2026 00:04		12/04/2026 12:02	
चंद्र	07/03/2026 10:46	मंगल	14/03/2026 07:55	राहु	21/03/2026 00:10	गुरु	02/04/2026 12:52
मंगल	07/03/2026 20:49	राहु	15/03/2026 02:01	गुरु	22/03/2026 17:34	शनि	04/04/2026 08:33
राहु	08/03/2026 22:42	गुरु	15/03/2026 18:07	शनि	24/03/2026 18:43	बुध	05/04/2026 23:39
गुरु	09/03/2026 21:41	शनि	16/03/2026 13:14	बुध	26/03/2026 14:42	केतु	06/04/2026 15:45
शनि	11/03/2026 01:00	बुध	17/03/2026 06:20	केतु	27/03/2026 08:49	शुक्र	08/04/2026 13:45
बुध	12/03/2026 01:26	केतु	17/03/2026 13:23	शुक्र	29/03/2026 12:34	सूर्य	09/04/2026 03:32
केतु	12/03/2026 11:30	शुक्र	18/03/2026 09:30	सूर्य	30/03/2026 04:05	चंद्र	10/04/2026 02:32
शुक्र	13/03/2026 16:15	सूर्य	18/03/2026 15:32	चंद्र	31/03/2026 05:57	मंगल	10/04/2026 18:38
सूर्य	14/03/2026 00:52	चंद्र	19/03/2026 01:36	मंगल	01/04/2026 00:04	राहु	12/04/2026 12:02
बुध - चंद्र - शुक्र - शनि		बुध - चंद्र - शुक्र - बुध		बुध - चंद्र - शुक्र - केतु		बुध - चंद्र - सूर्य - सूर्य	
12/04/2026 12:02		26/04/2026 03:45		08/05/2026 08:57		13/05/2026 09:42	
26/04/2026 03:45		08/05/2026 08:57		13/05/2026 09:42		14/05/2026 16:44	
शनि	14/04/2026 15:55	बुध	27/04/2026 21:17	केतु	08/05/2026 16:00	सूर्य	13/05/2026 11:15
बुध	16/04/2026 14:21	केतु	28/04/2026 14:23	शुक्र	09/05/2026 12:07	चंद्र	13/05/2026 13:50
केतु	17/04/2026 09:28	शुक्र	30/04/2026 15:15	सूर्य	09/05/2026 18:10	मंगल	13/05/2026 15:39
शुक्र	19/04/2026 16:05	सूर्य	01/05/2026 05:55	चंद्र	10/05/2026 04:13	राहु	13/05/2026 20:18
सूर्य	20/04/2026 08:28	चंद्र	02/05/2026 06:21	मंगल	10/05/2026 11:16	गुरु	14/05/2026 00:26
चंद्र	21/04/2026 11:46	मंगल	02/05/2026 23:27	राहु	11/05/2026 05:22	शनि	14/05/2026 05:21
मंगल	22/04/2026 06:53	राहु	04/05/2026 19:26	गुरु	11/05/2026 21:28	बुध	14/05/2026 09:45
राहु	24/04/2026 08:03	गुरु	06/05/2026 10:32	शनि	12/05/2026 16:35	केतु	14/05/2026 11:34
गुरु	26/04/2026 03:45	शनि	08/05/2026 08:57	बुध	13/05/2026 09:42	शुक्र	14/05/2026 16:44
बुध - चंद्र - सूर्य - चंद्र		बुध - चंद्र - सूर्य - मंगल		बुध - चंद्र - सूर्य - राहु		बुध - चंद्र - सूर्य - गुरु	
14/05/2026 16:44		16/05/2026 20:29		18/05/2026 08:42		22/05/2026 05:50	
16/05/2026 20:29		18/05/2026 08:42		22/05/2026 05:50		25/05/2026 16:38	
चंद्र	14/05/2026 21:03	मंगल	16/05/2026 22:36	राहु	18/05/2026 22:40	गुरु	22/05/2026 16:53
मंगल	15/05/2026 00:04	राहु	17/05/2026 04:02	गुरु	19/05/2026 11:06	शनि	23/05/2026 05:59
राहु	15/05/2026 07:50	गुरु	17/05/2026 08:51	शनि	20/05/2026 01:50	बुध	23/05/2026 17:43
गुरु	15/05/2026 14:44	शनि	17/05/2026 14:36	बुध	20/05/2026 15:02	केतु	23/05/2026 22:33
शनि	15/05/2026 22:55	बुध	17/05/2026 19:43	केतु	20/05/2026 20:28	शुक्र	24/05/2026 12:21
बुध	16/05/2026 06:15	केतु	17/05/2026 21:50	शुक्र	21/05/2026 11:59	सूर्य	24/05/2026 16:29
केतु	16/05/2026 09:16	शुक्र	18/05/2026 03:52	सूर्य	21/05/2026 16:39	चंद्र	24/05/2026 23:23
शुक्र	16/05/2026 17:54	सूर्य	18/05/2026 05:41	चंद्र	22/05/2026 00:24	मंगल	25/05/2026 04:13
सूर्य	16/05/2026 20:29	चंद्र	18/05/2026 08:42	मंगल	22/05/2026 05:50	राहु	25/05/2026 16:38



FUTUREPOINT
Astro Solutions



षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 0 वर्ष 7 मास 1 दिन

बुध 17 वर्ष	शुक्र 18 वर्ष	सूर्य 11 वर्ष	मंगल 12 वर्ष	गुरु 13 वर्ष
09/09/1964	12/04/1965	13/04/1983	13/04/1994	13/04/2006
12/04/1965	13/04/1983	13/04/1994	13/04/2006	13/04/2019
00/00/0000	शुक्र 28/01/1968	सूर्य 28/04/1984	मंगल 10/07/1995	गुरु 27/09/2007
00/00/0000	सूर्य 12/10/1969	मंगल 17/06/1985	गुरु 12/11/1996	शनि 22/04/2009
00/00/0000	मंगल 23/08/1971	गुरु 11/09/1986	शनि 25/04/1998	केतु 27/12/2010
00/00/0000	गुरु 29/08/1973	शनि 09/01/1988	केतु 13/11/1999	चंद्र 12/10/2012
00/00/0000	शनि 31/10/1975	केतु 11/06/1989	चंद्र 10/07/2001	बुध 08/09/2014
00/00/0000	केतु 28/02/1978	चंद्र 17/12/1990	बुध 13/04/2003	शुक्र 13/09/2016
09/09/1964	चंद्र 22/08/1980	बुध 28/07/1992	शुक्र 21/02/2005	सूर्य 08/12/2017
चंद्र 12/04/1965	बुध 13/04/1983	शुक्र 13/04/1994	सूर्य 13/04/2006	मंगल 13/04/2019

शनि 14 वर्ष	केतु 15 वर्ष	चंद्र 16 वर्ष	बुध 17 वर्ष
13/04/2019	12/04/2033	12/04/2048	12/04/2064
12/04/2033	12/04/2048	12/04/2064	09/09/2080
शनि 20/12/2020	केतु 22/03/2035	चंद्र 27/06/2050	बुध 09/10/2066
केतु 12/10/2022	चंद्र 16/04/2037	बुध 31/10/2052	शुक्र 30/05/2069
चंद्र 17/09/2024	बुध 27/06/2039	शुक्र 25/04/2055	सूर्य 08/01/2071
बुध 06/10/2026	शुक्र 25/10/2041	सूर्य 31/10/2056	मंगल 12/10/2072
शुक्र 07/12/2028	सूर्य 28/03/2043	मंगल 27/06/2058	गुरु 08/09/2074
सूर्य 06/04/2030	मंगल 15/10/2044	गुरु 12/04/2060	शनि 26/09/2076
मंगल 17/09/2031	गुरु 21/06/2046	शनि 18/03/2062	केतु 08/12/2078
गुरु 12/04/2033	शनि 12/04/2048	केतु 12/04/2064	चंद्र 09/09/2080

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - चंद्र 09/09/1964 12/04/1965	शुक्र - शुक्र 12/04/1965 28/01/1968	शुक्र - सूर्य 28/01/1968 12/10/1969	शुक्र - मंगल 12/10/1969 23/08/1971	शुक्र - गुरु 23/08/1971 29/08/1973
00/00/0000	शुक्र 18/09/1965	सूर्य 27/03/1968	मंगल 21/12/1969	गुरु 14/11/1971
00/00/0000	सूर्य 23/12/1965	मंगल 30/05/1968	गुरु 08/03/1970	शनि 11/02/1972
00/00/0000	मंगल 08/04/1966	गुरु 08/08/1968	शनि 29/05/1970	केतु 16/05/1972
00/00/0000	गुरु 31/07/1966	शनि 22/10/1968	केतु 25/08/1970	चंद्र 26/08/1972
09/09/1964	शनि 01/12/1966	केतु 11/01/1969	चंद्र 26/11/1970	बुध 11/12/1972
गुरु 10/09/1964	केतु 12/04/1967	चंद्र 07/04/1969	बुध 06/03/1971	शुक्र 05/04/1973
शनि 23/12/1964	चंद्र 31/08/1967	बुध 07/07/1969	शुक्र 20/06/1971	सूर्य 14/06/1973
केतु 12/04/1965	बुध 28/01/1968	शुक्र 12/10/1969	सूर्य 23/08/1971	मंगल 29/08/1973
शुक्र - शनि 29/08/1973 31/10/1975	शुक्र - केतु 31/10/1975 28/02/1978	शुक्र - चंद्र 28/02/1978 22/08/1980	शुक्र - बुध 22/08/1980 13/04/1983	सूर्य - सूर्य 13/04/1983 28/04/1984
शनि 03/12/1973	केतु 18/02/1976	चंद्र 03/07/1978	बुध 11/01/1981	सूर्य 19/05/1983
केतु 15/03/1974	चंद्र 15/06/1976	बुध 13/11/1978	शुक्र 09/06/1981	मंगल 27/06/1983
चंद्र 03/07/1974	बुध 17/10/1976	शुक्र 02/04/1979	सूर्य 08/09/1981	गुरु 09/08/1983
बुध 27/10/1974	शुक्र 26/02/1977	सूर्य 27/06/1979	मंगल 17/12/1981	शनि 24/09/1983
शुक्र 27/02/1975	सूर्य 18/05/1977	मंगल 29/09/1979	गुरु 04/04/1982	केतु 12/11/1983
सूर्य 13/05/1975	मंगल 14/08/1977	गुरु 09/01/1980	शनि 29/07/1982	चंद्र 04/01/1984
मंगल 03/08/1975	गुरु 17/11/1977	शनि 27/04/1980	केतु 01/12/1982	बुध 29/02/1984
गुरु 31/10/1975	शनि 28/02/1978	केतु 22/08/1980	चंद्र 13/04/1983	शुक्र 28/04/1984
सूर्य - मंगल 28/04/1984 17/06/1985	सूर्य - गुरु 17/06/1985 11/09/1986	सूर्य - शनि 11/09/1986 09/01/1988	सूर्य - केतु 09/01/1988 11/06/1989	सूर्य - चंद्र 11/06/1989 17/12/1990
मंगल 10/06/1984	गुरु 07/08/1985	शनि 08/11/1986	केतु 16/03/1988	चंद्र 27/08/1989
गुरु 26/07/1984	शनि 30/09/1985	केतु 10/01/1987	चंद्र 26/05/1988	बुध 16/11/1989
शनि 15/09/1984	केतु 28/11/1985	चंद्र 18/03/1987	बुध 11/08/1988	शुक्र 10/02/1990
केतु 07/11/1984	चंद्र 29/01/1986	बुध 28/05/1987	शुक्र 30/10/1988	सूर्य 03/04/1990
चंद्र 04/01/1985	बुध 05/04/1986	शुक्र 11/08/1987	सूर्य 19/12/1988	मंगल 31/05/1990
बुध 06/03/1985	शुक्र 13/06/1986	सूर्य 26/09/1987	मंगल 10/02/1989	गुरु 01/08/1990
शुक्र 09/05/1985	सूर्य 26/07/1986	मंगल 15/11/1987	गुरु 09/04/1989	शनि 07/10/1990
सूर्य 17/06/1985	मंगल 11/09/1986	गुरु 09/01/1988	शनि 11/06/1989	केतु 17/12/1990

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - बुध 17/12/1990 28/07/1992	सूर्य - शुक्र 28/07/1992 13/04/1994	मंगल - मंगल 13/04/1994 10/07/1995	मंगल - गुरु 10/07/1995 12/11/1996	मंगल - शनि 12/11/1996 25/04/1998
बुध 14/03/1991 शुक्र 13/06/1991 सूर्य 08/08/1991 मंगल 08/10/1991 गुरु 13/12/1991 शनि 22/02/1992 केतु 08/05/1992 चंद्र 28/07/1992	शुक्र 02/11/1992 सूर्य 31/12/1992 मंगल 06/03/1993 गुरु 14/05/1993 शनि 29/07/1993 केतु 17/10/1993 चंद्र 11/01/1994 बुध 13/04/1994	मंगल 30/05/1994 गुरु 19/07/1994 शनि 12/09/1994 केतु 10/11/1994 चंद्र 11/01/1995 बुध 19/03/1995 शुक्र 28/05/1995 सूर्य 10/07/1995	गुरु 03/09/1995 शनि 01/11/1995 केतु 04/01/1996 चंद्र 12/03/1996 बुध 23/05/1996 शुक्र 07/08/1996 सूर्य 22/09/1996 मंगल 12/11/1996	शनि 15/01/1997 केतु 24/03/1997 चंद्र 05/06/1997 बुध 22/08/1997 शुक्र 12/11/1997 सूर्य 01/01/1998 मंगल 25/02/1998 गुरु 25/04/1998
मंगल - केतु 25/04/1998 13/11/1999	मंगल - चंद्र 13/11/1999 10/07/2001	मंगल - बुध 10/07/2001 13/04/2003	मंगल - शुक्र 13/04/2003 21/02/2005	मंगल - सूर्य 21/02/2005 13/04/2006
केतु 07/07/1998 चंद्र 24/09/1998 बुध 16/12/1998 शुक्र 14/03/1999 सूर्य 06/05/1999 मंगल 04/07/1999 गुरु 06/09/1999 शनि 13/11/1999	चंद्र 04/02/2000 बुध 03/05/2000 शुक्र 05/08/2000 सूर्य 01/10/2000 मंगल 03/12/2000 गुरु 08/02/2001 शनि 22/04/2001 केतु 10/07/2001	बुध 12/10/2001 शुक्र 19/01/2002 सूर्य 21/03/2002 मंगल 27/05/2002 गुरु 07/08/2002 शनि 23/10/2002 केतु 14/01/2003 चंद्र 13/04/2003	शुक्र 27/07/2003 सूर्य 30/09/2003 मंगल 09/12/2003 गुरु 23/02/2004 शनि 16/05/2004 केतु 12/08/2004 चंद्र 13/11/2004 बुध 21/02/2005	सूर्य 01/04/2005 मंगल 14/05/2005 गुरु 30/06/2005 शनि 19/08/2005 केतु 12/10/2005 चंद्र 08/12/2005 बुध 07/02/2006 शुक्र 13/04/2006
गुरु - गुरु 13/04/2006 27/09/2007	गुरु - शनि 27/09/2007 22/04/2009	गुरु - केतु 22/04/2009 27/12/2010	गुरु - चंद्र 27/12/2010 12/10/2012	गुरु - बुध 12/10/2012 08/09/2014
गुरु 11/06/2006 शनि 14/08/2006 केतु 22/10/2006 चंद्र 04/01/2007 बुध 23/03/2007 शुक्र 13/06/2007 सूर्य 03/08/2007 मंगल 27/09/2007	शनि 05/12/2007 केतु 17/02/2008 चंद्र 06/05/2008 बुध 29/07/2008 शुक्र 26/10/2008 सूर्य 19/12/2008 मंगल 17/02/2009 गुरु 22/04/2009	केतु 10/07/2009 चंद्र 03/10/2009 बुध 01/01/2010 शुक्र 06/04/2010 सूर्य 03/06/2010 मंगल 06/08/2010 गुरु 14/10/2010 शनि 27/12/2010	चंद्र 27/03/2011 बुध 01/07/2011 शुक्र 11/10/2011 सूर्य 12/12/2011 मंगल 18/02/2012 गुरु 01/05/2012 शनि 19/07/2012 केतु 12/10/2012	बुध 22/01/2013 शुक्र 10/05/2013 सूर्य 15/07/2013 मंगल 25/09/2013 गुरु 12/12/2013 शनि 06/03/2014 केतु 04/06/2014 चंद्र 08/09/2014

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य	गुरु - मंगल	शनि - शनि	शनि - केतु
08/09/2014	13/09/2016	08/12/2017	13/04/2019	20/12/2020
13/09/2016	08/12/2017	13/04/2019	20/12/2020	12/10/2022
शुक्र 31/12/2014	सूर्य 26/10/2016	मंगल 27/01/2018	शनि 26/06/2019	केतु 16/03/2021
सूर्य 11/03/2015	मंगल 12/12/2016	गुरु 24/03/2018	केतु 14/09/2019	चंद्र 15/06/2021
मंगल 26/05/2015	गुरु 31/01/2017	शनि 22/05/2018	चंद्र 08/12/2019	बुध 20/09/2021
गुरु 17/08/2015	शनि 26/03/2017	केतु 24/07/2018	बुध 08/03/2020	शुक्र 31/12/2021
शनि 14/11/2015	केतु 24/05/2017	चंद्र 30/09/2018	शुक्र 11/06/2020	सूर्य 04/03/2022
केतु 17/02/2016	चंद्र 25/07/2017	बुध 11/12/2018	सूर्य 09/08/2020	मंगल 11/05/2022
चंद्र 28/05/2016	बुध 29/09/2017	शुक्र 25/02/2019	मंगल 12/10/2020	गुरु 24/07/2022
बुध 13/09/2016	शुक्र 08/12/2017	सूर्य 13/04/2019	गुरु 20/12/2020	शनि 12/10/2022
शनि - चंद्र	शनि - बुध	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य	शनि - मंगल
12/10/2022	17/09/2024	06/10/2026	07/12/2028	06/04/2030
17/09/2024	06/10/2026	07/12/2028	06/04/2030	17/09/2031
चंद्र 18/01/2023	बुध 04/01/2025	शुक्र 06/02/2027	सूर्य 22/01/2029	मंगल 31/05/2030
बुध 01/05/2023	शुक्र 01/05/2025	सूर्य 22/04/2027	मंगल 14/03/2029	गुरु 29/07/2030
शुक्र 18/08/2023	सूर्य 11/07/2025	मंगल 13/07/2027	गुरु 07/05/2029	शनि 01/10/2030
सूर्य 24/10/2023	मंगल 26/09/2025	गुरु 10/10/2027	शनि 04/07/2029	केतु 09/12/2030
मंगल 05/01/2024	गुरु 19/12/2025	शनि 14/01/2028	केतु 05/09/2029	चंद्र 20/02/2031
गुरु 24/03/2024	शनि 20/03/2026	केतु 26/04/2028	चंद्र 11/11/2029	बुध 08/05/2031
शनि 17/06/2024	केतु 25/06/2026	चंद्र 13/08/2028	बुध 21/01/2030	शुक्र 29/07/2031
केतु 17/09/2024	चंद्र 06/10/2026	बुध 07/12/2028	शुक्र 06/04/2030	सूर्य 17/09/2031
शनि - गुरु	केतु - केतु	केतु - चंद्र	केतु - बुध	केतु - शुक्र
17/09/2031	12/04/2033	22/03/2035	16/04/2037	27/06/2039
12/04/2033	22/03/2035	16/04/2037	27/06/2039	25/10/2041
गुरु 21/11/2031	केतु 13/07/2033	चंद्र 04/07/2035	बुध 11/08/2037	शुक्र 06/11/2039
शनि 29/01/2032	चंद्र 19/10/2033	बुध 23/10/2035	शुक्र 14/12/2037	सूर्य 26/01/2040
केतु 12/04/2032	बुध 31/01/2034	शुक्र 17/02/2036	सूर्य 28/02/2038	मंगल 23/04/2040
चंद्र 30/06/2032	शुक्र 20/05/2034	सूर्य 29/04/2036	मंगल 22/05/2038	गुरु 27/07/2040
बुध 22/09/2032	सूर्य 27/07/2034	मंगल 16/07/2036	गुरु 20/08/2038	शनि 07/11/2040
शुक्र 20/12/2032	मंगल 08/10/2034	गुरु 09/10/2036	शनि 25/11/2038	केतु 25/02/2041
सूर्य 12/02/2033	गुरु 26/12/2034	शनि 08/01/2037	केतु 09/03/2039	चंद्र 22/06/2041
मंगल 12/04/2033	शनि 22/03/2035	केतु 16/04/2037	चंद्र 27/06/2039	बुध 25/10/2041

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - सूर्य	केतु - मंगल	केतु - गुरु	केतु - शनि	चंद्र - चंद्र
25/10/2041	28/03/2043	15/10/2044	21/06/2046	12/04/2048
28/03/2043	15/10/2044	21/06/2046	12/04/2048	27/06/2050
सूर्य 13/12/2041	मंगल 26/05/2043	गुरु 23/12/2044	शनि 09/09/2046	चंद्र 01/08/2048
मंगल 05/02/2042	गुरु 28/07/2043	शनि 07/03/2045	केतु 03/12/2046	बुध 27/11/2048
गुरु 04/04/2042	शनि 05/10/2043	केतु 25/05/2045	चंद्र 04/03/2047	शुक्र 02/04/2049
शनि 06/06/2042	केतु 17/12/2043	चंद्र 18/08/2045	बुध 09/06/2047	सूर्य 17/06/2049
केतु 12/08/2042	चंद्र 04/03/2044	बुध 16/11/2045	शुक्र 20/09/2047	मंगल 08/09/2049
चंद्र 22/10/2042	बुध 26/05/2044	शुक्र 19/02/2046	सूर्य 22/11/2047	गुरु 08/12/2049
बुध 07/01/2043	शुक्र 22/08/2044	सूर्य 18/04/2046	मंगल 29/01/2048	शनि 15/03/2050
शुक्र 28/03/2043	सूर्य 15/10/2044	मंगल 21/06/2046	गुरु 12/04/2048	केतु 27/06/2050
चंद्र - बुध	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	चंद्र - मंगल	चंद्र - गुरु
27/06/2050	31/10/2052	25/04/2055	31/10/2056	27/06/2058
31/10/2052	25/04/2055	31/10/2056	27/06/2058	12/04/2060
बुध 31/10/2050	शुक्र 20/03/2053	सूर्य 17/06/2055	मंगल 01/01/2057	गुरु 09/09/2058
शुक्र 13/03/2051	सूर्य 14/06/2053	मंगल 13/08/2055	गुरु 10/03/2057	शनि 27/11/2058
सूर्य 02/06/2051	मंगल 16/09/2053	गुरु 14/10/2055	शनि 22/05/2057	केतु 19/02/2059
मंगल 29/08/2051	गुरु 27/12/2053	शनि 20/12/2055	केतु 08/08/2057	चंद्र 21/05/2059
गुरु 03/12/2051	शनि 15/04/2054	केतु 01/03/2056	चंद्र 30/10/2057	बुध 25/08/2059
शनि 16/03/2052	केतु 10/08/2054	चंद्र 16/05/2056	बुध 27/01/2058	शुक्र 04/12/2059
केतु 05/07/2052	चंद्र 14/12/2054	बुध 06/08/2056	शुक्र 01/05/2058	सूर्य 04/02/2060
चंद्र 31/10/2052	बुध 25/04/2055	शुक्र 31/10/2056	सूर्य 27/06/2058	मंगल 12/04/2060
चंद्र - शनि	चंद्र - केतु	बुध - बुध	बुध - शुक्र	बुध - सूर्य
12/04/2060	18/03/2062	12/04/2064	09/10/2066	30/05/2069
18/03/2062	12/04/2064	09/10/2066	30/05/2069	08/01/2071
शनि 06/07/2060	केतु 24/06/2062	बुध 23/08/2064	शुक्र 08/03/2067	सूर्य 24/07/2069
केतु 05/10/2060	चंद्र 06/10/2062	शुक्र 12/01/2065	सूर्य 07/06/2067	मंगल 23/09/2069
चंद्र 11/01/2061	बुध 25/01/2063	सूर्य 08/04/2065	मंगल 15/09/2067	गुरु 28/11/2069
बुध 24/04/2061	शुक्र 22/05/2063	मंगल 11/07/2065	गुरु 01/01/2068	शनि 07/02/2070
शुक्र 12/08/2061	सूर्य 02/08/2063	गुरु 21/10/2065	शनि 26/04/2068	केतु 25/04/2070
सूर्य 17/10/2061	मंगल 19/10/2063	शनि 08/02/2066	केतु 28/08/2068	चंद्र 15/07/2070
मंगल 29/12/2061	गुरु 12/01/2064	केतु 06/06/2066	चंद्र 08/01/2069	बुध 09/10/2070
गुरु 18/03/2062	शनि 12/04/2064	चंद्र 09/10/2066	बुध 30/05/2069	शुक्र 08/01/2071

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : मंगल 0 वर्ष 1 मास 28 दिन

मंगल 5 वर्ष 09/09/1964 07/11/1964	राहु 12 वर्ष 07/11/1964 07/11/1976	गुरु 11 वर्ष 07/11/1976 09/07/1987	शनि 13 वर्ष 09/07/1987 09/03/2000	बुध 11 वर्ष 09/03/2000 09/07/2011
00/00/0000	राहु 27/08/1966	गुरु 11/04/1978	शनि 11/07/1989	बुध 16/10/2001
00/00/0000	गुरु 02/04/1968	शनि 19/12/1979	बुध 27/04/1991	केतु 15/06/2002
00/00/0000	शनि 25/02/1970	बुध 23/06/1981	केतु 22/01/1992	शुक्र 05/05/2004
00/00/0000	बुध 08/11/1971	केतु 05/02/1982	शुक्र 03/03/1994	सूर्य 28/11/2004
00/00/0000	केतु 21/07/1972	शुक्र 16/11/1983	सूर्य 21/10/1994	चंद्र 08/11/2005
00/00/0000	शुक्र 21/07/1974	सूर्य 29/05/1984	चंद्र 10/11/1995	मंगल 07/07/2006
00/00/0000	सूर्य 25/02/1975	चंद्र 19/04/1985	मंगल 06/08/1996	राहु 19/03/2008
09/09/1964	चंद्र 26/02/1976	मंगल 02/12/1985	राहु 01/07/1998	गुरु 22/09/2009
चंद्र 07/11/1964	मंगल 07/11/1976	राहु 09/07/1987	गुरु 09/03/2000	शनि 09/07/2011
केतु 5 वर्ष 09/07/2011 09/03/2016	शुक्र 13 वर्ष 09/03/2016 09/07/2029	सूर्य 4 वर्ष 09/07/2029 09/07/2033	चंद्र 7 वर्ष 09/07/2033 09/03/2040	मंगल 5 वर्ष 09/03/2040 09/09/2044
केतु 17/10/2011	शुक्र 30/05/2018	सूर्य 20/09/2029	चंद्र 28/01/2034	मंगल 16/06/2040
शुक्र 27/07/2012	सूर्य 28/01/2019	चंद्र 20/01/2030	मंगल 19/06/2034	राहु 27/02/2041
सूर्य 20/10/2012	चंद्र 09/03/2020	मंगल 15/04/2030	राहु 19/06/2035	गुरु 12/10/2041
चंद्र 11/03/2013	मंगल 18/12/2020	राहु 20/11/2030	गुरु 09/05/2036	शनि 09/07/2042
मंगल 19/06/2013	राहु 18/12/2022	गुरु 03/06/2031	शनि 29/05/2037	बुध 08/03/2043
राहु 01/03/2014	गुरु 28/09/2024	शनि 20/01/2032	बुध 09/05/2038	केतु 15/06/2043
गुरु 15/10/2014	शनि 08/11/2026	बुध 14/08/2032	केतु 28/09/2038	शुक्र 25/03/2044
शनि 11/07/2015	बुध 28/09/2028	केतु 07/11/2032	शुक्र 08/11/2039	सूर्य 18/06/2044
बुध 09/03/2016	केतु 09/07/2029	शुक्र 09/07/2033	सूर्य 09/03/2040	चंद्र 09/09/2044

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - चंद्र	राहु - राहु	राहु - गुरु	राहु - शनि	राहु - बुध
09/09/1964	07/11/1964	27/08/1966	02/04/1968	25/02/1970
07/11/1964	27/08/1966	02/04/1968	25/02/1970	08/11/1971
00/00/0000	राहु 14/02/1965	गुरु 13/11/1966	शनि 21/07/1968	बुध 24/05/1970
00/00/0000	गुरु 13/05/1965	शनि 13/02/1967	बुध 27/10/1968	केतु 29/06/1970
00/00/0000	शनि 25/08/1965	बुध 07/05/1967	केतु 07/12/1968	शुक्र 11/10/1970
00/00/0000	बुध 26/11/1965	केतु 10/06/1967	शुक्र 02/04/1969	सूर्य 11/11/1970
09/09/1964	केतु 03/01/1966	शुक्र 16/09/1967	सूर्य 06/05/1969	चंद्र 02/01/1971
बुध 29/09/1964	शुक्र 23/04/1966	सूर्य 15/10/1967	चंद्र 03/07/1969	मंगल 07/02/1971
केतु 08/10/1964	सूर्य 26/05/1966	चंद्र 02/12/1967	मंगल 13/08/1969	राहु 11/05/1971
शुक्र 31/10/1964	चंद्र 19/07/1966	मंगल 06/01/1968	राहु 25/11/1969	गुरु 02/08/1971
सूर्य 07/11/1964	मंगल 27/08/1966	राहु 02/04/1968	गुरु 25/02/1970	शनि 08/11/1971
राहु - केतु	राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र	राहु - मंगल
08/11/1971	21/07/1972	21/07/1974	25/02/1975	26/02/1976
21/07/1972	21/07/1974	25/02/1975	26/02/1976	07/11/1976
केतु 23/11/1971	शुक्र 20/11/1972	सूर्य 01/08/1974	चंद्र 28/03/1975	मंगल 12/03/1976
शुक्र 05/01/1972	सूर्य 26/12/1972	चंद्र 20/08/1974	मंगल 18/04/1975	राहु 19/04/1976
सूर्य 17/01/1972	चंद्र 25/02/1973	मंगल 01/09/1974	राहु 12/06/1975	गुरु 23/05/1976
चंद्र 08/02/1972	मंगल 09/04/1973	राहु 04/10/1974	गुरु 31/07/1975	शनि 03/07/1976
मंगल 23/02/1972	राहु 27/07/1973	गुरु 02/11/1974	शनि 27/09/1975	बुध 08/08/1976
राहु 01/04/1972	गुरु 02/11/1973	शनि 07/12/1974	बुध 17/11/1975	केतु 23/08/1976
गुरु 05/05/1972	शनि 25/02/1974	बुध 07/01/1975	केतु 09/12/1975	शुक्र 04/10/1976
शनि 15/06/1972	बुध 09/06/1974	केतु 20/01/1975	शुक्र 07/02/1976	सूर्य 17/10/1976
बुध 21/07/1972	केतु 21/07/1974	शुक्र 25/02/1975	सूर्य 26/02/1976	चंद्र 07/11/1976
गुरु - गुरु	गुरु - शनि	गुरु - बुध	गुरु - केतु	गुरु - शुक्र
07/11/1976	11/04/1978	19/12/1979	23/06/1981	05/02/1982
11/04/1978	19/12/1979	23/06/1981	05/02/1982	16/11/1983
गुरु 16/01/1977	शनि 18/07/1978	बुध 06/03/1980	केतु 06/07/1981	शुक्र 24/05/1982
शनि 08/04/1977	बुध 13/10/1978	केतु 07/04/1980	शुक्र 13/08/1981	सूर्य 26/06/1982
बुध 20/06/1977	केतु 18/11/1978	शुक्र 08/07/1980	सूर्य 24/08/1981	चंद्र 19/08/1982
केतु 21/07/1977	शुक्र 01/03/1979	सूर्य 05/08/1980	चंद्र 12/09/1981	मंगल 26/09/1982
शुक्र 15/10/1977	सूर्य 01/04/1979	चंद्र 20/09/1980	मंगल 25/09/1981	राहु 01/01/1983
सूर्य 10/11/1977	चंद्र 22/05/1979	मंगल 22/10/1980	राहु 29/10/1981	गुरु 29/03/1983
चंद्र 24/12/1977	मंगल 27/06/1979	राहु 13/01/1981	गुरु 29/11/1981	शनि 09/07/1983
मंगल 23/01/1978	राहु 27/09/1979	गुरु 27/03/1981	शनि 04/01/1982	बुध 09/10/1983
राहु 11/04/1978	गुरु 19/12/1979	शनि 23/06/1981	बुध 05/02/1982	केतु 16/11/1983

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - सूर्य 16/11/1983 29/05/1984	गुरु - चंद्र 29/05/1984 19/04/1985	गुरु - मंगल 19/04/1985 02/12/1985	गुरु - राहु 02/12/1985 09/07/1987	शनि - शनि 09/07/1987 11/07/1989
सूर्य 26/11/1983 चंद्र 12/12/1983 मंगल 24/12/1983 राहु 22/01/1984 गुरु 17/02/1984 शनि 19/03/1984 बुध 15/04/1984 केतु 27/04/1984 शुक्र 29/05/1984	चंद्र 25/06/1984 मंगल 14/07/1984 राहु 01/09/1984 गुरु 14/10/1984 शनि 04/12/1984 बुध 19/01/1985 केतु 07/02/1985 शुक्र 02/04/1985 सूर्य 19/04/1985	मंगल 02/05/1985 राहु 05/06/1985 गुरु 05/07/1985 शनि 10/08/1985 बुध 12/09/1985 केतु 25/09/1985 शुक्र 02/11/1985 सूर्य 13/11/1985 चंद्र 02/12/1985	राहु 28/02/1986 गुरु 17/05/1986 शनि 17/08/1986 बुध 08/11/1986 केतु 12/12/1986 शुक्र 19/03/1987 सूर्य 18/04/1987 चंद्र 05/06/1987 मंगल 09/07/1987	शनि 02/11/1987 बुध 14/02/1988 केतु 28/03/1988 शुक्र 28/07/1988 सूर्य 03/09/1988 चंद्र 03/11/1988 मंगल 15/12/1988 राहु 04/04/1989 गुरु 11/07/1989
शनि - बुध 11/07/1989 27/04/1991	शनि - केतु 27/04/1991 22/01/1992	शनि - शुक्र 22/01/1992 03/03/1994	शनि - सूर्य 03/03/1994 21/10/1994	शनि - चंद्र 21/10/1994 10/11/1995
बुध 12/10/1989 केतु 19/11/1989 शुक्र 08/03/1990 सूर्य 10/04/1990 चंद्र 04/06/1990 मंगल 12/07/1990 राहु 18/10/1990 गुरु 14/01/1991 शनि 27/04/1991	केतु 13/05/1991 शुक्र 27/06/1991 सूर्य 11/07/1991 चंद्र 02/08/1991 मंगल 18/08/1991 राहु 27/09/1991 गुरु 02/11/1991 शनि 15/12/1991 बुध 22/01/1992	शुक्र 30/05/1992 सूर्य 07/07/1992 चंद्र 10/09/1992 मंगल 25/10/1992 राहु 17/02/1993 गुरु 31/05/1993 शनि 30/09/1993 बुध 17/01/1994 केतु 03/03/1994	सूर्य 15/03/1994 चंद्र 03/04/1994 मंगल 17/04/1994 राहु 21/05/1994 गुरु 21/06/1994 शनि 28/07/1994 बुध 30/08/1994 केतु 12/09/1994 शुक्र 21/10/1994	चंद्र 22/11/1994 मंगल 14/12/1994 राहु 10/02/1995 गुरु 02/04/1995 शनि 03/06/1995 बुध 27/07/1995 केतु 19/08/1995 शुक्र 22/10/1995 सूर्य 10/11/1995
शनि - मंगल 10/11/1995 06/08/1996	शनि - राहु 06/08/1996 01/07/1998	शनि - गुरु 01/07/1998 09/03/2000	बुध - बुध 09/03/2000 16/10/2001	बुध - केतु 16/10/2001 15/06/2002
मंगल 26/11/1995 राहु 05/01/1996 गुरु 10/02/1996 शनि 24/03/1996 बुध 01/05/1996 केतु 17/05/1996 शुक्र 01/07/1996 सूर्य 15/07/1996 चंद्र 06/08/1996	राहु 18/11/1996 गुरु 19/02/1997 शनि 09/06/1997 बुध 15/09/1997 केतु 25/10/1997 शुक्र 18/02/1998 सूर्य 25/03/1998 चंद्र 22/05/1998 मंगल 01/07/1998	गुरु 21/09/1998 शनि 28/12/1998 बुध 25/03/1999 केतु 30/04/1999 शुक्र 11/08/1999 सूर्य 11/09/1999 चंद्र 01/11/1999 मंगल 07/12/1999 राहु 09/03/2000	बुध 31/05/2000 केतु 04/07/2000 शुक्र 10/10/2000 सूर्य 08/11/2000 चंद्र 27/12/2000 मंगल 30/01/2001 राहु 28/04/2001 गुरु 15/07/2001 शनि 16/10/2001	केतु 30/10/2001 शुक्र 10/12/2001 सूर्य 22/12/2001 चंद्र 11/01/2002 मंगल 25/01/2002 राहु 02/03/2002 गुरु 03/04/2002 शनि 12/05/2002 बुध 15/06/2002



FUTUREPOINT
Astro Solutions



त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शुक्र 15/06/2002 05/05/2004	बुध - सूर्य 05/05/2004 28/11/2004	बुध - चंद्र 28/11/2004 08/11/2005	बुध - मंगल 08/11/2005 07/07/2006	बुध - राहु 07/07/2006 19/03/2008
शुक्र 08/10/2002 सूर्य 11/11/2002 चंद्र 08/01/2003 मंगल 17/02/2003 राहु 31/05/2003 गुरु 31/08/2003 शनि 19/12/2003 बुध 25/03/2004 केतु 05/05/2004	सूर्य 15/05/2004 चंद्र 01/06/2004 मंगल 13/06/2004 राहु 14/07/2004 गुरु 11/08/2004 शनि 13/09/2004 बुध 12/10/2004 केतु 24/10/2004 शुक्र 28/11/2004	चंद्र 26/12/2004 मंगल 16/01/2005 राहु 08/03/2005 गुरु 23/04/2005 शनि 17/06/2005 बुध 05/08/2005 केतु 25/08/2005 शुक्र 21/10/2005 सूर्य 08/11/2005	मंगल 22/11/2005 राहु 28/12/2005 गुरु 29/01/2006 शनि 08/03/2006 बुध 12/04/2006 केतु 26/04/2006 शुक्र 05/06/2006 सूर्य 17/06/2006 चंद्र 07/07/2006	राहु 08/10/2006 गुरु 30/12/2006 शनि 07/04/2007 बुध 04/07/2007 केतु 10/08/2007 शुक्र 21/11/2007 सूर्य 22/12/2007 चंद्र 12/02/2008 मंगल 19/03/2008
बुध - गुरु 19/03/2008 22/09/2009	बुध - शनि 22/09/2009 09/07/2011	केतु - केतु 09/07/2011 17/10/2011	केतु - शुक्र 17/10/2011 27/07/2012	केतु - सूर्य 27/07/2012 20/10/2012
गुरु 01/06/2008 शनि 27/08/2008 बुध 13/11/2008 केतु 15/12/2008 शुक्र 17/03/2009 सूर्य 14/04/2009 चंद्र 30/05/2009 मंगल 01/07/2009 राहु 22/09/2009	शनि 04/01/2010 बुध 07/04/2010 केतु 15/05/2010 शुक्र 01/09/2010 सूर्य 04/10/2010 चंद्र 27/11/2010 मंगल 05/01/2011 राहु 13/04/2011 गुरु 09/07/2011	केतु 15/07/2011 शुक्र 01/08/2011 सूर्य 06/08/2011 चंद्र 14/08/2011 मंगल 20/08/2011 राहु 04/09/2011 गुरु 17/09/2011 शनि 03/10/2011 बुध 17/10/2011	शुक्र 03/12/2011 सूर्य 17/12/2011 चंद्र 10/01/2012 मंगल 27/01/2012 राहु 09/03/2012 गुरु 16/04/2012 शनि 31/05/2012 बुध 10/07/2012 केतु 27/07/2012	सूर्य 31/07/2012 चंद्र 07/08/2012 मंगल 12/08/2012 राहु 25/08/2012 गुरु 05/09/2012 शनि 19/09/2012 बुध 01/10/2012 केतु 06/10/2012 शुक्र 20/10/2012
केतु - चंद्र 20/10/2012 11/03/2013	केतु - मंगल 11/03/2013 19/06/2013	केतु - राहु 19/06/2013 01/03/2014	केतु - गुरु 01/03/2014 15/10/2014	केतु - शनि 15/10/2014 11/07/2015
चंद्र 01/11/2012 मंगल 09/11/2012 राहु 01/12/2012 गुरु 19/12/2012 शनि 11/01/2013 बुध 31/01/2013 केतु 08/02/2013 शुक्र 04/03/2013 सूर्य 11/03/2013	मंगल 17/03/2013 राहु 01/04/2013 गुरु 14/04/2013 शनि 30/04/2013 बुध 14/05/2013 केतु 20/05/2013 शुक्र 05/06/2013 सूर्य 10/06/2013 चंद्र 19/06/2013	राहु 27/07/2013 गुरु 30/08/2013 शनि 10/10/2013 बुध 15/11/2013 केतु 30/11/2013 शुक्र 11/01/2014 सूर्य 24/01/2014 चंद्र 14/02/2014 मंगल 01/03/2014	गुरु 01/04/2014 शनि 07/05/2014 बुध 08/06/2014 केतु 21/06/2014 शुक्र 29/07/2014 सूर्य 09/08/2014 चंद्र 28/08/2014 मंगल 10/09/2014 राहु 15/10/2014	शनि 26/11/2014 बुध 04/01/2015 केतु 19/01/2015 शुक्र 05/03/2015 सूर्य 19/03/2015 चंद्र 10/04/2015 मंगल 26/04/2015 राहु 05/06/2015 गुरु 11/07/2015

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - बुध 11/07/2015 09/03/2016	शुक्र - शुक्र 09/03/2016 30/05/2018	शुक्र - सूर्य 30/05/2018 28/01/2019	शुक्र - चंद्र 28/01/2019 09/03/2020	शुक्र - मंगल 09/03/2020 18/12/2020
बुध 15/08/2015 केतु 29/08/2015 शुक्र 08/10/2015 सूर्य 20/10/2015 चंद्र 09/11/2015 मंगल 23/11/2015 राहु 29/12/2015 गुरु 31/01/2016 शनि 09/03/2016	शुक्र 22/07/2016 सूर्य 01/09/2016 चंद्र 07/11/2016 मंगल 25/12/2016 राहु 25/04/2017 गुरु 12/08/2017 शनि 18/12/2017 बुध 12/04/2018 केतु 30/05/2018	सूर्य 11/06/2018 चंद्र 01/07/2018 मंगल 15/07/2018 राहु 21/08/2018 गुरु 22/09/2018 शनि 31/10/2018 बुध 04/12/2018 केतु 18/12/2018 शुक्र 28/01/2019	चंद्र 03/03/2019 मंगल 27/03/2019 राहु 26/05/2019 गुरु 20/07/2019 शनि 22/09/2019 बुध 18/11/2019 केतु 12/12/2019 शुक्र 18/02/2020 सूर्य 09/03/2020	मंगल 25/03/2020 राहु 07/05/2020 गुरु 14/06/2020 शनि 29/07/2020 बुध 07/09/2020 केतु 24/09/2020 शुक्र 10/11/2020 सूर्य 24/11/2020 चंद्र 18/12/2020
शुक्र - राहु 18/12/2020 18/12/2022	शुक्र - गुरु 18/12/2022 28/09/2024	शुक्र - शनि 28/09/2024 08/11/2026	शुक्र - बुध 08/11/2026 28/09/2028	शुक्र - केतु 28/09/2028 09/07/2029
राहु 07/04/2021 गुरु 13/07/2021 शनि 06/11/2021 बुध 17/02/2022 केतु 01/04/2022 शुक्र 31/07/2022 सूर्य 06/09/2022 चंद्र 06/11/2022 मंगल 18/12/2022	गुरु 15/03/2023 शनि 26/06/2023 बुध 26/09/2023 केतु 03/11/2023 शुक्र 19/02/2024 सूर्य 22/03/2024 चंद्र 16/05/2024 मंगल 22/06/2024 राहु 28/09/2024	शनि 28/01/2025 बुध 17/05/2025 केतु 01/07/2025 शुक्र 07/11/2025 सूर्य 15/12/2025 चंद्र 17/02/2026 मंगल 03/04/2026 राहु 28/07/2026 गुरु 08/11/2026	बुध 14/02/2027 केतु 26/03/2027 शुक्र 19/07/2027 सूर्य 22/08/2027 चंद्र 19/10/2027 मंगल 28/11/2027 राहु 11/03/2028 गुरु 11/06/2028 शनि 28/09/2028	केतु 14/10/2028 शुक्र 01/12/2028 सूर्य 15/12/2028 चंद्र 08/01/2029 मंगल 24/01/2029 राहु 08/03/2029 गुरु 15/04/2029 शनि 30/05/2029 बुध 09/07/2029
सूर्य - सूर्य 09/07/2029 20/09/2029	सूर्य - चंद्र 20/09/2029 20/01/2030	सूर्य - मंगल 20/01/2030 15/04/2030	सूर्य - राहु 15/04/2030 20/11/2030	सूर्य - गुरु 20/11/2030 03/06/2031
सूर्य 13/07/2029 चंद्र 19/07/2029 मंगल 23/07/2029 राहु 03/08/2029 गुरु 13/08/2029 शनि 24/08/2029 बुध 04/09/2029 केतु 08/09/2029 शुक्र 20/09/2029	चंद्र 30/09/2029 मंगल 07/10/2029 राहु 25/10/2029 गुरु 11/11/2029 शनि 30/11/2029 बुध 17/12/2029 केतु 24/12/2029 शुक्र 14/01/2030 सूर्य 20/01/2030	मंगल 25/01/2030 राहु 06/02/2030 गुरु 18/02/2030 शनि 03/03/2030 बुध 15/03/2030 केतु 20/03/2030 शुक्र 04/04/2030 सूर्य 08/04/2030 चंद्र 15/04/2030	राहु 18/05/2030 गुरु 16/06/2030 शनि 21/07/2030 बुध 21/08/2030 केतु 03/09/2030 शुक्र 09/10/2030 सूर्य 20/10/2030 चंद्र 07/11/2030 मंगल 20/11/2030	गुरु 16/12/2030 शनि 16/01/2031 बुध 12/02/2031 केतु 24/02/2031 शुक्र 28/03/2031 सूर्य 07/04/2031 चंद्र 23/04/2031 मंगल 05/05/2031 राहु 03/06/2031

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शनि 03/06/2031 20/01/2032	सूर्य - बुध 20/01/2032 14/08/2032	सूर्य - केतु 14/08/2032 07/11/2032	सूर्य - शुक्र 07/11/2032 09/07/2033	चंद्र - चंद्र 09/07/2033 28/01/2034
शनि 09/07/2031 बुध 11/08/2031 केतु 25/08/2031 शुक्र 02/10/2031 सूर्य 14/10/2031 चंद्र 02/11/2031 मंगल 16/11/2031 राहु 20/12/2031 गुरु 20/01/2032	बुध 19/02/2032 केतु 02/03/2032 शुक्र 05/04/2032 सूर्य 15/04/2032 चंद्र 03/05/2032 मंगल 15/05/2032 राहु 15/06/2032 गुरु 12/07/2032 शनि 14/08/2032	केतु 19/08/2032 शुक्र 02/09/2032 सूर्य 07/09/2032 चंद्र 14/09/2032 मंगल 19/09/2032 राहु 01/10/2032 गुरु 13/10/2032 शनि 26/10/2032 बुध 07/11/2032	शुक्र 18/12/2032 सूर्य 30/12/2032 चंद्र 19/01/2033 मंगल 03/02/2033 राहु 11/03/2033 गुरु 13/04/2033 शनि 21/05/2033 बुध 25/06/2033 केतु 09/07/2033	चंद्र 26/07/2033 मंगल 07/08/2033 राहु 06/09/2033 गुरु 03/10/2033 शनि 04/11/2033 बुध 03/12/2033 केतु 15/12/2033 शुक्र 18/01/2034 सूर्य 28/01/2034
चंद्र - मंगल 28/01/2034 19/06/2034	चंद्र - राहु 19/06/2034 19/06/2035	चंद्र - गुरु 19/06/2035 09/05/2036	चंद्र - शनि 09/05/2036 29/05/2037	चंद्र - बुध 29/05/2037 09/05/2038
मंगल 05/02/2034 राहु 26/02/2034 गुरु 17/03/2034 शनि 09/04/2034 बुध 29/04/2034 केतु 07/05/2034 शुक्र 31/05/2034 सूर्य 07/06/2034 चंद्र 19/06/2034	राहु 13/08/2034 गुरु 30/09/2034 शनि 27/11/2034 बुध 18/01/2035 केतु 08/02/2035 शुक्र 10/04/2035 सूर्य 28/04/2035 चंद्र 29/05/2035 मंगल 19/06/2035	गुरु 01/08/2035 शनि 22/09/2035 बुध 07/11/2035 केतु 26/11/2035 शुक्र 19/01/2036 सूर्य 04/02/2036 चंद्र 02/03/2036 मंगल 21/03/2036 राहु 09/05/2036	शनि 09/07/2036 बुध 01/09/2036 केतु 24/09/2036 शुक्र 27/11/2036 सूर्य 16/12/2036 चंद्र 18/01/2037 मंगल 09/02/2037 राहु 08/04/2037 गुरु 29/05/2037	बुध 17/07/2037 केतु 06/08/2037 शुक्र 03/10/2037 सूर्य 20/10/2037 चंद्र 18/11/2037 मंगल 08/12/2037 राहु 29/01/2038 गुरु 16/03/2038 शनि 09/05/2038
चंद्र - केतु 09/05/2038 28/09/2038	चंद्र - शुक्र 28/09/2038 08/11/2039	चंद्र - सूर्य 08/11/2039 09/03/2040	मंगल - मंगल 09/03/2040 16/06/2040	मंगल - राहु 16/06/2040 27/02/2041
केतु 18/05/2038 शुक्र 10/06/2038 सूर्य 17/06/2038 चंद्र 29/06/2038 मंगल 07/07/2038 राहु 29/07/2038 गुरु 17/08/2038 शनि 08/09/2038 बुध 28/09/2038	शुक्र 05/12/2038 सूर्य 25/12/2038 चंद्र 28/01/2039 मंगल 21/02/2039 राहु 23/04/2039 गुरु 16/06/2039 शनि 19/08/2039 बुध 15/10/2039 केतु 08/11/2039	सूर्य 14/11/2039 चंद्र 24/11/2039 मंगल 01/12/2039 राहु 20/12/2039 गुरु 05/01/2040 शनि 24/01/2040 बुध 10/02/2040 केतु 18/02/2040 शुक्र 09/03/2040	मंगल 15/03/2040 राहु 30/03/2040 गुरु 12/04/2040 शनि 28/04/2040 बुध 12/05/2040 केतु 17/05/2040 शुक्र 03/06/2040 सूर्य 08/06/2040 चंद्र 16/06/2040	राहु 25/07/2040 गुरु 28/08/2040 शनि 07/10/2040 बुध 12/11/2040 केतु 27/11/2040 शुक्र 09/01/2041 सूर्य 22/01/2041 चंद्र 12/02/2041 मंगल 27/02/2041

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 8 वर्ष 7 मास 23 दिन

बुध 17 वर्ष	शनि 10 वर्ष	गुरु 19 वर्ष	राहु 12 वर्ष	शुक्र 21 वर्ष
09/09/1964	04/05/1973	04/05/1983	04/05/2002	04/05/2014
04/05/1973	04/05/1983	04/05/2002	04/05/2014	04/05/2035
00/00/0000	शनि 07/04/1974	गुरु 06/09/1986	राहु 03/09/2003	शुक्र 03/06/2018
00/00/0000	गुरु 10/01/1976	राहु 16/10/1988	शुक्र 02/01/2006	सूर्य 04/08/2019
09/09/1964	राहु 18/02/1977	शुक्र 27/06/1992	सूर्य 03/09/2006	चंद्र 04/07/2022
राहु 20/06/1965	शुक्र 30/01/1979	सूर्य 17/07/1993	चंद्र 03/05/2008	मंगल 23/01/2024
शुक्र 09/10/1968	सूर्य 20/08/1979	चंद्र 07/03/1996	मंगल 24/03/2009	बुध 14/05/2027
सूर्य 19/09/1969	चंद्र 09/01/1981	मंगल 03/08/1997	बुध 12/02/2011	शनि 24/04/2029
चंद्र 30/01/1972	मंगल 06/10/1981	बुध 30/07/2000	शनि 24/03/2012	गुरु 02/01/2033
मंगल 04/05/1973	बुध 04/05/1983	शनि 04/05/2002	गुरु 04/05/2014	राहु 04/05/2035

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 15 वर्ष	मंगल 8 वर्ष	बुध 17 वर्ष
04/05/2035	04/05/2041	03/05/2056	03/05/2064
04/05/2041	03/05/2056	03/05/2064	00/00/0000
सूर्य 03/09/2035	चंद्र 04/06/2043	मंगल 06/12/2056	बुध 06/01/2067
चंद्र 03/07/2036	मंगल 14/07/2044	बुध 11/03/2058	शनि 03/08/2068
मंगल 13/12/2036	बुध 23/11/2046	शनि 06/12/2058	गुरु 31/07/2071
बुध 23/11/2037	शनि 13/04/2048	गुरु 03/05/2060	राहु 09/09/2072
शनि 14/06/2038	गुरु 03/12/2050	राहु 24/03/2061	00/00/0000
गुरु 04/07/2039	राहु 03/08/2052	शुक्र 13/10/2062	00/00/0000
राहु 04/03/2040	शुक्र 04/07/2055	सूर्य 25/03/2063	00/00/0000
शुक्र 04/05/2041	सूर्य 03/05/2056	चंद्र 03/05/2064	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - राहु	बुध - शुक्र	बुध - सूर्य	बुध - चंद्र	बुध - मंगल
09/09/1964	20/06/1965	09/10/1968	19/09/1969	30/01/1972
20/06/1965	09/10/1968	19/09/1969	30/01/1972	04/05/1973
00/00/0000	शुक्र 10/02/1966	सूर्य 29/10/1968	चंद्र 17/01/1970	मंगल 04/03/1972
00/00/0000	सूर्य 18/04/1966	चंद्र 16/12/1968	मंगल 22/03/1970	बुध 15/05/1972
00/00/0000	चंद्र 03/10/1966	मंगल 10/01/1969	बुध 05/08/1970	शनि 27/06/1972
00/00/0000	मंगल 31/12/1966	बुध 05/03/1969	शनि 24/10/1970	गुरु 16/09/1972
09/09/1964	बुध 09/07/1967	शनि 06/04/1969	गुरु 24/03/1971	राहु 06/11/1972
बुध 17/12/1964	शनि 29/10/1967	गुरु 06/06/1969	राहु 28/06/1971	शुक्र 03/02/1973
शनि 19/02/1965	गुरु 28/05/1968	राहु 14/07/1969	शुक्र 13/12/1971	सूर्य 01/03/1973
गुरु 20/06/1965	राहु 09/10/1968	शुक्र 19/09/1969	सूर्य 30/01/1972	चंद्र 04/05/1973
शनि - शनि	शनि - गुरु	शनि - राहु	शनि - शुक्र	शनि - सूर्य
04/05/1973	07/04/1974	10/01/1976	18/02/1977	30/01/1979
07/04/1974	10/01/1976	18/02/1977	30/01/1979	20/08/1979
शनि 04/06/1973	गुरु 29/07/1974	राहु 24/02/1976	शुक्र 06/07/1977	सूर्य 10/02/1979
गुरु 03/08/1973	राहु 08/10/1974	शुक्र 13/05/1976	सूर्य 15/08/1977	चंद्र 10/03/1979
राहु 09/09/1973	शुक्र 10/02/1975	सूर्य 04/06/1976	चंद्र 22/11/1977	मंगल 25/03/1979
शुक्र 14/11/1973	सूर्य 18/03/1975	चंद्र 30/07/1976	मंगल 13/01/1978	बुध 26/04/1979
सूर्य 03/12/1973	चंद्र 15/06/1975	मंगल 29/08/1976	बुध 05/05/1978	शनि 15/05/1979
चंद्र 19/01/1974	मंगल 02/08/1975	बुध 01/11/1976	शनि 10/07/1978	गुरु 19/06/1979
मंगल 13/02/1974	बुध 11/11/1975	शनि 09/12/1976	गुरु 12/11/1978	राहु 12/07/1979
बुध 07/04/1974	शनि 10/01/1976	गुरु 18/02/1977	राहु 30/01/1979	शुक्र 20/08/1979
शनि - चंद्र	शनि - मंगल	शनि - बुध	गुरु - गुरु	गुरु - राहु
20/08/1979	09/01/1981	06/10/1981	04/05/1983	06/09/1986
09/01/1981	06/10/1981	04/05/1983	06/09/1986	16/10/1988
चंद्र 30/10/1979	मंगल 29/01/1981	बुध 05/01/1982	गुरु 05/12/1983	राहु 01/12/1986
मंगल 07/12/1979	बुध 12/03/1981	शनि 27/02/1982	राहु 19/04/1984	शुक्र 30/04/1987
बुध 24/02/1980	शनि 06/04/1981	गुरु 08/06/1982	शुक्र 12/12/1984	सूर्य 12/06/1987
शनि 11/04/1980	गुरु 24/05/1981	राहु 11/08/1982	सूर्य 18/02/1985	चंद्र 27/09/1987
गुरु 10/07/1980	राहु 23/06/1981	शुक्र 01/12/1982	चंद्र 06/08/1985	मंगल 23/11/1987
राहु 04/09/1980	शुक्र 15/08/1981	सूर्य 02/01/1983	मंगल 05/11/1985	बुध 23/03/1988
शुक्र 12/12/1980	सूर्य 30/08/1981	चंद्र 23/03/1983	बुध 16/05/1986	शनि 03/06/1988
सूर्य 09/01/1981	चंद्र 06/10/1981	मंगल 04/05/1983	शनि 06/09/1986	गुरु 16/10/1988



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र	गुरु - सूर्य	गुरु - चंद्र	गुरु - मंगल	गुरु - बुध
16/10/1988	27/06/1992	17/07/1993	07/03/1996	03/08/1997
27/06/1992	17/07/1993	07/03/1996	03/08/1997	30/07/2000
शुक्र 06/07/1989	सूर्य 18/07/1992	चंद्र 28/11/1993	मंगल 14/04/1996	बुध 22/01/1998
सूर्य 19/09/1989	चंद्र 10/09/1992	मंगल 07/02/1994	बुध 04/07/1996	शनि 03/05/1998
चंद्र 25/03/1990	मंगल 08/10/1992	बुध 09/07/1994	शनि 21/08/1996	गुरु 11/11/1998
मंगल 03/07/1990	बुध 08/12/1992	शनि 06/10/1994	गुरु 19/11/1996	राहु 13/03/1999
बुध 31/01/1991	शनि 13/01/1993	गुरु 25/03/1995	राहु 15/01/1997	शुक्र 11/10/1999
शनि 05/06/1991	गुरु 21/03/1993	राहु 10/07/1995	शुक्र 25/04/1997	सूर्य 11/12/1999
गुरु 29/01/1992	राहु 03/05/1993	शुक्र 13/01/1996	सूर्य 24/05/1997	चंद्र 11/05/2000
राहु 27/06/1992	शुक्र 17/07/1993	सूर्य 07/03/1996	चंद्र 03/08/1997	मंगल 30/07/2000
गुरु - शनि	राहु - राहु	राहु - शुक्र	राहु - सूर्य	राहु - चंद्र
30/07/2000	04/05/2002	03/09/2003	02/01/2006	03/09/2006
04/05/2002	03/09/2003	02/01/2006	03/09/2006	03/05/2008
शनि 28/09/2000	राहु 27/06/2002	शुक्र 16/02/2004	सूर्य 16/01/2006	चंद्र 26/11/2006
गुरु 19/01/2001	शुक्र 30/09/2002	सूर्य 03/04/2004	चंद्र 19/02/2006	मंगल 10/01/2007
राहु 31/03/2001	सूर्य 27/10/2002	चंद्र 30/07/2004	मंगल 09/03/2006	बुध 16/04/2007
शुक्र 03/08/2001	चंद्र 02/01/2003	मंगल 02/10/2004	बुध 16/04/2006	शनि 12/06/2007
सूर्य 08/09/2001	मंगल 08/02/2003	बुध 13/02/2005	शनि 09/05/2006	गुरु 27/09/2007
चंद्र 06/12/2001	बुध 25/04/2003	शनि 03/05/2005	गुरु 20/06/2006	राहु 03/12/2007
मंगल 23/01/2002	शनि 09/06/2003	गुरु 30/09/2005	राहु 17/07/2006	शुक्र 31/03/2008
बुध 04/05/2002	गुरु 03/09/2003	राहु 02/01/2006	शुक्र 03/09/2006	सूर्य 03/05/2008
राहु - मंगल	राहु - बुध	राहु - शनि	राहु - गुरु	शुक्र - शुक्र
03/05/2008	24/03/2009	12/02/2011	24/03/2012	04/05/2014
24/03/2009	12/02/2011	24/03/2012	04/05/2014	03/06/2018
मंगल 28/05/2008	बुध 11/07/2009	शनि 22/03/2011	गुरु 07/08/2012	शुक्र 18/02/2015
बुध 18/07/2008	शनि 13/09/2009	गुरु 01/06/2011	राहु 31/10/2012	सूर्य 12/05/2015
शनि 17/08/2008	गुरु 12/01/2010	राहु 16/07/2011	शुक्र 30/03/2013	चंद्र 05/12/2015
गुरु 13/10/2008	राहु 30/03/2010	शुक्र 03/10/2011	सूर्य 12/05/2013	मंगल 24/03/2016
राहु 18/11/2008	शुक्र 11/08/2010	सूर्य 26/10/2011	चंद्र 27/08/2013	बुध 14/11/2016
शुक्र 20/01/2009	सूर्य 18/09/2010	चंद्र 21/12/2011	मंगल 23/10/2013	शनि 01/04/2017
सूर्य 07/02/2009	चंद्र 23/12/2010	मंगल 20/01/2012	बुध 22/02/2014	गुरु 20/12/2017
चंद्र 24/03/2009	मंगल 12/02/2011	बुध 24/03/2012	शनि 04/05/2014	राहु 03/06/2018



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - बुध	शुक्र - शनि
03/06/2018	04/08/2019	04/07/2022	23/01/2024	14/05/2027
04/08/2019	04/07/2022	23/01/2024	14/05/2027	24/04/2029
सूर्य 27/06/2018	चंद्र 30/12/2019	मंगल 15/08/2022	बुध 31/07/2024	शनि 19/07/2027
चंद्र 25/08/2018	मंगल 17/03/2020	बुध 12/11/2022	शनि 20/11/2024	गुरु 21/11/2027
मंगल 26/09/2018	बुध 01/09/2020	शनि 04/01/2023	गुरु 20/06/2025	राहु 08/02/2028
बुध 02/12/2018	शनि 09/12/2020	गुरु 14/04/2023	राहु 01/11/2025	शुक्र 25/06/2028
शनि 10/01/2019	गुरु 14/06/2021	राहु 16/06/2023	शुक्र 24/06/2026	सूर्य 04/08/2028
गुरु 26/03/2019	राहु 11/10/2021	शुक्र 05/10/2023	सूर्य 30/08/2026	चंद्र 10/11/2028
राहु 13/05/2019	शुक्र 06/05/2022	सूर्य 05/11/2023	चंद्र 14/02/2027	मंगल 02/01/2029
शुक्र 04/08/2019	सूर्य 04/07/2022	चंद्र 23/01/2024	मंगल 14/05/2027	बुध 24/04/2029
शुक्र - गुरु	शुक्र - राहु	सूर्य - सूर्य	सूर्य - चंद्र	सूर्य - मंगल
24/04/2029	02/01/2033	04/05/2035	03/09/2035	03/07/2036
02/01/2033	04/05/2035	03/09/2035	03/07/2036	13/12/2036
गुरु 17/12/2029	राहु 07/04/2033	सूर्य 11/05/2035	चंद्र 15/10/2035	मंगल 15/07/2036
राहु 16/05/2030	शुक्र 19/09/2033	चंद्र 28/05/2035	मंगल 07/11/2035	बुध 10/08/2036
शुक्र 02/02/2031	सूर्य 06/11/2033	मंगल 06/06/2035	बुध 25/12/2035	शनि 25/08/2036
सूर्य 18/04/2031	चंद्र 04/03/2034	बुध 25/06/2035	शनि 22/01/2036	गुरु 23/09/2036
चंद्र 23/10/2031	मंगल 06/05/2034	शनि 06/07/2035	गुरु 15/03/2036	राहु 11/10/2036
मंगल 31/01/2032	बुध 17/09/2034	गुरु 28/07/2035	राहु 18/04/2036	शुक्र 11/11/2036
बुध 30/08/2032	शनि 05/12/2034	राहु 10/08/2035	शुक्र 16/06/2036	सूर्य 20/11/2036
शनि 02/01/2033	गुरु 04/05/2035	शुक्र 03/09/2035	सूर्य 03/07/2036	चंद्र 13/12/2036
सूर्य - बुध	सूर्य - शनि	सूर्य - गुरु	सूर्य - राहु	सूर्य - शुक्र
13/12/2036	23/11/2037	14/06/2038	04/07/2039	04/03/2040
23/11/2037	14/06/2038	04/07/2039	04/03/2040	04/05/2041
बुध 05/02/2037	शनि 11/12/2037	गुरु 20/08/2038	राहु 31/07/2039	शुक्र 25/05/2040
शनि 09/03/2037	गुरु 16/01/2038	राहु 02/10/2038	शुक्र 17/09/2039	सूर्य 18/06/2040
गुरु 09/05/2037	राहु 08/02/2038	शुक्र 16/12/2038	सूर्य 30/09/2039	चंद्र 16/08/2040
राहु 16/06/2037	शुक्र 19/03/2038	सूर्य 07/01/2039	चंद्र 03/11/2039	मंगल 17/09/2040
शुक्र 22/08/2037	सूर्य 30/03/2038	चंद्र 01/03/2039	मंगल 21/11/2039	बुध 23/11/2040
सूर्य 10/09/2037	चंद्र 28/04/2038	मंगल 30/03/2039	बुध 29/12/2039	शनि 01/01/2041
चंद्र 28/10/2037	मंगल 13/05/2038	बुध 29/05/2039	शनि 21/01/2040	गुरु 17/03/2041
मंगल 23/11/2037	बुध 14/06/2038	शनि 04/07/2039	गुरु 04/03/2040	राहु 04/05/2041

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - चंद्र	चंद्र - मंगल	चंद्र - बुध	चंद्र - शनि	चंद्र - गुरु
04/05/2041	04/06/2043	14/07/2044	23/11/2046	13/04/2048
04/06/2043	14/07/2044	23/11/2046	13/04/2048	03/12/2050
चंद्र 17/08/2041	मंगल 04/07/2043	बुध 26/11/2044	शनि 09/01/2047	गुरु 30/09/2048
मंगल 13/10/2041	बुध 06/09/2043	शनि 14/02/2045	गुरु 08/04/2047	राहु 15/01/2049
बुध 10/02/2042	शनि 13/10/2043	गुरु 16/07/2045	राहु 03/06/2047	शुक्र 21/07/2049
शनि 21/04/2042	गुरु 24/12/2043	राहु 20/10/2045	शुक्र 10/09/2047	सूर्य 13/09/2049
गुरु 02/09/2042	राहु 07/02/2044	शुक्र 05/04/2046	सूर्य 08/10/2047	चंद्र 25/01/2050
राहु 25/11/2042	शुक्र 26/04/2044	सूर्य 23/05/2046	चंद्र 18/12/2047	मंगल 06/04/2050
शुक्र 22/04/2043	सूर्य 18/05/2044	चंद्र 20/09/2046	मंगल 24/01/2048	बुध 05/09/2050
सूर्य 04/06/2043	चंद्र 14/07/2044	मंगल 23/11/2046	बुध 13/04/2048	शनि 03/12/2050
चंद्र - राहु	चंद्र - शुक्र	चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - बुध
03/12/2050	03/08/2052	04/07/2055	03/05/2056	06/12/2056
03/08/2052	04/07/2055	03/05/2056	06/12/2056	11/03/2058
राहु 09/02/2051	शुक्र 26/02/2053	सूर्य 21/07/2055	मंगल 20/05/2056	बुध 16/02/2057
शुक्र 07/06/2051	सूर्य 26/04/2053	चंद्र 01/09/2055	बुध 23/06/2056	शनि 31/03/2057
सूर्य 11/07/2051	चंद्र 21/09/2053	मंगल 24/09/2055	शनि 13/07/2056	गुरु 20/06/2057
चंद्र 03/10/2051	मंगल 09/12/2053	बुध 11/11/2055	गुरु 20/08/2056	राहु 10/08/2057
मंगल 18/11/2051	बुध 26/05/2054	शनि 09/12/2055	राहु 13/09/2056	शुक्र 07/11/2057
बुध 21/02/2052	शनि 01/09/2054	गुरु 31/01/2056	शुक्र 25/10/2056	सूर्य 03/12/2057
शनि 18/04/2052	गुरु 08/03/2055	राहु 05/03/2056	सूर्य 06/11/2056	चंद्र 05/02/2058
गुरु 03/08/2052	राहु 04/07/2055	शुक्र 03/05/2056	चंद्र 06/12/2056	मंगल 11/03/2058
मंगल - शनि	मंगल - गुरु	मंगल - राहु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य
11/03/2058	06/12/2058	03/05/2060	24/03/2061	13/10/2062
06/12/2058	03/05/2060	24/03/2061	13/10/2062	25/03/2063
शनि 05/04/2058	गुरु 07/03/2059	राहु 09/06/2060	शुक्र 13/07/2061	सूर्य 22/10/2062
गुरु 23/05/2058	राहु 03/05/2059	शुक्र 11/08/2060	सूर्य 13/08/2061	चंद्र 14/11/2062
राहु 22/06/2058	शुक्र 11/08/2059	सूर्य 29/08/2060	चंद्र 31/10/2061	मंगल 26/11/2062
शुक्र 13/08/2058	सूर्य 09/09/2059	चंद्र 13/10/2060	मंगल 12/12/2061	बुध 21/12/2062
सूर्य 28/08/2058	चंद्र 19/11/2059	मंगल 06/11/2060	बुध 12/03/2062	शनि 06/01/2063
चंद्र 05/10/2058	मंगल 27/12/2059	बुध 27/12/2060	शनि 03/05/2062	गुरु 03/02/2063
मंगल 25/10/2058	बुध 17/03/2060	शनि 26/01/2061	गुरु 11/08/2062	राहु 21/02/2063
बुध 06/12/2058	शनि 03/05/2060	गुरु 24/03/2061	राहु 13/10/2062	शुक्र 25/03/2063



FUTUREPOINT
Astro Solutions



योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : मंगला 0 वर्ष 0 मास 12 दिन

मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष
09/09/1964	22/09/1964	23/09/1966	22/09/1969	22/09/1973
22/09/1964	23/09/1966	22/09/1969	22/09/1973	23/09/1978
00/00/0000	पिंग 02/11/1964	धांय 23/12/1966	भाम 04/03/1970	भद्रि 03/06/1974
00/00/0000	धांय 01/01/1965	भाम 24/04/1967	भद्रि 23/09/1970	उल्क 03/04/1975
00/00/0000	भाम 24/03/1965	भद्रि 23/09/1967	उल्क 24/05/1971	सिद्ध 23/03/1976
00/00/0000	भद्रि 03/07/1965	उल्क 23/03/1968	सिद्ध 03/03/1972	संक 03/05/1977
00/00/0000	उल्क 02/11/1965	सिद्ध 22/10/1968	संक 22/01/1973	मंग 23/06/1977
00/00/0000	सिद्ध 24/03/1966	संक 23/06/1969	मंग 03/03/1973	पिंग 02/10/1977
09/09/1964	संक 02/09/1966	मंग 23/07/1969	पिंग 24/05/1973	धांय 04/03/1978
संक 22/09/1964	मंग 23/09/1966	पिंग 22/09/1969	धांय 22/09/1973	भाम 23/09/1978
उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष
23/09/1978	22/09/1984	23/09/1991	23/09/1999	22/09/2000
22/09/1984	23/09/1991	23/09/1999	22/09/2000	23/09/2002
उल्क 23/09/1979	सिद्ध 01/02/1986	संक 03/07/1993	मंग 03/10/1999	पिंग 02/11/2000
सिद्ध 22/11/1980	संक 23/08/1987	मंग 22/09/1993	पिंग 23/10/1999	धांय 01/01/2001
संक 24/03/1982	मंग 02/11/1987	पिंग 04/03/1994	धांय 23/11/1999	भाम 24/03/2001
मंग 24/05/1982	पिंग 23/03/1988	धांय 02/11/1994	भाम 02/01/2000	भद्रि 03/07/2001
पिंग 23/09/1982	धांय 22/10/1988	भाम 23/09/1995	भद्रि 22/02/2000	उल्क 02/11/2001
धांय 24/03/1983	भाम 03/08/1989	भद्रि 02/11/1996	उल्क 23/04/2000	सिद्ध 24/03/2002
भाम 23/11/1983	भद्रि 24/07/1990	उल्क 04/03/1998	सिद्ध 03/07/2000	संक 02/09/2002
भद्रि 22/09/1984	उल्क 23/09/1991	सिद्ध 23/09/1999	संक 22/09/2000	मंग 23/09/2002

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला : चन्द्र पिंगला : सूर्य धान्या : गुरु भामरी : मंगल
भद्रिका : बुध उल्का : शनि सिद्धा : शुक्र संकटा : राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष	भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष
23/09/2002	22/09/2005	22/09/2009	23/09/2014	22/09/2020
22/09/2005	22/09/2009	23/09/2014	22/09/2020	23/09/2027
धांय 23/12/2002	भ्राम 04/03/2006	भद्रि 03/06/2010	उल्क 23/09/2015	सिद्ध 01/02/2022
भ्राम 24/04/2003	भद्रि 23/09/2006	उल्क 03/04/2011	सिद्ध 22/11/2016	संक 23/08/2023
भद्रि 23/09/2003	उल्क 24/05/2007	सिद्ध 23/03/2012	संक 24/03/2018	मंग 02/11/2023
उल्क 23/03/2004	सिद्ध 03/03/2008	संक 03/05/2013	मंग 24/05/2018	पिंग 23/03/2024
सिद्ध 22/10/2004	संक 22/01/2009	मंग 23/06/2013	पिंग 23/09/2018	धांय 22/10/2024
संक 23/06/2005	मंग 03/03/2009	पिंग 02/10/2013	धांय 24/03/2019	भ्राम 03/08/2025
मंग 23/07/2005	पिंग 24/05/2009	धांय 04/03/2014	भ्राम 23/11/2019	भद्रि 24/07/2026
पिंग 22/09/2005	धांय 22/09/2009	भ्राम 23/09/2014	भद्रि 22/09/2020	उल्क 23/09/2027
संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष	पिंगला 2 वर्ष	धान्या 3 वर्ष	भामरी 4 वर्ष
23/09/2027	23/09/2035	22/09/2036	23/09/2038	22/09/2041
23/09/2035	22/09/2036	23/09/2038	22/09/2041	22/09/2045
संक 03/07/2029	मंग 03/10/2035	पिंग 02/11/2036	धांय 23/12/2038	भ्राम 04/03/2042
मंग 22/09/2029	पिंग 23/10/2035	धांय 01/01/2037	भ्राम 24/04/2039	भद्रि 23/09/2042
पिंग 04/03/2030	धांय 23/11/2035	भ्राम 24/03/2037	भद्रि 23/09/2039	उल्क 24/05/2043
धांय 02/11/2030	भ्राम 02/01/2036	भद्रि 03/07/2037	उल्क 23/03/2040	सिद्ध 03/03/2044
भ्राम 23/09/2031	भद्रि 22/02/2036	उल्क 02/11/2037	सिद्ध 22/10/2040	संक 22/01/2045
भद्रि 02/11/2032	उल्क 23/04/2036	सिद्ध 24/03/2038	संक 23/06/2041	मंग 03/03/2045
उल्क 04/03/2034	सिद्ध 03/07/2036	संक 02/09/2038	मंग 23/07/2041	पिंग 24/05/2045
सिद्ध 23/09/2035	संक 22/09/2036	मंग 23/09/2038	पिंग 22/09/2041	धांय 22/09/2045
भद्रिका 5 वर्ष	उल्का 6 वर्ष	सिद्धा 7 वर्ष	संकटा 8 वर्ष	मंगला 1 वर्ष
22/09/2045	23/09/2050	22/09/2056	23/09/2063	23/09/2071
23/09/2050	22/09/2056	23/09/2063	23/09/2071	09/09/2072
भद्रि 03/06/2046	उल्क 23/09/2051	सिद्ध 01/02/2058	संक 03/07/2065	मंग 03/10/2071
उल्क 03/04/2047	सिद्ध 22/11/2052	संक 23/08/2059	मंग 22/09/2065	पिंग 23/10/2071
सिद्ध 23/03/2048	संक 24/03/2054	मंग 02/11/2059	पिंग 04/03/2066	धांय 23/11/2071
संक 03/05/2049	मंग 24/05/2054	पिंग 23/03/2060	धांय 02/11/2066	भ्राम 02/01/2072
मंग 23/06/2049	पिंग 23/09/2054	धांय 22/10/2060	भ्राम 23/09/2067	भद्रि 22/02/2072
पिंग 02/10/2049	धांय 24/03/2055	भ्राम 03/08/2061	भद्रि 02/11/2068	उल्क 23/04/2072
धांय 04/03/2050	भ्राम 23/11/2055	भद्रि 24/07/2062	उल्क 04/03/2070	सिद्ध 03/07/2072
भ्राम 23/09/2050	भद्रि 22/09/2056	उल्क 23/09/2063	सिद्ध 23/09/2071	संक 09/09/2072



FUTUREPOINT
Astro Solutions



योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

सिद्ध - भद्रि	सिद्ध - उल्क	संक - संक	संक - मंग	संक - पिंग
03/08/2025	24/07/2026	23/09/2027	03/07/2029	22/09/2029
24/07/2026	23/09/2027	03/07/2029	22/09/2029	04/03/2030
भद्रि 21/09/2025	उल्क 03/10/2026	संक 14/02/2028	मंग 05/07/2029	पिंग 01/10/2029
उल्क 19/11/2025	सिद्ध 25/12/2026	मंग 03/03/2028	पिंग 10/07/2029	धांय 15/10/2029
सिद्ध 27/01/2026	संक 29/03/2027	पिंग 08/04/2028	धांय 17/07/2029	भ्राम 02/11/2029
संक 16/04/2026	मंग 10/04/2027	धांय 01/06/2028	भ्राम 26/07/2029	भद्रि 24/11/2029
मंग 26/04/2026	पिंग 04/05/2027	भ्राम 12/08/2028	भद्रि 06/08/2029	उल्क 21/12/2029
पिंग 16/05/2026	धांय 08/06/2027	भद्रि 11/11/2028	उल्क 19/08/2029	सिद्ध 22/01/2030
धांय 14/06/2026	भ्राम 26/07/2027	उल्क 27/02/2029	सिद्ध 04/09/2029	संक 27/02/2030
भ्राम 24/07/2026	भद्रि 23/09/2027	सिद्ध 03/07/2029	संक 22/09/2029	मंग 04/03/2030
संक - धांय	संक - भ्राम	संक - भद्रि	संक - उल्क	संक - सिद्ध
04/03/2030	02/11/2030	23/09/2031	02/11/2032	04/03/2034
02/11/2030	23/09/2031	02/11/2032	04/03/2034	23/09/2035
धांय 24/03/2030	भ्राम 08/12/2030	भद्रि 18/11/2031	उल्क 22/01/2033	सिद्ध 22/06/2034
भ्राम 20/04/2030	भद्रि 22/01/2031	उल्क 25/01/2032	सिद्ध 26/04/2033	संक 26/10/2034
भद्रि 24/05/2030	उल्क 17/03/2031	सिद्ध 13/04/2032	संक 13/08/2033	मंग 11/11/2034
उल्क 03/07/2030	सिद्ध 20/05/2031	संक 12/07/2032	मंग 26/08/2033	पिंग 13/12/2034
सिद्ध 20/08/2030	संक 31/07/2031	मंग 23/07/2032	पिंग 22/09/2033	धांय 29/01/2035
संक 13/10/2030	मंग 09/08/2031	पिंग 15/08/2032	धांय 02/11/2033	भ्राम 02/04/2035
मंग 20/10/2030	पिंग 27/08/2031	धांय 18/09/2032	भ्राम 26/12/2033	भद्रि 20/06/2035
पिंग 02/11/2030	धांय 23/09/2031	भ्राम 02/11/2032	भद्रि 04/03/2034	उल्क 23/09/2035
मंग - मंग	मंग - पिंग	मंग - धांय	मंग - भ्राम	मंग - भद्रि
23/09/2035	03/10/2035	23/10/2035	23/11/2035	02/01/2036
03/10/2035	23/10/2035	23/11/2035	02/01/2036	22/02/2036
मंग 23/09/2035	पिंग 04/10/2035	धांय 26/10/2035	भ्राम 27/11/2035	भद्रि 09/01/2036
पिंग 24/09/2035	धांय 06/10/2035	भ्राम 29/10/2035	भद्रि 03/12/2035	उल्क 18/01/2036
धांय 24/09/2035	भ्राम 08/10/2035	भद्रि 02/11/2035	उल्क 10/12/2035	सिद्ध 28/01/2036
भ्राम 26/09/2035	भद्रि 11/10/2035	उल्क 07/11/2035	सिद्ध 17/12/2035	संक 08/02/2036
भद्रि 27/09/2035	उल्क 14/10/2035	सिद्ध 13/11/2035	संक 26/12/2035	मंग 09/02/2036
उल्क 29/09/2035	सिद्ध 18/10/2035	संक 20/11/2035	मंग 28/12/2035	पिंग 12/02/2036
सिद्ध 01/10/2035	संक 23/10/2035	मंग 21/11/2035	पिंग 30/12/2035	धांय 16/02/2036
संक 03/10/2035	मंग 23/10/2035	पिंग 23/11/2035	धांय 02/01/2036	भ्राम 22/02/2036

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

मंग - उल्क	मंग - सिद्ध	मंग - संक	पिंग - पिंग	पिंग - धांय
22/02/2036	23/04/2036	03/07/2036	22/09/2036	02/11/2036
23/04/2036	03/07/2036	22/09/2036	02/11/2036	01/01/2037
उल्क 03/03/2036	सिद्ध 07/05/2036	संक 21/07/2036	पिंग 24/09/2036	धांय 07/11/2036
सिद्ध 15/03/2036	संक 22/05/2036	मंग 23/07/2036	धांय 28/09/2036	भ्राम 13/11/2036
संक 28/03/2036	मंग 24/05/2036	पिंग 28/07/2036	भ्राम 02/10/2036	भद्रि 22/11/2036
मंग 30/03/2036	पिंग 28/05/2036	धांय 03/08/2036	भद्रि 08/10/2036	उल्क 02/12/2036
पिंग 03/04/2036	धांय 03/06/2036	भ्राम 12/08/2036	उल्क 15/10/2036	सिद्ध 14/12/2036
धांय 08/04/2036	भ्राम 11/06/2036	भद्रि 24/08/2036	सिद्ध 22/10/2036	संक 27/12/2036
भ्राम 14/04/2036	भद्रि 21/06/2036	उल्क 06/09/2036	संक 31/10/2036	मंग 29/12/2036
भद्रि 23/04/2036	उल्क 03/07/2036	सिद्ध 22/09/2036	मंग 02/11/2036	पिंग 01/01/2037
पिंग - भ्राम	पिंग - भद्रि	पिंग - उल्क	पिंग - सिद्ध	पिंग - संक
01/01/2037	24/03/2037	03/07/2037	02/11/2037	24/03/2038
24/03/2037	03/07/2037	02/11/2037	24/03/2038	02/09/2038
भ्राम 10/01/2037	भद्रि 07/04/2037	उल्क 23/07/2037	सिद्ध 29/11/2037	संक 29/04/2038
भद्रि 22/01/2037	उल्क 24/04/2037	सिद्ध 16/08/2037	संक 31/12/2037	मंग 03/05/2038
उल्क 04/02/2037	सिद्ध 13/05/2037	संक 12/09/2037	मंग 04/01/2038	पिंग 12/05/2038
सिद्ध 20/02/2037	संक 05/06/2037	मंग 16/09/2037	पिंग 12/01/2038	धांय 26/05/2038
संक 10/03/2037	मंग 08/06/2037	पिंग 22/09/2037	धांय 24/01/2038	भ्राम 13/06/2038
मंग 12/03/2037	पिंग 13/06/2037	धांय 02/10/2037	भ्राम 08/02/2038	भद्रि 06/07/2038
पिंग 17/03/2037	धांय 22/06/2037	भ्राम 16/10/2037	भद्रि 28/02/2038	उल्क 02/08/2038
धांय 24/03/2037	भ्राम 03/07/2037	भद्रि 02/11/2037	उल्क 24/03/2038	सिद्ध 02/09/2038
पिंग - मंग	धांय - धांय	धांय - भ्राम	धांय - भद्रि	धांय - उल्क
02/09/2038	23/09/2038	23/12/2038	24/04/2039	23/09/2039
23/09/2038	23/12/2038	24/04/2039	23/09/2039	23/03/2040
मंग 03/09/2038	धांय 30/09/2038	भ्राम 05/01/2039	भद्रि 15/05/2039	उल्क 23/10/2039
पिंग 04/09/2038	भ्राम 10/10/2038	भद्रि 22/01/2039	उल्क 09/06/2039	सिद्ध 28/11/2039
धांय 06/09/2038	भद्रि 23/10/2038	उल्क 12/02/2039	सिद्ध 09/07/2039	संक 07/01/2040
भ्राम 08/09/2038	उल्क 07/11/2038	सिद्ध 07/03/2039	संक 11/08/2039	मंग 12/01/2040
भद्रि 11/09/2038	सिद्ध 25/11/2038	संक 03/04/2039	मंग 16/08/2039	पिंग 23/01/2040
उल्क 14/09/2038	संक 15/12/2038	मंग 07/04/2039	पिंग 24/08/2039	धांय 07/02/2040
सिद्ध 18/09/2038	मंग 18/12/2038	पिंग 13/04/2039	धांय 06/09/2039	भ्राम 27/02/2040
संक 23/09/2038	पिंग 23/12/2038	धांय 24/04/2039	भ्राम 23/09/2039	भद्रि 23/03/2040

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : मकर 1 वर्ष 10 मास 28 दिन

कुल दशाकाल : 86 वर्ष

तिथि : चित्रा - 4 सव्य

देह : कर्क जीव : मीन

मकर 4 वर्ष	धनु 10 वर्ष	कर्क 21 वर्ष	सिंह 5 वर्ष	मिथुन 9 वर्ष
09/09/1964	08/08/1966	08/08/1976	08/08/1997	08/08/2002
08/08/1966	08/08/1976	08/08/1997	08/08/2002	09/08/2011
00/00/0000	धनु 07/10/1967	कर्क 24/09/1981	सिंह 22/11/1997	मिथु 18/07/2003
00/00/0000	कर्क 17/03/1970	सिंह 14/12/1982	मिथु 01/06/1998	वृष 21/03/2005
00/00/0000	सिंह 15/10/1970	मिथु 23/02/1985	वृष 07/05/1999	मेष 13/12/2005
09/09/1964	मिथु 01/11/1971	वृष 20/01/1989	मेष 03/10/1999	मीन 31/12/2006
मिथु 18/11/1964	वृष 11/09/1973	मेष 07/10/1990	मीन 02/05/2000	कुंभ 02/06/2007
वृष 17/08/1965	मेष 05/07/1974	मीन 17/03/1993	कुंभ 26/07/2000	मक 01/11/2007
मेष 13/12/1965	मीन 03/09/1975	कुंभ 08/03/1994	मक 19/10/2000	धनु 18/11/2008
मीन 01/06/1966	कुंभ 20/02/1976	मक 28/02/1995	धनु 19/05/2001	कर्क 29/01/2011
कुंभ 08/08/1966	मक 08/08/1976	धनु 08/08/1997	कर्क 08/08/2002	सिंह 09/08/2011
वृष 16 वर्ष	मेष 7 वर्ष	मीन 10 वर्ष	कुम्भ 4 वर्ष	मकर 4 वर्ष
09/08/2011	09/08/2027	08/08/2034	08/08/2044	08/08/2048
09/08/2027	08/08/2034	08/08/2044	08/08/2048	00/00/0000
वृष 31/07/2014	मेष 04/03/2028	मीन 07/10/2035	कुंभ 15/10/2044	मक 15/10/2048
मेष 18/11/2015	मीन 26/12/2028	कुंभ 25/03/2036	मक 22/12/2044	धनु 03/04/2049
मीन 28/09/2017	कुंभ 24/04/2029	मक 11/09/2036	धनु 10/06/2045	कर्क 25/03/2050
कुंभ 27/06/2018	मक 21/08/2029	धनु 09/11/2037	कर्क 01/06/2046	सिंह 18/06/2050
मक 26/03/2019	धनु 14/06/2030	कर्क 19/04/2040	सिंह 25/08/2046	मिथु 10/09/2050
धनु 02/02/2021	कर्क 28/02/2032	सिंह 18/11/2040	मिथु 25/01/2047	00/00/0000
कर्क 30/12/2024	सिंह 26/07/2032	मिथु 05/12/2041	वृष 24/10/2047	00/00/0000
सिंह 05/12/2025	मिथु 20/04/2033	वृष 15/10/2043	मेष 20/02/2048	00/00/0000
मिथु 09/08/2027	वृष 08/08/2034	मेष 08/08/2044	मीन 08/08/2048	00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

वृष - मिथु	मेष - मेष	मेष - मीन	मेष - कुंभ	मेष - मक
05/12/2025	09/08/2027	04/03/2028	26/12/2028	24/04/2029
09/08/2027	04/03/2028	26/12/2028	24/04/2029	21/08/2029
मिथु 07/02/2026	मेष 25/08/2027	मीन 07/04/2028	कुंभ 31/12/2028	मक 29/04/2029
वृष 01/06/2026	मीन 19/09/2027	कुंभ 21/04/2028	मक 06/01/2029	धनु 13/05/2029
मेष 21/07/2026	कुंभ 28/09/2027	मक 05/05/2028	धनु 20/01/2029	कर्क 11/06/2029
मीन 30/09/2026	मक 08/10/2027	धनु 08/06/2028	कर्क 18/02/2029	सिंह 18/06/2029
कुंभ 28/10/2026	धनु 01/11/2027	कर्क 20/08/2028	सिंह 25/02/2029	मिथु 01/07/2029
मक 26/11/2026	कर्क 22/12/2027	सिंह 06/09/2028	मिथु 09/03/2029	वृष 23/07/2029
धनु 05/02/2027	सिंह 03/01/2028	मिथु 07/10/2028	वृष 31/03/2029	मेष 01/08/2029
कर्क 04/07/2027	मिथु 25/01/2028	वृष 02/12/2028	मेष 10/04/2029	मीन 15/08/2029
सिंह 09/08/2027	वृष 04/03/2028	मेष 26/12/2028	मीन 24/04/2029	कुंभ 21/08/2029
मेष - धनु	मेष - कर्क	मेष - सिंह	मेष - मिथु	मेष - वृष
21/08/2029	14/06/2030	28/02/2032	26/07/2032	20/04/2033
14/06/2030	28/02/2032	26/07/2032	20/04/2033	08/08/2034
धनु 24/09/2029	कर्क 14/11/2030	सिंह 08/03/2032	मिथु 23/08/2032	वृष 17/07/2033
कर्क 06/12/2029	सिंह 20/12/2030	मिथु 24/03/2032	वृष 12/10/2032	मेष 25/08/2033
सिंह 23/12/2029	मिथु 23/02/2031	वृष 20/04/2032	मेष 03/11/2032	मीन 19/10/2033
मिथु 23/01/2030	वृष 19/06/2031	मेष 02/05/2032	मीन 04/12/2032	कुंभ 10/11/2033
वृष 20/03/2030	मेष 09/08/2031	मीन 20/05/2032	कुंभ 16/12/2032	मक 02/12/2033
मेष 13/04/2030	मीन 21/10/2031	कुंभ 27/05/2032	मक 29/12/2032	धनु 27/01/2034
मीन 17/05/2030	कुंभ 19/11/2031	मक 02/06/2032	धनु 29/01/2033	कर्क 23/05/2034
कुंभ 31/05/2030	मक 18/12/2031	धनु 20/06/2032	कर्क 04/04/2033	सिंह 20/06/2034
मक 14/06/2030	धनु 28/02/2032	कर्क 26/07/2032	सिंह 20/04/2033	मिथु 08/08/2034
मीन - मीन	मीन - कुंभ	मीन - मक	मीन - धनु	मीन - कर्क
08/08/2034	07/10/2035	25/03/2036	11/09/2036	09/11/2037
07/10/2035	25/03/2036	11/09/2036	09/11/2037	19/04/2040
मीन 27/09/2034	कुंभ 15/10/2035	मक 02/04/2036	धनु 30/10/2036	कर्क 15/06/2038
कुंभ 16/10/2034	मक 23/10/2035	धनु 22/04/2036	कर्क 11/02/2037	सिंह 06/08/2038
मक 05/11/2034	धनु 12/11/2035	कर्क 02/06/2036	सिंह 08/03/2037	मिथु 07/11/2038
धनु 25/12/2034	कर्क 23/12/2035	सिंह 12/06/2036	मिथु 21/04/2037	वृष 22/04/2039
कर्क 07/04/2035	सिंह 02/01/2036	मिथु 30/06/2036	वृष 09/07/2037	मेष 04/07/2039
सिंह 02/05/2035	मिथु 20/01/2036	वृष 31/07/2036	मेष 13/08/2037	मीन 16/10/2039
मिथु 15/06/2035	वृष 20/02/2036	मेष 14/08/2036	मीन 01/10/2037	कुंभ 26/11/2039
वृष 02/09/2035	मेष 05/03/2036	मीन 03/09/2036	कुंभ 21/10/2037	मक 07/01/2040
मेष 07/10/2035	मीन 25/03/2036	कुंभ 11/09/2036	मक 09/11/2037	धनु 19/04/2040

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

मीन - सिंह 19/04/2040 18/11/2040	मीन - मिथु 18/11/2040 05/12/2041	मीन - वृष 05/12/2041 15/10/2043	मीन - मेष 15/10/2043 08/08/2044	कुंभ - कुंभ 08/08/2044 15/10/2044
सिंह 02/05/2040 मिथु 24/05/2040 वृष 02/07/2040 मेघ 20/07/2040 मीन 13/08/2040 कुंभ 23/08/2040 मक 02/09/2040 धनु 27/09/2040 कर्क 18/11/2040	मिथु 28/12/2040 वृष 09/03/2041 मेघ 09/04/2041 मीन 23/05/2041 कुंभ 10/06/2041 मक 28/06/2041 धनु 11/08/2041 कर्क 13/11/2041 सिंह 05/12/2041	वृष 10/04/2042 मेघ 05/06/2042 मीन 23/08/2042 कुंभ 23/09/2042 मक 25/10/2042 धनु 12/01/2043 कर्क 27/06/2043 सिंह 05/08/2043 मिथु 15/10/2043	मेघ 09/11/2043 मीन 13/12/2043 कुंभ 27/12/2043 मक 10/01/2044 धनु 13/02/2044 कर्क 26/04/2044 सिंह 13/05/2044 मिथु 13/06/2044 वृष 08/08/2044	कुंभ 11/08/2044 मक 14/08/2044 धनु 22/08/2044 कर्क 08/09/2044 सिंह 12/09/2044 मिथु 19/09/2044 वृष 01/10/2044 मेघ 07/10/2044 मीन 15/10/2044
कुंभ - मक 15/10/2044 22/12/2044	कुंभ - धनु 22/12/2044 10/06/2045	कुंभ - कर्क 10/06/2045 01/06/2046	कुंभ - सिंह 01/06/2046 25/08/2046	कुंभ - मिथु 25/08/2046 25/01/2047
मक 18/10/2044 धनु 26/10/2044 कर्क 11/11/2044 सिंह 15/11/2044 मिथु 22/11/2044 वृष 05/12/2044 मेघ 11/12/2044 मीन 19/12/2044 कुंभ 22/12/2044	धनु 10/01/2045 कर्क 21/02/2045 सिंह 03/03/2045 मिथु 21/03/2045 वृष 21/04/2045 मेघ 05/05/2045 मीन 25/05/2045 कुंभ 02/06/2045 मक 10/06/2045	कर्क 05/09/2045 सिंह 25/09/2045 मिथु 02/11/2045 वृष 07/01/2046 मेघ 05/02/2046 मीन 19/03/2046 कुंभ 04/04/2046 मक 21/04/2046 धनु 01/06/2046	सिंह 06/06/2046 मिथु 15/06/2046 वृष 01/07/2046 मेघ 08/07/2046 मीन 18/07/2046 कुंभ 22/07/2046 मक 26/07/2046 धनु 05/08/2046 कर्क 25/08/2046	मिथु 10/09/2046 वृष 09/10/2046 मेघ 21/10/2046 मीन 08/11/2046 कुंभ 15/11/2046 मक 22/11/2046 धनु 10/12/2046 कर्क 16/01/2047 सिंह 25/01/2047
कुंभ - वृष 25/01/2047 24/10/2047	कुंभ - मेघ 24/10/2047 20/02/2048	कुंभ - मीन 20/02/2048 08/08/2048	मक - मक 08/08/2048 15/10/2048	मक - धनु 15/10/2048 03/04/2049
वृष 17/03/2047 मेघ 08/04/2047 मीन 09/05/2047 कुंभ 22/05/2047 मक 04/06/2047 धनु 05/07/2047 कर्क 10/09/2047 सिंह 26/09/2047 मिथु 24/10/2047	मेघ 03/11/2047 मीन 16/11/2047 कुंभ 22/11/2047 मक 28/11/2047 धनु 11/12/2047 कर्क 09/01/2048 सिंह 16/01/2048 मिथु 29/01/2048 वृष 20/02/2048	मीन 11/03/2048 कुंभ 19/03/2048 मक 26/03/2048 धनु 15/04/2048 कर्क 27/05/2048 सिंह 06/06/2048 मिथु 23/06/2048 वृष 25/07/2048 मेघ 08/08/2048	मक 11/08/2048 धनु 19/08/2048 कर्क 04/09/2048 सिंह 08/09/2048 मिथु 15/09/2048 वृष 28/09/2048 मेघ 04/10/2048 मीन 12/10/2048 कुंभ 15/10/2048	धनु 03/11/2048 कर्क 15/12/2048 सिंह 25/12/2048 मिथु 12/01/2049 वृष 12/02/2049 मेघ 26/02/2049 मीन 18/03/2049 कुंभ 26/03/2049 मक 03/04/2049

चर दशा

भोग्य दशा काल : मेष 3 वर्ष 0 मास 0 दिन

मेघ 3 वर्ष	
09/09/1964	
10/09/1967	
वृष	10/12/1964
मिथु	11/03/1965
कर्क	10/06/1965
सिंह	10/09/1965
कन्या	10/12/1965
तुला	11/03/1966
वृश्चि	11/06/1966
धनु	10/09/1966
मक	10/12/1966
कुंभ	12/03/1967
मीन	11/06/1967
मेघ	10/09/1967

वृष 2 वर्ष	
10/09/1967	
10/09/1969	
मेघ	10/11/1967
मीन	10/01/1968
कुंभ	11/03/1968
मक	11/05/1968
धनु	11/07/1968
वृश्चि	09/09/1968
तुला	09/11/1968
कन्या	09/01/1969
सिंह	11/03/1969
कर्क	11/05/1969
मिथु	11/07/1969
वृष	10/09/1969

मिथुन 2 वर्ष	
10/09/1969	
10/09/1971	
वृष	10/11/1969
मेघ	09/01/1970
मीन	11/03/1970
कुंभ	11/05/1970
मक	11/07/1970
धनु	10/09/1970
वृश्चि	10/11/1970
तुला	10/01/1971
कन्या	12/03/1971
सिंह	11/05/1971
कर्क	11/07/1971
मिथु	10/09/1971

कर्क 9 वर्ष	
10/09/1971	
09/09/1980	
मिथु	10/06/1972
वृष	11/03/1973
मेघ	10/12/1973
मीन	10/09/1974
कुंभ	11/06/1975
मक	11/03/1976
धनु	10/12/1976
वृश्चि	10/09/1977
तुला	11/06/1978
कन्या	12/03/1979
सिंह	10/12/1979
कर्क	09/09/1980

सिंह 12 वर्ष	
09/09/1980	
09/09/1992	
कन्या	10/09/1981
तुला	10/09/1982
वृश्चि	10/09/1983
धनु	09/09/1984
मक	10/09/1985
कुंभ	10/09/1986
मीन	10/09/1987
मेघ	09/09/1988
वृष	10/09/1989
मिथु	10/09/1990
कर्क	10/09/1991
सिंह	09/09/1992

कन्या 1 वर्ष	
09/09/1992	
10/09/1993	
तुला	10/10/1992
वृश्चि	09/11/1992
धनु	10/12/1992
मक	09/01/1993
कुंभ	09/02/1993
मीन	11/03/1993
मेघ	10/04/1993
वृष	11/05/1993
मिथु	10/06/1993
कर्क	11/07/1993
सिंह	10/08/1993
कन्या	10/09/1993

तुला 9 वर्ष	
10/09/1993	
10/09/2002	
वृश्चि	11/06/1994
धनु	12/03/1995
मक	10/12/1995
कुंभ	09/09/1996
मीन	10/06/1997
मेघ	11/03/1998
वृष	10/12/1998
मिथु	10/09/1999
कर्क	10/06/2000
सिंह	11/03/2001
कन्या	10/12/2001
तुला	10/09/2002

वृश्चिक 8 वर्ष	
10/09/2002	
10/09/2010	
तुला	11/05/2003
कन्या	10/01/2004
सिंह	09/09/2004
कर्क	11/05/2005
मिथु	09/01/2006
वृष	10/09/2006
मेघ	11/05/2007
मीन	10/01/2008
कुंभ	09/09/2008
मक	11/05/2009
धनु	09/01/2010
वृश्चि	10/09/2010

धनु 5 वर्ष	
10/09/2010	
10/09/2015	
वृश्चि	09/02/2011
तुला	11/07/2011
कन्या	10/12/2011
सिंह	11/05/2012
कर्क	10/10/2012
मिथु	11/03/2013
वृष	10/08/2013
मेघ	09/01/2014
मीन	11/06/2014
कुंभ	10/11/2014
मक	11/04/2015
धनु	10/09/2015

मकर 11 वर्ष	
10/09/2015	
10/09/2026	
धनु	10/08/2016
वृश्चि	11/07/2017
तुला	11/06/2018
कन्या	11/05/2019
सिंह	10/04/2020
कर्क	11/03/2021
मिथु	09/02/2022
वृष	10/01/2023
मेघ	10/12/2023
मीन	09/11/2024
कुंभ	10/10/2025
मक	10/09/2026

कुम्भ 8 वर्ष	
10/09/2026	
10/09/2034	
मीन	11/05/2027
मेघ	10/01/2028
वृष	09/09/2028
मिथु	11/05/2029
कर्क	09/01/2030
सिंह	10/09/2030
कन्या	11/05/2031
तुला	10/01/2032
वृश्चि	09/09/2032
धनु	11/05/2033
मक	09/01/2034
कुंभ	10/09/2034

मीन 10 वर्ष	
10/09/2034	
09/09/2044	
मेघ	11/07/2035
वृष	11/05/2036
मिथु	11/03/2037
कर्क	09/01/2038
सिंह	10/11/2038
कन्या	10/09/2039
तुला	11/07/2040
वृश्चि	11/05/2041
धनु	11/03/2042
मक	10/01/2043
कुंभ	10/11/2043
मीन	09/09/2044

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चर दशा - प्रत्यन्तर

मक - मक 10/10/2025 10/09/2026	कुंभ - मीन 10/09/2026 11/05/2027	कुंभ - मेष 11/05/2027 10/01/2028	कुंभ - वृष 10/01/2028 09/09/2028	कुंभ - मिथु 09/09/2028 11/05/2029
धनु 07/11/2025 वृश्चि 05/12/2025 तुला 02/01/2026 कन्या 30/01/2026 सिंह 27/02/2026 कर्क 26/03/2026 मिथु 23/04/2026 वृष 21/05/2026 मेष 18/06/2026 मीन 16/07/2026 कुंभ 13/08/2026 मक 10/09/2026	मेष 30/09/2026 वृष 20/10/2026 मिथु 10/11/2026 कर्क 30/11/2026 सिंह 20/12/2026 कन्या 10/01/2027 तुला 30/01/2027 वृश्चि 19/02/2027 धनु 12/03/2027 मक 01/04/2027 कुंभ 21/04/2027 मीन 11/05/2027	वृष 01/06/2027 मिथु 21/06/2027 कर्क 11/07/2027 सिंह 01/08/2027 कन्या 21/08/2027 तुला 10/09/2027 वृश्चि 30/09/2027 धनु 21/10/2027 मक 10/11/2027 कुंभ 30/11/2027 मीन 21/12/2027 मेष 10/01/2028	मेष 30/01/2028 मीन 19/02/2028 कुंभ 11/03/2028 मक 31/03/2028 धनु 20/04/2028 वृश्चि 11/05/2028 तुला 31/05/2028 कन्या 20/06/2028 सिंह 11/07/2028 कर्क 31/07/2028 मिथु 20/08/2028 वृष 09/09/2028	वृष 30/09/2028 मेष 20/10/2028 मीन 09/11/2028 कुंभ 30/11/2028 मक 20/12/2028 धनु 09/01/2029 वृश्चि 29/01/2029 तुला 19/02/2029 कन्या 11/03/2029 सिंह 31/03/2029 कर्क 21/04/2029 मिथु 11/05/2029
कुंभ - कर्क 11/05/2029 09/01/2030	कुंभ - सिंह 09/01/2030 10/09/2030	कुंभ - कन्या 10/09/2030 11/05/2031	कुंभ - तुला 11/05/2031 10/01/2032	कुंभ - वृश्चि 10/01/2032 09/09/2032
मिथु 31/05/2029 वृष 20/06/2029 मेष 11/07/2029 मीन 31/07/2029 कुंभ 20/08/2029 मक 10/09/2029 धनु 30/09/2029 वृश्चि 20/10/2029 तुला 10/11/2029 कन्या 30/11/2029 सिंह 20/12/2029 कर्क 09/01/2030	कन्या 30/01/2030 तुला 19/02/2030 वृश्चि 11/03/2030 धनु 01/04/2030 मक 21/04/2030 कुंभ 11/05/2030 मीन 31/05/2030 मेष 21/06/2030 वृष 11/07/2030 मिथु 31/07/2030 कर्क 21/08/2030 सिंह 10/09/2030	तुला 30/09/2030 वृश्चि 20/10/2030 धनु 10/11/2030 मक 30/11/2030 कुंभ 20/12/2030 मीन 10/01/2031 मेष 30/01/2031 वृष 19/02/2031 मिथु 12/03/2031 कर्क 01/04/2031 सिंह 21/04/2031 कन्या 11/05/2031	वृश्चि 01/06/2031 धनु 21/06/2031 मक 11/07/2031 कुंभ 01/08/2031 मीन 21/08/2031 मेष 10/09/2031 वृष 30/09/2031 मिथु 21/10/2031 कर्क 10/11/2031 सिंह 30/11/2031 कन्या 21/12/2031 तुला 10/01/2032	तुला 30/01/2032 कन्या 19/02/2032 सिंह 11/03/2032 कर्क 31/03/2032 मिथु 20/04/2032 वृष 11/05/2032 मेष 31/05/2032 मीन 20/06/2032 कुंभ 11/07/2032 मक 31/07/2032 धनु 20/08/2032 वृश्चि 09/09/2032
कुंभ - धनु 09/09/2032 11/05/2033	कुंभ - मक 11/05/2033 09/01/2034	कुंभ - कुंभ 09/01/2034 10/09/2034	मीन - मेष 10/09/2034 11/07/2035	मीन - वृष 11/07/2035 11/05/2036
वृश्चि 30/09/2032 तुला 20/10/2032 कन्या 09/11/2032 सिंह 30/11/2032 कर्क 20/12/2032 मिथु 09/01/2033 वृष 29/01/2033 मेष 19/02/2033 मीन 11/03/2033 कुंभ 31/03/2033 मक 21/04/2033 धनु 11/05/2033	धनु 31/05/2033 वृश्चि 20/06/2033 तुला 11/07/2033 कन्या 31/07/2033 सिंह 20/08/2033 कर्क 10/09/2033 मिथु 30/09/2033 वृष 20/10/2033 मेष 10/11/2033 मीन 30/11/2033 कुंभ 20/12/2033 मक 09/01/2034	मीन 30/01/2034 मेष 19/02/2034 वृष 11/03/2034 मिथु 01/04/2034 कर्क 21/04/2034 सिंह 11/05/2034 कन्या 31/05/2034 तुला 21/06/2034 वृश्चि 11/07/2034 धनु 31/07/2034 मक 21/08/2034 कुंभ 10/09/2034	वृष 05/10/2034 मिथु 31/10/2034 कर्क 25/11/2034 सिंह 20/12/2034 कन्या 15/01/2035 तुला 09/02/2035 वृश्चि 06/03/2035 धनु 01/04/2035 मक 26/04/2035 कुंभ 22/05/2035 मीन 16/06/2035 मेष 11/07/2035	मेष 06/08/2035 मीन 31/08/2035 कुंभ 25/09/2035 मक 21/10/2035 धनु 15/11/2035 वृश्चि 10/12/2035 तुला 05/01/2036 कन्या 30/01/2036 सिंह 25/02/2036 कर्क 21/03/2036 मिथु 15/04/2036 वृष 11/05/2036



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चर दशा - प्रत्यन्तर

मीन - मिथु 11/05/2036 11/03/2037	मीन - कर्क 11/03/2037 09/01/2038	मीन - सिंह 09/01/2038 10/11/2038	मीन - कन्या 10/11/2038 10/09/2039	मीन - तुला 10/09/2039 11/07/2040
वृष 05/06/2036 मेष 30/06/2036 मीन 26/07/2036 कुंभ 20/08/2036 मक 14/09/2036 धनु 10/10/2036 वृश्चि 04/11/2036 तुला 30/11/2036 कन्या 25/12/2036 सिंह 19/01/2037 कर्क 14/02/2037 मिथु 11/03/2037	मिथु 05/04/2037 वृष 01/05/2037 मेष 26/05/2037 मीन 20/06/2037 कुंभ 16/07/2037 मक 10/08/2037 धनु 05/09/2037 वृश्चि 30/09/2037 तुला 25/10/2037 कन्या 20/11/2037 सिंह 15/12/2037 कर्क 09/01/2038	कन्या 04/02/2038 तुला 01/03/2038 वृश्चि 26/03/2038 धनु 21/04/2038 मक 16/05/2038 कुंभ 11/06/2038 मीन 06/07/2038 मेष 31/07/2038 वृष 26/08/2038 मिथु 20/09/2038 कर्क 15/10/2038 सिंह 10/11/2038	तुला 05/12/2038 वृश्चि 30/12/2038 धनु 25/01/2039 मक 19/02/2039 कुंभ 17/03/2039 मीन 11/04/2039 मेष 06/05/2039 वृष 01/06/2039 मिथु 26/06/2039 कर्क 21/07/2039 सिंह 16/08/2039 कन्या 10/09/2039	वृश्चि 05/10/2039 धनु 31/10/2039 मक 25/11/2039 कुंभ 21/12/2039 मीन 15/01/2040 मेष 09/02/2040 वृष 06/03/2040 मिथु 31/03/2040 कर्क 25/04/2040 सिंह 21/05/2040 कन्या 15/06/2040 तुला 11/07/2040
मीन - वृश्चि 11/07/2040 11/05/2041	मीन - धनु 11/05/2041 11/03/2042	मीन - मक 11/03/2042 10/01/2043	मीन - कुंभ 10/01/2043 10/11/2043	मीन - मीन 10/11/2043 09/09/2044
तुला 05/08/2040 कन्या 30/08/2040 सिंह 25/09/2040 कर्क 20/10/2040 मिथु 14/11/2040 वृष 10/12/2040 मेष 04/01/2041 मीन 29/01/2041 कुंभ 24/02/2041 मक 21/03/2041 धनु 16/04/2041 वृश्चि 11/05/2041	वृश्चि 05/06/2041 तुला 01/07/2041 कन्या 26/07/2041 सिंह 20/08/2041 कर्क 15/09/2041 मिथु 10/10/2041 वृष 04/11/2041 मेष 30/11/2041 मीन 25/12/2041 कुंभ 20/01/2042 मक 14/02/2042 धनु 11/03/2042	धनु 06/04/2042 वृश्चि 01/05/2042 तुला 26/05/2042 कन्या 21/06/2042 सिंह 16/07/2042 कर्क 10/08/2042 मिथु 05/09/2042 वृष 30/09/2042 मेष 26/10/2042 मीन 20/11/2042 कुंभ 15/12/2042 मक 10/01/2043	मीन 04/02/2043 मेष 01/03/2043 वृष 27/03/2043 मिथु 21/04/2043 कर्क 16/05/2043 सिंह 11/06/2043 कन्या 06/07/2043 तुला 01/08/2043 वृश्चि 26/08/2043 धनु 20/09/2043 मक 16/10/2043 कुंभ 10/11/2043	मेष 05/12/2043 वृष 31/12/2043 मिथु 25/01/2044 कर्क 19/02/2044 सिंह 16/03/2044 कन्या 10/04/2044 तुला 06/05/2044 वृश्चि 31/05/2044 धनु 25/06/2044 मक 21/07/2044 कुंभ 15/08/2044 मीन 09/09/2044
मीन - मीन 10/11/2043 09/09/2044	मीन - मीन 10/11/2043 09/09/2044	मीन - मीन 10/11/2043 09/09/2044	मीन - मीन 10/11/2043 09/09/2044	मीन - मीन 10/11/2043 09/09/2044
मेष 05/12/2043 वृष 31/12/2043 मिथु 25/01/2044 कर्क 19/02/2044 सिंह 16/03/2044 कन्या 10/04/2044 तुला 06/05/2044 वृश्चि 31/05/2044 धनु 25/06/2044 मक 21/07/2044 कुंभ 15/08/2044 मीन 09/09/2044	मेष 05/12/2043 वृष 31/12/2043 मिथु 25/01/2044 कर्क 19/02/2044 सिंह 16/03/2044 कन्या 10/04/2044 तुला 06/05/2044 वृश्चि 31/05/2044 धनु 25/06/2044 मक 21/07/2044 कुंभ 15/08/2044 मीन 09/09/2044	मेष 05/12/2043 वृष 31/12/2043 मिथु 25/01/2044 कर्क 19/02/2044 सिंह 16/03/2044 कन्या 10/04/2044 तुला 06/05/2044 वृश्चि 31/05/2044 धनु 25/06/2044 मक 21/07/2044 कुंभ 15/08/2044 मीन 09/09/2044	मेष 05/12/2043 वृष 31/12/2043 मिथु 25/01/2044 कर्क 19/02/2044 सिंह 16/03/2044 कन्या 10/04/2044 तुला 06/05/2044 वृश्चि 31/05/2044 धनु 25/06/2044 मक 21/07/2044 कुंभ 15/08/2044 मीन 09/09/2044	मेष 05/12/2043 वृष 31/12/2043 मिथु 25/01/2044 कर्क 19/02/2044 सिंह 16/03/2044 कन्या 10/04/2044 तुला 06/05/2044 वृश्चि 31/05/2044 धनु 25/06/2044 मक 21/07/2044 कुंभ 15/08/2044 मीन 09/09/2044

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 2
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	मकर, मिथुन
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	लक्ष्मी
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

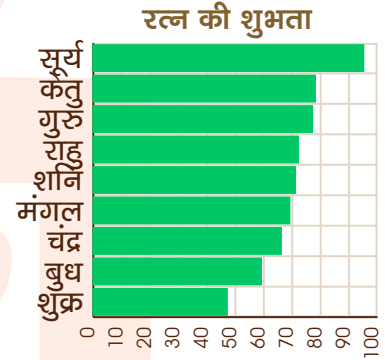


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	95%	सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	78%	भाग्योदय, धन
पुखराज	गुरु	77%	धन, भाग्योदय, कम खर्च
गोमेद	राहु	72%	पराक्रम, सन्तति सुख
नीलम	शनि	71%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	69%	सुख, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	66%	दम्पति, सुख
पन्ना	बुध	59%	सन्तति सुख, पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति
हीरा	शुक्र	47%	ग्रह कलेश, धन हानि, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
मंगल	07/12/1964	100%	72%	81%	44%	83%	47%	71%	59%	84%
राहु	07/12/1982	82%	53%	56%	59%	77%	55%	77%	84%	66%
गुरु	07/12/1998	100%	72%	75%	44%	89%	22%	71%	72%	78%
शनि	07/12/2017	82%	53%	56%	66%	77%	55%	83%	78%	66%
बुध	07/12/2034	100%	53%	69%	72%	77%	55%	71%	72%	78%
केतु	07/12/2041	82%	53%	75%	59%	77%	55%	58%	59%	91%
शुक्र	07/12/2061	82%	53%	69%	66%	77%	61%	77%	78%	84%
सूर्य	08/12/2067	100%	72%	75%	59%	83%	22%	58%	59%	66%
चंद्र	07/12/2077	100%	78%	69%	66%	77%	47%	71%	59%	66%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए माणिक्य, लहसुनिया व पुखराज रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

माणिक्य व लहसुनिया रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद, नीलम, मूंगा, मोती एवं पन्ना रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

हीरा रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य पंचम भाव में स्थित है। आपको सूर्य माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आप सदाचार मार्ग का पालन करते हैं। आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखने में सफल होंगे। यह रत्न आपको हाजिरजवाब बनायेगा। इसकी शुभता से आपकी लेखन क्षमता का विस्तार होगा। आपकी परामर्श शक्ति का विकास होगा। सूर्य रत्न माणिक्य व्यापार और व्यवसाय को बेहतर करेगा। संतान सुख बढ़ेगा। जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुकूल तरक्की होगी। संतान मेधावी और कुल का नाम करती है। माणिक्य रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में सूर्य पंचम भाव का स्वामी है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को प्रबल कर सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके स्वास्थ्य, आरोग्यता, यश-मान, ज्ञान, योग्यता एवं बुद्धि का विकास हो सकता है। सूर्य पंचमेश है और पंचमेश का रत्न होने के कारण माणिक्य आपके संतान सुख में भी वृद्धि करने में भी सक्षम है। इसके अलावा सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सरकार द्वारा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखरी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु नवम भाव में स्थित है। केतु रत्न लहसुनिया धारण करना आपके लिए शुभ रहेगा। यह रत्न धारण से आपके पराक्रम भाव में वृद्धि होगी। रत्न शुभता से आप उदार और दयालु बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपके भाग्य को बढ़ा सकता है। इस रत्न को धारण कर आप नैतिकता से धन लाभ कमाने का प्रयास करेंगे। रत्न प्रभाव सहोदर या भाईयों से आपके संबंध मजबूत करेगा। लहसुनिया रत्न शुभता से आप के पिता के सुख में भी यह रत्न बढ़ाएगा। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आपको विदेश स्थानों से धनागमन प्राप्ति के योग बनेंगे।

केतु धनु राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी गुरु दूसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न

आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल 'केट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण कर आपकी बुद्धिमत्ता का विकास होता है। यह रत्न वाणी में शुभता, विनम्र वाणी, संचित धन एवं आत्मशक्ति बनाये रखने में सहयोग करेगा। पुखराज की शुभता से आपमें दार्शनिक प्रवृत्ति का भाव जाग्रत होगा। धन-धान्य, यश और सम्मान की प्राप्ति होगी। पुखराज से शैक्षिक क्षेत्र में शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। गुरु ग्रह की शुभता को बढ़ाने और अशुभता में कमी करने के लिए आप यह रत्न धारण करें।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में गुरु भाग्येश एवं व्ययेश है। भाग्येश होने के कारण बृहस्पति ग्रह आपके लिए शुभ ग्रह है। भाग्येश गुरु का रत्न पुखराज धारण कर आप अपने भाग्य की बाधाओं को दूर कर सकते हैं। प्रयास करने पर भी यदि आपके कार्य पूर्ण नहीं हो रहे हैं तो गुरु रत्न पुखराज धारण करने से भाग्योदय होकर कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती है। यह रत्न धर्म, ज्ञान एवं विवेक भाव की वृद्धि के लिए अनुकूल रत्न है। पुखराज द्वादशेश का रत्न होने के कारण विदेश यात्रा और विदेश गमन, शयन सुख को बढ़ाया सकता है। अतः आप पुखराज रत्न धारण कर सकते हैं।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूठी में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु तीसरे भाव में स्थित है। आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। इस रत्न को धारण करने से आपके पराक्रम भाव को बढ़ाएंगे। शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। गोमेद रत्न सकारात्मक विचारधारा बनाये रखेगा। रत्न के प्रभाव से आप प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी होंगे। पराक्रम व बल की बढ़ोतरी होगी। प्रवास के कार्यों में सफलता मिलेगी। मनोकूल पद की प्राप्ति होगी एवं उत्तरोत्तर उन्नति होगी। आप धर्म-कर्म की गतिविधियों में रुचि लेंगे। गोमेद रत्न आपके लिए शुभदायक है।

राहु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध पंचम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराएँ। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि एकादश भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण कर आप नीलीभी और सुखी व्यक्ति बनेंगे। आपको दीर्घकाल के लिए रोग अपने प्रभाव में नहीं पायेंगे। आपके पास पर्याप्त मात्रा में धन-संपत्ति होगी। सरकार की कृपा से भी धन, मान की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके लिए शुभ होकर आपको वाहनों का सुख देगा। धन संचय में सहयोग करेगा। नौकर चाकरों का सुख देगा। तथा नीलम रत्न प्रभाव से संतान प्राप्ति का विलम्ब दूर होगा। अनेक प्रकार के सुखों को आप प्राप्त करेंगे।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शनि कर्मेश एवं आयेश है। कर्मेश शनि का रत्न नीलम आपके कार्यक्षेत्र की समस्याओं का निवारण कर सकता है। यह रत्न आपकी योग्यता के अनुसार सफलता दिला सकता है। आत्मबल और मनोबल की वृद्धि कर सकता है। इसके अतिरिक्त नीलम रत्न आपके कार्य क्षेत्र को अनुकूल कर आपको उन्नति और विकास के अवसर प्राप्त करने में सहयोग करेंगे। शनि आयेश भी है इसलिए शनि रत्न नीलम धारण करने से आपकी आजीविका और आय दोनों क्षेत्रों से सुखद परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आप आय और कार्यक्षेत्र को सौहार्दपूर्ण बनाने के लिए शनि रत्न नीलम धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्नी, अन्यथा 5-6 रत्नी का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने से आपको भूमि-भवन सुख की प्राप्ति होगी। मंगल की यह स्थिति मंगलिक योग बनाती है। मूंगा रत्न शुभ होकर संतान सुख एवं जन्म स्थान से दूर रखेगा। साहस और जोश से किये गये सभी कार्यों में आपको सफलता की प्राप्ति होगी। मूंगा रत्न आपकी मातृ श्रद्धा को बढ़ायेगा। इस भाव से मंगल सप्तम, दशम एवं एकादश भाव को देख रहे हैं। रत्न का प्रभाव इन भावों की शुभता में वृद्धि व अशुभता को कम करेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और अष्टमेश के रूप में शुभ फल देने वाला ग्रह है। यद्यपि अष्टम भाव का स्वामी शुभ नहीं होता, परन्तु लग्नेश भी होने के कारण मंगल अष्टम दोष से मुक्त है। मंगल रत्न मूंगा शुभ ग्रह होकर आपके स्वास्थ्य, शक्ति, ऊर्जा, आरोग्यता, स्वाभिमान, अधिकार, प्रभुत्व और नेतृत्व शक्ति का विकास कर सकता है। मंगल अष्टमेश भी है इसलिए मंगल रत्न मूंगा धारण करने से आपके जीवन की बाधाओं में भी कमी आ सकती है। आप मूंगा धारण कर अपने स्वास्थ्य सुख को बढ़ा सकते हैं। मूंगा धारण करने से आपके आत्मविश्वास, दृढ़निश्चयता और साहस भाव में वृद्धि हो सकती है। लग्नेश का रत्न होने के कारण मूंगा आपके लिए जीवन रत्न भी है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात

मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न धारण से आपके स्वभाव की चंचलता की कमी होगी। यह रत्न आपकी नेतृत्व करने की क्षमता बढ़ायेगा। रत्न शुभता से आपको अनेक यात्राएं करनी पड़ सकती है। मोती रत्न आपकी स्फूर्ति बढ़ायेगा। जीवन साथी से आपके संबंध आत्मीय रहेंगे। मोती रत्न आपको आपके व्यवसाय में अच्छी सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपको एक से अधिक बार व्यापार क्षेत्र में बदलाव करने पड़ सकते हैं।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव का स्वामी है। चंद्र लग्नेश मंगल का मित्र है। चंद्र रत्न मोती की शुभता आपको सौम्य सरल स्वभाव, स्वाभिमानी, आत्मसम्मान, महत्वाकांक्षा का गुण दे सकती है। इसके अतिरिक्त मोती आपको धन, प्रतिष्ठा, यात्रा ऐश्वर्य से परिपूर्ण जीवन प्राप्त, कल्पना और प्रगतिशील विचारधारा भी प्रदान कर रहा है। चतुर्थेश का रत्न होने के कारण चंद्र रत्न मोती आपको माता सुख, कर्तव्यनिष्ठा, वाहन, जमीन-जायदाद से सुखी कर सकता है। इसलिए चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध पंचम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना

चाहिए। पन्ना रत्न आपको प्रसन्नचित्त, कुशाग्रबुद्धि और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। रत्न की शुभता से वाद विवाद में कुशल, तर्ककुशल और मधुरभाषी बनेंगे। यह रत्न आपको सदाचारी, धैर्यशील, चरित्रवान और संतोषी बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आप अपनी बुद्धि से धनार्जन करेंगे। यह रत्न आपको अपनी व्यवसायिक बुद्धि और विद्या के कारण एक सुखद जीवन व्यतीत करने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव आपको लोभ भावना से बचायेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में बुध तीसरे एवं षष्ठ भाव का स्वामी है। पराक्रमेश एवं ऋणेश बुध का रत्न पन्ना आपके लेखन, वाक्पटुता, चातुर्य एवं शिल्प कलाओं में निपुणता दे सकता है। अपने शत्रुओं को परास्त करने के लिए भी पन्ना रत्न की शक्तियों से आपको शारीरिक मेहनत कम और बौद्धिक योग्यता का प्रयोग अधिक करना होगा। पराक्रमेश का रत्न होने के कारण पन्ना आपके विवेक, व्यवहार कुशलता का विकास कर सकता है। बुध के सभी फल प्राप्त करने के लिए आप बुध रत्न पन्ना धारण करें। यह रत्न आपको बुध ग्रह की शुभता प्राप्त करने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आर्थिक मामलों को लेकर आपको चिंताएं सता सकती हैं। घर, वाहन, आभूषण और वस्त्र मनोकूल न होने के कारण आपका मन खिन्न हो सकता है। हीरा रत्न आपको अत्यधिक व्यवहारिक बना कर दूसरों के हितों की अवहेलना करने के लिए विवश कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य कमजोर हो सकता है। आप अधिक वाचाल हो सकते हैं। आपकी अत्यधिक व्यवहार कुशलता से आपके पारिवारिक संबंध खराब हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में अधिक से अधिक रुचि लेकर आप शुक्र रत्न हीरे के प्रभाव को अनुकूल कर सकते हैं।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तम भाव के स्वामी होकर परम मारकेश हो जाते हैं। अतः इस ग्रह का हीरा रत्न धारण करने से आपको धन हानि, पारिवारिक मतभेद एवं वैवाहिक जीवन में कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। हीरा रत्न के प्रभाव से आप भ्रमणकारी, व्यसनी और चंचल स्वभाव के हो सकते हैं। रत्न की अनुकूलता कम



FUTUREPOINT
Astro Solutions



होने के कारण इस रत्न को पहनने के बाद आप की सत्यवादिता में कमी आ सकती है। आपके पारिवारिक स्नेह में भी कमी के योग बन सकते हैं। हीरा सप्तमेश का रत्न है इसलिए इस रत्न धारण से आपके ग्रहस्थ सुख में अत्यधिक उतार चढ़ाव आ सकते हैं। भाईयों से वियोग, स्वजनों से विरोध और कलह उत्पन्न हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

बुध

(07/12/2017 - 07/12/2034)

बुध की दशा में आपका माणिक्य, लहसुनिया व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद, नीलम, मूंगा, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

केतु

(07/12/2034 - 07/12/2041)

केतु की दशा में आपका लहसुनिया, माणिक्य, पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद, नीलम, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

शुक्र

(07/12/2041 - 07/12/2061)

शुक्र की दशा में आपका लहसुनिया, माणिक्य, गोमेद, पुखराज व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मूंगा, पन्ना, हीरा व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

सूर्य

(07/12/2061 - 08/12/2067)

सूर्य की दशा में आपका माणिक्य, पुखराज व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, लहसुनिया, पन्ना, गोमेद व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



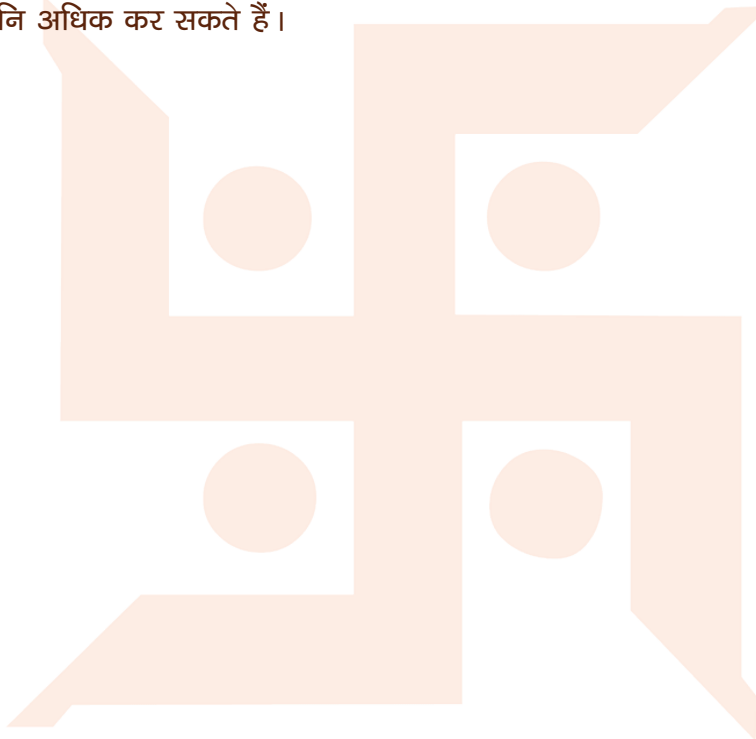
हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(08/12/2067 - 07/12/2077)

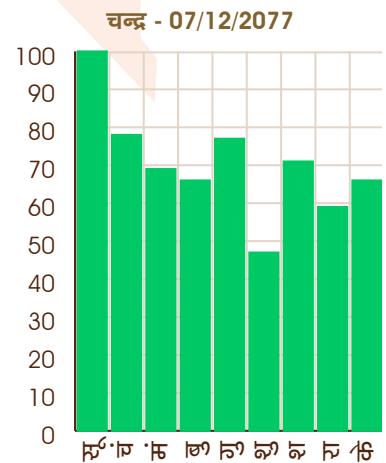
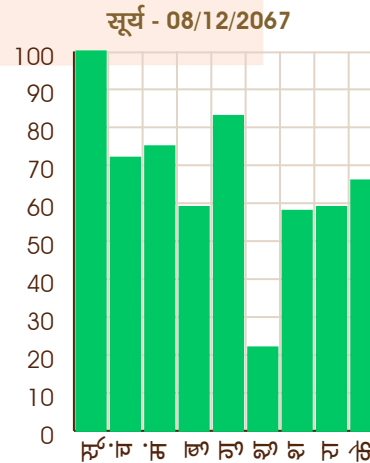
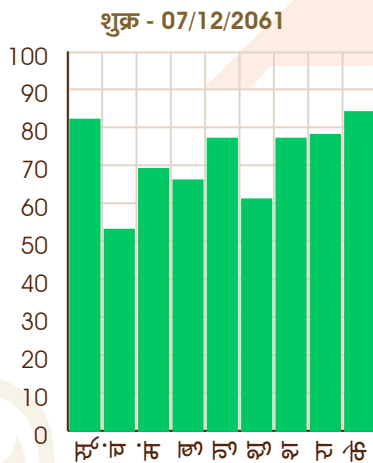
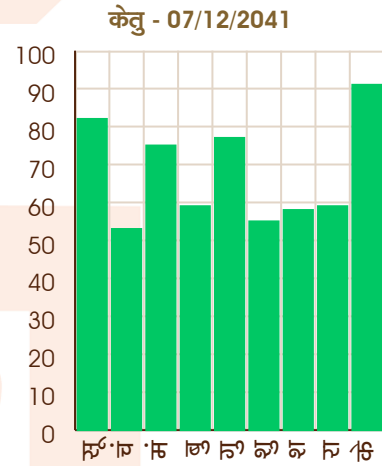
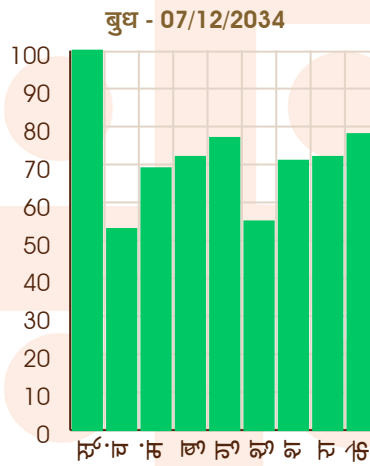
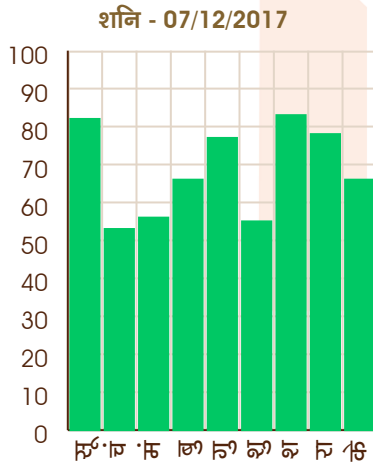
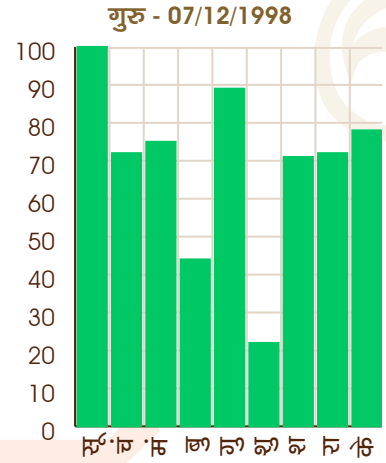
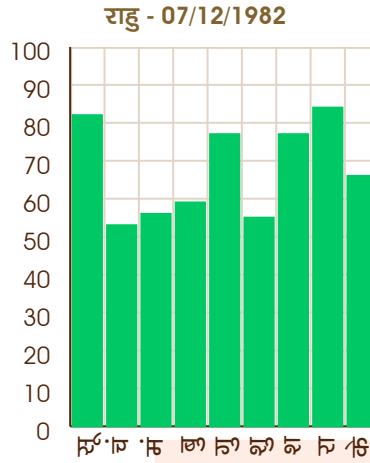
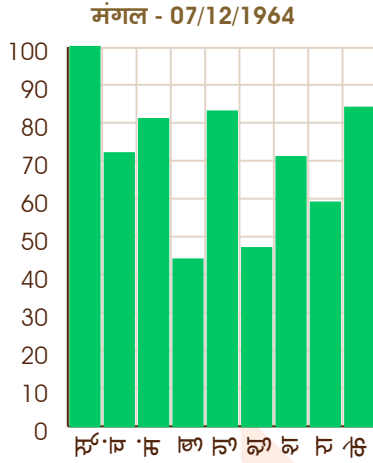
चन्द्र की दशा में आपका माणिक्य, मोती व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, मूंगा, पन्ना, लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



दशा ग्राफ



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गारनेट

आपका जन्म मेष राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी मंगल होता है। मंगल सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह चंद्र के पश्चात पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मेष राशि के लग्न वाले जातकों को मेष राशि के स्वामी ग्रह मंगल को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। मंगल ग्रह के लिये गारनेट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी मंगल सेनापति पद व ऊर्जा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को लीडरशिप गुण की प्राप्ति तथा अपनी टीम में नायक का गुण व टीम से सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को छोटे भाई का सहयोग भी प्राप्त होता है। मंगल ग्रह शक्ति एवं छोटे भाई का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको रक्त से संबंधित रोग जैसे उच्च रक्तचाप या निम्न रक्तचाप या रक्त संबंधी संक्रमण जैसे रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जातक में साहस व शक्ति का संचार होता है।

गारनेट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्यकी अंगुली मानी जाती है तथा सूर्य ग्रह मंगल को अपना मित्र ग्रह मानता है। गारनेट रत्न मंगल का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् मंगलवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल मंगल की होरा में श्रेष्ठ होता है। मंगलवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय मंगल की होरा का होता है। गारनेट को यदि मंगलवार के साथ-साथ मंगल के नक्षत्र अर्थात् मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गारनेट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर लाल रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, मंगल के 108 मंत्रों का जाप करते हुए अभिमंत्रित करके माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

मंगल का मंत्र - ॐ अं अंगारकाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि मंगल से संबंधित पदार्थ जैसे गेहूं, तांबा, गुड़, सवा मीटर लाल कपड़े का दान करें तो गारनेट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन मंगल का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें तो यह गारनेट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाना इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

मेष लग्न वाले जातक यदि गारनेट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मेष लग्न की हैं। मेष लग्न आपको प्रखरबुद्धि प्रदान कर रहा हैं। मेष राशि अग्नि तत्व, चर राशि होने के कारण आप दृढ निश्चयी व व्यवहार कुशल है। आपका अंतः तथा वाह्य मनोभाव एक से होते हैं। आप में नेताओं के गुण विद्यमान हैं, दूसरों के अधीन रहना आपको रास नहीं आता। आप जीवन में पुरुषार्थ तथा उद्यम से उन्नति कर लेते हैं। कुण्डली में मंगल, सूर्य, चन्द्र अशुभ हों, तो पिता-माता व भाई बहनों का सुख कम प्राप्त होता है। परिवर्तनशील स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित होकर प्रचण्ड रूप धारण कर लेने का गुण भी आपमें पाया जाता है। अत्यधिक क्रोधावेश में कई बार आप अपनी हानि भी करवा बैठते हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भावों के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें

बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। जिसमें षष्ठ भाव से रोग, ऋण और शत्रुओं से होने वाले कष्टों का बोध होता है। इसका स्वामी जिस भाव में जाता है उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश होता है। जिससे मनुष्य को षष्ठ भाव के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में रोग, ऋण और शत्रुओं के द्वारा दैहिक मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। त्रिक भावों में अष्टम भाव सर्वाधिक दुष्ट/अशुभ माना जाने वाला स्थान है। इस भाव का स्वामी अर्थात् अष्टमेश जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता है। अष्टम स्थान में बैठने वाले ग्रहों के फलों में पापत्व बढ़ जाता है। और अशुभ फलों में वृद्धि होती है। त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। इस भाव से अनेक प्रकार के व्यय का विचार करते हैं। इसलिए इसे व्यय भाव भी कहते हैं। यह हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष स्थान है। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव से संबंधित विषयों की अशुभता में वृद्धि करते हैं।

आपके लग्न के लिए बुध विशेष अशुभ ग्रह है। क्योंकि वह षष्ठ व तृतीय भाव का स्वामी है। इसी तरह शुक्र भी द्वितीयेश व सप्तमेश होने के कारण आपके लिए मारकेश हो गए हैं। शनि दशमेश होकर शुभ मगर आयेश होकर फिर पापी हो जाता है। ये सभी ग्रह आपके लिए कष्टकारी हो सकते हैं।

इसमें छठे भाव व तीसरे भाव के स्वामी बुध हैं, षष्ठेश बुध के परिणाम स्वरूप आपके अपने सम्बन्धियों से शत्रुवत् सम्बन्ध हो सकते हैं। अन्य जाति के व्यक्तियों से आपकी शीघ्र मित्रता हो सकती है। शत्रुओं की अधिकता होने से आपके मानसिक और शारीरिक कष्ट समय समय पर आपको परेशान कर सकते हैं। रोगों की अधिकता भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकती है। धन का व्यय रोग और शत्रु सम्बन्धी विषयों का समाधान करने पर लग सकता है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए आपको चतुरता से काम लेना होगा। यह योग आपको अल्प पराक्रमी, भाई बहनों से मतभेद और व्ययों की अधिकता दे सकता है। इस भाव में बुध रोग, ऋण और शत्रुओं का दमन कर अनेक क्षेत्रों में सफलता देता है।

अष्टमेश मंगल दुष्टता, क्रूरता, निर्दयता और शत्रुता का प्रतिनिधि है। इसके परिणाम से आप के आत्मविश्वास भाव में वृद्धि हो रही है। आप आक्रामक रुख रखते हुए, प्रयास भाव से अपने बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। मंगल की महादशा-अन्तर्दशा में लड़ाई-झगड़े, दुर्घटना और शत्रुओं के द्वारा धन, पद, प्रतिष्ठा की हानि हो सकती है। इस दशा अवधि में मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण, कटु वचन का त्याग और स्वयं की दुर्घटनाओं से रक्षा करनी चाहिए। आपके पुरुषार्थ से किये हुए सभी कार्य पूर्ण होंगे। परन्तु स्वास्थ्य के पक्ष से यह अनुकूल नहीं है।

द्वादश भाव व्यय का स्थान है। इस भाव में बृहस्पति की मीन राशि है। आप मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। द्वादश भाव से बृहस्पति का दृष्टि सम्बन्ध चतुर्थ भाव से होने से घर, जमीन-जायदाद और माता सुख की प्राप्ति होगी तथा दीर्घकालीन धन विनियोजन, विदेश स्थानों पर आपके व्ययों को बढ़ाएगा। वितीय विषयों के लिए गुरु की यह स्थिति अनुकूल नहीं

हैं।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 5 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/04/1971-10/06/1973	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/1979-15/03/1980 27/07/1980-06/10/1982	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985 17/09/1985-17/12/1987	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
शुभ
शुभ
अशुभ
शुभ

क्षेत्र

धन
शत्रु व रोग
दम्पति
दुर्घटना
व्यावसायिक उन्नति



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति चतुर्थ भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। इसके प्रभाव से जीवन में आपको भौतिक सुख संसाधनों तथा अन्य जायदाद आदि की प्राप्ति परिश्रम से होगी। शारीरिक रूप से आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न हो सकता है लेकिन दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है तथा वैवाहिक वार्ताओं में भी व्यवधान आ सकते हैं लेकिन अंततोगत्वा इसमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। आपकी पत्नी का शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आपसी संबंधों में कुछेक क्षणों को छोड़कर मधुरता बनी रहेगी।

चतुर्थ भाव में मंगल की स्थिति के फलस्वरूप आपको सांसारिक सुख संसाधन परिश्रम पूर्वक प्राप्त होंगे साथ ही सप्तम भाव पर दृष्टि के प्रभाव से पत्नी के स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा आप दाम्पत्य जीवन का सुख पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही उच्च पद तथा सामाजिक मान सम्मान प्राप्त करेंगे। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपके आय साधनों में सामान्यतया वृद्धि होगी। यदा कदा न्यूनता का भाव भी रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं रहेगा तथा आपका सामान्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के शुभ फलों में अधिक अनुकूलता के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इसके भंग होने से आप सर्वत्र सफलता के मार्ग पर

अग्रसर होंगे तथा सांसारिक सुख संसाधन ऐश्वर्य तथा वैभव की इच्छित प्राप्ति होगी तथा दाम्पत्य संबंधों में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर शनि का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक नौ होने से आपका मूलांक नौ होता है। मूलांक नौ का स्वामी मंगल है। मंगल को ग्रहों का सेनापति माना गया है। अतः आपके अन्दर भी सेनापति, नायक, मुखिया इत्यादि बनने की चाह सामाजिक क्षेत्रों में बनी रहेगी। रोजगार व्यवसाय में एकाधिकार की प्रवृत्ति आपमें पाई जायेगी। आपके अन्दर साहस अधिक होने से आप अपने कार्यों को अदम्य साहस से करते हुये कठिनाईयों को आसानी से पार कर लेंगे। स्वभाव में आपके तेजी रहेगी। फुर्ती एवं जल्दबाजी रहेगी। आपकी सदैव यही कोशिश रहेगी कि आप जो भी कार्य हाथ में लें वह शीघ्र समाप्त हो जाये।

आपके स्वभाव में साहसीपन होने से आपको दुःसाहस के कार्यों से सदैव दूर रहना हितकर रहेगा। आप अनुशासन प्रिय रहेंगे एवं दूसरों से अनुशासन रखने की अपेक्षा करेंगे। खुशामद एवं चापलूसी से आप प्रभावित होकर कभी-कभी नुकसान भी उठावेंगे। अतः खुशामदी एवं चापलूस व्यक्तियों से सदैव बचें। मंगल ग्रह के प्रभाव से क्रोध की मात्रा भी आपमें रहेगी। इससे आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। शत्रुओं की संख्या कम रहेगी एवं आप में शत्रुओं को दमन करने का बल हमेशा बना रहेगा।

मंगल के मूलांक के प्रभाववश आप अग्नितत्व प्रधान रोगों के शिकार होंगे। अतः आपको सौम्यता का व्यवहार रखना भाग्य में वृद्धि कारक रहेगा।

भाग्यांक दो का स्वामी चन्द्र ग्रह को माना गया है। इसके प्रभाव से आपकी कल्पनाशक्ति उन्नत किशम की होगी। बौद्धिक स्तर आपका उच्च कोटि का रहेगा एवं बुद्धि जन्य कार्यों में आपकी विशेष अभिरुचि रहेगी। शारीरिक श्रम साध्य कार्यों में आपकी दिलचस्पी कम रहेगी। चन्द्रमा जिस तरह घटता-बढ़ता रहता है, उसी प्रकार आपके भाग्य का सितारा भी कभी तो एकदम ऊँचाईयों को प्राप्त करेगा और कभी आप एकदम घोर अंधकार में अपने आप को पायेंगे। ऐसे समय में धैर्य रखना आपके लिए अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि आपके भाग्य का सितारा भी पुनः पूर्णिमा की तरह प्रकाशित होगा। धैर्य न रखना आपकी कमजोरियों में रहेगा।

भाग्य आपका बदलता रहेगा। एक स्थिर मुकाम पर कभी भी नहीं पहुँचेगा। आपको सम्पूर्ण जीवन में भाग्योदय की कुछ कमी खटकती रहेगी। आपको अधिकारियों से लाभ रहेगा तथा धन-धान्य से आप सुखी रहेंगे। आपको अपनी चलायमान प्रकृति पर नियंत्रण रखना होगा अन्यथा एक के बाद एक कार्यों को बीच में छोड़कर आगे बढ़ने की प्रवृत्ति वश आपके कार्य देर से सफल होंगे और कभी असफल भी होंगे।

आपका मूलांक 9 है तथा भाग्यांक 2 है। मूलांक 9 का स्वामी मंगल है तथा भाग्यांक 2 का स्वामी चंद्र है। मूलांक 9 एवं भाग्यांक 2 के बीच सम संबंध है। मंगल-चंद्र के योग से साहसिक कार्यों के द्वारा आपको अच्छे धन की प्राप्ति होगी। रोजगार-व्यापार के क्षेत्र में आपकी कल्पना शक्ति एवं साहस द्वारा आपको अच्छी आर्थिक सफलताएं जीवन पर्यंत मिलती रहेंगी। रोजगार में आपकी उन्नति शीघ्रातिशीघ्र होगी एवं आपको प्रतिस्पर्धा तथा संघर्षों का कम मात्रा में सामना करना पड़ेगा। लेकिन खुशामदी तथा चापलूस व्यक्तियों के कारण

आपको जीवन के विभिन्न मोड़ों पर हानि प्राप्त होगी। इनसे संभल कर चलना आपके लिए नितांत आवश्यक रहेगा। आपको ऐसा ही रोजगार पंसद आएगा, जिसमें आपका प्रभुत्व तथा एकाधिकार बना रहे। प्रतिद्वंदियों को आप अधिक समय तक सहन नहीं कर पाएंगे एवं उन पर विजय प्राप्त करने की आपकी निरंतर कोशिश बनी रहेगी। आपको ऐसे कार्यक्षेत्र पसंद आएंगे, जिनमें अधिक साहस की आवश्यकता रहती है। आपकी सामाजिक स्थिति उच्च दर्जे की रहेगी तथा आप समाज में मान-सम्मान प्राप्त करेंगे।

आपका भाग्योदय 29 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ होगा तथा 38 वर्ष की अवस्था से आप विशेष उन्नति करेंगे एवं 47 वर्ष की अवस्था पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

आपके मूलांक 9 की 3 एवं 6 से मित्रता है तथा भाग्यांक 2 की 7 एवं 9 से मित्रता है। अतः आपके जीवन में 2, 3, 6, 7, 9 के अंक विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा आपके जीवन में प्रमुख घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्हीं अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्हीं अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए फरवरी, मार्च, जून, जुलाई, सितंबर के महीने विशेष महत्वपूर्ण रहेंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे दिन, ऐसी तारीख, ऐसे मास तथा वर्ष में प्रारंभ करें, जब आपके मूलांक-भाग्यांक में मेल स्थापित हो तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 9 एवं भाग्यांक 2 के प्रभाववश ईस्वी सन् जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 2, 3, 6, 7, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

2 . 11, 20, 29, 38, 47, 56, 65, 74

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75

6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69,

7 . 16, 25, 34, 43, 52, 61, 70,

9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनकारी रहेंगे। इन वर्षों में कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बनेंगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

मंगल दिनांक 23 मार्च से 20 अप्रैल तक एवं 24 अक्टूबर से 21 नवंबर तक पाश्चात्य मत से, सूर्य मेष तथा वृश्चिक राशि में रहता है। भारतीय मत से यह समय 13 अप्रैल से 12 मई एवं 14 नवंबर से 14 दिसंबर होता है। मेष एवं वृश्चिक मंगल की अपनी राशियां हैं। दिनांक 14 जनवरी से 13 फरवरी तक सूर्य मकर राशि में रहता है, जो मंगल कि उच्च राशि है अतः उपर्युक्त समय मूलांक 9 के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

मंगलवार, शुक्रवार एवं गुरुवार आपके लिए ठीक दिन रहेंगे। आप यदि किसी भी कार्य को करते हैं तो इन्हीं दिवसों में प्रारंभ करें और यदि इन दिवसों में अनुकूल तारीखें भी आएँ तो श्रेष्ठ फलदायक रहेगा।

शुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी अंग्रेजी मास की 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 29 एवं 30 तारीखें अधिक अनुकूल रहेंगी। इन तारीखों में महत्वपूर्ण कार्य, रोजगार-व्यापार के कार्य, अधिकारी या विशिष्ट व्यक्तियों से संबंधित कार्य अथवा पत्र इत्यादि लिखना आपके लिए अधिक उपयुक्त तथा सफलतादायक होंगे।

अशुभ तारीखें

आपके लिए किसी भी अंग्रेजी माह की 1, 7, 10, 16, 19, 20, 25 एवं 28 तारीखें ठीक नहीं हैं। आपके लिए पत्र इत्यादि लिखना या दस्तावेज लिखने हेतु अथवा विशिष्ट अधिकारी से मिलने हेतु या कोई भी नया कार्य प्रारंभ करना हो तो इन तारीखों में प्रारंभ न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 तारीखों को अथवा 13 अप्रैल से 12 मई एवं 14 नवंबर से 14 दिसंबर तथा 14 जनवरी से 13 फरवरी के मध्य हुआ हो, ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता अच्छी रहेगी तथा रोजगार, व्यापार के क्षेत्र में भी आप उच्चता के शिखर पर पहुंचेंगे। ऐसे व्यक्ति आपके लिए विशेष फलदायी रहेंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

मूलांक 3, 6, 9 वाली महिलाएं तथा जिनका जन्म 3, 6, 9, 12, 15, 18, 21, 24, 27 एवं 30 दिनांकों में हुआ हो पर वे आपके लिए विश्वसनीय सिद्ध होंगी। ऐसी स्त्रियों से ही आप प्रेम अथवा विवाह संबंध स्थापित कर सकते हैं जो आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अनुकूल रंग

आपके लिए अनुकूल रंग गुलाबी, गहरा लाल होने के कारण आपको चाहिए की अपने घर में दीवारें, खिड़कियां, पर्दे आदि का चुनाव करते समय इन रंगों को ध्यान में रखें तथा यदि आपका स्वास्थ्य साथ नहीं दे रहा है तब आप इन रंगों का रुमाल बना कर अपने पास हमेशा रखें तथा कोई भी रोजगार-व्यापार संबंधी कार्य करते समय इन रंगों के वस्त्र धारण करना न भूलें, जो आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए दक्षिण दिशा उत्तमकारी है। अतः आपके लिए मकान या कॉम्प्लेक्स वही शुभ रहेगा जो दक्षिण में स्थित हो। अतः आप शहर की दक्षिण दिशा या भवन की दक्षिण दिशा का चुनाव कर सकते हैं एवं रोजगार-व्यापार की बैठक भी दक्षिण दिशा में रख सकते हैं, जो आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा रहेगा। भवन के फ्लैट का क्रमांक का योग 3, 6 या 9 रखना लाभप्रद रहेगा।

शुभ वाहन नं

नये वाहन का पंजीकरण क्रमांक आपके मूलांक 9 या मूलांक के मित्र अंक 6 तथा 3 में से कोई एक लेना हितकर रहेगा, जैसे वाहन पंजीकरण क्रमांक 5238 = 9 इत्यादि होना चाहिए। यदि आप होटल में कमरा आदि बुक करते हैं, तो उसके लिए अंक 108 = 9 होना आपके लिए हितकर रहेगा। अथवा आप वाहन द्वारा यात्रा करते हैं, तो सीट इत्यादि क्रमांक आपके मूलांक या मित्र अंक भाग्यशाली अंक साबित होंगे। इन्हीं शुभ अंकों के प्रभाव से ही आपकी यात्रा सफल हो सकती है।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आएगी तब आपको क्रोध, झल्लाहट, दुर्घटना, चोट, अंग शैथिल्य, हृदय रोग, रक्तचाप इत्यादि पीड़ा देंगे। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय आप हनुमान की उपासना तथा आराधना करें, मंगलवार का व्रत करें और एक समय भोजन करें।

व्यवसाय

संगठन, संघ संचालक, नियंत्रक, चिकित्सा, ज्योतिष, धर्मोपदेशक, सैन्य विभाग, गोला-बारूद, आतिशबाजी का व्यवसाय, वकालत, औषधि विक्रेता, लौह तथा अन्य धातु संबंधी कार्य अथवा प्रभुता के कार्य। इन सबको अंक 9 में समाविष्ट कर सकते हैं।

व्रतोपवास

मंगलवार को भौम अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। यह व्रत पैतालीस मंगलवार या कम से कम इक्कीस मंगलवारों को करें। लाल वस्त्र धारण करें एवं लाल वस्तुओं का दान करें। यथाशक्ति मंगल के मंत्र का मूंगे की माला पर जप करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अनुकूल रत्न या उपरत्न

आप मूंगा धारण करें। इसके न मिलने पर संगसितारा, लाल हकीक, लाल मून स्टोन धारण कर सकते हैं। इसे आप मंगलवार के दिन, शुक्ल पक्ष में, शुभ चौघड़िया मुहूर्त में, तांबा, सोना, मिश्रित धातु या चांदी में छह से नौ रत्ती का मूंगा बनवा कर, दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में त्वचा को स्पर्श करते हुए धारण करें।

अनुकूल देवता

आप मंगल ग्रह की उपासना करें अथवा हनुमान जी की उपासना करने से आपके सभी प्रकार के अरिष्ट दूर होंगे। आप प्रति मंगलवार एवं शनिवार को सुंदर कांड का पाठ किया करें। साथ में हनुमान जी के मंत्र का नित्य एक सौ आठ बार मूंगे की माला पर जप किया करें। हनुमान जी का मंत्र इस प्रकार है : 'हं हनुमत रुद्रात्मकाय हुं फट्'। मंगलवार को एक समय भोजन करें तथा चने एवं मिष्ठान का प्रसाद हनुमान जी को अर्पण करने से आपके सभी कार्य बनेंगे।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए मंगल के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु, मंगल गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद, ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

भौम गायत्री मंत्र - ॐ अंगारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात् ॥

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप मंगल का ध्यान करें, मन में मंगल की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें :

धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कांतिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥

ग्रह जप मंत्र

अशुभ मंगल को अनुकूल बनाने हेतु मंगल के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान सौ माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ॐ क्राँ क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः ॥ जप संख्या 10000 ॥

वनस्पति धारण

आप मंगलवार के दिन एक इंच लंबी अनंतमूल की जड़ ला कर, लाल धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधें या स्वर्ण या तांबे के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे

मंगल के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक मंगलवार को एक बाल्टी या बर्तन में सौंठ, सौंफ, लाल चंदन, सिंगरफ, माल कांगनी और मौलसरी के फूल आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ मंगल के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए आपको कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध, को मिला कर, चूर्ण कर किसी तीर्थ के पानी में मिला कर, भगवान का स्मरण करते हुए, स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख-समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

मंगल की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को मंगल के पदार्थ-तांबा, सोना, गेहूं, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चंदन, लाल पुष्प, केसर, कस्तूरी, लाल वृषभ, मसूर की दाल, पृथ्वी, विद्रुम आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

मंगल को अनुकूल बनाए रखने हेतु मंगल यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर, सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, शनिवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

लग्न फल

जिस समय आपका जन्म हुआ, उस समय पूर्वी क्षितिज पर अश्विनी नक्षत्र के तृतीय चरण में मेष लग्न उदित था। परिणाम स्वरूप जन्मकाल मिथुन नवमांश एवं मेष के द्रेष्काण के प्रभाव से आप का जन्म लग्न प्रभावित था।

आप में व्यक्तिगत रूप से कई कार्यों को एक साथ संचालित करने की क्षमता है, और आप कोई भी कार्य पूर्ण रूपेण आश्वस्त होकर संपादित करते हैं। आप उच्चकोटि के महत्वाकांक्षी, व्यक्ति हैं। आप अपने उद्येशियत महत्वपूर्ण बिंदुओं को कार्य रूप देकर कार्यान्वित कर लेने में लगन लगाते हैं। आप में यह वरदान स्वरूप विशिष्टता विद्यमान है कि आत्मबल के सहारे अपने कार्य को संपादन कर लेते हैं। परंतु आप में छोटी सी बातों में भी अड़चन लगाने की प्रवृत्ति विद्यमान है। अर्थात् किसी भी असाधारण बातों को द्वन्द्वात्मक बना देते हैं।

आप किसी कार्य का आरंभ विद्युत गति से करते हैं। परंतु अकस्मात् बीच में ही कार्य को रोक कर अपने मार्ग को बदलने पर पुनर्विचार करने लगते हैं। यदि आप कोई सशक्त निर्णय लेकर और पूरी तन्मयता से कार्य को कार्य रूप दें तो निश्चित रूप से आप किसी भी कार्य में सफल हो जाएंगे।

वास्तव में आप विशुद्ध आत्मा (हृदय) के प्राणी हैं। आपके हृदय में किसी प्रकार की कलुषता नहीं रहती है। आप चाहते हैं कि आज तक की परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त कर नेतृत्व करें आप किसी दूसरे व्यक्ति का निर्देशों का अनुपालन नहीं करते। यद्यपि आप यह चाहते हैं कि किसी भी व्यक्ति पर अपनी छाप (चिह्न) स्थापित करें तथापि यदा-कदा आप अपनी राय सभी कार्यों में प्रदान कर अपना प्रभाव कायम करने के लिए तत्पर रहते हैं। वास्तव में कोई भी व्यक्ति अच्छी राय आपसे प्राप्त कर आपसे प्रभावित हो जाता है।

आप अपने शत्रुओं से निर्भय रहते हैं। दुर्भाग्यवश यदि किसी शत्रु से आपको मुकाबला करना पड़ जाए और आपके साथ कोई षड्यंत्र करे तो आप वर्तमान कालिक परिस्थिति का मुकाबला पूरी शक्ति से एवं अपने निर्णय के अनुसार कूटनीतिक व्यवहार से उसके साथ पेश आते हैं।

अश्विनी नक्षत्र के प्रभावानुसार आप पूर्ण सशक्त एवं शक्ति संपन्न व्यक्तित्व की संपन्नता से धन प्राप्त करने की क्षमता रखते हैं। आपकी उन्नत ललाट और प्रभावक दृष्टि आपके अन्तःकरण की सूचना प्रकट करता है आप में ऐसी क्षमता है कि आपके संपर्क में जो व्यक्ति आता है। उस पर आपका पूर्ण प्रभाव एवं अच्छी छाप पड़ती है। आप अधिक धन संचय करने के संबंध में लालची भी हैं। आपको अपने भाई के साथ कोई विवाद हो जाए और आप उलझ जाएं यह संभव है। अन्यथा आपका पारिवारिक जीवन सुंदर रहेगा। आपके जीवन का मुख्य दायित्व पारिवारिक समस्या है। आप बेसुध हो कर, हर क्षण अपने परिवार के लाभ के लिए कुछ न कुछ करते रहने के संबंध में चिंतनशील रहा करते हैं, क्योंकि संपूर्ण परिवार का दायित्व आपके कंधे पर है, अर्थात् पूरे परिवार का विकास और विस्तार के लिए आप ही अभिभावक के रूप में जिम्मेदार हैं। परंतु आप अपने शब्द जाल में अधिकांश लोगों को फंसा

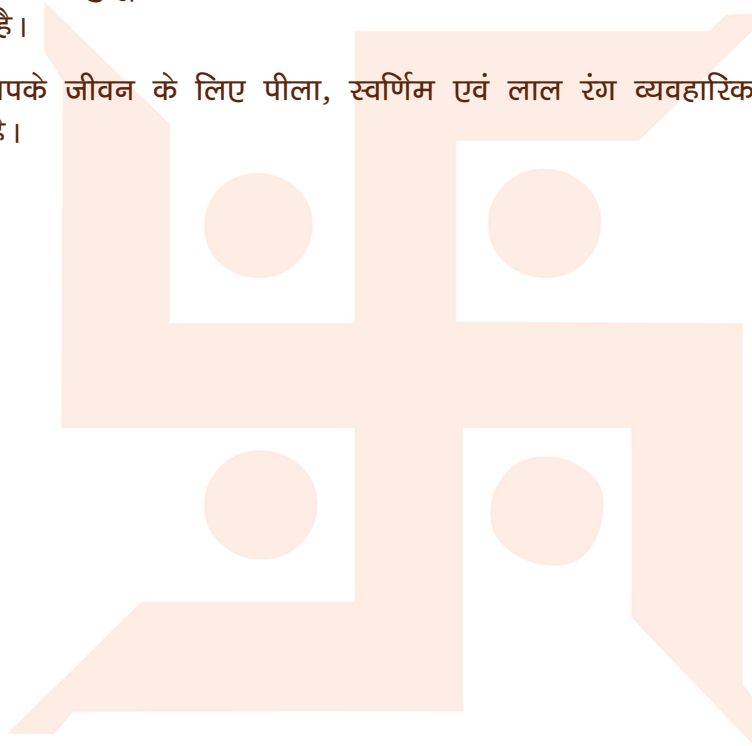
लेते हैं परंतु आप किसी भी दशा में अपने स्तर से गिर नहीं पाते। आपके स्वभाव के अनुसार जेल अधिकारी पद पर आपकी नियुक्ति उपयुक्त है। अन्यथा आप पुलिस विभाग या रेलवे अधिकारी भी हो सकते हैं।

सामान्यतया आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। परंतु आपको यह निर्देश दिया जाता है कि अपने पारिवारिक चिकित्सक से सिरोवेदना या मस्तिष्क रोग से सावधानी कैसे बरती जाय इसके संबंध में परामर्श ले लें।

आपके लिए मंगलवार, गुरुवार, रविवार एवं सोमवार उपयुक्त एवं भाग्यशाली दिन है। शुक्रवार, शनिवार एवं बुधवार तीन दिन आपके लिए प्रतिकूल एवं व्ययकारी होंगे।

आपके भविष्य के लिए उन्नति कारक एवं आकर्षक अंक 9 एवं 1 अंक होगा। जबकि आपके लिए अनुकूल अंक 4 एवं 8 अंक होगा। 6 एवं 7 अंक आपके लिए अच्छा प्रभाव देने वाला नहीं है।

आपके जीवन के लिए पीला, स्वर्णिम एवं लाल रंग व्यवहारिक एवं काला रंग सर्वथा त्याज्य है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, क्रोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्म, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान्, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

कुम्भ राशि में शनि हो तो जातक नीतिदक्ष, कुशा बुद्धि, शक्तिशाली शत्रु, योग्य, सुखी, व्यसनी, नास्तिक एवं परिश्रमी होता है।

राहु

तृतीय भाव में राहु हो तो जातक योगाभ्यासी, विद्वान्, व्यवसायी, पराक्रमशून्य, दृढ़विवेकी, अरिष्टनाशक, प्रवासी, दीर्घायु एवं बलवान् होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

नवम भाव में केतु हो तो जातक सुखाभिलाषी, व्यर्थपरिश्रमी अपयशी, दुःखी एवं 48 वर्ष के बाद भाग्योदय होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया मेष लग्न में उत्पन्न जातक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं तथा उनमें पराक्रम साहस एवं तेजस्विता का भाव सर्वदा विद्यमान रहता है। इसके साथ ही जीवन में वे स्वपरिश्रम एवं योग्यता के बल पर उन्नति मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होते हैं। शारीरिक रूप से वे स्वस्थ रहते हैं तथा कठिन से कठिन कार्य को परिश्रम पूर्वक सफल बनाना उनके लिए आसान कार्य होता है।

अतः इस लग्न के प्रभाव से आप साहसी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे बिना किसी भय के अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में सफल होंगे। इससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही आप प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि भी अर्जित करेंगे। आप एक स्वाभिमानी पुरुष होंगे तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से सम्मान जनक स्थिति में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगे।

आप में प्रारम्भ से ही तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा। इसी परिपेक्ष्य में यथा कदा आप क्रोध के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे फलतः इससे आपको कई बार अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। अतः अनावश्यक क्रोध के भाव का यत्नपूर्वक परित्याग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे तथा आनंद पूर्वक सांसारिक सुखों का उपभोग करेंगे।

मंगल की राशि की लग्न में स्थिति के प्रभाव से आप एक सत्यवक्ता पुरुष होंगे तथा सत्यानुपालन में यत्नपूर्वक तत्पर रहेंगे। आप तेजस्वी एवं साहसी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से किसी उच्च एवं प्रतिष्ठित पद को अर्जित करने में समर्थ रहेंगे जिससे समाज में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी प्रवृत्ति दानशीलता के भाव से भी युक्त होगी तथा समय समय पर दीन दुखियों को अपनी ओर से सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे। आपमें महत्वाकांक्षा का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए नित्य परिश्रमशील रहेंगे। शारीरिक रूप से आप बलिष्ठ रहेंगे तथा उत्तम स्वास्थ्य से युक्त रहकर अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। कार्य क्षेत्र में व्यापार की अपेक्षा नौकरी आपके लिए उत्तम रहेगी अतः व्यवसाय के प्रति उपेक्षा का ही भाव रखें।

इस प्रकार आप अपने साहस पराक्रम तेजस्विता एवं योग्यता से अपने सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करके इच्छित मात्रा में धनैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करेंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति करके आनंद पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त सांसारिक सुखों तथा धनऐश्वर्य का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे साथ ही किसी संबंधी की सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि अपने नजदीक के संबंधियों के प्रति आपके मन में हमेशा सद्भावना रहेगी तथा सुख दुख में आप उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे। बागवानी के प्रति भी आपके मन में रुचि रहेगी तथा समय समय पर आप इस रुचि का प्रदर्शन करते रहेंगे।

आपका पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा तथा शान्ति एवं आनन्द पूर्वक परिवार के मध्य आपका समय व्यतीत होगा। सामाजिक जनों के मध्य भी आप एक सम्माननीय पुरुष रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से उदार तथा भावुक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा मिष्टान भक्षण के प्रति आपकी तीव्र रुचि रहेगी। साथ ही अपने सम्भाषण में हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन तथा बहुमूल्य रत्नों को भी आप जीवन में प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। इसके प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति अच्छी रहेगी तथा किसी वस्तु को एक बार देखकर या सुनकर आप चिरकाल तक उसे नहीं भूलेंगे। साथ ही आप शीघ्र ही किसी कार्य प्रणाली को हृदयगम कर सकते हैं। आप उच्च शिक्षा, नीति, शास्त्र आदि में सफलता प्राप्त करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे तथा लेखन आदि क्षेत्र में भी ख्याति प्राप्त कर सकते हैं। आपके भाई बहिनों से मधुर संबंध रहेंगे तथा उनको सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे।

आप एक बुद्धिजीवी प्राणी होंगे तथा शारीरिक बल की अपेक्षा बौद्धिक कार्य ही अधिक सम्पन्न करेंगे। अतः समाज में एक बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में आपकी पहचान बनी रहेगी। आप एक बहादुर एवं साहसी पुरुष होंगे तथा कलम की ताकत भी आपके पास रहेगी। अतः किसी उच्च अधिकारी या नेता के विरुद्ध आप साहस पूर्वक कुछ भी लिख सकते हैं। आप एक स्पष्टवादी पुरुष होंगे तथा स्पष्ट रूप से अपनी राय अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। संचार के सभी साधनों से आप युक्त रहेंगे तथा सूचना केन्द्रों में आप कार्यरत भी हो सकते हैं। जैसे डाकखाना, दूर भाष केंद्र, दूर संचार विभाग। आप संगीत प्रिय होंगे तथा वाद्य यंत्रों के उपयोग से आपको आनन्द प्राप्त होगा। समीपस्थ यात्राओं से आपको लाभ होगा तथा ऐसी यात्राओं से आपको महत्वपूर्ण स्मृतियां भी प्राप्त हो सकती हैं। कला के क्षेत्र में भी आपकी इच्छा रहेगी परन्तु समाचार पत्र के संपादक या संवाद दाता के रूप में कार्य करना आपके लिए अधिक लाभदायक रहेगा। इसके अतिरिक्त आप वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा पत्नी के प्रति आपके मन में निश्चल प्रेमभावना रहेगी। साथ ही हृदय में उदारता रहेगी एवं सत्य का आप पालन करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने कुल में प्रधान रहेंगे तथा सज्जन लोगों से सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है तथा मंगल भी अपनी नीच एवं मित्र राशि में होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः जीवन में आपको स्वपरिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ही इच्छित सुख संसाधनों एवं भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप उनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा वैभव अर्जित करने में आपको समय समय पर कठिन परिश्रम एवं पराक्रम का सामना करना पड़ सकता है परंतु अंत में आप इसे प्राप्त करेंगे तथा समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जायेंगे।

जीवन में आप को चल एवं अचल सम्पत्ति की विलम्ब से प्राप्ति होगी तथा इससे आप काफी परिश्रम से अर्जित करेंगे एवं विशेष संतुष्टि भी आपको कम ही मिलेगी। लेकिन आप प्रारंभ से ही परिश्रमी एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे अतः जीवन में हार कम ही मानेंगे। अतः अपने ऐश्वर्य एवं वैभव की अभिवृद्धि के लिए सदैव तत्पर रहेंगे तथा समाज में अपना स्तर बनाने में सफल होंगे।

आपका मकान सामान्य श्रेणी का होगा तथा इससे आप को विशेष संतुष्टि अल्प मात्रा में ही होगी तथापि इसको आप काफी सुन्दरतापूर्ण ढंग से सुसज्जित रखेंगे तथा इसकी सुंदरता बनाए रखने के लिए अन्य पारिवारिक जनों को भी प्रेरित करेंगे। आपका घर मध्यम श्रेणी की कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से भी मधुर संबंध अल्प ही होंगे परंतु सामंजस्यशील प्रवृत्ति होने के कारण सामंजस्य स्थापित करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त जीवन में वाहन सुख भी मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा।

आपकी माता तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण रहेगा। आपके प्रति उनका सामान्यतया व्यवहार अनुकूल रहेगा परन्तु उनकी आप विशेष परवाह कम ही करेंगे। इससे आपके संबंधों में मधुरता के भाव की न्यूनता होगी। माता से आपको विशिष्ट सहयोग कम ही मिलेगा तथापि आप सुख में नहीं तो दुःख में अवश्य उनका साथ देंगे। इस प्रकार माता का सुख एवं सानिध्य आपको अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा।

अध्ययन में आप प्रारंभ से ही विशेष रुचि अल्प मात्रा में ही रखेंगे फलतः स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। यह भी हो सकता है कि इससे पूर्व ही आप कोई तकनीकी शिक्षा का प्रमाण पत्र प्राप्त कर ले क्योंकि चतुर्थभाव में नीच ग्रह की स्थिति से स्नातक की डिग्री नहीं मिलती या अत्यधिक परिश्रम के उपरांत मिलती है। अतः यदि शिक्षा के क्षेत्र में प्रारंभ से ही परिश्रम किया जाय तो इसमें किंचित सकारात्मक सफलता मिल सकती है।

नैसर्गिक रूप से पापी एवं नीच ग्रह मंगल के प्रभाव से मध्यवस्था के बाद आपको रक्त चाप संबंधी परेशानियां उत्पन्न हो सकती है तथा हृदय संबंधी कष्ट की भी पूर्ण संभावना बनती है। अतः यदि युवावस्था से ही आप खान पान संबंधी परहेज रखे तो ऐसी संभावनाओं से सुरक्षित हो सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। बुध भी पंचमभाव में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की स्पष्ट छाप होगी एवं अन्य सामाजिक लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे तथा उनसे यथोचित सम्मान की प्राप्ति होगी साथ ही वैदिक साहित्य कविता या लेखन में भी आपकी प्रबल रुचि होगी तथा यत्नपूर्वक इनके अध्ययन में तत्पर रहेंगे एवं वांछित ज्ञान प्राप्त करके समाज में एक विद्वान के रूप में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त गणित अथवा ज्यौतिष में भी आपकी रुचि होगी।

बुध की पंचमभाव में स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंग आदि में भी आपकी रुचि रहेगी तथा यत्नपूर्वक आप इसको आदर्शवादी एवं मर्यादित बनाए रखेंगे। आप में भावुकता भी होगी एवं प्रेम प्रसंगों में इसका प्रदर्शन भी करेंगे। जिससे यदा कदा अनावश्यक समस्या या परेशानी का भी सामना करना पड़ सकता है लेकिन आप एक बुद्धिमान व्यक्ति हैं अतः स्थिति पर नियंत्रण रखने में समर्थ होंगे।

तृतीयेश एवं षष्ठेश बुध की सुतभाव में स्थिति से आपको सन्तति प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है लेकिन सन्तति से आप युक्त होंगे। पुत्र की अपेक्षा कन्याएं अधिक होंगे। सन्तति पक्ष से सामान्यतया आप निश्चिन्त ही रहेंगे तथा वे सभी योग्य बुद्धिमान एवं चतुर होंगे। पिता की अपेक्षा माता के प्रति बच्चों का विशेष लगाव हो सकता है। वे अपनी व्यक्तिगत समस्याएं पिता की अपेक्षा माता से करना आसान समझेंगे लेकिन दोनों के प्रति समान रूप से आदर एवं आज्ञा का भाव बना रहेगा। साथ ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में माता पिता की सलाह लेते रहेंगे। इस प्रकार बच्चों से सामान्यतया आप संतुष्ट ही रहेंगे तथा वे भी आप दोनों का सुख दुख में पूर्ण ध्यान रखेंगे।

अध्ययन के प्रति बच्चों की प्रारंभ से ही रुचि होगी तथा प्रारंभिक कक्षाओं से ही अच्छे अंकों में परिक्षाएं उत्तीर्ण करेंगे। अतः बच्चों की शिक्षा के लिए आपको अनावश्यक रूप से चिंतित नहीं होना पड़ेगा। आपके बच्चे व्यवहार कुशल एवं वाक्पटु होंगे तथा अपने इन गुणों से अन्य जनों को प्रभावित करेंगे जिससे समाज में माता पिता के सम्मान में भी वृद्धि होगी। इस प्रकार आप योग्य बच्चों के माता पिता बनकर मन में गौरवानुभूति करेंगे।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी बुध है चूंकि यह भाव रोग का प्रतिनिधित्व करता है। अतः इसके प्रभाव से आप नाक कान तथा गले आदि के कष्ट से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। साथ ही आप में सहन शक्ति के भाव की भी यदा कदा अल्पता रहेगी एवं चर्म रोगों से आपको परेशानी होगी।

आपको क्रोध एवं उत्तेजना पर हमेशा नियंत्रण रखना चाहिए अन्यथा इसके दुष्प्रभाव से आपके मित्रों की संख्या में कमी आएगी तथा विरोधी पक्ष में वृद्धि होगी। साथ ही बन्धु वर्ग तथा अन्य संबन्धी आप के लिए छिपकर षडयंत्र भी कर सकते हैं। सरकार या पड़ोसियों से भी आपको शत्रुता का सामना करना पड़ सकता है। अतः आप अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें तथा किसी अन्य की अनावश्यक आलोचना न करें एवं सहनशीलता बनाएं रखें। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो आपको जीवन में अनावश्यक शत्रुओं एवं समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

आपके लिए धन सम्बन्धी झगड़े या मुकद्दमे अनुकूल नहीं रहेंगे। अतः ऐसे मामलों की यत्न पूर्वक उपेक्षा ही करें। सेवक वर्ग की आपको प्रबल आवश्यकता रहेगी लेकिन इनसे आपको समय समय पर धन एवं अन्य प्रकार से हानि होती रहेगी अतः नौकरों का अत्यधिक सावधानी से चयन करें। साथ ही ऋण आदि लेने की भी आपको उपेक्षा करनी चाहिए यदि आपकी प्रवृत्ति इस ओर रही तो आप काफी समय तक ऋण के भार से दबे रहेंगे। बचपन में मामा तथा मामी से आपको सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त खान पान में तेज मसालों आदि का भी परहेज रखना चाहिए अन्यथा इससे उदर या गुर्दे सम्बन्धी परेशानी उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त शत्रु वर्ग का आप दमन करेंगे परन्तु स्त्रियों के प्रति आसक्ति में आपका धन व्यय हो सकता है अतः सतर्क रहें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है साथ ही चन्द्रमा की स्थिति सप्तम भाव में ही है अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील विनम्र एवं शिक्षित महिला होंगी तथा अपने सद्व्यवहार से पारिवारिक तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ रहेंगी। वह आकर्षक व्यक्तित्व की महिला होंगी तथा वाणी अत्यंत ही मधुर रहेगी जिससे सभी लोग उनसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही सहिष्णुता का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा जिससे परिवार में सभी सदस्य उनसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। सुंदरता के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा तथा संगीत एवं कला में भी रुचिशील रहेंगी तथा इस क्षेत्र में कोई उपलब्धि भी अर्जित कर सकती है।

आपकी पत्नी का सौंदर्य दर्शनीय रहेगा वह गौरवर्ण की आकर्षक महिला होगी तथा कद भी सामान्य रहेगा। साथ ही शारीरिक संरचना भी आकर्षक होगी एवं अंग-प्रत्यंगों की पुष्टता दर्शनीय रहेगी जिससे उनके व्यक्तित्व में निखार आएगा। अपने सौंदर्य में वृद्धि के लिए समय समय पर आधुनिक सौंदर्य प्रसाधनों एवं श्रृंगार की वस्तुओं का मुक्त भाव से उपयोग करेंगी। लेकिन सप्तम भावस्थ चन्द्रमा के प्रभाव से यदि शरीर की उचित देखभाल न की गई तो इसमें आयु के साथ साथ स्थूलता आ सकती है। अतः इससे सतर्क रहें।

आपका विवाह अपने किसी संबंधी के सहयोग से सम्पन्न होगा तथा इसमें स्त्री संबंधी यथा भाभी मौसी बुआ आदि का विशेष योगदान हो सकता है। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सुखी रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी साथ ही एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी को कोई कष्ट नहीं देंगे।

आपका ससुराल मध्यम परिवार से होगा तथा उनका आर्थिक एवं सामाजिक स्तर सामान्य ही रहेगा फलतः उनसे आर्थिक एवं अन्य सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा परन्तु चन्द्रमा जैसे शुभ ग्रह के प्रभाव से आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उनसे आपको हार्दिक स्नेह तथा सम्मान मिलेगा। साथ ही आप भी पितृवत उनको सम्मान प्रदान करेंगे।

आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति पूर्ण सेवा तथा श्रद्धा का भाव रहेगा तथा अपने माता पिता के समान समझकर उनकी सेवा करेंगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी जिससे वे उनसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रभावित करेंगी तथा उनसे भी इच्छित सम्मान एवं सहयोग मिलेगा जिससे परिवार में सुख शांति बनी रहेगी तथा सभी लोग एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे।

व्यापार में साझेदारी के लिए यह स्थिति अनुकूल रहेगी तथा उससे आपको वांछित लाभ प्राप्त होगा एवं मानसिक निश्चिन्तता का भाव भी बना रहेगा। यदि आप स्त्री या स्त्रीवर्ग से साझेदारी में कोई भी व्यापार या योजना प्रारंभ करेंगे तो इससे आपको वांछित सफलता मिलेगी एवं प्रबल लाभ की भी संभावनाएं बनेंगी।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। इसके प्रभाव से आप एक व्यवहारिक व्यक्ति होंगे तथा ज्योतिष या तंत्र मंत्र आदि पर आपका विश्वास अल्प ही रहेगा तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म पर अधिक विश्वास करेंगे। आर्थिक क्षेत्र में आप भाग्यशाली रहेंगे तथा जमीन जायदाद मुकद्दमे या अन्य किसी भी प्रकार से आपको विशिष्ट लाभ होता रहेगा। साथ ही पैतृक सम्पत्ति या किसी समीपस्थ संबन्धी के द्वारा भी आपकी जायदाद में वृद्धि होने की संभावना रहेगी। साझेदार या पत्नी के द्वारा भी आपको प्रचुर मात्रा में लाभ होगा। आप यद्यपि घर से पूर्ण सुसम्पन्न व्यक्ति होंगे तथापि शादी के समय भी आप दहेज नकदी या आभूषण आदि को भी प्राप्त करेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी।

जीवन में आपके घर में चोरी आदि की संभावनाएं अल्प रहेंगी यदि कोई ऐसी घटना घटेगी तो यह सामान्य रहेगी अतः इसके विषय में आपको अधिक चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथापि सावधानी वश आपको अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को किसी सुरक्षित स्थान में रखना चाहिए। आपको अपने घर या कार आदि का बीमा अवश्य कराना चाहिए क्योंकि इनसे आपको पूर्ण लाभ होने की संभावना रहेगी। दीर्घावधि बीमा की अपेक्षा लघु अवधि बीमा कराने से अधिक लाभ होगा। सामान्यतया आप उत्तम स्वास्थ्य से युक्त रहेंगे परन्तु वाहन चलाते समय आपको गति पर पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिए तथा ध्यान से सवारी चलानी चाहिए अन्यथा सामान्य दुर्घटना घट सकती है। इसके अतिरिक्त आप की आयु अच्छी रहेगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आप जीवन व्यतीत करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही तीर्थ स्थानों की यात्रा करने की भी आपके मन में रुचि बनी रहेगी। आप प्रतिदिन न्यूनाधिक समय दैनिक पूजापाठ पर अवश्य व्यतीत करेंगे। समाज में धर्म के क्षेत्र में आप कई कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही धर्मोपदेशक के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। ईश्वर के प्रति आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा आपके विचार से बिना उसकी इच्छा के कुछ भी कार्य होना असम्भव सा है। साथ ही आप कर्म की अपेक्षा भाग्य पर अधिक विश्वास करने वाले व्यक्ति होंगे।

आपके पास अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी विद्यमान रहेगी। अतः अपने विषय में आपको पूर्वाभास हो सकता है। आप धार्मिक क्षेत्र में उच्च शिक्षा अर्जित करने के भी इच्छुक रहेंगे साथ ही लम्बी तीर्थ यात्राओं को भी जीवन में सम्पन्न करेंगे। अपने जीवन में आपको सामाजिक तथा कार्य क्षेत्र में इच्छित सफलता एवं ख्याति प्राप्त होगी तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा आपको इच्छित मान प्रदान करेंगे। आपके विचार से जीवन में मनुष्य को जो भी शुभ या अशुभ फल प्राप्त होते हैं वे सब पूर्व जन्म में किए गए कार्यों का फल है अतः आंतरिक रूप से आपकी सन्तुष्टि बनी रहेगी पौत्रों से आपको इच्छित सुख एवं आनन्द की प्राप्ति होगी। साथ ही ज्योतिष या तंत्र मंत्र में भी आपकी रुचि रहेगी तथा इसका ज्ञान भी रहेगा। इसके अतिरिक्त आप धर्मानुपालन में तत्पर, देवता एवं ब्राह्मणों के सेवक महात्माओं की आज्ञा का पालन करने वाले तथा परम्परागत धर्म से समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मकर राशि स्थित है। जिसका स्वामी शनि है जो आपके कार्य क्षेत्र के लिए विशेष लाभ एवं उन्नति दायक सिद्ध होगा। मकर राशि भूमि तत्व एवं शनि वायु तत्व ग्रह है अतः इसके प्रभाव से आपके कार्य श्रमसाध्य होने के साथ साथ उसमें बुद्धिमता एवं मानसिक क्रिया की भी प्रधानता रहेगी। साथ ही आप स्वतंत्र व्यवसाय को भी प्रारम्भ कर सकते हैं।

दशम भाव में शनि की राशि के स्थिति के प्रभाव से आप वायुसेना, एअर लाइन्स, खनिज एवं खान विभाग, रासायनिक क्षेत्र, राजनीति, उद्योगों में कोई उच्चपद या उद्योगी अथवा फैक्टरी कर्मचारी, नौकरी, सन्देश वाहक, पेट्रोलियम विभाग आदि में इच्छित उन्नति एवं सफलता अर्जित कर सकते हैं। अतः यदि आप अपने कार्य क्षेत्र में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करना चाहते हैं तो उपरोक्त विभागों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए। यदि आप ऐसा करते हैं तो आप सतत उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा किसी भी प्रकार से अनावश्यक व्यवधानों एवं समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा।

व्यापारिक क्षेत्र में आप के लिए लोहे का व्यापार, भारी उद्योग फैक्टरी पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार, प्रेस खेती बागवानी आदि में कार्य करने से वांछित उन्नति एवं आर्थिक सुदृढ़ता को प्राप्त कर सकते हैं। अतः यदि आप व्यापार करना चाहे तो उपरोक्त क्षेत्रों को ही अपना व्यवसाय अपनाना चाहिए क्योंकि इसमें आप बिना किसी बिध्न बाधा के उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा आर्थिक क्षेत्र में भी नवीन आयाम स्थापित करेंगे।

दशम भाव में मकर राशि के प्रभाव से आप जीवन में किसी उच्च एवं सम्मानित पद को अर्जित करने में समर्थ होंगे। कार्य क्षेत्र में आपकी प्रभुता को सभी हार्दिक रूप से स्वीकार करेंगे तथा आपके अनुकरण के लिए तत्पर होंगे। साथ ही आप किसी सार्वजनिक संस्था के सम्मानित पदाधिकारी भी हो सकते हैं जो आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि की परिचायक होगी। इसके अतिरिक्त जीवन में किसी विशिष्ट अधिकार या सम्मान को भी प्राप्त करने में समर्थ होंगे। अतः आपको परिश्रम पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करने में तत्पर रहना चाहिए।

आपके पिताजी उद्योगी, परिश्रमी एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा स्वयोग्यता एवं बुद्धिमता से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। पिता से आपको जीवन में पूर्ण सुख स्नेह एवं सहयोग की प्राप्ति होगी तथा उनके प्रभाव से आप कार्य क्षेत्र में भी विशिष्ट सफलताएं अर्जित करेंगे। आपका भी उनके प्रति पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव रहेगा। एवं उनकी आज्ञा पालन में भी तत्पर रहेंगे। साथ ही पिता की सेवा करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे फलतः आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी। इस प्रकार आप सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करने में सफल होंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है अतः इसके प्रभाव से आप सौभाग्य से युक्त रहेंगे तथा आपकी मनोकामनाएं शीघ्र ही पूर्ण होती रहेंगी। आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा आपकी कई इच्छाएं मन में विद्यमान रहेंगी तथा अन्य जनों की अपेक्षा आप की महत्वाकांक्षाएं यथा समय पूर्ण होंगी। आपके आय स्रोतों में स्वतः वृद्धि होती रहेगी तथा इनमें आपको अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। अतिरिक्त आय स्रोतों के लिए आप मूल संबंधी व्यापार लकड़ी या पेट्रोलियम पदार्थों के कार्य से इच्छित लाभ अर्जित कर सकते हैं।

आपकी मित्रता स्थाई रहेगी तथा मित्रों की संख्या भी अल्प ही रहेगी जिसमें आपको हार्दिक प्रसन्नता मिलेगी एवं उनसे भी यथा समय यथोचित सहयोग प्राप्त होता रहेगा। अपने से अधिक आयु के लोगों से मित्रता आदि संबंध स्थापित करने से आपको इच्छित लाभ होगा क्योंकि अपनी आयु की अपेक्षा अधिक आयु के लोगों को समझना आपके लिए आसान रहेगा। प्रौढ़ या वृद्धावस्था में मित्रों के मध्य आपके सम्मान में वृद्धि होगी तथा वे सभी आपको अपना पथ प्रदर्शक समझेंगे।

आपके अंदर सामाजिकता की भावना हमेशा विद्यमान रहेगी तथा सामूहिक मनोरंजन में आपको मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होगी। समाज में आप एक प्रतिष्ठित तथा आदरणीय पुरुष समझे जाएंगे तथा कोई भी व्यक्ति आपके विरुद्ध सत्य असत्य बात कहने के लिए तैयार नहीं होगा तथा आपके सभी आभारी रहेंगे। बड़े भाई बहिनों से आपको इच्छित सुख एवं सहयोग सामान्य मात्रा में ही प्राप्त होगा परन्तु बहिनों से यदा कदा विशिष्ट लाभ या सहयोग मिल सकता है। इसके अतिरिक्त यदा कदा आपके बाएं कान में कोई परेशानी होगी परन्तु इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक मामलों में प्रारंभ से ही भाग्यशाली रहेंगे लेकिन समय के साथ ही आप बिना सोचे समझे कई बार मुक्त हाथों से व्यय करेंगे इससे आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप बुद्धिमता पूर्वक योजना बनाकर व्यय करेंगे तो आप आर्थिक परेशानियों से सुरक्षित रह सकते हैं।

आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे अतः धार्मिक कार्य कलापों तीर्थ यात्राओं मन्दिर निर्माण आदि कार्यों या परोपकार संबंधी कार्यों पर समय समय पर व्यय करते रहेंगे। बच्चों की आप पूर्ण चिन्ता करेंगे तथा उनके रहन सहन पठन पाठन का विशेष ध्यान रखेंगे तथा उन पर यथोचित व्यय करने के लिए तत्पर रहेंगे। आप उन्हें अच्छे स्कूलों तथा कालेजों में प्रवेश दिलाने के परम इच्छुक रहेंगे। साथ ही आपके मित्र एवं संबंधी भी अधिक होंगे। अतः समय समय पर इन पर भी आपका व्यय होता रहेगा। साथ ही घर की साज सज्जा की वस्तुओं यथा फर्नीचर टेलीफोन आदि भौतिक उपकरणों पर भी आपका समय समय पर व्यय होता रहेगा लेकिन आप व्यय पहले करेंगे बाद में अपना आर्थिक बजट देखेंगे इससे यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आप कर्ज आदि ले सकते हैं लेकिन इससे कोई परेशानी नहीं होगी तथा आप आसानी से कर्ज वापस कर देंगे।

आप नवीन विचारों की खोज में हमेशा मननशील रहेंगे तथा जीवन में नवीन आयाम भी प्राप्त करेंगे। साथ ही यात्रादि से भी आपकी इस क्षेत्र में उन्नति होगी आप शिक्षा, सरकारी अथवा कम्पनी के कार्य से विदेश यात्रा भी कर सकते हैं तथा इन यात्राओं से आपको भविष्य में पूर्ण लाभ होगा। इसके अतिरिक्त आप विदेश में लम्बी अवधि तक प्रवास भी कर सकते हैं जो आर्थिक एवं सामाजिक स्तर बढ़ाने के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। इससे आपके रहन-सहन, खान पान एवं अन्य क्षेत्रों में उन्नति कारक परिवर्तन दृष्टिगोचर होंगे।

नक्षत्रफल

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण शूद्र, वर्ग मृग, नाड़ी मध्य, योनि व्याघ्र तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "रि" या "री" अक्षर से शुरू होगा।

आप स्वभाव से ही धर्मनिष्ठ व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा रखेंगे। देवता तथा ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा तथा आप समय समय पर इनका पूजन तथा सत्कार करते रहेंगे। आप स्त्री पुत्र सहित हमेशा सन्तुष्ट रहने वाली प्रकृति के पुरुष होंगे। अनावश्यक इच्छाओं तथा आवश्यकताओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। आप हमेशा धनधान्य तथा ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।

देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।

मानसागरी

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्त्री तथा पुत्र सहित सन्तुष्ट रहने वाला, धनधान्यादि से परिपूर्ण रहने वाला तथा देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त होता है।

आप हमेशा विभिन्न प्रकार की वेशभूषा को धारण करने के प्रति रुचिशील रहेंगे तथा गले में भी माला आदि को धारण करेंगे। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर तथा आकर्षक होंगी एवं शरीर भी सौन्दर्य से युक्त रहेगा।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।

बृहज्जातकम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अनेक वस्त्र एवं मालाओं को धारण करने वाला, सुन्दर नेत्र तथा सुन्दर शरीर वाला होता है।

आप अपने मन के किसी भी भेद को हमेशा अपने ही हृदय में गुप्त रखेंगे तथा किसी अन्यजन को उस के बारे में कुछ भी नहीं बताएंगे। आपकी यह प्रवृत्ति स्वाभाविक होगी तथा आजीवन इस प्रवृत्ति का पालन करेंगे। समाज के लोगों में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा अतः सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त आपका अन्य जनों के प्रति भी अनुराग का भाव रहेगा तथा उनसे मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।

जातकपरिजातः



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपने मन की बात को गुप्त रखने वाला तथा दूसरे पर प्रकट न करने वाला ऐसे स्वभाव से युक्त, सम्माननीय तथा दूसरे की स्त्रियों में अनुरक्त रहता है।

आप अत्यन्त ही पराकमी एवं प्रतापी पुरुष होंगे तथा अपने पराक्रम से शत्रुओं को पराजित करने तथा कुचलने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगे। शत्रुपक्ष आपसे इतना भयभीत रहेगा कि आपके विरुद्ध मुंह खोलने का उनमें साहस नहीं रहेगा। नीति शास्त्र के आप महान विद्वान होंगे तथा नीति संबंधी कार्यों को सम्पन्न करने में अत्यन्त ही निपुणता का प्रदर्शन करेंगे। शास्त्रों के प्रति भी आपका सम्मान का भाव रहेगा तथा अपनी अद्भुत बुद्धि से सम्पूर्ण शास्त्रों के ज्ञानार्जन में आप सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

**प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः ।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे ।।
जातकाभरणम्**

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न मानव अपने प्रताप के द्वारा शत्रु को कष्ट पहुँचाने वाला, नीति शास्त्र में दक्ष, नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने वाला तथा शास्त्रादि में अद्भुत बुद्धिवाला होता है।

आपका जन्म ताम्रपाद में हुआ है। आप जीवन में धन धान्य से पूर्ण रूपेण सम्पन्न रहेंगे तथा श्रेष्ठ एवं गुणवान स्त्री को पत्नी के रूप में प्राप्त करेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों तथा सोना चांदी आदि मूल्यवान धातुओं से भी सुसम्पन्न रहेंगे। देखने में आप का शरीर सुन्दर एवं स्वस्थ रहेगा। आप एक विद्वान पुरुष रहेंगे तथा चल अचल सम्पत्ति से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक विभिन्न सुखसंसाधनों का आप नित्य उपभोग करते रहेंगे। आपकी सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी तथा आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुख से व्यतीत होगा। आपका अन्य लोग से मधुर एवं सुशील व्यवहार रहेगा।

तुला राशि में जन्म लेने के कारण आपका शरीर तथा मुख देखने में सुन्दर रहेगा। आपकी आँखें बड़ी तथा नाक ऊँची होगी। आपके पास वाहनों की बहुलता रहेगी। स्त्री वर्ग के प्रति आपमें आकर्षण की प्रबलता रहेगी तथा इनसे आपके घनिष्ठ संबंध भी रहेंगे। आपको वाहन के अतिरिक्त भूमि आदि जायदाद से भी बल एवं लाभ प्राप्त होगा। शुद्धता तथा पवित्रता के प्रति आप का विशेष ध्यान रहेगा। आप पराक्रम के ज्ञाता होंगे तथा सम्पूर्ण समाज में आपका उच्च प्रभाव एवं आकर्षण रहेगा। कार्यों को सम्पन्न करने में आप अत्यन्त ही चतुर एवं कुशल होंगे। ब्राह्मण तथा देवताओं के प्रति आपके मन में गहरी श्रद्धा होगी तथा श्रद्धापूर्वक आप इनकी भक्ति में सदैव तत्पर रहेंगे। आप अतुल धन तथा ऐश्वर्य से हमेशा सुशोभित रहेंगे। इनका आपके पास अभाव नहीं रहेगा। स्त्री से आप हमेशा पराजित रहेंगे तथा अधिकांश कार्य उसी के निर्देशानुसार सम्पन्न करेंगे। धन धान्यादि के संग्रह करने में भी आपकी प्रवृत्ति संलग्न रहेगी तथा भाई बन्धुओं का आप उपकार करते रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो ।

गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः ।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो ।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी ।।
सारावली

आप श्रेष्ठ एवं भद्र पुरुषों तथा समाज सेवा के कार्य में सदा तत्पर रहेंगे तथा विद्वता एवं पवित्रता से हमेशा सुशोभित रहेंगे। भ्रमण करना तथा यात्राएं आदि के प्रति आप हमेशा रुचिशील रहेंगे तथा अपना अधिकांश समय इन्हीं पर व्यतीत करेंगे। वस्तुओं को खरीदने तथा बेचने के कार्य में आप हमेशा निपुण रहेंगे। आप अपने समस्त बन्धु वर्ग का उपकार एवं सहायता करेंगे परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा आपकी उपेक्षा होगा।

देवब्राह्मणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः ।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्यान्वितः ।।
हीनाङ्गः कयविकयेषु कुशलो देवद्विजानामा सरुक् ।
बन्धूनामुपकारकृद्धि रुषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे ।।
बृहज्जातकम्

आप में धैर्य का गुण विद्यमान रहेगा तथा अधिकांश कार्यों को आप धैर्यपूर्वक सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक न्यायप्रिय व्यक्ति होंगे तथा न्याय के प्रति पूर्ण आस्था रखेंगे। आपकी इस प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए अन्य लोग अपने आपसी विवादों में आपको पंच या मध्यस्थ नियुक्त करेंगे। साथ ही आपका भाग्योदय भी देर से होगा एवं संतति संख्या भी अल्प ही रहेगी।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विजानामा ।
प्रांशुश्च दक्षः कयविकयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी ।।
फलदीपिका

आपका कद मध्यम रहेगा। उच्चाधिकारियों तथा पदाधिकारियों को आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में अतीव चतुराई का प्रदर्शन करेंगे एवं उनसे पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही बंधुवर्ग को आप हमेशा कुछ न कुछ सहायता प्रदान करते रहेंगे। परन्तु कभी कभी आप अधिक तथा व्यर्थ की बातें भी बोलने लगेंगे। अतः लोगों पर आपके प्रभाव में न्यूनता आएगी। ज्योतिषशास्त्र अथवा ग्रहनक्षत्र विद्या के आप प्रसिद्ध विद्वान हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त संबंधी बन्धु तथा सेवकों के प्रति आपके मन में स्नेह का भाव सर्वथा विद्यमान रहेगा।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी ।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता ।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो ।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी ।।
जातक दीपिका

यदा कदा आप गलत स्थान पर या अनुचित समय पर अपने क्रोध का प्रदर्शन

करेंगे। जिससे आप दुःख को प्राप्त करेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगे जिससे अन्य लोगों के ऊपर आपके प्रभाव की वृद्धि होगी। साथ ही आप एक दयालु तथा कृपालु व्यक्ति होंगे तथा सबके प्रति अपनी इस भावना को बनाए रखेंगे। आपकी आर्खें चंचलता से युक्त रहेंगी। धनागमन आपके पास अस्थिर मात्रा में रहेगा। कभी तो अतिशय धन प्राप्ति होगी तो कभी कुछ नहीं मिलेगा। अतः इससे आप मानसिक रूप से अशान्ति की अनुभूति करेंगे। घर के अन्दर आप बलशाली होंगे परन्तु घर से बाहर अत्यन्त ही कमजोर महसूस करेंगे। मित्र वर्ग से आपका पूर्ण सहयोग तथा प्रेम का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आप घर से दूर परदेश या विदेश में भी निवास कर सकते हैं।

**अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः ।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः । ।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः ।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः । ।
मानसागरी**

आप अपने जीवन में वाहनादि से सदैव सम्पूर्ण रहेंगे तथा दानशीलता का भाव भी आपके मन में सर्वथा विद्यमान रहेगा। स्त्रीवर्ग से आपके घनिष्ठ संबंध रहेंगे तथा मित्र एवं बंधु वर्ग के भी स्नेही होंगे।

**वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुमान् ।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः । ।
जातकाभरणम्**

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रकृति कभी कभी अधिक बातों को कहने की होगी। आपके हृदय में दया एवं करुणा का भाव अल्प मात्रा में रहेगा। आप एक साहसी पुरुष होंगे तथा साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आपकी प्रवृत्ति शीघ्र ही छोटी छोटी बातों में क्रोधित होने की भी रहेगी। आप अपनी कार्य सिद्धि के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे। शारीरिक बल से आप सर्वदा युक्त रहेंगे। साथ ही अन्य जनों से कभी कभी आपकी विवाद की प्रवृत्ति भी रहेगी तथा लोगों से आपका विरोध भी रहेगा। अतः संयम पूर्वक अन्य जनों से सम्पर्क करना चाहिए।

आप प्रमेह तथा उन्माद रोग से भी जीवन काल में पीड़ित हो सकते हैं। साथ ही आपकी मुखकृति भी सामान्य आकर्षक रहेगी। आप अपनी भाषा में कभी कभी ऐसे शब्दों का उपयोग करेंगे जिससे सुनने वाला आपसे अप्रसन्नता का भाव प्रकट करेगा। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करें।

**अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च ।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी । ।
जातकाभरणम्**

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही कोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप अपने समस्त कार्यों को स्वच्छन्द तथा स्वतंत्रतापूर्वक सम्पन्न करने के प्रति रुचिशील रहेंगे अपने कार्यों में दूसरों का हस्तक्षेप आपको रुचिकर नहीं लगेगा। साथ ही धनधान्यादि संग्रह करने में भी आपकी प्रवृत्ति रहेगी। अच्छी बातों तथा गुणों को आप शीघ्र ही ग्रहण करेंगे। धन तथा वैभव से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे परन्तु आप अपने ही मुंह से अपनी प्रशंसा करेंगे अतः अन्य जन इसे पसन्द नहीं करेंगे।

स्वच्छन्दोड्यरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।

आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।

मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृत्ति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित हैं। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके विवाह कराने में वे मुख्य भूमिका निभाएंगी तथा व्यापार आदि कार्यों में भी आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करेंगे एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आप के आपसी संबंध भी मधुर रहेंगे एवं परस्पर मतभेदों का भी अभाव रहेगा। साथ ही जीवन में उनको सर्वप्रकार का सहयोग भी प्रदान करने के लिए आप हमेशा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य रूप से शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको

मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरुवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दाता होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही गुरुवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक अशान्ति शारीरिक व्याकुलता व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता इत्यादि अन्य अशुभ फल हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए एवं शुक्रवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, चांदी, हीरा, चावल, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, दूध आदि पदार्थों का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों में भी न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रिक मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न कराने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

मंत्र- ॐ ह्रीं शीं शुक्राय नमः।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उद्धृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते हैं। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते हैं।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता है। मातृ ऋण वाले जातक



FUTUREPOINT
Astro Solutions



के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्यमय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम

ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृ ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी पितृ ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात् दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्नी स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-छगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर



FUTUREPOINT
Astro Solutions



काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढेर या गन्दगी हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालों की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी आजन्मकृत ऋण से मुक्त है।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्नी ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली के पांचवे खाने में सूर्य है। इसकी वजह से आप पढ़ाई में तेज, उच्चशिक्षित, सत्ता पक्ष से लाभ-प्राप्त करेंगे। सुखी माता-पिता से युक्त, अपने घर का भाग्य जगाने वाले, संतान सुख मिलेगा। आप सेवक पुत्र के पिता होंगे। पुत्र प्राप्ति के बाद परिवार में तरक्की होगी। आप सबको साथ लेकर आगे बढ़ने वाले और शूरवीर होंगे, बुढ़ापा सुख से बीतेगा। सरकारी अधिकारियों से मधुर संबंध रखेंगे। यदि राजा सहायक न हो तो फकीर से आपका भला होगा। पारिवारिक उन्नति होगी। पौत्र के जन्म के बाद माली हालात अच्छी हो जाएगी। औलाद की वृद्धि होगी, बुढ़ापे में हर तरह का आराम मिलेगा। मां-बाप का सुख लंबे समय तक मिलेगा। जिंदगी आराम से गुजरेगी। 42 से 47 साल की आयु तक शुभ फल होगा। ज्यों-ज्यों आयु बढ़ेगी, आप का रुतबा अच्छा होता जायेगा। आपको सरकारी विभाग से मान-सम्मान मिलेगा, गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, अचानक धन प्राप्ति के भी योग हैं।

यदि आपने चाल-चलन खराब किया या बुरे काम किये, संतान से झगड़ा किया सरकारी विभाग से बेईमानी की या झूठ बोलने की आदत होगी तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य का मंदा असर पेट पर पड़ेगा और आपका स्वभाव क्रोधी होगा। पत्नी छोड़े या मर जाए या दूसरी शादी भी हो सकती है, ऐसा शक है। स्त्री की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। स्त्री द्वारा अपमानित भी होना पड़ सकता है। लड़के पर भी बुरा असर हो सकता है। काफी दुःखों का सामना करना पड़ सकता है। औलाद की आर्थिक हालात पर बुरा असर होगा। ननिहाल के लिए अशुभ फल रहेगा। झूठ और बेईमानी से धन हानि का भय और दीर्घ रोग हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट हैं तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. झूठ से दूर रहें।
2. किसी के प्रति मन में ईर्ष्या न रखें।

उपाय :

1. बुजुर्गी रस्मों-रिवाज बन्द न करें।
2. साला, जीजा, दोहते या भांजे में से तीन की सेवा करें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली में चंद्रमा सातवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपको सुंदर पत्नी का सुख प्राप्त होगा। आप नेता, वकील, व्यापारी बन सकते हैं। खेती की जमीन से भी लाभ मिलेगा। मध्यम पढ़ाई का योग है। आपके घर में जल तथा दूध की व्यवस्था हमेशा रहेगी। आप स्वयं लक्ष्मी अवतार होंगे। आपकी योगाभ्यास, शायरी और ज्योतिष विद्या में रुचि होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आप आस्तिक और ईश्वर भक्त होंगे। आप सरकारी सर्विस में होंगे तो प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। उत्तम वाहन सुख मिलेगा। दुनियादारी से मोहभंग हो जाएगा। आध्यात्म का फल श्रेष्ठ रहेगा। आप अपने पराक्रम से मिट्टी से सोने पैदा कर सकते हैं। धन-दौलत, जेवरात आदि की बरकत होगी। आपको सरकार से या किसी संस्था द्वारा सम्मान मिलेगा या आप विदेश में अधिक समय व्यतीत करेंगे। विदेश की यात्रा करेंगे। ईश्वर की भक्ति प्राप्त होगी। आपको जल से संबंधित चीजों से लाभ होगा। आप नये विषयों की खोज भी करेंगे।

यदि आपने परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, भूत-प्रेत की सिद्धि की, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया। माता या स्त्री से झगड़ा किया, 24-25 वर्ष आयु में विवाह हुआ तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से 2 वर्ष तक माता का स्वास्थ्य ढीला रहेगा या माता से अलग रहना पड़ सकता है। विवाह के बाद माता के सुख में कमी आ सकती है। माता का विरोध करना आपके लिए अशुभ होगा। आपको 24वें वर्ष में विवाह करना भावी संतान के लिए प्रतिकूल होगा। आपका चाल-चलन संदेहपूर्ण होगा। दूध और पानी को बेचने से संतान सुख में बाधा हो सकती है। आपकी पत्नी और आपकी माता का आपस में झगड़ा रहेगा, पत्नी से संबंध विच्छेद या दूरी का भय रहेगा या हो सकता है। मादक चीजों/द्रव्यों के प्रयोग से आपकी बर्बादी होगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. दूध-पानी माल न बेचें।

उपाय :

1. दूध पानी का दान करें।
2. विवाह के बाद पत्नी की डोली आपके घर में आने से पहले पत्नी के वजन के बराबर चावल या दरिया का पानी कायम करें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल चौथे खाने में है। इसकी वजह से लाल किताब के अनुसार चौथे खाने में मंगल हो तो व्यक्ति मंगलीक होता है। अतः आप मंगलीक हैं। आप दूसरों को नसीहत देने वाले हैं। दूसरे की शरारत का जबाब देने के लिए आप हिम्मत अधिक रखते हैं। आप अपने परिवार के सदस्यों की मदद करेंगे, आप किसी का बुरा नहीं करेंगे। आपको स्त्री और संतान का सुख मिले सुख बाधा की आशंका है। सुख के साधन रहने पर भी उत्तम सुख नहीं मिलेंगे। आपका अपना भवन एवं वाहन होगा। आपके मन में अचानक उत्तेजना बनी रहती है। स्त्री/माता का सुख साधारण रहेगा।

यदि आपकी दक्षिण दिशा के मुख्य द्वार वाले घर में रिहाईश हुई, ढेक का वृक्ष घर में लगा हुआ हो, अतिकामी हुए, पत्नी से झगड़ा किया, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, किसी



FUTUREPOINT
Astro Solutions



की संतान पर बुरी नजर रखी तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से आपके मन में बगावत आ जाए तो आप समुद्र में भी आग लगा सकते हैं। ननिहाल और ससुराल में खराबी हो सकती है। आप दुर्घटना से सचेत रहें। खानदानी घर से बाहर, दूसरे घर में रहना लाभदायक होगा। अगर आपके 32 दांत होंगे तो आप जिसको भी बददुआ देंगे तो उसका बुरा हो जायेगा। आपका मंगल माता, सास, पत्नी की मृत्यु का कारण बनाता है। माता-स्त्री की दुर्घटना का भय है। साधारण व्यक्ति भी आप से शत्रुता करेगा। संतान प्राप्ति में कुछ बाधा हो ऐसी आशंका है। आपका वैवाहिक जीवन कष्टमयी या संतान सुख में विघ्न या संतान गोद लेनी भी पड़ सकती है। स्त्री के स्तन या गर्भाशय के आप्रेशन की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. काले-काने, गंजे, अंगहीन व्यक्ति से संबंध न रखें।
2. निःसंतान व्यक्ति से दूर रहें।

उपाय :

1. हाथी दांत पास रखें।
2. माता, साधू, बंदर की सेवा करें।
3. दांतों को सुबह उठते ही पानी से साफ करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध पांचवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आपका जीवन खुशहाल रहेगा। आपकी ज्योतिष विद्या तथा आयुर्वेद शास्त्र में रुचि रहेगी। आपका वाक्य ब्रह्मा जी के मुंह से निकली बात के समान होगा। आपको अपने भाई से सुख मिलेगा और लाभ होता रहेगा। आपको जीवन में औलाद सुख मिलेगा। आप बिना सोचे-समझे भी कुछ बात कह दें, तो वह सच हो जाएगा। आपका चरित्र अच्छा होगा। आपकी जदी जायदाद, गृहस्थी और औलाद पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। 34 वर्ष की उम्र के बाद आपका भाग्य पूरी बुलंदी पर आ जाएगा। आप पूर्ण ज्ञानी और तेजस्वी प्रभाव के व्यक्ति होंगे। आपके सगे संबंधियों या किसी भी व्यक्ति पर आपका अच्छा असर रहेगा। आप अच्छे प्रबंधकर्ता हैं। अकस्मात् धन की प्राप्ति के भी योग है। आपको अपने जीवन में बहुत अच्छे दिन देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा। आपको पराविद्या, तंत्र-मंत्र पर पूर्ण भरोसा रहेगा। धर्म, आध्यात्म और ईश्वर भक्ति के प्रति आपकी रुचि अच्छी रहेगी। आपकी बुद्धि तेज है। आपको बुद्धि के खजाने और विद्या का पूर्ण लाभ मिलेगा।

यदि आपने संतान का विरोध किया सरकारी अधिकारियों से झगड़ा किया, परस्त्री से अनैतिक संबंध रखे, आपके घर में बांस का वृक्ष हुआ तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदे असर से आप कभी-कभी बहुत कड़की बातें करने लगेंगे। इस बात का परहेज रखें। संतान पर कष्ट के दिनों में आप अधिक ही चिंतित

हो जाया करेंगे। आप कल्पना लोक में भ्रमण करेंगे या काल्पनिक डर से भयभीत रहेंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. गऊ मुख घर में रिहाइश न करें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :

1. चांदी की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. तांबे का पैसा सफेद धागे में डाल कर गले में धारण करें।

गुरु

आपकी जन्मकुंडली में वृहस्पति दूसरे खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप गुरु का दायित्व निभाएंगे शिक्षा तथा ज्ञान फैला कर उनकी समस्याओं का हल निकाल लेंगे। आपका गृहस्थ जीवन सुखी होगा। दौलत बहुत आ जाएगी। सरकारी कामकाज के अवसर मिलेंगे। आप अपनी जायदाद खुद बनाएंगे। आपके पिता के आशीर्वाद से आपकी दौलत में वृद्धि होगी। अगर आप सरकारी नौकरी करते हैं तो 27वें साल में सरकारी नौकरी में तरक्की होगी। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। आप में हुकूमत करने की ताकत होगी और जीवन की हर मंजिल पर फतह पाएंगे। आपका कुछ बुरा होने वाला होगा उसके पहले आपको पता चल जाएगा। आपको अचानक दबा धन मिलने की संभावना है। आपको विद्या का बहुत लाभ मिलेगा। आपकी पत्नी सुंदर होगी। आप जीवन में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। आप बहादुर होंगे। खेती-बाड़ी या मिट्टी से संबंधित कामों में या कपड़े से संबंधित नौकरी-व्यापार में अच्छा लाभ होगा।

यदि आपने पत्नी का विरोध किया, सराफी-जौहरी का काम किया, माता-पिता का विरोध किया या माता-पिता को कष्ट दिया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से आपकी नजर पर बुरा प्रभाव पड़ने की शंका है। बुढ़ापे में स्वास्थ्य और आर्थिक हालत अच्छी नहीं रहेंगे। आपको दूसरे के झगड़े में पड़ने से नुकसान उठाना पड़ेगा। आप कुछ दुःखी रहेंगे ऐसी आशंका है। आप में बेरहमी भी होगी। पुलिस/कोर्ट से दंड/जुर्माना का भय रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. सराफी/जौहरी के काम न करें।
2. चाल-चलन ठीक रखें।

उपाय :

1. मकान में कच्चा हिस्सा जरूर रखें।
2. केसर/हल्दी का तिलक करें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली में शुक्र चौथे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान होंगे। स्त्री, संतान सुख मिलेगा और स्वस्थ एवं खुश रहेंगे। आपकी यात्राएं अधिक और सफल होंगी। आपकी पत्नी अपनी इच्छा से सभी काम करेगी। विवाह के बाद घर में कुआं खुदवाना शुभ रहता है। आपकी स्त्री और संतान का बुरा प्रभाव 34 वर्ष की आयु में दूर होगा। शादी के चार साल तक खूब ऐशो आराम पाएंगे। आप में आध्यात्मिक रुचि और शक्ति निश्चित होगी। आपको राजयोग के संयोग से जीवन में सुख प्राप्त होगा। यदि आप मामा और मौसी के कारोबार में साथ दें तो उनका व्यापार सफल होगा। आपको उत्तम भवन और वाहन सुख मिलेगा। माता स्वस्थ और बहुत दिनों तक आपको सुख देगी। आप अपने खानदान या गांव, देश-विदेश में प्रसिद्ध होंगे। आप उत्तम भोजन, भ्रमण एवं शयन के शौकीन होंगे। नौकरी-व्यापार पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा। सामान्यतया आप सरकारी विभाग से लाभ पायेंगे, उच्च पद या राजकीय सुख से युक्त रहेंगे।

यदि आपने सुरमें से संबंधित काम किया, 21-22, 24-25 वर्ष आयु में विवाह किया, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी माता और आपकी पत्नी में झगड़ा होता रहेगा। आपके लिए इश्क और प्रेम आपकी तबाही का कारण बनेगा। आपकी पत्नी आपके खानदान के लिए मनहूस होगी। गंदे प्रेम संबंध का बुरा फल मिलेगा। आप नशे आदि में पड़ कर बर्बाद हो सकते हैं। जीवन में दो विवाह संभव हैं। पत्नी के गर्भाशय में रोग या गर्भाशय निकाल दिया जायेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चाल-चलन ठीक रखें।
2. बुजुर्गी मकान की दहलीज खराब न होने दें।

उपाय :

1. कुएं में केसर डालें।
2. चार आड़ू की गुठली में सुरमा भर कर वीराने में दबायें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शनि पड़ा है। इसकी वजह से आपका भाग्योदय 48वें वर्ष में होगा। आप अपने धर्म पर अडिग रहेंगे। जीवन के 57वें, 72वें और 89वें आयु में अच्छा फल मिलेगा। आपको पूरा आराम मिलेगा और उत्तम फल प्राप्त होंगे। लोहा,



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कोयला, रबड़ आदि काली चीजों के व्यवसाय से लाभ प्राप्त करेंगे। दस्तकारी में भी निपुण होंगे। आप अपने धन की सुरक्षा करेंगे। आर्थिक दृष्टि से आप प्रगति करेंगे। संतान सुख अवश्य मिलेगा। यदि आप नेकी करेंगे और धर्म का सहारा लेंगे तो मिट्टी को भी छुएंगे तो सोना हो जाएगी। न्यायप्रिय, राज्याधिकारी, राजदरबार और धन-दौलत पर अच्छा असर पड़ेगा। भलाई करने से जिंदगी में सभी प्रकार के आराम मिलेंगे। बुजुर्गी संपत्ति का लाभ होगा, ससुराल वाले अमीर होंगे।

यदि आपने 55 वर्ष की आयु से पहले मकान बनाया, आपने परिवार के लोगों को हानि पहुंचाई, भाई से दूर रहे, धोखे-ठगी से धन कमाना शुरू किया तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आपकी शिक्षा अधूरी रह सकती है। आप गुस्सेल मिजाज के होंगे। आपके आमदनी और खर्च बराबर रहेंगे। शराब-मांस का सेवन करने से क्रोध की मात्रा बढ़ जाएगी और आप किसी की हत्या भी कर सकते हैं। आप फरेब करके पैसा बनाएंगे। बेईमानी से कमाया हुआ धन बुरा फल देगा। धोखे-ठगी से कमाया धन कैद और कफन ही देगा। विद्या में रुकावट, आपका भाई-बंधु और मित्रों से विरोध होगा, खानदान के लिए अशुभ होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. किराये के मकान में रिहाईश न करें।
2. ठगी-धोखे से धन न कमाएं।

उपाय :

1. घर में शुद्ध चांदी की ईंट रखें।
2. नये काम पर जाते समय या नया काम शुरू करते समय पानी या दूध का भरा घड़ा कुंभ के तौर पर रखें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के तीसरे खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आपका भविष्य उज्ज्वल रहेगा। आपका सितारा बुलंद रहेगा। आपके सामने दुश्मन सिर नहीं उठा सकेंगे। आप भविष्य में जीवन में घटने वाली घटना को पहले ही जान जाएंगे। किसी भी घटना के बारे में भविष्य का हाल दो वर्ष पहले जान जाएंगे। आपके सभी अरमान पूरे होंगे। आपकी कलम से लिखी बात में तलवार से भी पैनी धार साबित होगी। काफी धन-संपत्ति के स्वामी और शत्रुहंता होंगे। संतान का पूरा सुख मिलेगा। आपके जीवन का 22वां वर्ष उन्नतिकारक होगा। आप शाही जीवन बिताएंगे। आप धर्म में कम श्रद्धा रखेंगे। आप अपनी उम्र में पूरी तरह सुखी होंगे। आपका हौसला बुलंद रहेगा। आप दिलेर और निर्भय रहेंगे। आपकी गिनती बड़े लोगों में होगी। पत्नी-दौलत का अच्छा सुख मिलेगा। आपकी औलाद भी धनवान होगी।

यदि आपने अपने पास या घर में हाथी दांत रखा, हाथियों के 3-3 खिलौने रखे,

हाथियों से संबंधित कामों का व्यापार किया, बहन-बेटी-लड़की का धन प्रयोग किया तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से घर में कोई स्त्री विधवा हो सकती है। आपके भाई के लिए इस ग्रह का फल मंदा रहेगा। आपका भाई धोखाधड़ी करके आपका धन हड़प लेगा। आप पर कर्ज का बोझ पड़ेगा परंतु अपनी बुद्धिमता से कर्ज का बोझ उतार लेंगे। नौकरी-व्यापार में परेशानी होगी, संतान पर 34 वर्ष आयु तक बुरा फल हो ऐसी आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. हाथी दांत पास न रखें।
2. तीन-तीन हाथी के खिलौने घर में न रखें।

उपाय :

1. ठोस चांदी घर में न रखें।
2. कन्याओं की सेवा या दुर्गा पाठ करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के नौवें खाने में केतु पड़ा है। जिसकी वजह से आपकी प्रगति होती रहेगी तबदीली कम होगी। आप पिता के आज्ञाकारी होंगे। सामने वाले व्यक्ति के मन को भाप लेंगे। आप धनवान और भाग्यवान होंगे। आप जन्मस्थान से दूर रहेंगे। आपकी संतानें दूरदर्शी होंगी। आपकी 48 वर्ष की आयु तक पिता की स्थिति अच्छी रहेगी। आप बलवान, भरोसेमंद और अपनी कमाई से बड़े आदमी बनेंगे। आप समाज सेवक होंगे। आपका जीवन परदेश में बीतेगा। धन-संपत्ति और घर के प्रभाव की वृद्धि होगी। आपकी सोलह वर्ष आयु के बाद शुभ असर शुरू होगा। आप अपने बेटे की सलाह से कोई काम करेंगे तो शुभफल प्राप्त होगा। आप माता-पिता और खानदान को तारेंगे। आपका अपना अच्छा रुतबा रहेगा। आप कोई बड़े अफसर बन सकते हैं। आपके यदि पुत्र होंगे तो दीर्घायु होंगे। आपका आर्शीवाद नामर्द को मर्द बना सकता है।

यदि आपने कुत्ते को चोट मारी या कुत्ते से नफरत की, चोर-डाकू को यदि आप साथ रखेंगे, परस्त्री से चाल-चलन खराब करेंगे तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से शारीरिक कष्ट या जोड़ का दर्द होगा। धन की चिंता बनी रहेगी। प्रगति कम और तबदीली अधिक होगी। विवाह के 7 वर्ष बाद संतान पैदा हो, ऐसी आशंका है। आपकी बहन को पुत्र प्राप्ति न होगी या पुत्र सुख न होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. चोर-डाकू का साथ न रखें।
2. कुत्ते को चोट न मारें।

उपाय :

1. शुद्ध सोने की ननतियां कानों में पहनें।
2. शुद्ध सोने की चौरस ईंट घर में रखें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।
2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।
3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।
4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।
5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।
6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर दें।
7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।
8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।
9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें।
10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये।
11. बुजुर्गों के रीति-रिवाजों को न तोड़ें और संस्कार पूरे करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वादशभाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं होगी। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए। 02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए समय कुछ अच्छा हो रहा है। उनको अपने अधिकारियों से लाभ प्राप्त हो सकता है। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्थानान्तरण भी अनुकूल स्थान पर हो सकता है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उस समय आपको व्यापार में कुछ सफलता मिल सकती है। नवम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। जिसके कारण बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा जिसके फलस्वरूप आप कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादश स्थान के राहु धनागम कराते रहेंगे। परन्तु द्वादश स्थान के शनि अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। शारीरिक व्याधियां दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

2 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की संभावना बन रही है। 31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा। उस समय आप अपने बच्चे की शिक्षा पर धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा योग नहीं बना रही है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना में कमी आ सकती है। सामाजिक रूप से समय अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा।

सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

02 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। आपको मित्रों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 31 अक्टूबर के बाद संतान पक्ष के लिए समय अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचमस्थ केतु के प्रभाव से संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु लगातार परिश्रम करना पड़ेगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। 31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। यह समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वादशस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों के कारण आप अस्वस्थ रह सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा जरूरत है नहीं तो आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में अनुशासित भोजन अपनायें व लापरवाही न करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होना शुरू हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

जिन जातकों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 31 अक्टूबर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी।

02 जून के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ सकता है और घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा काला कम्बल गरीबों को दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मासिक फलादेश

जनवरी 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप मात्रा में लाभार्जन करेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय से सम्पन्न हो जाएंगे। इस मास आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय समाज में आपका यश दूर दूर तक फैलेगा तथा भाग्योदय संबंधी कार्य शीघ्र सम्पन्न होते रहेंगे। आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी तथा इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी करेंगे। साथ ही उच्चाधिकारियों से मान एवं सम्मान अर्जित करेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों से अत्यंत ही मधुर संबंध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। इस प्रकार सम्पूर्ण मास विविध प्रकार के सुखों को उपभोग करते हुए व्यतीत करेंगे तथा समाज से यश भी अर्जित करेंगे।

फरवरी 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके अधिकारी तथा वरिष्ठ सहयोगी भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप पदोन्नति के अधिक अवसर प्राप्त करेंगे। बन्धु तथा मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगे तथा उनकी भलाई के कार्यों के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सफल होंगे अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपकी ख्याति भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस महीने आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति भी कर सकते हैं तथा आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप अन्य प्रकार से सुख तथा ऐश्वर्य अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा सुख पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

मार्च 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा इस समय स्त्री वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी। जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे फलतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगे। साथ ही सरकार तथा उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी आप रुचिशील रहेंगे तथा इसको प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धु वर्ग से भी आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करेंगे। इस मास में आप इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति करेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे संतति पक्ष से भी आप सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। सामाजिक जनों के मध्य आप इस समय मान सम्मान प्राप्त करेंगे तथा आपके विलम्बित कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप धर्मानुपालन में भी प्रवृत्त रहेंगे एवं समाज में यथोचित प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

अप्रैल 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा। अतः इस समय आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। आप का इस मास में व्ययाधिक्य रहेगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त होगी। साथ ही स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अपने ही परिश्रम से सिद्ध हो सकेंगे फिर भी आपको पूर्ण सन्तुष्टि नहीं मिलेगी। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि के योग बनेंगे। मित्रों एवं संबधियों के मध्य आपके संबधों में तनाव रहेगा तथा इनसे आवश्यक सुख तथा सहयोग भी नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगे उसमें अनावश्यक विघ्न बाधाएं उत्पन्न होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। शत्रुओं से भी आपके हृदय में नित्य चिन्ता तथा भय का वातावरण बना रहेगा। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यों में भी मनोवांछित सिद्धि नहीं मिलेगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप अपने श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी उन्नति के अवसर बनेंगे। इस मास में आपकी यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या वस्तुओं को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे।

मई 2026 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस

मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगे साथ ही आपके लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप इस मास में धनार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके प्रतीक्षित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबन्ध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सुख भी अर्जित होगा। इस समय सासारिक कार्यों को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सहयोग तथा आदर प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं संतति से पूर्ण रूप से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। अतः यह मास आपके लिए शुभ रहेगा।

जून 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही समाज से भी आप उचित मान सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं अपने कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप मिष्टान अधिक मात्रा में भक्षण करेंगे साथ ही आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा फलतः शारीरिक बल में वृद्धि होगी। इस समय आपके शत्रु क्षीण रहेंगे अतः उनका दमन करने में आप को सफलता प्राप्त होगी। स्त्री से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इसके साथ ही व्यापार आदि कार्यों से भी आप अतिरिक्त आय अर्जित होगी जिससे आर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी।

साथ ही इस मास में आप महिला सहयोगियों से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी अतः आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा इस मास में किसी धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम का भी आयोजन कर सकेंगे। इस प्रकार यह मास आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा।

जुलाई 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विभिन्न प्रकार से सुखोपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक

आप इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगे साथ ही अन्य जनों की भलाई के लिए भी आप इस मास में कार्य करते रहेंगे। इस समय स्वास्थ्य भी सामान्य ही रहेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त करेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण ख्याति प्राप्त होगी। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होगी। जिससे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी होंगे। अतः आप गर्मी या पित्तादि से उत्पन्न दोषों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे साथ ही किसी प्रकार से रूधिर विकार की संभावना भी हो सकती है अतः शारीरिक सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखें तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें जिससे कष्ट अल्प मात्रा में हों।

अगस्त 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथापि न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति करेंगे। आपके शत्रु भी इस मास प्रबल रहेंगे फलतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट तथा अशान्त रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजीविका संबंधी कार्य में शिथिलता आएगी तथा इनसे आपको पूर्ण लाभ नहीं होगा। साथ ही आपका कोई कार्य बन्द हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन हो सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक जनों से आपका परस्पर वाद विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शरीर में कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी अवश्य अर्जित करेंगे। अतः स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा इनसे आप सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि की भी प्राप्ति करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार आपके लिए यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

सितम्बर 2026 के लिए फलादेश

इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। अतः आपके अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वबुद्धि बल से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे तथा पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इस मास में आप ज्ञानार्जन करने में भी सफल रहेंगे। साथ ही प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करेंगे। इस मास में आपके अधिकांश शुभ कार्य सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी



FUTUREPOINT
Astro Solutions



तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप यथोचित लाभार्जन करने में सफल रहेंगे एवं समाज से भी आप पूर्ण मान प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। अतः मन से भी सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप वायु द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा इसके लिए आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते हैं। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा।

अक्टूबर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। फलतः शरीर में कमजोरी रहेगी। इस मास में आपके शत्रु भी बलवान रहेंगे जिससे वे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे। फलतः आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की पूर्ण रूप से आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको किसी भी प्रकार से दण्डित भी किया जा सकता है। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। आपके मित्रों एवं संबंधियों से भी इस मास तनाव पूर्ण संबंध रहेंगे तथा मनोकामनाएं भी अल्प मात्रा में पूर्ण होगी। इस समय मान हानि का भी योग बनता है अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

इसके साथ ही इस मास में आप वायुजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा आग के द्वारा भी आपको धन हानि हो सकती है। अतः आपको पूर्ण रूप से सतर्क होकर अपना समय व्यतीत करना चाहिए।

नवम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धु वर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा इनको किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही शत्रु पक्ष भी प्रबल रहेगा जिससे वे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे अतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस समय आपमें उत्साह के भाव की अल्पता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आप आर्थिक संकट भी प्राप्त कर सकते हैं। आपके मन में इस मास में लोभ के भाव की बहुलता रहेगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा मित्रों एवं बन्धु वर्ग से संबंधों में इस समय तनाव रहेगा तथा मित्र भी शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। अतः हृदय से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही पारिवारिक तथा अन्य सामाजिक जनों से भी परस्पर वाद विवाद होते रहेंगे अतः संयम पूर्वक समय को व्यतीत करना



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चाहिए जिससे अनावश्यक कष्ट न हों।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे। इससे आप स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं इनसे आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके साथ ही इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न रहेंगे।

दिसम्बर 2026 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा अतः इस समय शत्रु पक्ष से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे तथा आपके लिए वे अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। साथ ही इस समय आपके घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी तथा अनावश्यक व्यय भी होगा एवं शुभ कार्यों में विघ्न बाधाएं भी उत्पन्न होंगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी इस समय अच्छी नहीं रहेगी एवं धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा तथा इसके अनुपालन में भी उपेक्षा का भाव रखेंगे। आप इस समय शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे एवं कई प्रकार से कष्ट भी प्राप्त करेंगे जिससे आपकी शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। इस मास में आप दूर की किसी यात्रा को भी सम्पन्न कर सकते हैं। सांसारिक कार्यों में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी धन व्यय होगा अतः मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त दोष से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। इस समय किसी प्रकार का रक्त विकार भी हो सकता है तथा अग्नि आदि से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकते हैं। अतः सतर्कता पूर्वक अपने समय को व्यतीत करें जिससे अनावश्यक कष्ट तथा बाधाएं उत्पन्न न हों।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वादश में आजाएंगे। मकर राशि के राहु दशम भाव में करेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप लापरवाह, आलसी व बीमार हो सकते हैं जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ ऐसे कार्य मिल सकते हैं जिससे आपको किंचित लाभ प्राप्त हो सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति या स्थानान्तरण होने की संभावना है।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते हैं। शेयर मार्केट व सट्टा आदि के कार्यों से आप लाभान्वित हो सकते हैं। अपनी कार्य कुशलता, दक्षता एवं बौद्धिक बल पर आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे परन्तु 26 नवम्बर के बाद गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप के कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे, जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं। अतः उस समय के अंतराल में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केशनि आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें। पैसा कमाने के लिए शॉर्ट-कट न अपनाए नहीं तो नुकसान हो सकता है।

26 जून के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन रहा है जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ पैसे मिल सकते हैं, जिससे आपको छोटे-मोटे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें भी आपका धन खर्च हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक-दूसरे प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा। सब लोगों के अंदर परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि एवं पारिवारिक उन्नति होती रहेगी। दशमस्थ राहु के प्रभाव से आपके पिता का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके बच्चों के साथ आपका समन्वय मधुर होगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 26 नवम्बर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा, उस समय भी आप अपने बौद्धिक बल से घरेलू वातावरण को अनुकूल करने की नाकाम कोशिश करेंगे।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। शिक्षा के प्रति सन्तान की रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

26 जून से गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। संतान के इच्छुक दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है। यह समय आपके बच्चों के लिए भी अच्छा है। वे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। विवाह योग्य सन्तान का विवाह हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

26 जून के बाद आपका समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए

आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु अस्थिरता की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी।

विद्यार्थियों के लिए 26 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपको उचित सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थ शनिपर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से दान, पुण्य, भण्डारा इत्यादि भी करेंगे। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिससे आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी और आप अध्यात्मिक शक्ति को प्रबल करने के लिए मन्त्र, पाठ एवं यज्ञ अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार को काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। बड़े-बुजुर्गों की सेवा करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मासिक फलादेश

जनवरी 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए पूर्ण रूप से शुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपके उच्चाधिकारी वर्ग आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे तथा आप किसी सम्माननीय पद को प्राप्त करने में भी सफल होंगे। इस मास में आपका धनार्जन प्रचुर मात्रा में होगा तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप लाभ तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके घर में कोई धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होने की संभावना रहेगी। साथ ही स्त्री एवं पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल सिद्ध होंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा यथाशक्ति आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगे। समाज में इस समय आपके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा अधिकांश भाग्योदय संबंधी कार्य भी इसी समय सम्पन्न होंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता रहेगी तथा लाभदायक यात्राओं का भी योग बनेगा इसके अतिरिक्त मित्र एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा उनसे वांछित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। इस प्रकार इस समय सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होती रहेगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से मनोवांछित सहयोग तथा सुख की प्राप्ति करेंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करके अन्य स्रोतों से भी धनार्जन तथा सुख संसाधन अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आप श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा।

फरवरी 2027 के लिए फलादेश

इस महीने में आप अपने कार्यक्षेत्र में आशातीत उन्नति तथा लाभ अर्जित करने में पूर्ण सफल रहेंगे। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग तथा वरिष्ठ सहयोगी भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे फलतः आपकी पदोन्नति की संभावना बढ़ेगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से भी आप पूर्ण सहयोग तथा सुख अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा उनकी भलाई के लिए कार्यों को करने में तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सफल होंगे। जिससे मानसिक रूप से प्रसन्नता एवं सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। देवता एवं ब्राह्मणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक आप इनकी पूजा एवं सेवा करते रहेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपका यश फैलेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभयोग बनते रहेंगे। इस मास में आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति करने में भी सफल हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त विगत असफल अशाओं को पूर्ण करने में भी इस समय आपको सफलता प्राप्त होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से पूर्ण लाभार्जन तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ तथा सुखार्जन में भी सफलता प्राप्त करेंगे। अतः यह मास आपके लिए अत्यंत ही

शुभ तथा भाग्यशाली सिद्ध होगा।

मार्च 2027 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यन्त ही सुख एवं आनन्दपूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे। इस समय स्त्रीवर्ग से आपको वांछित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही सौभाग्य से भी युक्त रहेंगे। अतः आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा लाभार्जन करने में समर्थ रहेंगे तथा आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा। इस समय अध्ययन या ज्ञानार्जन में आपकी रुचि उत्पन्न होगी तथा इस में आप सफल भी होंगे। मित्रों तथा संबंधियों से आपके मधुर संबंध रहेंगे एवं उनसे भी यथोचित सुख सम्मान एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। साथ ही मनोच्छिन्न द्रव्य पदार्थों की भी आपको इस मास में लाभ होने की सम्भावना रहेगी। संततिपक्ष से आप निश्चिन्त रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सुख प्राप्त होगा। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी सफलता अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। फलतः आप मानसिक रूप से भी प्रसन्न एवं शान्त रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी सम्पन्न कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्र या द्रव्यों की भी आपको इस समय उपलब्धि हो सकती है। अतः यह मास आपके लिये अत्यन्त ही शुभ एवं सौभाग्य प्रदान करने वाला रहेगा।

अप्रैल 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिये मध्यम रहेगा तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल आप प्राप्त करेंगे। इस समय आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा तथा आप दुर्जनों की संगति में सम्मिलित होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय विशेष अच्छा नहीं रहेगा। साथ ही अत्यन्त परिश्रम एवं पराक्रम से ही आप अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अल्प मात्रा में सिद्ध करने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा की अपेक्षा उपेक्षा का ही भाव अधिक रहेगा। साथ ही अन्य प्रकार से भी धन हानि या व्यय के योग बनेंगे। इस मास में मित्रों तथा संबंधियों से आपके सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे तथा आपस में मन मुटाव तथा तनाव का वातावरण विद्यमान रहेगा। नौकरी या व्यापार आदि में भी इस समय अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न होंगी एवं शत्रुपक्ष से भी भय एवं चिन्ता का भाव रहेगा। जिस कार्य को भी आप इस मास में सम्पन्न करना चाहेंगे उसमें सफलता की अपेक्षा असफलता ही प्राप्त होगी। अतः इससे आप मानसिक रूप से अशान्त तथा अप्रसन्न रहेंगे।

परंतु अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा आप शुभ फल भी प्राप्त करेंगे। अतः आप स्त्री से सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे तथा बुद्धि भी निर्मल रहेगी तथा बुद्धिमता से आपके कार्य सम्पन्न होंगे तथा अन्य प्रकार से भी सुखी रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा इस मास में किसी धार्मिक कार्य को भी आप सम्पन्न कर सकते हैं।

मई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा प्रसन्न रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु पक्ष निर्बल रहेगा साथ ही लाभ मार्ग भी उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे। नौकरी या व्यापार के अतिरिक्त अन्य स्रोतों से भी आप लाभार्जन करने में सफल रहेंगे। फलतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। सामाजिक जनों तथा मित्रवर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा इनके मध्य आपकी प्रतिष्ठा में आशातीत वृद्धि होगी। उच्च उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे तथा उनसे उचित सहयोग तथा लाभ भी अर्जित करेंगे। इस मास में आपका भाग्य प्रबल रहेगा तथा शुभ कार्य यथासमय सिद्ध होंगे। इसके अतिरिक्त समस्त सांसारिक कार्यों को सिद्ध करने में आप सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा स्त्री वर्ग से भी सहयोग एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन करके आप सुख एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इसके अतिरिक्त धर्मानुपालन में आप रुचि रखेंगे तथा समाज एवं बन्धुवर्ग से यथोचित सम्मान भी प्राप्त करेंगे।

जून 2027 के लिए फलादेश

यह मास आप सुख तथा शान्ति पूर्वक व्यतीत करेंगे परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थ भी रहेंगे। इस समय आप अपने उत्साह एवं पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएंगे। साथ ही समाज में आपके यश तथा प्रतिष्ठा में भी पूर्ण वृद्धि होगी। बन्धु एवं मित्र वर्ग से आपके मधुर संबंध रहेंगे तथा इनसे यथोचित मान सम्मान भी अर्जित करेंगे। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से भी आपको अनुकूल सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा। इस मास में आप मिष्टान का उपयोग अधिक मात्रा में करेंगे। साथ ही आपका शत्रु वर्ग आपसे पूर्ण रूप से प्रभावित तथा भयभीत रहेगा एवं आपका सामना करने में वे असफल रहेंगे। इस समय स्त्री से भी आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यों के द्वारा भी आप धनार्जन करने में सफल रहेंगे तथा सम्पूर्ण मास सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे।

साथ ही इस मास में आपको यदाकदा अशुभ फलों की भी प्राप्ति होगी। अतः आप गर्म या पित्त द्वारा उत्पन्न होने वाले रोग से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे तथा किसी प्रकार से रक्त विकार का योग भी बन सकता है। अतः इस मास में शारीरिक सुरक्षा पर पूर्ण ध्यान दें तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

जुलाई 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए उत्तम फल प्रदान करने वाला रहेगा। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा अन्य प्रकार से भी विविध सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से आपको उचित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। देवता एवं

ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनका पूजन तथा सत्कार भी आप करते रहेंगे तथा समाज में दूसरे लोगों के परोपकार के लिए भी आप कार्यों को सम्पन्न करते रहेंगे। इस मास में आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे फलतः आपके यश में वृद्धि होगी तथा पदोन्नति की संभावना बनेगी। साथ ही भाई बहिनों से आप इस समय वांछित सुख तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके मानसिक संकल्प तथा मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होंगी जिससे आप हृदय से प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपको नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की उपलब्धि भी हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए पूर्णतया सुख शान्ति एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा।

अगस्त 2027 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा विभिन्न प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। फलतः मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। पारिवारिक जनों से भी आपके परस्पर संबंध मधुर नहीं रहेगे अतः तनाव का वातावरण रहेगा। आपके व्यापार या कार्य क्षेत्र में इस मास मन्दी आ सकती है तथा स्थान परिवर्तन का योग भी बनता है। साथ ही अस्थायी कार्य यदि कोई हो तो वह छूट सकता है। समाज में लोगों से इस मास आपके तनाव पूर्ण संबंध रहेंगे फलतः सामाजिक सम्मान में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग उत्पन्न हो सकते हैं तथा अनावश्यक रूप से भी धन व्यय होगा फलतः आप यदाकदा दुःखी रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप वात या ठण्ड से उत्पन्न होने वाले रोगों से भी पीड़ित हो सकते हैं। इस समय आप किसी ऐसे कार्य करने के लिए प्रवृत्त होंगे जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। साथ ही समाज में भी आपकी अवमानना होगी। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी धन हानि का योग बनता है अतः सम्पूर्ण मास सावधानी पूर्वक अपने किया कलापों को सम्पन्न करें।

सितम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ फल प्रदाता रहेगा तथा अशुभ फल भी न्यूनाधिक रूप से होते रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। इस मास में आप पुत्र से सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से भी लाभ अर्जित करेंगे। आपके सामाजिक प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। इस मास में आपके महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण होंगे तथा कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना भी उत्पन्न होगी तथा नियम पूर्वक इनकी सेवा



FUTUREPOINT
Astro Solutions



तथा पूजा करेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप अनुकूल एवं वांछित सहयोग तथा सम्मान भी अर्जित करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी तथा मानसिक चिन्ताओं से भी आप मुक्त होंगे।

परन्तु शुभ फलों के साथ साथ यदाकदा अशुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप वातजन्य रोगों से पीड़ित रहेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा गिरेगी एवं आपको इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। इस समय आप अग्नि द्वारा भी किसी प्रकार की धन हानि को प्राप्त करेंगे। अतः सोच समझकर अपने सभी कार्यों को सम्पन्न करें।

अक्टूबर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ की अपेक्षा अशुभ ही अधिक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा साथ ही शत्रु पक्ष के बलवान होने से आप उनसे भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मन में अशान्ति रहेगी। इस मास में आपके घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी। साथ ही ऐसे समय में उच्चाधिकारी वर्ग की भी उपेक्षा न करें एवं उनकी आज्ञा का पूर्ण पालन करें अन्यथा आपको दण्डित भी किया जा सकता है। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अल्प मात्रा में ही सिद्ध होंगे तथा असफलता अधिक मिलेगी। साथ ही इस समय धन का व्यय भी अधिक मात्रा में करेंगे अतः न्यूनाधिक आर्थिक संकट भी बना रहेगा। इस मास में आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न कर सकते हैं जिसके लिए बाद में आपको पश्चाताप करना पड़ेगा। इस समय आपके मित्र तथा संबंधियों से मधुर संबंध अल्प रहेंगे तथा तनाव अधिक रहेगा तथा आप सामाजिक उपेक्षा भी प्राप्त करेंगे एवं आपकी आशाएं भी अपूर्ण ही रहेंगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री तथा पुत्र से वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। साथ ही इस मास में नवीन वस्त्र या द्रव्य भी अर्जित करने में सफल हो सकते हैं। इससे आप अल्प मात्रा में मानसिक सन्तुष्टि तथा शान्ति प्राप्त कर सकेंगे।

नवम्बर 2027 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आप स्त्री पक्ष तथा बन्धुजनों से कष्ट प्राप्त करेंगे साथ ही आपके शत्रु भी बलवान होंगे जिससे आप उनसे भी भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में न्यूनता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे एवं मन में लोभ के भाव की प्रबलता रहेगी। मित्रों एवं बन्धुवर्ग से आपके मधुर संबंध नहीं रहेंगे तथा परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा जिसके कारण आपके मित्र भी शत्रु की तरह व्यवहार करेंगे। फलतः मानसिक रूप से आप अत्यंत ही अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक जनों से भी समय समय पर वाद विवाद तथा संघर्ष होते रहेंगे

जिससे समाज में भी सम्मान में अल्पता आएगी। अतः सोच समझकर अपना समय व्यतीत करें।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त दोषों से अस्वस्थ होंगे फलतः शरीर में निर्बलता रहेगी। इस समय रुधिर विकार भी हो सकता है अतः सावधानी पूर्वक रहें एवं दुर्घटनाओं की उपेक्षा करें। इसके अतिरिक्त इस समय आग के द्वारा भी आपकी क्षति हो सकती है। अतः यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा।

दिसम्बर 2027 के लिए फलादेश

इस मास में आप सामान्यतया शुभाशुभ फलों को अर्जित करेंगे इस समय आप शत्रुओं से अनावश्यक रूप से चिन्तित एवं भयभीत रहेंगे तथा घर में किसी प्रकार की चोरी आदि होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में आपका धन व्यय अधिक मात्रा में होगा अतः आर्थिक रूप से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव अल्प मात्रा में रहेगा इस समय आपका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा तथा विविध प्रकार से आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे इससे आप में दुर्बलता भी आएगी। इस मास में आप दूर समीप की यात्राएं भी करेंगे साथ ही अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में आपको कठिनाई का सामना करना पड़ेगा इस समय मुकद्दमे आदि में भी धन का व्यय हो सकता है। अतः संयमपूर्वक इस समय को व्यतीत करें अन्यथा कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ यदाकदा शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा उससे आपको वांछित सहयोग भी प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि में भी इस समय निर्मलता की वृद्धि होगी तथा धन लाभ एवं सुखार्जन करने में भी आप न्यूनाधिक सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही समाज में आप यश भी प्राप्त करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य बना रहेगा जिससे व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने स्थिति में कुछ सुधार होगा। नौकरी के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आत्मविश्वास बनाए रखें। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा एवं आप अपने साझेदार से भी असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। बड़े भाई या पिता से भी धन लाभ हो सकता है। रुके या फंसे हुए पैसे भी मिल सकते हैं। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

24 जुलाई के बाद फिर से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए अभी से पैसा बचाना शुरु कर दें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें क्योंकि वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्षारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सदस्य एक दूसरे का सहयोग करेंगे। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। 28 फरवरी के बाद पुत्र व बड़े भाईयों का सहयोग



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मिलेगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय है।

24 जुलाई के बाद सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। उस समय अपने विवेक से काम लें। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत में ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती हैं। आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु 28 जुलाई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए समय काफी अनुकूल है। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह हो जायेगा।

24 जुलाई के बाद संतान की शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ नहीं है। उसके खान पान पर ध्यान दें नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कुछ न कुछ परेशानियां होती रहेंगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी व तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। 28 फरवरी के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होगी। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। लग्नस्थ शनि एवं छठे स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से परेशान रह सकते हैं। कभी-कभी बीमार नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। शारीरिक व्याधियों को दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यवसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को

अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगारों जातकों को रोजगार हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्राएं होंगी। 28 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक या तीर्थ यात्रा का भी योग बन रहा है।

24 जुलाई के बाद अचानक यात्राएं हो सकती हैं। यात्रा के दौरान सावधानी बहुत जरूरी है। शनि ग्रह का गोचर शारीरिक कष्ट दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वन्दता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ दान पुण्य कम ही कर पाएंगे। 28 फरवरी के बाद पंचम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मन्त्र जाप या साधना (ध्यान) करेंगे। गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, सन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। या शनि मन्त्र का जाप करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। किसी नये कार्य में भाग्य आजमा सकते हैं। अचानक बहुत ज्यादा लाभ मिलेगा। कुछ प्रतिस्पर्धी अड़चनें पैदा करने की कोशिश करेंगे परन्तु षष्ठस्थ मंगल के कारण आप उन पर नियन्त्रण पा लेंगे। मार्च से अगस्त तक समय किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको धोखा मिल सकता है।

05 अक्टूबर से आपका समय फिर से अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों के आय के स्रोत खुलेंगे। उच्च अधिकारियों या बड़े लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा जिससे आप कार्यों में बहुत उन्नति करेंगे। काम-काज में पत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आर्थिक उन्नति होगी। इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। 29 मार्च के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में आपका व्यय होगा। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर अंकुश लगाएं नहीं तो अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

25 अगस्त से गुरु का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार में किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह होगा जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद आपका मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



08 अगस्त के बाद द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसे भी अनुकूल बना लेंगे। 05 अक्टूबर के बाद इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपकी संतान की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति करेंगे परन्तु पंचम भाव पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। आपका दूसरा बच्चा विवाह के है तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद फिर अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होगी परन्तु लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आपके अंदर शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी। 05 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। अचानक आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा रहेगा। उनको अपने लक्ष्य में सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें।

गुरु ग्रह का गोचर 25 अगस्त को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ-साथ छोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 29 मार्च के बाद विदेश यात्राएं होंगी।

08 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 29 मार्च के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभाविता हो रहा है। 25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व शनि मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि प्रथम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं अष्टम में प्रवेश करेंगे 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

आजीविका के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान के शनि आपको आलसी बना सकते हैं। कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। व्यापार में हानि या किसी से धोखा मिल सकता है। अतः इस बात का ध्यान रखें व सतर्क रहें और किसी पर भी बहुत ज्यादा विश्वास न करें। अपने आत्मविश्वास को बनाए रखें।

1 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपको अच्छा लाभ मिलेगा। इष्ट मित्रों या सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। साझेदारी के लिए यह समय अनुकूल है। कानून से जुड़े लोग जैसे वकील, पुलिस आदि को लाभ की संभावना बन रही है। वरिष्ठ अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे फिर भी बड़े अधिकारियों से निश्चित दूरी बनाए रखें।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। धनागम में कमी व मानसिक कष्ट भी हो सकता है। इस अवधि में सकारात्मक बने रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। लग्न स्थान के शनि शारीरिक व्याधि दूर करने में भी आपका व्यय करा सकते हैं। अतः अपने स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहें। 17 अप्रैल के बाद आपके संचित धन में भी कमी आ सकती है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है, क्योंकि अष्टम स्थान में राहु-गुरु चण्डाल योग बन रहे हैं।

01 मई के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने से आपके आय स्रोतों में बढ़ोतरी होगी जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यापार में उन्नति व उम्मीद से अधिक लाभ की संभावनाएं बन रही हैं। आपको मित्र व धर्मपत्नी से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर पैसा खर्च हो सकता है। नई संपत्ति क्रय-विक्रय करने के लिए अभी समय अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष की शुरुआत पारिवारिक अनुकूलता के लिए शुभ नहीं रहेगी। वैवाहिक जीवन में निष्ठावान बने रहना आपके गृहस्थ जीवन के लिए हितकारी रहेगा। आपके माता-पिता का



FUTUREPOINT
Astro Solutions



स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ भी आपके संबंध खराब हो सकते हैं। ऐसी विपरीत स्थिति में आप अपनी सहन शक्ति को बढ़ाएं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। जन कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे जिससे जिससे समाज में आपका कद और बढ़ेगा।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

01 मई से गुरु का गोचर अनुकूल हो रहा है। उसके बाद आपकी संतान के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपकी संतान अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेगी। वे परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे आपकी दूसरी सन्तान के लिए यह समय बहुत शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरू हो जाएगी। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करें व खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है। इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें।

अप्रैल के बाद तकनीकी शिक्षा व व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। नवमस्थ राहु के कारण आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। आपकी सारी यात्राएं अकस्मात् ही होंगी।

अप्रैल के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे। लग्नस्थ शनि एवं नवमस्थ राहु आपके सारे धार्मिक कार्य प्रभावित कर सकते हैं। पूर्व से निर्धारित कोई धार्मिक कार्य करना चाहते हैं तो वह भी निरस्त हो सकता है। 01 मई के बाद सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को बेसन के लड्डू दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को राहु तुला राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक जीवन के लिए यह साल बहुत अच्छा नहीं रहने वाला है। मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर अथक प्रयास करने की आवश्यकता है। क्योंकि इस वर्ष भाग्य आपका साथ नहीं देगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ गलत फहमियों के कारण आप व्याकुल हो सकते हैं। गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। हालाँकि 15 अक्टूबर के बाद आपका ग्रह गोचर अनुकूल हो रहा है। आपके काम करने का तरीका सबसे अलग है इसलिए यह आपके व्यक्तित्व को सबसे जुदा करता है और आपके इस तरीके से कई अधिकारी प्रभावित हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। यह साल जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बंधित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। हड़बड़ी से बचने के लिए बेहतर यही होगा कि आप अपनी सभी योजनाएं पहले से तय कर लें। आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए।

जून के बाद पत्नी के स्वास्थ्य पर भी पैसे खर्च हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आप अपने रिश्तेदार, संबंधी या दोस्तों को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद बहुत कम है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं। जून से सितम्बर तक का समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। सितम्बर के बाद घरेलू वातावरण में अनुकूलता आना शुरु हो जाएगी।

15 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु आपकी पत्नी के स्वास्थ्य में



FUTUREPOINT
Astro Solutions



उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। आपको ससुराल पक्ष के लोगों का सहयोग नहीं मिलेगा।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा नहीं रहेगा। अष्टम स्थान में राहु एवं गुरु ग्रह की युति संतान संबंधित चिंताएं दे सकती है। संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं है। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधानी से रहना चाहिए अन्यथा गर्भपात भी हो सकता है।

18 फरवरी के बाद गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार आएगा। जून के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने बच्चों पर विशेष ध्यान दें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का भी सामना करना पड़ सकता है। साथ ही अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरू हो जाएगी। आप स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठ नहीं है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। 18 फरवरी के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में कोई अड़चन नहीं आएगी। अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। 15 अक्टूबर से आप गुप्त विद्यार्थियों के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के शुरू में आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी परन्तु 18 फरवरी के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी।

आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थल की यात्रा करेंगे। कुछ समय के लिए प्रवास भी कर सकते हैं। 15 अक्टूबर के बाद विदेश जाने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए अच्छा नहीं है। आपके सारे धार्मिक कार्यों में व्यवधान उत्पन्न होगा। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा। जिससे आप पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रिया कम ही कर पाएंगे परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत बढ़िया हो रहा है।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को काला कम्बल दान करे।
- हनुमान चालीसा या दुर्गा कवच का प्रत्येक दिन पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं द्वितीय भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं तृतीय में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु सप्तम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि के गुरुनवम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं नवम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्टूबर को मकर राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। गुरु का गोचर आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। सप्तसंस्थ राहु एवं द्वितीयस्थ शनि के कारण कुछ परेशानियों का सामना भी करना पड़ सकता है परन्तु आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे।

12 अगस्त से आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। 23 अक्टूबर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे परन्तु बहुत सोच विचार कर ही उसमें निवेश करें क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह की दृष्टि जमीन-जायदाद के लिए अच्छा नहीं होती। 5 मार्च से आपके आय के साधन बढ़ेंगे। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन किया हो तो इस समय के अंतराल में आपको ऋण मिल जाएगा। आप अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पर भी अधिक खर्च करेंगे।

23 अक्टूबर से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा।

31 मई से समय आपके छोटे भाई-बहनों के लिए काफी शुभ रहेगा। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग मिलेगा। 12 अगस्त के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि

होगी। गुरु की शुभता के कारण स्त्री सुख, विवाह, धन आगमन एवं संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। सप्तमस्थ राहु के कारण पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। पिताजी के लिए यह समय लाभप्रद सिद्ध होगा। संतान के विवाह आदि का भी शुभ योग बना हुआ है।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

आपकी सन्तान के विवाह का पूर्ण योग बन रहा है। भाग्योदय तथा धर्म कार्यों में रुचि के साथ-साथ यात्राओं का योग बना हुआ है। आप अपनी सन्तान के सौभाग्य व सुख से प्रसन्नता का अनुभव करेंगे।

स्वास्थ्य

द्वितीय शनि के प्रभाव से मामूली संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं क्योंकि लग्न स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगी जिससे रक्तचाप, वायु विकार व पित्त विकार आदि रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। दुरुस्त रहने के लिए ध्यान और योग का सहारा लेना होगा। शुद्ध शाकाहारी व सात्विक भोजन आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

12 अगस्त से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आप अतिसक्रिय बने रहेंगे। सुबह-शाम के सैर-सपाटे या नियमित अभ्यास को बरकरार रखना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा। अभ्यास से आपके अन्दर की ऊर्जा का प्रवाह होगा और दूसरों कार्यों में पूरी तरह से ध्यान केन्द्रित करने में सहज महसूस करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मई के बाद सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

सप्तमस्थ राहु के कारण चिकित्सा, तकनीकी, वाणिज्य आदि क्षेत्रों के लिए समय प्रतिकूल रहेगा। कानून से जुड़े लोगों को विशेष लाभ प्राप्त नहीं होगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी यात्राएं होती रहेंगी। 05 मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

31 मई के बाद द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। व्यावसायिक व्यक्तियों की उन्नति कारक यात्राएं होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थगुरु के कारण धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। वर्षारम्भ में ही आप धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्रा अधिक करेंगे। 5 मार्च के बाद घरेलू सुख शान्ति के लिए विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे। 31 अगस्त के बाद आप दान, पुण्य करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।
- चींटी एवं चिड़ियों को दाना डालें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं नवम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए यह वर्ष श्रेष्ठमत रहेगा। 'जो चाहना वह पाना' वाली कहावत आप पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होगी। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे। दशम भाव में गुरु ग्रह की उपस्थिति आपके हित में काम करेगी। साक्षात्कारों में भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैं उनके लिए 18 मार्च से पहले का समय बहुत ही शुभ है।

आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया व्यापार भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का भरपूर सहयोग मिलेगा। भूमि क्रय-विक्रय, या खाद्य पदार्थ का व्यवसाय करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। छोटे व्यापारियों को अपना ब्राण्ड नेम मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष भर आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी बनाएंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। रत्नाभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। योजना बनाने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए उत्तम हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय के नये साधन मिलेंगे। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक माहौल काफी अच्छा रहेगा। आप अपनी घरेलू जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आयेंगे। 5 मार्च से आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। अविवाहित व्यक्तियों के लिए विवाह के संकेत हैं। विवाहित व्यक्तियों हेतु संतान प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी जिससे आपका आत्म-सम्मान बढ़ेगा।

आपके भाई-बहनो के लिए समय बहुत शुभ है। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि

होगी। मातुल पक्ष के लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य भी संपन्न होते रहेंगे। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा।

संतान

यह वर्ष आपकी संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। आपके बच्चे कुछ विशेष कार्य करेंगे जिससे आपको उनके ऊपर अभिमान होगा। उनकी कामयाबी से समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य काफी बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपके अन्दर दृढता और सशक्त इच्छाशक्ति जाग्रत होगी। आपको किसी बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से परेशान हैं तो इस वर्ष उससे भी मुक्ति मिल सकती है।

स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन करें। संतुलित आहार के साथ-साथ नियमित व्यायाम/योगा आदि भी करते रहें जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष विद्यार्थी व प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। 5 मार्च के बाद सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए कोई नया स्रोतों का सृजन करेंगे।

प्रतियोगिता परीक्षार्थी अपने लक्ष्य में सफल होंगे। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति होगी। विदेश में करियर बनाने वाले जातकों के लिए यह समय श्रेष्ठ है।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष आप अधिक से अधिक यात्राएं करेंगे। छोटी-छोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। इन यात्राओं के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता हो सकती है।

द्वादश स्थान पर शनि एवं राहु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा। गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थ भाव से भगवान की पूजा करेंगे। मन्त्र जाप या भगवान का ध्यान करना आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- लक्ष्मी जी के मन्त्र का पाठ करें।
- अपने घर में पारद के शिवलिंग स्थापित कर उनका पूजन करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक रूप से अत्यधिक उन्नतिकारक रहेगा। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अच्छी उन्नति करेंगे। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपके अधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। मार्च के बाद द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं शनि ग्रह के प्रतिकूल होने से आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी होंगी। गुप्त एवं प्रत्यक्ष शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। फिर भी आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अतिउत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के कारण आय के स्रोत बढ़ेंगे, जिससे धनागम में वृद्धि होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल होंगे। परन्तु मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से निवेश व लेन देन के मामले में सावधान रहें। पैसे के मामले में किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आपके अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं। संचित धन में कमी आ सकती है। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों पर अंकुश लगाएं। नहीं तो धन हानि का योग बन रहा है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से श्रेष्ठ रहेगा। आपके भाईयों के लिए यह समय काफी शुभ है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। माता पिता के साथ आपके संबंध बहुत ही मधुर रहेंगे। मार्च के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि पारिवारिक शुभता के लिए बहुत ही अच्छी है। धर्म पत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा व उनके साथ संबंधों में मधुरता आएगी।

13 जुलाई से द्वितीय स्थान के शनि आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न करेंगे। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त रह

सकते हैं। अष्टम स्थान का राहु संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहार दोनों में बदलाव आएगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में पंचमस्थ राहु के कारण आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। परन्तु मार्च के बाद आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। मोटापा एवं लीवरजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में समय और ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित किसी प्रकार की लापवाही नहीं करनी चाहिए। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें। तेल, मसाला व बाहरी भोजन का परित्याग करें। संतुलित आहार के साथ साथ आप नियमित व्यायाम भी करते रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। छठे स्थान का राहु एवं एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। जो व्यक्ति इलैक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित कार्य कर रहे हैं, उनको अपने करियर में सफलता मिलेगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल जाएगी। इस वर्ष आप शत्रुओं को परास्त करने में सफल रहेंगे। व्यापारिक व्यक्तियों को अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध प्रतिकूल होने कारण सफलता के मार्ग प्रभावित होंगे। विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति अरुचि उत्पन्न होगी। आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। जिन व्यक्तियों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

मार्च के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर के पास भी हो सकता है। आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दार्शनिक स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



इस यात्रा के अंतराल में पुत्र या परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतः यात्रा करते समय सावधानी बहुत जरूरी है। द्वादश स्थान का गुरु आपको विदेश यात्रा भी करा सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान और बढ़ेगा, जिससे निःस्वार्थ भाव से आप पूजा पाठ में रुचि लेंगे। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंगे जैसे- गरीबों को खाना खिलाना, भिक्षुओं को दान देना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा करना आदि आपका नैसर्गिक गुण होगा।

- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें जिससे राहु का नकारात्मक प्रभाव समाप्त होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि चतुर्थ भाव में और सिंह राशि का राहु पंचम भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

यह साल व्यवसायियों के लिए मिला-जुला रहने वाला है। वर्ष के प्रारम्भ में गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। विश्वास पात्र लोगों के साथ कार्य करना लाभप्रद रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। 5 अप्रैल के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके कार्यों में कुछ सुधार होगा।

अतः इस समय के अंतराल में एकाग्रचित होकर व्यापार के विस्तार और नए कारोबार को शुरू करने के लिए सोचना कारगर होगा। बेकार के कुछ मुद्दे आपके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं। यह सदा सत्य है कि रात के बाद दिन जरूर होता है, इसलिए अपने प्रयासों को जारी रखें, सफलता जरूर मिलेगी। कोई कार्य प्रारम्भ करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह लेना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान का गुरु व्यय अधिक करा सकता है। अतः बहुत ही सोच विचार कर आर्थिक निर्णय लें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। नौकरी या व्यापार में नए प्रयोग से बचें। आयात-निर्यात करने वालों को बहुत उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। नए कार्य में हाथ डालने के लिए बेहतर समय नहीं है। 6 अप्रैल से गुरु ग्रह का गोचर किसी स्त्री के माध्यम से लाभ या धनागमन का संकेत दे रहा है।

शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चौकस और विश्लेषिक व्यक्ति हैं, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसरों में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी।

घर-परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात की जाए तो इसमें कुछ उतार-चढ़ाव रहने की स्थिति बनी रहेगी। चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी कर सकता है। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। आप अत्यधिक क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति हैं। स्वभाव में परिवर्तन करें, यह आपके पारिवारिक जीवन के

लिए अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि आप रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें। माता पिता के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। इस समय थोड़ा सावधान रहें और वाद-विवाद में न फंसे। बच्चों के साथ भी कुछ अनबन होने की संभावना है और उनके स्वास्थ्य को लेकर थोड़ी परेशानी हो सकती है, अतः उनका ख्याल रखें। आपको जीवनसाथी का अच्छा सहयोग मिलेगा। जिससे आपकी मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का गुरु आपकी संतान की उन्नति में बाधा डाल सकता है। आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो वह गलत संगत में पड़ सकते हैं। जो कि उनकी उन्नति में बाधक बन सकती है।

पंचम स्थान का राहु संतान को स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं दे सकता है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। गर्भवती स्त्रियों को ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है नहीं तो गर्भपात भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अधिक प्रतिकूल रहने वाला है। द्वादश स्थान का गुरु पेट व मोटापे से संबंधित परेशानी दे सकता है। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें। ऋतुजनित बीमारियों के कारण भी परेशानी हो सकती है विशेष कर सर्दी-जुकाम इत्यादि का प्रकोप झेलना पड़ सकता है।

5 अप्रैल से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार होगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप खान-पान एवं दिनचर्या को अनुशासित बनाएं। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। अपने जीवन में उन्नति करने के लिए अत्यधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। पंचम स्थान का राहु विद्यार्थियों की पढ़ाई में अरुचि उत्पन्न करा सकता है। अतः इस समय के अन्तराल में पढ़ाई में मन को एकाग्र करना भी बहुत जरूरी है। नहीं तो आप अपने लक्ष्य से भटक सकते हैं।

गुरु का गोचर व्यापारिक व्यक्तियों के लिए अनुकूल सिद्ध होगा। उस समय के दौरान व्यवसायियों को अच्छा लाभ मिलेगा। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए यह समय शुभ है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से समय अनुकूल है वर्ष के प्रारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के कारण आपकी विदेश यात्रा होगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा है। 6 अप्रैल से आप लम्बी यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे।

नौकरी करने वालों व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण घर से दूर हो सकता है, जिससे आप असंतुष्ट रहेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

इस वर्ष धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि कम ही रहेगी। यदि किसी तीर्थयात्रा या कोई धार्मिक कार्य करने जा रहे हैं तो उसको भी योजनाबद्ध तरीके से ही संपन्न करें अन्यथा कार्य में असफलता या यात्रा में व्यवधान आने की आशंका है। 6 अप्रैल से आपका दैनिक पूजा-पाठ सुधरेगा। यज्ञ, अनष्टान, पूजा-पाठ इत्यादि के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। अपने से बड़े लोगों का सम्मान करेंगे। अपने माता पिता की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म समझेंगे।

- बृहस्पतिवार के दिन बेसन के लड्डू गरीबों में वितरित करें।
- अपने बजन के बराबर अन्न दान (तुला दान) करें।
- शनिवार के दिन एक नारियल अपने सर से सात बार घुमाकर बहते हुए जल में प्रवाहित करें।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। लग्न का गुरु नवीन विचार धारा नयी योजनाओं को जन्म देगा, जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार को और सुदृढ़ बना सकते हैं। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें कम समय में अच्छा लाभ होगा। 13 अप्रैल से चतुर्थ स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति नौकरी करने वालों के लिए अच्छी नहीं है। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है या प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु 27 अगस्त के बाद आप उन पर भी विजय प्राप्त कर लेंगे। फिर भी भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से सोना, चांदी, रत्न व ज्वेलरी से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागमन तो होगा परन्तु बचत नहीं कर पाएंगे। 13 अप्रैल से समय किंचित प्रतिकूल हो रहा है। अतः इस समय के अंतराल में कोई क्रय-विक्रय न करें। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है। भूमि व वाहन खरीदते समय बहुत ही सावधान रहें और जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। किसी से उधार पैसा न लें। यह आपके लिए घाटे का सौदा हो सकता है।

अगस्त के बाद समय बहुत ही शुभ हो रहा है। उस समय आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। फिर भी निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना चाहते हैं, तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। 13 अप्रैल से चतुर्थ स्थान में राहु एवं शनि ग्रह की युति पारिवारिक माहौल को और भी ज्यादा प्रभावित कर रही है। आपके



FUTUREPOINT
Astro Solutions



माता पिता के लिए यह समय अच्छा नहीं है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसे में आपको बड़ी ही बुद्धिमानि से काम लेना चाहिए और घरेलू माहौल को अनुकूल बनाए रखने के लिए छोटी-मोटी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

27 अगस्त के बाद नैसर्गिक रूप से परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिससे परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में नये सदस्य की बढ़ोत्तरी होगी। मातुल व ससुरल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

पंचम स्थान का राहु अचानक आपके बच्चे का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। जिससे उसकी शिक्षा-दीक्षा में भी रुकावट आ सकती है। नव विवाहित व्यक्तियों संतान प्राप्ति के लिए कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 13 अप्रैल के बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी।

शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उनको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपके मन में अच्छे विचार आएंगे जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट व शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान व दिनचर्या पर विशेष ध्यान देंगे। यदि मौसमजनित कोई बीमारी होती है, तो शीघ्र ही आप अच्छे हो जाएंगे।

15 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। उस समय सिर दर्द, गैस, व पेट से संबंधित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। परन्तु अगस्त के बाद आपका समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। शनि एवं गुरु का गोचर अच्छा होने के कारण आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे। परन्तु आपके माता पिता का स्वास्थ्य प्रतिकूल होने के कारण आप मानसिक परेशान रह सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम एवं नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है।

अगस्त के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। नौकरी इच्छित व्यक्तियों को नौकरी

मिल सकती है परन्तु परिश्रम के बाद इंजीनियर, वकील, व कानून से जुड़े लोगों को अच्छी सफलता मिल सकती है। विदेश में करियर बनाने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। अप्रैल के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समुद्र व सामुद्रिक स्थलों की यात्रा होगी।

अप्रैल से अगस्त तक वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है क्योंकि राहु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल है। 27 अगस्त के बाद आप विदेश यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा, जिसके प्रभाव से आपका पूजा पाठ के प्रति विशेष रुचि रखेंगे। ईश्वर के प्रति आपका अटूट विश्वास होगा।

- अगस्त के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। तिर्थ यात्रा कर व भण्डारा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे।
- शनिवार के दिन लोहे का तवा गरीबों को दान करें एवं शनि मन्त्र का जाप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा बीसा कवच व आठ मुखी रुद्राक्ष अपने गले में धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

यदि आप व्यापारी हैं तो इस साल आपको काफी लाभ प्राप्त होने वाला है। धन व प्रतिष्ठा दोनों की प्राप्ति होगी। सफलता आपके कदमों को चूमेगी और आपका प्रदर्शन काबिले तारीफ रहेगा। आप अपने विरोधियों को काफी पीछे छोड़ जाएंगे। अहंकार का त्याग करें और क्रोध पर काबू रखें। 26 अप्रैल के बाद का समय उन लोगों के लिए अच्छा है जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कारोबार कर रहे हैं। साझेदारी व मित्रता में भी आप कोई कार्य प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी।

नौकरी वालों के लिए यह वर्ष अच्छा नहीं है। आपका अपने बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है या अचानक प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। जो आपके हित में नहीं होगा। चतुर्थस्थ राहु के कारण कुछ लोग आपके खिलाफ साजिस भी कर सकते हैं। परन्तु 16 सितम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी शत्रुओं पर विजयी प्राप्त कर लेंगे। उसके बाद सफलता और समृद्धि आपके साथ रहेगी। 19 अक्टूबर के बाद बिना रुकावट उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपकी आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक रहने वाली है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। द्वितीयस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में वृद्धि होगी। 26 अप्रैल के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। उस समय शेयर बाजार से दूरी बनाकर ही रहें तो बेहतर होगा। निवेश करने से ज्यादा पैसा बचाना आपके लिए फायदेमंद होगा। 16 सितम्बर के बाद से आपको लाभ होने लगेगा और जमापूंजी में भी वृद्धि देखने को मिलेगी।

19 अक्टूबर के बाद फिर से विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिलेंगे। भूमि व वाहन खरीदने का प्रबल योग बन रहा है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

घर-परिवार, समाज

26 अप्रैल तक पारिवारिक वातावरण बहुत ही उत्तम रहेगा। द्वितीयस्थ गुरु के

प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। चतुर्थ स्थान के राहु पारिवारिक माहौल में नकारात्मक स्थिति उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसे में आपको खुद पर नियंत्रण रखना होगा। मेष लग्न के जातक जल्द ही नाराज हो जाते हैं और बाद में अफसोस भी जाहिर नहीं करते हैं। जीवनसाथी के साथ बेहतर रिश्ते निभाने के लिए आपको अपने स्तर पर प्रयासरत रहना होगा।

माता के साथ आपके संबंध मधुर नहीं रहेंगे। अतः थोड़ा सावधान रहें। पिता के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है, जो आपकी अंतःक्लेश का कारण होगा। इसलिए अंतःक्लेश को अपने ऊपर हावी न होने दें। संतान का स्वास्थ्य अचानक खराब हो सकता है, जिससे आपको परेशानी हो सकती है, अतः संतान के स्वास्थ्य का उचित ख्याल रखें। 19 अक्टूबर के बाद आपकी समाजिक पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का शनि संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को सावधानी से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

26 अप्रैल के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही उत्तम हो रहा है। उसके साथ संबंधों में मधुरता आएगी, जिससे घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। आप बच्चों की सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

इस साल आपकी सेहत ठीक-ठाक रहेगी। आपकी जिन्दगी सुचारु रूप से चलेगी। 26 अप्रैल के बाद कुछ असमंजस की स्थिति पैदा हो सकती है। लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। इससे आप जल्द ही उबर जाएंगे। आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। किसी गंभीर बीमारी से आपको परेशानी नहीं होगी। लेकिन कुछ सामान्य सी दिक्कतें आ सकती हैं। जैसे-पेट में दर्द, बदहजमी, जोड़ों और घुटनों में दर्द संबंधी शिकायत हो सकती है।

वजन बढ़ने से बचने के लिए खान-पान पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। नहीं तो आपका वजन बढ़ सकता है। चतुर्थस्थ राहु के कारण आपकी माता का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है, जिससे भी आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। 16 सितम्बर के बाद आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा, जिससे आपकी आरोग्यता बनी रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

शुरुआत में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन समय के साथ स्थिति में सुधार होगा। 26 अप्रैल के बाद आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें आपको अच्छी सफलता मिलेगी। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चतुर्थ स्थान में राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न होंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं तो 19 अक्टूबर के बाद समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। कार्यस्थल पर आपके कार्यों की प्रशंसा होगी और आय में वृद्धि होगी। वरिष्ठ अधिकारी आपकी हर सम्भव मदद करेंगे। आपके प्रदर्शन से आगे कैरियर में काफी लाभ होगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 29 अप्रैल के बाद से आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा।

16 सितम्बर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनिय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचमस्थ शनि के कारण आपके सारे यज्ञ, अनुष्ठान प्रभावित होंगे। दैनिक पूजा पाठ में भी व्यवधान आ सकता है। ये सब आपके आलस्यता के कारण होगा। कोई भी धार्मिक कार्य करना हो तो अचानक करें क्योंकि योजनाबद्ध तरीके से कोई भी कार्य सफल नहीं होगा। 26 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। गरीबों को दान करें एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी। सितम्बर के बाद अपने घर में कोई विशेष धार्मिक आयोजन करेंगे।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें एवं प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं चतुर्थ में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं तृतीय भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर 11 मई को पुनः कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष व्यवसायियों के लिए अनुकूल रहेगा। अपने मन को शांत और एकाग्र करके व्यवसाय को बढ़ाने या फिर नए व्यवसाय को शुरू करने के बारे में सोचने की जरूरत है। आपका कुछ समय बर्बाद हो सकता है। परन्तु आप परेशान न हों और अपनी कोशिश को जारी रखें तो सफलता मिलना तय है। सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको व्यवसाय से लगातार आमदनी होती रहेगी। आपके सभी कार्य शीघ्र ही पूरे होंगे। वित्तीय कार्यों से जुड़े लोगों को धन-हानि हो सकती है। 11 मई को गुरु ग्रह का गोचर नौकरी करने वालों के लिए बहुत ही शुभ है। पदोन्नति के साथ मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

22 अक्टूबर के बाद आपको बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे।

धन संपत्ति

नए साल में आपके लिए एक सुझाव है कि जुआ, सट्टा इत्यादि से दूरी बनाकर ही रहें और साथ ही किसी प्रकार का आर्थिक जोखिम उठाने से परहेज करें। यह हम सभी जानते हैं कि धन की प्राप्ति कठिन परिश्रम और काम के प्रति ईमानदारी से ही होती है। इसलिए धन से सम्बन्धित कोई भी फैसला सोच समझ कर ही लें और कोई भी जोखिम ना उठाएं। अगर आप शेयर बाजार से जुड़े हुए हैं तो उससे थोड़ी दूरी बना लें और कहीं भी निवेश करने से पहले सौ बार सोचें। थोड़े समय बाद आपको खुद ज्ञात होगा कि यह साल अनावश्यक रूप से पैसे खर्च करने के लिए बिल्कुल नहीं था। 11 मई के बाद समय अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की प्रबल संभावना बन रही है।

7 अक्टूबर के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के स्रोत खुलेंगे, जिससे आपकी आर्थिक उन्नति में वृद्धि होगी। पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे जिसमें आप अच्छा खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

आपके पारिवारिक जीवन की बात करें तो वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहने वाला है। कभी-कभी आप ज्यादा क्रोधित हो सकते हैं, लेकिन ऐसे समय में कुछ ऐसा न करें जिससे बाद में पछताना पड़े। जीवनसाथी के साथ बेहतर सामंजस्य बिठाने की कोशिश करें। 11 मई से समय अनुकूल हो रहा है। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परन्तु बड़े भाई एवं संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा।

तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। आपको वांछित मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि दूर-दूर तक व्याप्त होगी एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकर करेंगे। आप किसी सामाजिक या सांस्कृतिक संस्था के सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी भी हो सकते हैं।

संतान

पंचम स्थान का शनि संतान की तरक्की के लिए बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। उनकी शिक्षा दीक्षा में रुकावटें आ सकती हैं। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों में मर्यादा एवं आदर्श की भावना कम होगी। आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आपके साथ भावनात्मक लगाव में भी कमी आएगी। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ही सावधान रहना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है।

अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो रहा है। आपके बच्चे अध्ययन के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे। उस समय आपके बच्चों की आय में वृद्धि होगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो उसके विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपकी दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। बदलते मौसम के कारण कुछ परेशानियाँ हो सकती हैं, लेकिन आप जल्द ही ठीक हो जाएंगे। बजन बढ़ने की संभावना है, इसलिए मक्खन, घी और मिठाई खाने से परहेज करें। यदि निरोगी काया चाहते हैं तो नियमित रूप से व्यायाम करें और खान-पान का विशेष ध्यान रखें। मई के बाद आप तंदुरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी, जिससे आप स्फूर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना।

अक्टूबर के बाद समस्त भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ रहेंगे एवं

सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। लग्न स्थान पर शुभ ग्रहों का प्रभाव होने से आप शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। पंचम स्थान का शनि विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। उन्नति में रुकावट व उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। अतः करियर में सफलता प्राप्त करने के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। मई के बाद समय किंचित अच्छा हो रहा है। विदेश में आपको सफलता मिल सकती है।

अक्टूबर के बाद मुख्यतः सारे ग्रह अनुकूल हो रहे हैं। उस समय आप समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ से ही छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। मई के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी। अपने पूरे परिवार के साथ आनन्ददायक यात्राओं का आनन्द प्राप्त करेंगे अर्थात् पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों पर घूमने जाएंगे।

अक्टूबर के बाद विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। इन सभी यात्राओं से आपको अच्छा लाभ मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि तीर्थ यात्रा भी करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। मई के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा। सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे। अक्टूबर के बाद आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को दान देना, भिक्षुओं को खाना खिलाना एवं दुखियों की सहायता करना आप धर्म समझेंगे। कर्म ही पूजा है इस सिद्धांत के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा और आप अपने कर्मों पर ज्यादा विश्वास करेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- सातमुखी रुद्राक्ष धारण करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2039

वर्षारम्भ में शनि कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 5 अप्रैल को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः मार्गी होकर 13 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। 7 अप्रैल को राहु वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे तथा 3 मार्च को वक्री होकर कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 2 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 4 नवम्बर को कन्या राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

मुख्यतः सारे ग्रहों को गोचर अनुकूल होने के कारण वर्ष का प्रारम्भ काफी श्रेष्ठ रहेगा। कार्य व्यवसाय में वांछित उन्नति करेंगे। आपके सारे प्रतिद्वन्दी शान्त होंगे। साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। परन्तु मार्च के बाद आपके कार्यों में कुछ परेशानियां आ सकती हैं।

पारिवारिक समस्याओं के कारण कार्य व्यवसाय प्रभावित होगा। फुटकर विक्रेता व आभूषण से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय ज्यादा प्रतिकूल रहेगा। राजनीति व शेयर बाजार से जुड़े लोगों को भी अचानक हानि हो सकती है। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए भी यह समय अच्छा नहीं है तथा साझेदार से भी अनबन हो सकती है। हालांकि 13 जुलाई के बाद आप सभी समस्याओं का निदान निकाल लेंगे और फिर से अपने उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो जाएंगे। उस समय के अंतराल में कुछ अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग भी मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में पंचमस्थ गुरु आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ हैं। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्ति इच्छित बचत करने में सफल होंगे। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। छठे स्थान के शनि शत्रुओं से भी धन लाभ करा सकते हैं। परन्तु मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। अतः वित्तीय विषयों के लिए यह समय सही नहीं है। अतः लेन-देन करते समय सावधान रहें।

13 जुलाई से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। इस अवधि में आप उन्नति करेंगे, परन्तु आर्थिक स्थिति को लेकर मानसिक कष्ट भी बना रहेगा। नई संपत्ति क्रय करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। 4 नवम्बर के बाद शेयर, लॉटरी व सट्टे से दूर ही रहें क्योंकि गुरु, राहु एवं शनि से प्रभावित होकर छठे स्थान में पीड़ित है। जो आपके लिए हितकर नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



घर-परिवार, समाज

वर्ष के प्रारम्भ में पारिवारिक सुख-समृद्धि के प्रबल योग बने हुए हैं। पत्नी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे तथा उनके स्वास्थ्य में लाभ होगा। संतान के लिए भी यह समय काफी शुभ है। 7 अप्रैल को द्वितीय स्थान में राहु का गोचर अचानक पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। अतः आपको परिवार से जुड़ी छोटी छोटी बातों को भी गंभीरता से लेना होगा तथा परिवार में सभी लोगों के साथ भावनात्मक लगाव बनाए रखें।

पंचम स्थान के शनि आपकी संतान के लिए शुभ नहीं हैं तथा परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित कर सकता है। परन्तु 13 जुलाई के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय घर परिवार में कोई शुभ कार्य होंगे, जिसके प्रभाव से आपके परिवार में स्नेह-सौहार्द का संचार होगा। सामाजिक रूप से यह साल अच्छा रहेगा। वांछित मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिलेगी तथा किसी सम्मानित पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे।

संतान

साल का प्रारम्भ संतान के लिए श्रेष्ठ है। आपके बच्चे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। आपके प्रति उनके मन में आदर एवं सम्मान का भाव बढ़ेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल है। 5 अप्रैल से समय प्रभावित हो रहा है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान उत्पन्न कर सकता है तथा आपके बच्चे आलसी व लक्ष्य से भ्रमित हो सकते हैं।

13 जुलाई से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा। यदि वे विवाह के योग्य हैं तो विवाह का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि के कारण आप किसी भी कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे तथा शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आप खूब परिश्रम भी करेंगे। आपकी कार्य क्षमताएं निश्चित रूप से बढ़ेंगी। 5 अप्रैल के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। स्वास्थ्य में कुछ उतार-चढ़ाव की स्थिति बनेगी। मौसम जनित बीमारियों से भी आप प्रभावित रहेंगे।

पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सकीय परामर्श लें। हालांकि 13 जुलाई के बाद समय में फिर से सुधार आएगा। रोगों से शीघ्र मुक्ति मिलेगी। हाथ पैर के दर्द में सुधार होगा और आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए श्रेष्ठ है। रोजगार के नये

अवसर पैदा होंगे। आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामांकन मिलेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी।

13 अप्रैल के बाद सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा क्योंकि शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से उन्नति के मार्ग प्रभावित होंगे। जुलाई के बाद आपका नई नई तकनीकी विषयों की ओर रुझान होगा। मैनेजमेंट, प्रशासनिक, शिक्षण से जुड़े लोगों को रिसर्च व ट्रेनिंग के सिलसिले में विदेश जाने का मौका मिल सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश स्थान पर शनि की दृष्टि विदेश यात्रा का योग बना रही है। अप्रैल के बाद आप परिवार सहित अपनी जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके लिए अनुकूल रहेगा।

2 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिकयात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में आप धार्मिक कार्यों में संलग्न रहेंगे। पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। दान-पुण्य में भी आप तत्पर रहेंगे। साधना, योग व ध्यान में अपना समय अधिक व्यतीत करेंगे। मार्च के बाद आलस्य बढ़ेगा, जिससे आपका दैनिक पूजा पाठ प्रभावित होगा। जुलाई से समय फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आप गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। दूसरों की सहायता करना ही अपना धर्म समझेंगे।

- अपने पूजा घर में स्फटिक श्रीचन्द्र स्थापित करें एवं उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- श्रीखण्ड चन्दन में केसर मिलाकर वीरवार के दिन तिलक करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2040

इस वर्ष शनि कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। राहु वृष राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे तथा 11 दिसम्बर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 अप्रैल को सिंह राशि एवं पंचम भाव में गोचर करेंगे तथा मार्गी होकर पुनः 28 जून को कन्या राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे तथा अतिचारी होकर 3 दिसम्बर को तुला राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

काम काज की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। वर्षारम्भ में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें नहीं तो हानि हो सकती है। यदि व्यावसायिक दायरा बढ़ाना चाहते हैं तो मार्च के बाद ही इसके बारे में सोचें क्योंकि मार्च से पहले समय अच्छा नहीं रहेगा। 6 अप्रैल के बाद नौकरी वालों के लिए समय बहुत ही अच्छा हो रहा है। पदोन्नति के साथ साथ अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

6 अप्रैल से समय बहुत ही शुभ हो रहा है। आपके उन्नति के मार्ग खुलेंगे तथा उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा। लोहा, कच्चे तेल, कच्चे माल के कारखानों आदि से जुड़े लोगों के लिए समय विशेष लाभकारी रहेगा। व्यापार में उम्मीद से अधिक उन्नति मिलेगी। जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। परन्तु उससे आपके सामान्य काम काज पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ेगा और आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर बने रहेंगे। वर्षान्त आपके लिए श्रेयस्कर रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह साल अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु संचित धन में कमी कर सकता है। निवेश व लेन-देन के मामले में सावधान रहना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। हालांकि 6 अप्रैल के बाद समय अनुकूल हो रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप व्यापार में अनुकूलता आएगी। शेयर, स्टॉक व जुआ से जुड़े लोगों के लिए यह समय उत्तम है। सम्पत्ति क्रय करने का सुंदर योग बन रहा है। गुप्त धन, वसीयत व अप्रत्याशित धन की प्राप्ति होगी।

जून के बाद समय ज्यादा प्रभावित हो रहा है। चोरी, बीमारी व दुर्घटना इत्योदि में आपका धन व्यय होने की संभावना बन रही है। यदि धन सम्पत्ति से संबंधित कोई मामला कोर्ट कचहरी में चल रहा है तो उसमें अनुकूलता प्राप्त होगा। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। किसी से ब्याज पर व उधार पैसे लेने की संभावना बन रही है। इस समयांतराल में आपको अपनी धैर्य शक्ति बढ़ानी होगी क्योंकि नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है तथा उसके बाद आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में पारिवारिक स्थिति

अनुकूल नहीं रहने से आप चिन्तित रहेंगे। द्वितीयस्थ राहु के कारण परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसे में आपको अपनी सहनशक्ति को बढ़ाना चाहिए। पारिवारिक स्थिति को अनुकूल बनाए रखने का पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा या विवाद करना आपके लिए लाभप्रद नहीं रहेगा।

अप्रैल से समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपके भाईयों की उन्नति होगी। मातुल पक्ष के लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे तथा सुख व संपन्नता का भाव बना रहेगा। माता पिता से संबंध मधुर रहेंगे। जून के बाद पारिवारिक माहौल किंचित प्रतिकूल होगा परन्तु आप अपने बौद्धिक बल से उसे भी अनुकूल बना लेंगे। षष्ठस्थ शनि के कारण सामाजिक पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मान सम्मान के साथ-साथ आपकी ख्याति भी बढ़ेगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे तथा सामाजिक लोग आपको वांछित सम्मान प्रदान करेंगे।

संतान

वर्षारम्भ में गुरु ग्रह का गोचर संतान के लिए अच्छा नहीं है। बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी होगी, जिसका असर उनकी शिक्षा दीक्षा पर भी पड़ेगा। परन्तु 6 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह समय शुभ है।

आपके बच्चे आपकी उम्मीदों से बढ़कर अच्छे कार्य करेंगे, जिससे आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। आपको भी उन पर गर्व होगा। परन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत अच्छा नहीं है अतः उनके रहन सहन पर ध्यान दें। दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। मानसिक अशान्ति व शारीरिक परेशानी बनी रहेगी। गैस, पाचन या पेट संबंधित बीमारियां भी हो सकती हैं। हालांकि 6 अप्रैल से समय अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि शारीरिक आरोग्यता के लिए श्रेष्ठ रहेगी।

आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी, जिससे आपकी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करना ज्यादा पसंद करेंगे, परिणामस्वरूप आपके मन में अच्छे विचार आएंगे और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। 11 दिसम्बर के बाद लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य को अचानक प्रभावित कर सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

तकनीकी शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा से जुड़े विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष श्रेष्ठ रहेगा। यदि आप विदेश में उन्नति करना चाहते हैं तो यह समय बहुत ही शुभ है।

6 अप्रैल के बाद नौकरी इच्छित व्यक्तियों के लिए समय अनुकूल हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को वांछित क्षेत्र में सफलता मिलेगी तथा षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। 6 अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक यात्राओं का आनन्द लेंगे।

मुख्यतः आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध बहुत ही शुभ है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

साल का प्रारम्भ धार्मिक कार्यों के लिए शुभ नहीं है, परन्तु 6 अप्रैल के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। सांस्कृतिक उत्सव में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। 28 जून से आप दान पुण्य जैसे मन्दिर निर्माण में दान आदि में ज्यादा रुचि लेंगे। धार्मिक स्थलों पर भण्डारा करना, गरीबों की सहायता करना इत्यादि।

- अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उनका पूजन करें तथा प्रत्येक बुधवार के दिन दूर्वा (घास) चढ़ाएं और लड्डू का भोग लगाएं।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य देना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवन का पाठ करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष कवच धारण करें।
- बुधवार या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2041

इस वर्ष राहु मेष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 6 मई से 30 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद पुनः मार्गी होकर तुला राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। 25 सितम्बर तक शनि कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे तथा उसके बाद तुला राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए शुभ रहेगा। व्यापार में वांछित सफलता मिलेगी तथा उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। साझेदारी में कार्य करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। नौकरी में पदोन्नति व नई नौकरी मिलने की प्रबल संभावना बन रही है। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। कार्य क्षेत्र में किसी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। चित्त में अस्थिरता बनी रहेगी। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईयों को अनुभव करेंगे, परन्तु जुलाई के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

व्यापारिक वर्गों से आपको ज्यादा लाभ मिलेगा। कुछ नया करने के बारे में विचार करेंगे जिसमें आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। कोर्ट कचहरी व विवादों से दूर रहें। 25 सितम्बर के बाद कुछ नये निवेशक मिलेंगे। आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम के मार्ग प्रशस्त होंगे जिसके कारण आप वांछित बचत करने में सफल रहेंगे। नई संपत्ति क्रय करने का योग बन रहा है तथा अकस्मात् धन की प्राप्ति होगी। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा। इस अवधि में आपको बहुत ही सोच विचार कर कोई भी आर्थिक निर्णय लेना होगा। लेन देन के मामले में बहुत ही सावधान रहें। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य पर भी कुछ पैसे खर्च करा सकता है। आपको सकारात्मक बने रहना बेहतर होगा।

वर्ष उत्तरार्द्ध आपके लिए काफी उत्तम रहेगा। आर्थिक लाभ में वृद्धि होगी। बैंक से लोन इत्यादि आसानी से प्राप्त सकेगा। पत्नी एवं भाईयों से भी लाभ होगा। छठे स्थान का शनि आपको शत्रुओं से भी धन लाभ करा सकता है। निवेश के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। सितम्बर के बाद आपको अचल संपत्ति की प्राप्ति होगी।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। परिवार में सुख-शान्ति का माहौल बना रहेगा। धर्मपत्नी के साथ संबंध मधुर रहेंगे। आपको भाईयों एवं मातुल पक्ष का

पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय अच्छा नहीं है। अतः इस अवधि में पारिवारिक समस्याएं बढ़ सकती हैं। पत्नी के स्वास्थ्य का खास ध्यान रखना आपके लिए हितकारी रहेगा। रिश्तेदारों के साथ भी कुछ अनबन हो सकती है। वाद-विवाद में न पड़ें। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा।

उत्तरार्द्ध में समय पुनः अनुकूल हो रहा है। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। यदि कोई मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें सफलता मिलेगी तथा आपके सारे विरोधी शान्त होंगे। परिवार में आपसी सद्भाव का माहौल बनेगा। पारिवारिक रिश्ते बेहतर रहेंगे तथा समय आनंदपूर्वक व्यतीत होगा। आप सभी परिस्थितियों का सामना धैर्यपूर्वक और सरलता के साथ करने में सक्षम रहेंगे। परिवार के सदस्य आपकी बुद्धिमता की तारीफ करेंगे। जन्दिगी के प्रत्येक मोड़ पर जीवनसाथी का पूर्ण सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आप सामाजिक गतिविधियों में पहले से अधिक सक्रिय रहेंगे।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए उत्तम रहेगा। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय बहुत ही श्रेष्ठ है। प्रथम संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय किंचित प्रभावित रहेगा तथा उसके बाद आपके बच्चों की उन्नति होगी।

यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा।

स्वास्थ्य

लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। पूरे वर्ष कुछ न कुछ परेशानी बनी रहेगी। संक्रमण संबंधित बीमारियों से आप ज्यादा प्रभावित रहेंगे। जौघ, जननांग या लीवर संबंधिक बीमारियां भी हो सकती हैं। उचित आहार और नियमित व्यायाम करने से इन बीमारियों से बचा जा सकता है। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय और भी ज्यादा प्रभावित हो रहा है। इस अवधि में आप अचानक बीमार हो सकते हैं तथा आप शारीरिक ऊर्जा में कमी का अनुभव करेंगे।

जुलाई के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। आपकी आरोग्यता व कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे तथा आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। करियर व प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा,

जिससे आपके कार्यों में लाभ की मात्रा और बढ़ जाएगी। 6 मई से 30 जुलाई तक का समय प्रभावित रहेगा।

कार्यस्थल पर होने वाली अनावश्यक राजनीति व गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें। अपने अंदर अहं भाव ना आने दें। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता के लिए यह समय विशेष शुभ है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए वर्षान्त सामान्य रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा के दृष्टिकोण से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 6 मई के बाद आपकी विदेश यात्रा होने की संभावना बन रही है। नवम स्थान पर राहु की दृष्टि लम्बी यात्राओं का प्रबल योग बना रही है। राहु के कारण अधिकांश यात्राएं अचानक होंगी।

सप्तमस्थ गुरु के कारण व्यवसायिक यात्राएं अधिक होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यात्रा के अंतराल में मित्रता व किसी पर विश्वास करना आपके लिए हानिकारक हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आपके अंदर धार्मिक कार्य करने की इच्छा तो होगी परन्तु आलस्य के कारण कर नहीं पाएंगे। दैनिक पूजा पाठ भी प्रभावित रहेगा, परन्तु आप दान पुण्य अधिक करेंगे और अपने कर्म को ही पूजा समझेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में मानसिक शान्ति बनी रहेगी। धर्मपत्नी के साथ सभी सांस्कृतिक पर्वों को खुशी के साथ मनाएं। साधु महात्माओं का प्रवच सुनना, सत्संग में जाना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपके अंदर गरीबों व दुखियों की निःस्वार्थ सहायता का भाव उत्पन्न होगा।

- अपने पूजा घर में देशी घी का दीपक जलाकर श्रीसूक्त या कनकधारा स्तोत्र का पाठ नियमित करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन बेसन के लड्डू व केला गरीबों को दान करें।
- सात एवं आठ मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन धारण करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2042

इस वर्ष शनि तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 22 जून तक राहु मेष राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे तथा उसके बाद मीन राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा वक्री होकर 10 जून से 27 अगस्त तक तुला राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे और पुनः मर्गी होकर फिर से वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

दशमेश शनि के सप्तम भाव में उच्च राशि में होने कारण बड़े कार्यों के प्रस्ताव मिलेंगे व आप उन कार्यों को करने में सफल भी होंगे। व्यापार के बड़े निर्णय सावधानी से लें तथा विकास की योजनाओं को पूरी जांच परख करके अंजाम दें। किसी भी कानूनी झंझट में पड़ने से बचें।

10 जून से 27 अगस्त तक का समय साझे में काम करने वालों के लिए शुभ रहेगा। दूसरों की लापरवाही और असफलताओं से आप चिन्तित रह सकते हैं। किसी की झूठी आशाओं पर निर्भर न रहें। किसी कार्य में अधिक आत्मविश्वास दिखाना नुकसान दे सकता है। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहना भी जरूरी होगा। इन सबके बावजूद अपने रुचि के क्षेत्र में आप अच्छा काम करेंगे और जनप्रिय बने रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक मामलों के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में आप कुछ ऐसे कार्यों में उलझे रह सकते हैं जो कम फायदा देने वाले होंगे। निरर्थक ही पैसे बर्बाद कर सकते हैं। इस वर्ष कुछ ऐसे खर्च भी आ सकते हैं जिनकी आपने उम्मीद नहीं की होगी। इस प्रकार की आर्थिक समस्याएं आपकी दिमागी शांति को भंग करने का काम करेंगी। जोखिम उठाने वाली प्रवृत्तियों जैसे सट्टेबाजी, जुआ आदि से बचें, क्योंकि इनसे आपको कोई बड़ा घाटा हो सकता है।

जून से अगस्त के अंतराल में कुछ व्यापारिक सौदों के माध्यम से आप अच्छा लाभ कमा सकते हैं। आपको बड़े भाई या मित्र से लाभ हो सकता है। भौतिक सुख सुविधा पर आपका पैसा अधिक खर्च होगा। निवेश के लिए यह समय अनुकूल नहीं है क्योंकि द्वादश स्थान का राहु हानि करा सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक मामलों के लिए यह वर्ष अधिक अनुकूल नहीं है। परिवार के कुछ लोगों के बर्ताव से आपकी भावनाएं आहत हो सकती हैं। कुछ विषम परिस्थितियां भी निर्मित होंगी अतः अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करें। कुछ लोगों का व्यवहार आपके प्रति वैमनस्यपूर्ण भी रह सकता है।

ईष्ट मित्र के साथ सम्बन्धों में मधुरता कम हो सकती है। आप अपने घर परिवार के सदस्यों के हित के बारे में सोचेंगे। परिवार के सदस्यों के ऊपर धन व्यय करेंगे। इन सबके बावजूद भी बीच-बीच में परिवार के कुछ सदस्यों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। अपनी समस्याओं के समाधान के लिये परिवार पर अधिक निर्भरता उचित नहीं होगी।

संतान

गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। पंचम स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकती है। जून से अगस्त तक का समय आपकी दूसरी संतान के लिए शुभ है। यदि वे विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु पर शनि ग्रह की दृष्टि आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय अधिक कष्टकारक हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु के जलीय राशि में होने के कारण कफ या उदर संबंधित बीमारी से परेशानी हो सकती है। जून से अगस्त तक का समय किंचित अनुकूल रहेगा। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी। अगस्त के बाद समय फिर से प्रतिकूल हो रहा है।

आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान पर संयम रखना बहुत जरूरी होगा क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा फूड पॉइजनिंग के कारण होगा। अतः इस अवधि में स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहना उचित होगा। जहां तक सम्भव हो गैर जरूरी यात्राओं से बचें अन्यथा आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम नहीं है। पढ़ाई-लिखाई व प्रतियोगिता परीक्षा में व्यवधान आ सकता है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी ह्रास होगा। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे।

जून से अगस्त तक का समय अच्छा रहेगा। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में विदेश यात्रा के योग बन रहे हैं। मई के बाद व्यवसाय से संबंधित यात्राएं अधिक होगी। ये यात्राएं आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होंगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। इस वर्ष आपकी सारी धार्मिक यात्राएं प्रभावित होंगी।

अगस्त के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है क्योंकि वर्षान्त में राहु ग्रह का गोचर दुर्घटना के योग बना रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं है। अष्टमस्थ गुरु एवं लग्नस्थ राहु के कारण आपका मन धार्मिक कार्यों में नहीं लगेगा। मन एकाग्र नहीं रहने के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। जून के बाद आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे। इस समय के अंतराल में आप कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे। जैसे- हवन, माता की चौकी इत्यादि। वर्षान्त में तन्त्र, मन्त्र व यन्त्र के प्रति आपका विश्वास बढ़ेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों की सेवा करें तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें तथा मंगलवार का व्रत करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2043

वर्ष के प्रारम्भ में गुरु वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा 27 जनवरी को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 30 जुलाई को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे तथा अतिचारी होकर फिर से 11 सितम्बर को धनु राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। पूरे साल शनि तुला राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे तथा 12 दिसम्बर को वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। 19 सितम्बर तक राहु मीन राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कारोबारियों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहने वाला है। एकाधिक स्रोतों से धन का आगमन होगा। सप्तमस्थ शनि के प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। जो लोग अपनी पत्नी के साथ मिलकर कोई कारोबार कर रहे हैं, उन्हें अधिक लाभ होने वाला है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो इस वर्ष इच्छित लाभ होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से कुछ प्रतिद्वंदियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु आपके सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

30 जुलाई के बाद समय कुछ प्रभावित हो रहा है। अतः उस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें तथा आंख बन्द कर किसी पर विश्वास न करें। ब्याज पर पैसे देने के लिए समय उचित नहीं है लेकिन 11 सितम्बर के बाद आपका समय अच्छा होगा तथा आपका भाग्योदय होगा। आपको वांछित उन्नति मिलेगी। नौकरीपेसा जातकों के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं है। आपके बड़े अधिकारियों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं या प्रतिकूल स्थान पर आपका स्थानान्तरण भी हो सकता है।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। विभिन्न स्रोतों से धन का आगमन होगा। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के कारण शेयर बाजार से भी लाभ होने की संभावना है। आप अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। 30 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि के प्रभाव से भूमि, भवन व वाहन के साथ-साथ रत्नाभूषण इत्यादि की प्राप्ति भी हो सकती है। अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में आप खूब खर्च करेंगे।

द्वादश स्थान का राहु कुछ अनावश्यक खर्च कर सकता है। खर्चों पर नियंत्रण और भावनाओं पर काबू रखने की जरूरत है। व्यर्थ की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है इस पूरे वर्ष को आप आनन्द के साथ बिताएं। यदि पैतृक संपत्ति पर कोई वाद-विवाद चल रहा हो तो फैसला आपके पक्ष में होने की संभावना बन रही है।

घर-परिवार, समाज

चतुर्थ स्थान पर राहु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि पारिवारिक अनुकूलता के लिए अच्छी नहीं है। आपके माता जी के साथ संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा आपके पारिवारिक जीवन के लिए थोड़ी मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। ऐसे समय में आपको धैर्य और सतर्कता के साथ काम लेना होगा। बात बात पर क्रोधित न हों क्योंकि यह आपके दाम्पत्य जीवन के लिए बिल्कुल भी अच्छा नहीं है।

आपसी रिश्तों को बरकरार रखने के लिए यह जरूरी है कि रिश्तों को लेकर थोड़ा सजग रहें नहीं तो परिवार में किसी के साथ अनबन हो सकती है। आपके ससुराल पक्ष के लिए समय अच्छा नहीं है। अतः उनके साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य के बल पर आगे बढ़ेंगे। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने के प्रबल योग बन रहे हैं। जुलाई से सितम्बर तक का समय प्रभावित रहेगा। इस अवधि में आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। शिक्षा-दीक्षा में रुकावटें तथा उन्नति में व्यवधान आ सकता है। लेकिन चिंता न करें क्योंकि सितम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा तथा उस समय आपके बच्चों का चौमुखी विकास होगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी, जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। परन्तु 30 जुलाई के बाद अचानक आपकी सेहत बिगड़ सकती है। अष्टमस्थ गुरु एवं द्वादशस्थ राहु के कारण आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है। अतः उस समय अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें तथा खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें।

11 सितम्बर को गुरु ग्रह का गोचर आपके स्वास्थ्य को सुधारने वाला है तथा उसके बाद आप निरोगी काया के स्वामी होंगे। लग्न स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा। जो आपको शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक संतुष्टि प्रदान करेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार हैं। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा।

मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल है। ऐसी स्थिति में अपने कार्यों में किसी प्रकार की जल्दबाजी न करें और उसे अविलंब पूरा करने की कोशिश करें क्योंकि वर्षान्त में सफलता मिलने का पूर्ण योग बन रहा है।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से इस वर्ष आपकी खूब यात्राएं होंगी। ज्यादातर समय आप अपने घर से बाहर ही रहेंगे। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर भी हो सकता है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है। क्योंकि राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं होता। वाहन दुर्घटना या यात्रा के अंतराल में आपका धन चोरी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे, जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी और आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके मन में नैसर्गिक रूप से आध्यात्मिक ज्ञान की वृद्धि होगी। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी। गुरु दीक्षा लेकर उस मन्त्र की साधना कर सकते हैं। गुरुवाणी व गुरुजी पर आपका अटूट विश्वास होगा।

- दुर्गा सप्तसती का पाठ करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन नीली वस्तु का दान करें एवं निम्नलिखित राहु मन्त्र का जाप करें-
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2044

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे तथा राहु कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 16 फरवरी तक गुरु धनु राशि एवं नवम भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल वक्री होकर 4 मार्च से 13 जून तक सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहने वाला है। सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। अच्छे व्यवसाय हेतु अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें अन्यथा कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी। 16 फरवरी से नौकरी वाले व्यक्तियों के लिए समय शुभ हो रहा है। उस समय आपकी पदोन्नति होगी। कार्यस्थल पर आपके कार्यों की प्रशंसा की जाएगी तथा आपको बड़े अधिकारियों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध आपके लिए काफी मेहनत करने वाला रहेगा क्योंकि शनि के आठवें भाव पर गोचरीय प्रभाव से आपके सारे कार्य धीमी गति से आगे बढ़ेंगे। व्यावसायिक कार्यों के चलते आपको निवास स्थान से दूर जाना पड़ सकता है। व्यापार वृद्धि के लिए नयी सोच व नयी योजनाओं पर विचार करें। बड़े कार्य में सोच समझ कर ही निवेश करें। लगातार प्रयास और दृढ़ निश्चय से जो भी कार्य करेंगे उनमें आप सफलता प्राप्त करेंगे। व्यापार का विस्तार करने से पहले जोखिम की संभावनाओं को ध्यान में अवश्य रखें। प्रॉपर्टी के काम से जुड़े हुए लोगों को लाभ मिल सकता है।

धन संपत्ति

इस वर्ष आपकी नियमित आय बरकरार रहेगी। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक ही लाभ मिलने या अतिरिक्त आय प्राप्त होने की उम्मीद है। आपमें साहस की कमी नहीं रहेगी। आप आमदनी के नए मार्ग खोजेंगे। 16 फरवरी के बाद नौकरी करने वाले जातकों के वेतन में वृद्धि हो सकती है एवं प्रोत्साहन राशि भी प्राप्त हो सकती है। रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति हो सकती है। आप अपनी भौतिक सुख सुविधाओं पर खूब खर्च करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह आदि मांगलिक कार्यों में आपका अधिक व्यय होगा।

धन प्राप्ति के अच्छे योग हैं। लेकिन जोखिम भरे कार्यों में धन का निवेश करने से बचें। किसी को पैसे उधार देने से भी बचें। दीर्घकालीन निवेश के लिए यह समय अच्छा नहीं है। क्योंकि अष्टम स्थान का शनि निवेश के लिए अच्छा नहीं होता। सट्टेबाजी अथवा जाखिम भरे कार्यों में धन न लगाएं, घाटा हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो 16 फरवरी के बाद से समय अनुकूल रहने



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वाला है। परिजनों, परिचितों एवं मित्रों से हर कार्य में सहयोग मिलेगा। घर के लिए कुछ आवश्यक सामान की खरीदारी में पैसे खर्च होंगे। चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि परिवार के लिए कोई नया वाहन लेने की स्थिति बना सकती है। मित्रों एवं भाईयों के सहयोग से आपके कार्य पूर्ण होंगे। अतिथियों के सत्कार में धन खर्च हो सकता है। घर में मांगलिक या धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन हो सकता है। धार्मिक स्थलों के दर्शन हेतु परिवार एवं मित्रों के साथ आप कोई यात्रा भी कर सकते हैं।

परिवार में भाई-बहन और मित्रों के साथ आपके संबंध पहले से अधिक बेहतर होंगे। इस अवधि में आप अपने परिवार और मित्रों के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण का आनंद उठाएंगे। माता-पिता का पूर्ण सहयोग मिलेगा। पुराने परिचितों से मिलने-जुलने और पुराने रिश्तों को फिर से तरोताजा करने के लिए अच्छा समय है, परन्तु अष्टम स्थान का शनि ससुराल पक्ष के लोगों के साथ संबंध बिगाड़ सकता है। आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी

संतान

वर्ष का पूर्वाब्द संतान के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान का मंगल आपकी प्रथम संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है तथा उनकी शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में भी रुकावटें आ सकती हैं, परन्तु 12 जून के बाद समय अच्छा हो रहा है उस समय आपके बच्चे सफलता के मार्ग पर अग्रसर हो जाएंगे।

वर्ष का उत्तराब्द संतान के लिए श्रेष्ठ रहने वाला है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बन रहे हैं। दूसरे बच्चे के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु 16 फरवरी के बाद आप अचानक बीमार हो सकते हैं। अष्टम स्थान का शनि मौसमजनित बीमारियों से परेशान कर सकता है। आलस्य व मानसिक तनाव से आप ग्रस्त हो सकते हैं। अतः आपको अपनी सेहत का पूर्ण ध्यान रखना होगा। खान-पान तथा रहन सहन पर ध्यान दें, क्योंकि आपके स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा खतरा संक्रामक बीमारियों से है।

समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वाब्द विद्यार्थियों के लिए अच्छा नहीं है। पंचम स्थान पर राहु एवं मंगल ग्रह के प्रभाव से पढ़ाई-लिखाई में कमी व प्रतियोगिता परीक्षाओं में व्यवधान आ सकता है। आपकी सृजनात्मक क्षमता छुपी रहेगी और बुद्धि विवेक का भी हास होगा। फलस्वरूप आप अपने कामों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। नौकरी करने वालों के

लिए यह समय श्रेष्ठ रहेगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अनुकूल रहेगा। आपकी शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। इस समय यदि आप अपने मन को एकाग्र कर पढ़ाई करेंगे तो अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

यात्रा-तबादला

नवमस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। वर्ष के प्रारम्भ में धार्मिक यात्राएं अधिक करेंगे। जलीय स्थलों की यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

16 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अनुकूल स्थान पर तबादला होगा तथा यह परिवर्तन आपके लिए काफ़ि शुभ रहेगा। अपने घर से दूर रहने वाले लोगों की इस वर्ष अपनी जन्मस्थली की यात्रा होगी। इस वर्ष आपकी विदेश यात्रा प्रभावित होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

पंचम एवं लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि धार्मिक कार्य व तीर्थ यात्राओं के लिए शुभ है। पूजा पाठ के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। व्रत, यज्ञ, अनुष्ठान व भगवान की भक्ति में ज्यादा समय व्यतीत करेंगे। आप किसी सिद्ध पुरुष को अपना गुरु बना सकते हैं तथा उनसे मन्त्र लेकर उस मन्त्र की साधना कर सकते हैं। वर्ष के उत्तरार्द्ध में तन्त्र मन्त्र व काले जादू के प्रति आप आकर्षित होंगे। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आप तांत्रिक सिद्धि व शाबर सिद्ध प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें तथा नित्य उनका दर्शन करें।
- सात मुखी रुद्राक्ष सोमवार के दिन गले में धारण करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2045

इस वर्ष शनि वृश्चिक राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 15 जून तक राहु कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे तथा उसके बाद मकर राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। 2 मार्च को गुरु कुम्भ राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्षारम्भ विशेष उत्तम रहने वाला है। काम धंधे में बढ़ोत्तरी होने से आपकी आय में वृद्धि होगी। आप कोई अच्छी योजना बना कर व्यापार में उन्नति करेंगे। दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से पदोन्नति का योग बन रहा है। साथ ही एकादश भाव में राहु के गोचरीय प्रभाव से आप अपने प्रतिद्वंद्वियों से आगे निकलने में सक्षम होंगे व शत्रु पक्ष को भी पूर्णतया नियंत्रित कर सकेंगे। आपके आत्मविश्वास व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी तथा उच्चाधिकारियों से लाभ भी प्राप्त होता रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप शेयर मार्केट व सट्टा आदि के कार्यों से लाभान्वित हो सकते हैं। अपनी कार्य कुशलता, दक्षता एवं बौद्धिक बल के द्वारा आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कंपनी के साथ मिलने या उसके साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। आर्थिक समृद्धि, मांगलिक कार्य एवं व्यवसाय में सफलता का प्रबल योग बन रहा है।

धन संपत्ति

वर्षारम्भ में आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहने वाली है। आपकी आमदनी में निरंतरता बनी रहेगी। आय में वृद्धि होगी। आप कोई सम्पत्ति खरीद सकते हैं या कहीं पूंजी निवेश कर सकते हैं। यह समय आपके आर्थिक मामलों के लिए अनुकूल रहेगा। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ-साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में अचल संपत्ति का विस्तार करने में सफल रहेंगे। नई साझेदारी योजनाएं शुरू करेंगे और नवीन प्रयोजनाओं को लागू करने के लिए समय की शुभता बनी हुई है। शेयर बाजार, सट्टा व अचानक धन लाभ होने के भी योग बन रहे हैं। उतार-चढ़ाव की स्थिति होने पर भी अच्छे लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी। परिजनों के साथ किसी दर्शनीय स्थल पर जाएंगे। भाई-बहनों, मित्रों तथा पड़ोसियों से सम्बन्धों में मधुरता बनी रहेगी। घर में खुशी का माहौल रहेगा। अपने परिवार के बुजुर्ग व्यक्तियों का आप आदर-सम्मान करेंगे। सामाजिक रूप से यह समय अनुकूल रहने वाला है। कुछ नए लोगों से आपका मेल-जोल बढ़ेगा।

15 जून के बाद आपका पारिवारिक माहौल कुछ प्रतिकूल हो रहा है। माता का स्वास्थ्य अचानक खराब हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा। आपकी धर्मपत्नी के साथ प्रेम संबंधों में मधुरता बढ़ेगी तथा एक दूसरे प्रति भावनात्मक लगाव में वृद्धि होगी। आप मौज-मस्ती व मनोरंजक गतिविधियों में व्यस्त रहेंगे। परिवार में कोई मांगलिक व धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन भी हो सकता है।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है, परन्तु 2 मार्च के बाद समय काफी शुभ हो रहा है। पंचम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी तथा आपके बच्चे वांछित उन्नति करेंगे।

यदि आपका पहला बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह होने का प्रबल योग बन रहा है। आपको बच्चों के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे तथा उनके पराक्रम में वृद्धि होगी। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे, जिससे आपका यश बढ़ेगा तथा आप उन पर गर्व करेंगे।

स्वास्थ्य

यह वर्ष आपके स्वास्थ्य के लिए सामान्य रहेगा। आप शारीरिक श्रम की बजाय मानसिक श्रम अधिक करेंगे। हर बात पर क्रोध करने से आप अपने आस-पास के वातावरण को तनाव युक्त बना सकते हैं। इसलिए जहाँ तक हो सके ज्यादा तनाव न लें व क्रोध करने से बचें। अष्टम स्थान का शनि स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। खान-पान का ध्यान रखने की जरूरत है। मसाले युक्त भोजन करने से पेट के रोग हो सकते हैं। सुबह टहलना आपके लिए काफी फायदेमंद रहेगा। मौसम और बारिश से होने वाली बीमारियों से सतर्क रहें।

जो लोग मधुमेह और मोटापे की समस्या से पीड़ित हैं, उन्हें अपना ख्याल रखने की जरूरत है क्योंकि राहु गुरु की युति आपके स्वास्थ्य पर विशेष प्रभाव डाल सकती है। अपने आप पर आवश्यकता से अधिक बोझ न डालें और व्यर्थ की बातों से स्वयं को दूर रखें। देव पूजा, मंत्र आराधना और योगाभ्यास से आप मानसिक शान्ति व शारीरिक आरोग्यता प्राप्त कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले छात्रों को सफलता प्राप्ति के लिए पहले से अधिक लगन और मेहनत से काम करना होगा तभी आपको सफलता मिलेगी। यदि आप नौकरी में हैं तो वर्ष के प्रारम्भ में ही पदोन्नति की संभावना है।

वर्ष का उत्तरार्द्ध विद्यार्थियों के लिए बहुत ही शुभ है। छात्रों को सफलता मिलने के पूर्ण आसार हैं। इस समय दी गई परीक्षाओं का परिणाम हितकारी होगा। दोस्तों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

यात्रा-तबादला

वर्षारंभ में आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। गुरु ग्रह की चतुर्थ पर दृष्टि नौकरी वालों के लिए स्थानांतरण का योग बना रही है। स्थान परिवर्तन अनुकूल रहेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप ज्यादातर समय अपने घर से बाहर ही रहेंगे। यात्रा करते समय या वाहन चलाते समय सावधानी अत्यधिक जरूरी है, क्योंकि इस वर्ष अष्टमस्थ शनि के कारण दुर्घटना व चोट लगने की पूर्ण संभावना बन रही है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

2 मार्च के बाद आप पूजा-पाठ, यज्ञ अनुष्ठान में अधिक रुचि लेंगे तथा आपका आध्यात्मिक ज्ञान भी बढ़ेगा। तीर्थ यात्रा व धार्मिक यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप किसी को अपना गुरु बना सकते हैं तथा उनसे मन्त्र लेकर उस मन्त्र की साधना भी कर सकते हैं। गुरु वाणी व गुरु जी पर आपका विश्वास बढ़ेगा।

- काली वस्तुओं का दान करें तथा शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- पारद शिवलिंग अपने पूजा घर में स्थापित करें।
- मजदूरों व भिखारियों को काले रंग का कम्बल दान करें।
- प्रतिदिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध
(07/12/2017 - 07/12/2034)**

बुध की महादशा 07/12/2017 को आरम्भ और 17 वर्ष की होकर 07/12/2034 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध पंचम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, सफलता, उत्तम शिक्षा और धन की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी शिक्षा उत्तम होगी, सट्टे में लाभ तथा सन्तान से सुख मिलेगा।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सक्रिय, आशावादी तथा स्फूर्तिवान होंगे। आपको अक्सर पाचन क्रिया की शिकायत हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के कारण आपको ज्वर, संक्रामक बीमारी, चर्मरोग तथा स्नायविक समस्या हो सकती है। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। सतर्कता बरतकर इन मामूली बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपको सट्टे तथा अन्य निवेश से लाभ होगा। आपको अचानक लाभ या अवकाश ग्रहणसे लाभ, ग्रेच्यूइटी आदि की प्राप्ति होगी। आपका निवेश शुभदायक और आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। कुछ मामूली नुकसान भी हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तर तथा परिवर्तन हो सकता है जो लाभदायक होगा। वाणिज्य-व्यापार से सम्बद्ध सभी कार्यों में आप अच्छा करेंगे। सहकर्मियों तथा सहायकों के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं। दशा की प्रगति के साथ-साथ स्थिति में सुधार होगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के कार्य में परिवर्तन होगा। आप आपने कार्य में परिवर्तन या अन्य आवश्यक परिवर्तन कर सकते हैं जो अन्ततः लाभदायक होंगे। आपका उपार्जन तथा लाभ अच्छा होगा। जीविका के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग तथा बौद्धिक कार्य कर सकते हैं। रत्न, पुस्तक, लेखन-सामग्री, कम्प्यूटर तथा हस्तनिर्मित वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

पारिवारिक सुख और वाहन की दृष्टि से यह दशा आपके लिये उत्तम होगी। आपको जमीन-जायदाद या ऐसी अन्य सम्पत्ति से लाभ होगा। आपको यातायात से भी लाभ होगा। मंगल की अन्तर्दशा में आप की छोटी और शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आप की शिक्षा अति उत्तम होगी। आपका प्रशिक्षण अच्छा होगा और आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफल होंगे। आपकी लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्मक पत्रकारिता, शिक्षण तथा शैक्षिक सेवा आदि में रुचि होगी। आप

प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपको रुचि होगी। आपका मस्तिष्क बौद्धिक तथा विश्लेषणात्मक होगा और सभी बौद्धिक कार्यों में आप अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के साथ आपका सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा और उनसे आपको सुख मिलेगा। वे आप से दूर जा सकते हैं या उन्हें कुछ मामूली समस्याएं हो सकती हैं जो दशा की उन्नति के साथ गुजर जाएंगी। आपके जीवन साथी को हर प्रकार का लाभ प्राप्त होगा, उन्हें सुख की प्राप्ति होगी और उनकी मनोकामनाएं पूरी होंगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता के लिये यह दशा लाभदायक होगी जबकि आपके पिता को सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी, उनका भाग्यादेय और यात्रा होगी तथा बौद्धिक कार्यों में उनकी रुचि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कठिन परिश्रम करना होगा, उनकी छोटी यात्रा होगी और सम्बन्धियाँ से सहायता मिलेगी जबकि आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारों से लाभ मिलेगा, उनकी शादी होगी और वाणिज्य व्यापार में सफलता मिलेगी। आपका उनके साथ संबंध अच्छा रहेगा। बुध की इस दशा में आपको सुख मिलेगा, वैवाहिक जीवन उत्तम रहेगा, आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी तथा अच्छे पद की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर दशा के कारण आपको सम्पत्ति तथा सुख मिलेगा और शिक्षा उत्तम होगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक की अन्तर्दशा के फलस्वरूप सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। सूर्य की अन्तर्दशा के कारण लाभ तथा विवाह हो सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य खराब हो सकता है तथा ननिहाल से लाभ हो सकता है। मंगल की अन्तर्दशा में जीवन-वृत्ति में उन्नति तथा छोटी यात्रा होगी। राहु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप लाभ तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि लग्नेश शनि की अन्तर्दशा में यशा, ख्याति और सफलता मिलेगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- बुध - चन्द्र
(06/01/2025 - 08/06/2026)**

आपकी बुध की महादशा 07/12/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 06/01/2025 को प्रारंभ होकर 08/06/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। विवाहित जीवन सुखी होगा। मानसिक और भावनात्मक रूप से खुश रहेंगे। यात्रा से खुशियां मिलेंगी। व्यापार में, खास तौर पर तरल पदार्थ, रसायन और औषधि आदि के उद्यम में लाभ होगा। महिलाओं से संबंधित कार्य भी लाभदायक होगा। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। बहुत से मित्र होंगे। समाज में सफलता और लोकप्रियता मिलेंगी।

आपके जीवनसाथी को समृद्धि, सफलता और लोकप्रियता मिलेंगी। आपके पिता धन का संचय करेंगे, लक्ष्य प्राप्त करेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, वाहन सुख होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, लाभकारी निवेश, संतानसुख या संतान का जन्म, दान में रुचि, सौभाग्य, खुशी और पिता से प्रसन्नता का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी। अगर वे सेवारत हैं तो संचारमाध्यम से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनागम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पेट की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए किसी कन्या को वस्त्र दान में दें।

**अंतर्दशा :- बुध - मंगल
(08/06/2026 - 05/06/2027)**

आपके लिए बुध की महादशा 07/12/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 08/06/2026 को प्रारंभ होकर 05/06/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको वांछित वस्तुएं उपलब्ध होंगी। शिक्षा उत्तम होगी। अचल संपत्ति के मालिक बन सकते हैं। उत्साह और साहस में वृद्धि होगी। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। स्पर्धियों पर विजय होगी; उच्चपद मिल सकता है। विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है पर प्रयास करने पर बचाव हो सकता है। व्यापार में विस्तार और साझेदारी से लाभ संभव हैं। व्यापार से संबंधित यात्रा हो सकती है। विदेश में सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे, भाग्यशाली होंगे। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; उन्हें विरासत में संपत्ति मिल सकती है। माता के आत्म-विश्वास में वृद्धि हो सकती है; सफलता, सौभाग्य और उत्तम कार्यक्षमता का योग है।

आपके भाई-बहनों के लिए लाभ, धन, प्रसिद्धि, उत्तम शिक्षा और स्पर्धियों पर विजय का संकेत है। आपकी संतान की सफलता में बाधाएं आ सकती हैं। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है, खर्चें बढ़ सकते हैं मगर अध्यात्म में रुचि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी; सफलता और प्रसिद्धि मिलेंगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। छाती और हृदय के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

अंतर्दशा :- बुध - राहु
(05/06/2027 - 22/12/2029)

आपके लिए बुध की महादशा 07/12/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 05/06/2027 को प्रारंभ होकर 22/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपको लघु यात्राओं, प्रकाशन और लेखन से लाभ होगा। आप उत्साही, साहसी और दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी, धनी बनेंगे। कार्यों में लाभ होगा। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। उच्च पद प्राप्त होगा, सांसारिक सुख मिलेगा। सत्कार्यों में रुचि होगी। शिक्षा में नाम होगा। विदेश यात्रा हो सकती है। छोटे भाई-बहनों में किसी का विवाह हो सकता है। आपके जीवनसाथी की यात्रा हो सकती है, भौतिक सुख मिलेंगे। आपके पिता को साझेदारी से लाभ होगा। माता के खर्चें बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी, नये मित्रों से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, धनलाभ, उत्तम स्वास्थ्य, नये व्यापार की स्थापना, संतानसुख, निवेश में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, उनके प्रभावशाली मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, अच्छे आर्थिक अवसर मिलेंगे, लोगों से मदद मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रसिद्ध बनेंगे, आय बढ़ेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः

**अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(22/12/2029 - 29/03/2032)**

आपके लिए बुध की महादशा 07/12/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 22/12/2029 को प्रारंभ होकर 29/03/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। सब सुख उपलब्ध होंगे। उत्तम वस्त्र और भोजन प्राप्त होंगे। शिक्षा उत्तम होगी; धन का संचय होगा। साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। विरासत में धन मिल सकता है। स्वास्थ्य उत्तम होगा। अचानक धन और संपत्ति मिल सकते हैं। अध्यात्म और दर्शनशास्त्र में रुचि हो सकती है। अच्छी नौकरी मिल सकती है। सफलता और समृद्धि प्राप्त होंगी। भाग्य साथ देगा, धन का संचय होगा।

आपके जीवनसाथी को साझेदारी से लाभ होगा। आपके पिता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। माता धनी और प्रसन्न होंगी।

आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, धन का संचय, अध्यात्म में रुचि, घरेलू सुख, उत्तम शिक्षा और उत्तम मित्रों का संकेत है।

आपकी संतान को प्रसिद्धि मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे; माता से लाभ होगा, सफल होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सौभाग्यशाली रहेंगे, आय बढ़ेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है ; अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- बुध - शनि
(29/03/2032 - 07/12/2034)**

आपके लिए बुध की महादशा 07/12/2017 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 29/03/2032 को प्रारंभ होकर 07/12/2034 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे, भूमि और वाहन का सुख भोगेंगे। आप बुद्धिमान हैं। समझ-बूझ से किये निवेश से लाभ होगा। शिक्षा उत्तम होगी, संतान से सुख मिलेगा। सब कार्य पूर्ण होंगे, समाज में प्रभाव बढ़ेगा, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, प्रोन्नति होगी, प्रसिद्धि मिलेगी, व्यापार में लाभ होगा। साझेदार या जीवनसाथी के माध्यम से लाभ हो सकता है। अचानक लाभ होगा। वसीयत, उपहार, सेवानिवृत्ति निधि, बोनस आदि से धन आ सकता है। अध्यात्म, धर्म या तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे, उन्हें धन का लाभ होगा। आपके पिता सफल होंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित घटना घट सकती है। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, धन का लाभ, आत्मविश्वास में वृद्धि, कार्यों की सफलतापूर्वक समाप्ति, जनता में लोकप्रियता का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों में लाभ होगा, जनता में लोकप्रियता बढ़ेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में सुखद वातावरण होगा। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नेत्रों और कानों में मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए दाल, तिल, तेल और काले वस्त्र दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



महादशा :- केतु
(07/12/2034 - 07/12/2041)

केतु की महादशा 07/12/2034 को आरम्भ और 07/12/2041 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु नवें भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि तृतीय भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण साझेदारों से लाभ, विवाह, यात्रा तथा जीवन में प्रगति हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में यात्रा, अध्यात्म में रुचि, उच्च शिक्षा और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में आत्मविश्वास है और आप शक्ति शाली तथा स्फूर्तिवान होंगे। छूत की बीमारी, फोड़े-फुन्सी, आँख में पीड़ा, पित्त दोष, निचले अंगों में कष्ट, बुखार आदि हो सकता है। ये मौसमी होंगे। कुछ सावधानी बरत कर इनसे बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपको पिता से लाभ मिल सकता है। आपको संचार-साधन, मास मीडिया तथा सगे-संबंधियों से लाभ हो सकता है। सद्भा और निवेश लाभदायक होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए तकनीकी तथा वैज्ञानिक सेवा, योजना और प्रशासन, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, दवा, सरकारी सेवा, शिक्षण आदि का चयन कर सकते हैं। रत्न, पत्थर, संगमरमर, अनाज, चमड़े, बिजली के सामान आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान और उच्च पद मिलेगा। यश, ख्याति और सम्मान की प्राप्ति होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का शुभ परिवर्तन होगा और कार्यों में सफलता मिलेगी। आपको लक्ष्य की प्राप्ति और विरोधियों पर विजय मिलेगी। उपार्जन और लाभ भी अच्छा होगा।

वाहन, यात्रा जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपको आराम मिलेगा। जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। यात्रा लाभदायक सिद्ध होगी। वाहन-सुख भी मिल सकता है। शनि की अन्तर्दशा में छोटी और शुक्र की अन्तर्दशा में बड़ी यात्रा होगी जो लाभदायक होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे और अपनी पसन्द के संस्थान में आपका नामांकन होगा। इन्जीनियरिंग, भौतिक विज्ञान, अध्यात्म तथा गुप्त विद्या, भाषा, तत्त्व-विज्ञान आदि में रुचि हो सकती है। आप साहसी तथा दृढसंकल्प हैं और अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे।

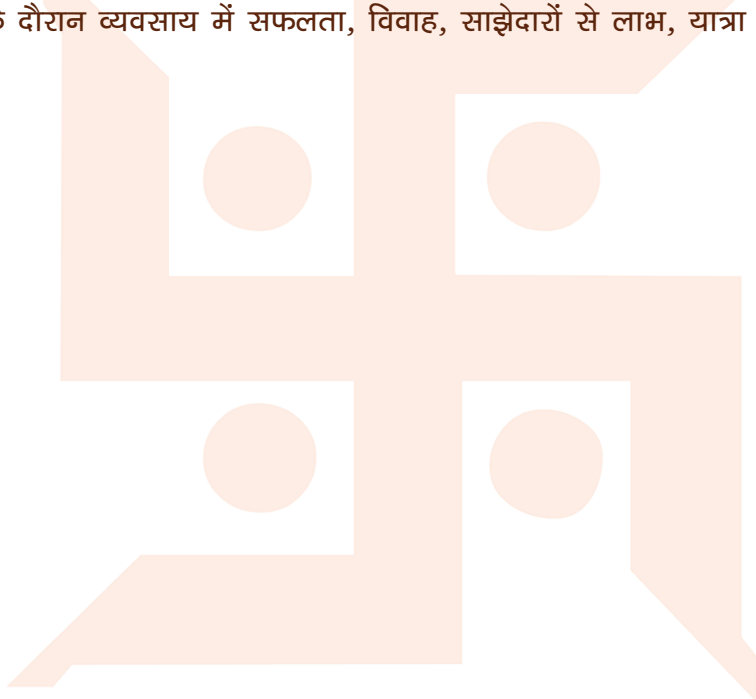
परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे सुखी और समृद्धि शाली होंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा।

आपकी माता का स्वास्थ्य थोड़ा खराब रहेगा और शत्रुओं पर विजय मिलेगी जबकि पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा सम्पत्ति और सफलता मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों की विदेश-यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी जबकि बड़ों की शिक्षा होगी और समृद्धि, आराम और सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा होगी तथा बच्चों से सुख, यश और ख्याति मिलेगी। शुक्र के कारण मामूली स्वास्थ्य समस्या, लाभ और ननिहाल पक्ष से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में धन-समृद्धि की प्राप्ति, यात्रा तथा धार्मिक कार्यों में रुचि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में परिवर्तन और कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी और अचानक लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यय होगा और उत्तम शिक्षा तथा बच्चों से सुख मिलेगा। राहु के कारण सुख, यश और ख्याति मिलेगी तथा जमीन-जायदाद और आराम में वृद्धि होगी। शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और कुछ बाधा होगी तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि बुध की अन्तर्दशा के दौरान व्यवसाय में सफलता, विवाह, साझेदारों से लाभ, यात्रा आदि हो सकती है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंतर्दशा :- केतु - केतु
(07/12/2034 - 06/05/2035)

आपके लिए केतु महादशा 07/12/2034 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 07/12/2034 को प्रारंभ होकर 06/05/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप सब काम हिम्मत और विश्वास के साथ करेंगे। शत्रुओं पर विजय मिलेगी, धनी बनेंगे। विवादों से बचे रहेंगे। विवेकशक्ति उत्तम होगी, प्रत्येक कार्य योजनाबद्ध तरीके से दूरदर्शितापूर्वक करेंगे। विवाद और बाधाओं के बावजूद इच्छाएं पूर्ण होंगी।

आपके जीवनसाथी को संचार माध्यम द्वारा लाभ होगा। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। माता दृढ़प्रतिज्ञा होंगी और लक्ष्य प्राप्त करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, सफलता, धनार्जन और इच्छाओं की पूर्ति का संकेत है।

आपकी संतान को शिक्षा द्वारा लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, धनार्जन उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारी लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, गठिया जैसी मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द की दाल, तिल और कंबल दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - शुक्र
(06/05/2035 - 05/07/2036)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आप प्रसन्न और संतुष्ट रहेंगे। माता से मधुर संबंध होंगे। परिवारजनों और मित्रों से उत्तम संबंध होंगे। धनी बनेंगे। जीवन सुख-सुविधापूर्ण रहेगा। उत्साह में वृद्धि होगी। लोकप्रियता बढ़ेगी। व्यापार में लाभ होगा। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। समाज में सम्मान और साख में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता को व्यापार में लाभ होगा। माता सुख-साधनों से संपन्न रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए पारिवारिक सुख, उत्तम स्वास्थ्य, धनलाभ, स्पर्धा में विजय, धनव्यय का संकेत है।

आपकी संतान को शत्रुओं पर विजय के लिए संघर्ष करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धन का संचय करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए

चावल, सफेद वस्त्र आदि दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - सूर्य
(05/07/2036 - 10/11/2036)

आपके लिए केतु महादशा 07/12/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 05/07/2036 को प्रारंभ होकर 10/11/2036 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आपकी आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, सब काम बन जाएंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। निवेश या सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। वेदों के अध्ययन या मंत्रसिद्धि में रुचि हो सकती है। सरकार या पिता से लाभ हो सकता है। बड़े भाई-बहनों और चाचा से संबंध मधुर रहेंगे। सफल और धनी बनेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। पिता भाग्यशाली और धनी होंगे, उनकी अध्यात्म में रुचि होगी। आपकी माता प्रसन्न रहेंगी, व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए उच्चपद, प्रसिद्धि, वांछित कार्यों में सफलता, इच्छाओं की पूर्ति, उत्तम स्वास्थ्य और व्यापार में लाभ का संकेत है।

आपकी संतान सफल और धनी बनेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उच्चपद पर आसीन होंगे, सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं, मगर उन्हें पार करने में सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं, अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य मंत्र का जाप करें।

ॐ घृणि सूर्याय नमः

अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र
(10/11/2036 - 11/06/2037)

आपके लिए केतु महादशा 07/12/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 10/11/2036 से प्रारंभ होकर 11/06/2037 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे, ज्ञानार्जन उत्तम होगा। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी; विवाहित जीवन सुखी रहेगा। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। आप धनी बनेंगे; सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रोन्नति हो सकती है। सरकार से लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम होगा। जीवन सुखी रहेगा। आप दयालु हैं, अतः लोकप्रिय बनेंगे।

समाज में सफलता मिलेगी।

आपके जीवनसाथी सफल और धनी होंगे; उन्हें सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके पिता के बहुत से मित्र होंगे। माता का घरेलू सुख उत्तम होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए निवेश में लाभ, सौभाग्य और पिता से लाभ का संकेत है। आपकी संतान सफल होगी; उनकी कला और संचार माध्यम में रुचि होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रसन्न रहेंगे, लघु यात्राएं होंगी, विचार विनिमय और मार्केटिंग में प्रवीणता के कारण लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं की सक्रियता बढ़ेगी, लाभार्जन उत्तम होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए सफेद वस्तुओं, दूध और चावल का दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(11/06/2037 - 07/11/2037)

आपके लिए केतु की महादशा 07/12/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 11/06/2037 को प्रारंभ होकर 07/11/2037 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी शिक्षा उत्तम होगी ; अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं।

कार्यों में सफलता मिलेगी। सम्मान, प्रोन्नति, स्पर्धियों पर विजय, उत्साह और साहस में वृद्धि का योग है। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। इससे धैर्य और नीति द्वारा बचा जा सकता है। व्यापार में पर्याप्त लाभ होगा। उच्चाधिकारियों से कुछ संघर्ष के बावजूद वांछित प्रगति होगी।

आपके जीवनसाथी को स्पर्धा में सफलता मिलेगी। आपके पिता अचानक धन कमा सकते हैं; उन्हें पत्नी के धन से लाभ हो सकता है। आपकी माता सफल रहेंगी, भाग्य साथ देगा, वांछित कार्य बन जाएंगे, कार्यक्षेत्र में उत्साह पर्याप्त होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, अधिक आय, अदालत में जीत का संकेत है।

आपकी संतान को परिश्रम करना होगा; उनके जीवन में कुछ परिवर्तन हो सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो उनके खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्रा या तबादला संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा।

व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

अंतर्दशा :- केतु - राहु
(07/11/2037 - 25/11/2038)

आपके लिए केतु महादशा 07/12/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 07/11/2037 को प्रारंभ होकर 25/11/2038 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आप लक्ष्यप्राप्ति के लिए उत्साही और दृढ़प्रतिज्ञ होंगे। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आप धनी बनेंगे, कार्यों में लाभ होगा। विदेश यात्रा हो सकती है। शिक्षा में प्रसिद्धि मिलेगी। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। उच्चपद प्राप्त हो सकता है।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्ध बनेंगे। आपके पिता को साझेदारी द्वारा लाभ होगा। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, प्रसिद्धि, व्यापार की योजना और निवेश द्वारा लाभ का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो आर्थिक प्रगति के अवसर मिलेंगे, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, धनार्जन उत्तम होगा। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी, शत्रुओं पर विजय होगी। व्यापारी धनी बनेंगे, आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु की पूजा करें, उन्हें बेसन की रोटी का भोग लगायें, फिर उसे स्वयं खा लें एवं किसी कुत्ते को भी दें।

अंतर्दशा :- केतु - गुरु
(25/11/2038 - 01/11/2039)

आपके लिए केतु महादशा 07/12/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 25/11/2038 को प्रारंभ होकर 01/11/2039 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनेगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। उत्तम वस्त्र और भोजन का सुख मिलेगा। स्वास्थ्य उत्तम होगा। आप धनी बनेंगे, सरकार से लाभ होगा, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। अधीनस्थ कर्मचारियों और किरायेदारों से लाभ होगा। स्वास्थ्य उत्तम होगा। अच्छी नौकरी मिल सकती है,

प्रसिद्ध हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। आपके पिता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी, मातहतों से लाभ हो सकता है। माता भाग्यशाली रहेंगी, धनी बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, प्रगति में बाधा, प्रसन्न जीवन का संकेत है।

आपकी संतान सफलता प्राप्त करेगी; उनके प्रभावशाली मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा; सफल और धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, आय अच्छी होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। खानपान में संयम बरतना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की आराधना करें।

अंतर्दशा :- केतु - शनि
(01/11/2039 - 10/12/2040)

आपके लिए केतु महादशा 07/12/2034 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 01/11/2039 को प्रारंभ होकर 10/12/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आपको व्यापार में लाभ होगा, अचानक धनागम हो सकता है, अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आप धनी बनेंगे, खुद की जमीन हो सकती है, वाहन सुख रहेगा। आपके प्रभावशाली मित्र होंगे जो लाभकारी सिद्ध होंगे। आय अच्छी होगी। सब काम बन जाएंगे, आत्मविश्वास बढ़ेगा, प्रोन्नति और प्रसिद्धि का संकेत है। जीवन संयमित रहेगा। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे; उन्हें निवेश से लाभ होगा। आपके पिता उत्साही रहेंगे। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए सफलता, समृद्धि, आत्मविश्वास में वृद्धि का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में लाभ होगा, साझेदारी लाभकारी रहेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः

**महादशा :- शुक्र
(07/12/2041 - 07/12/2061)**

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 07/12/2041 को आरम्भ और 07/12/2061 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। यह मीन राशि में उच्च का और कन्या में निम्न का होता है। यह स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद आनन्द तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्म कुण्डली के चतुर्थ भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि दशम भाव पर है और इस भाव पर इसका शुभ प्रभाव पड़ रहा है। चतुर्थ भाव माता, भवन, घरेलू वातावरण, निजी मामलों, गुप्त जीवन, वाहन, उद्यान, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, जल, दूध, नदी तथा झील का द्योतक है।

स्वास्थ्य :



महादशा स्वामी शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है और भाव को प्रबलित कर रहा है जो सुख स्थान का भाव है। इसके फलस्वरूप इस दशा काल में आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी तथा आप सामान्य रूप से जीवन का आनन्द लेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र चतुर्थ भाव में भाव को प्रबलित कर रहा है। यह अचल संपत्ति और वाहन का भाव भी है। इस दशा काल में आप एक नया घर या नई गाड़ी ले सकते हैं। आपकी जीवन चर्या में उन्नति तथा आनन्द में वृद्धि होगी।

व्यवसाय :

शुक्र, एक योग कारक ग्रह, चतुर्थ भाव में स्थित है और आपकी जन्म कुण्डली के दशम भाव को देख रहा है, जो जीवन चर्या और व्यवसाय का द्योतक है। इस दशा काल में आप जमीन-जायदाद के लेन-देन में व्यस्त रहेंगे और इसी से संबंधित व्यवसाय करेंगे। आपकी माता भी आपके व्यावसायिक जीवन को विकसित करने में सहायक होंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण और मैत्रीपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आप भावुक होने के साथ-साथ धनवान, आदरणीय, और खुशहाल होंगे। आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर होगा तथा आप परम्परा और मूल्यों का आदर करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंतर्दशा :- शुक्र - शुक्र
(07/12/2041 - 08/04/2045)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 07/12/2041 को प्रारंभ होकर 07/12/2061 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 07/12/2041 को प्रारंभ होकर 08/04/2045 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। शुक्र विवाह, प्रेम और रति का कारक है। शुक्र शुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 10वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके घर में सुख-शांति का वातावरण रहेगा। मित्रों से संबंध बेहतर होंगे। माता से मधुर संबंध रहेंगे। वाहन सुख रहेगा, जायदाद भी प्राप्त कर सकते हैं। धर्म में रुचि होगी। स्वयं को सफल महसूस करेंगे और संतुष्ट रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटियों को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली रोटी गाय को खिलाएं।

अंतर्दशा :- शुक्र - सूर्य
(08/04/2045 - 08/04/2046)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 07/12/2041 को प्रारंभ होकर 07/12/2061 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 08/04/2045 को प्रारंभ होकर 08/04/2046 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है और एक शक्तिशाली ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर से दूर कहीं भटक सकते हैं। उदर या हृदय रोग हो सकता है। सावधानी और बचाव आवश्यक हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। प्रतिदिन सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

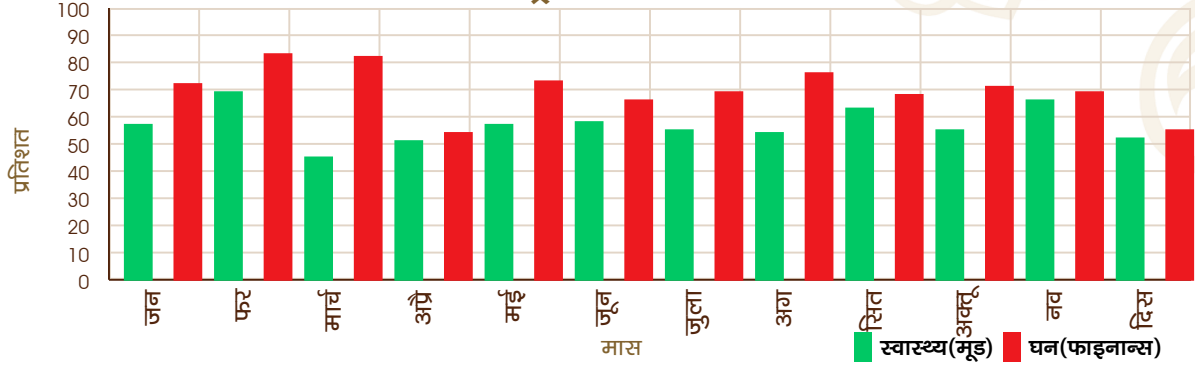
एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रुचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते हैं।

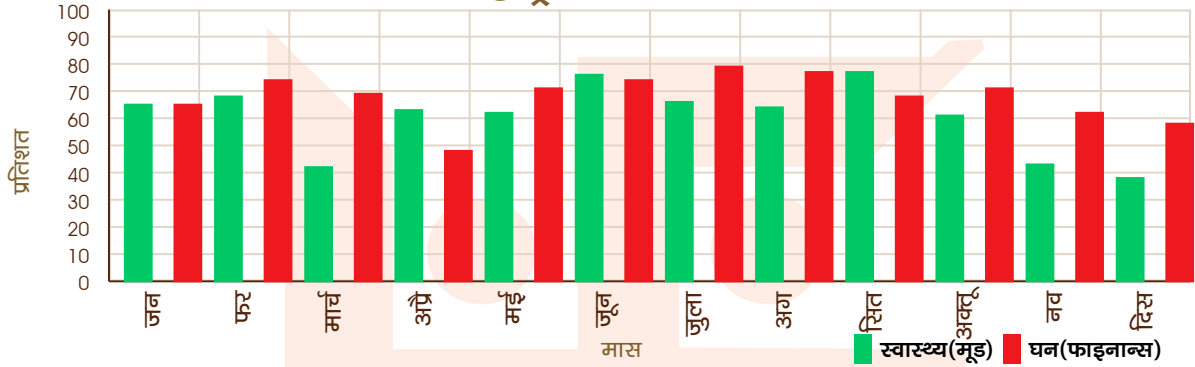
अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापकम के अनुसार हैं। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	निकृष्ट	50-65	श्रेष्ठ
20-35	नेष्ट	65-80	उत्तम
35-50	सामान्य	80-100	अत्युत्तम

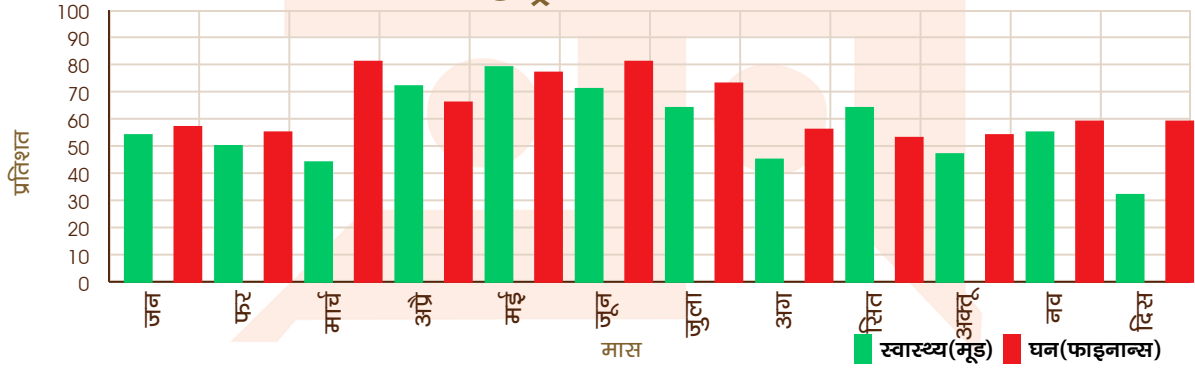
एस्ट्रोग्राफ - 2026



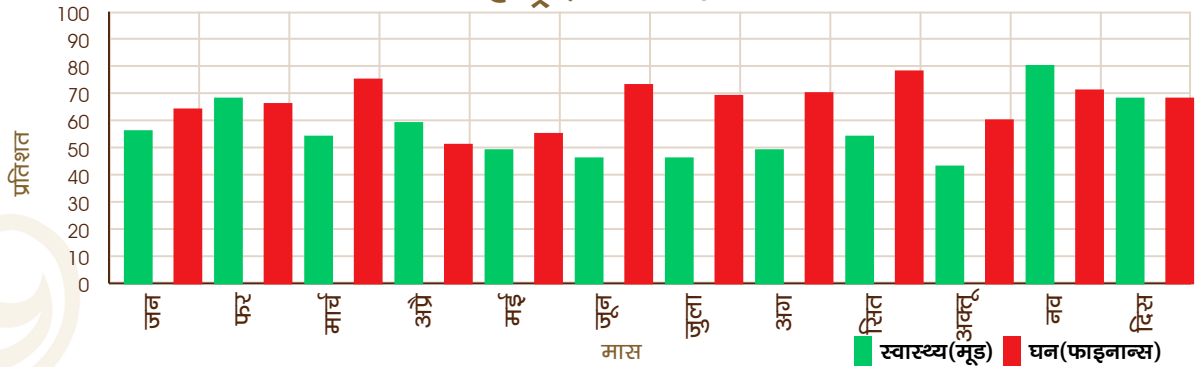
एस्ट्रोग्राफ - 2027



एस्ट्रोग्राफ - 2028



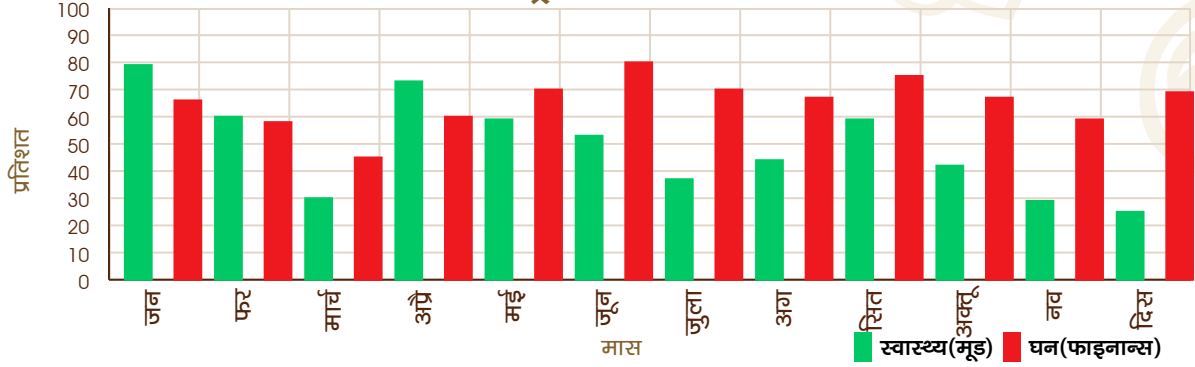
एस्ट्रोग्राफ - 2029



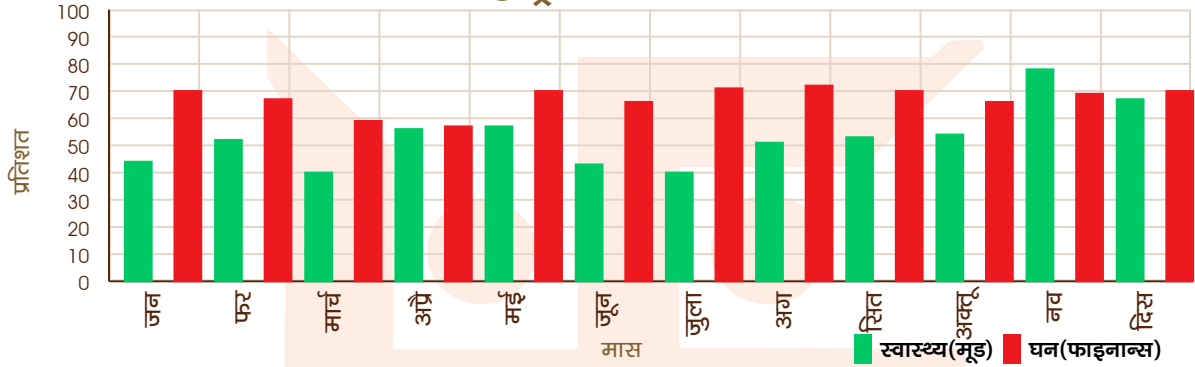
FUTUREPOINT
Astro Solutions



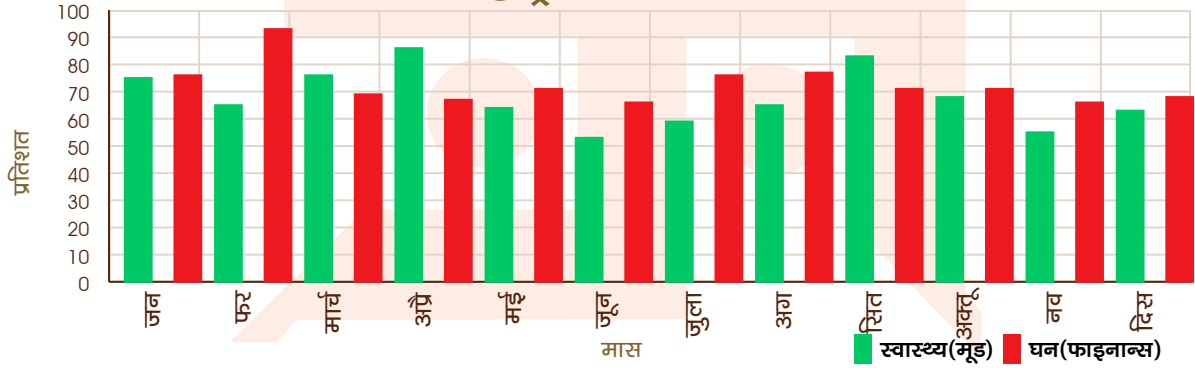
एस्ट्रोग्राफ - 2030



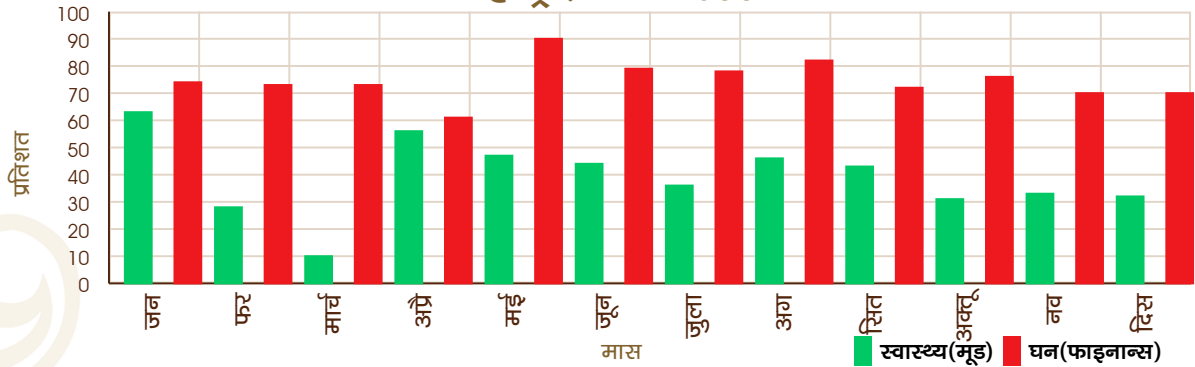
एस्ट्रोग्राफ - 2031



एस्ट्रोग्राफ - 2032



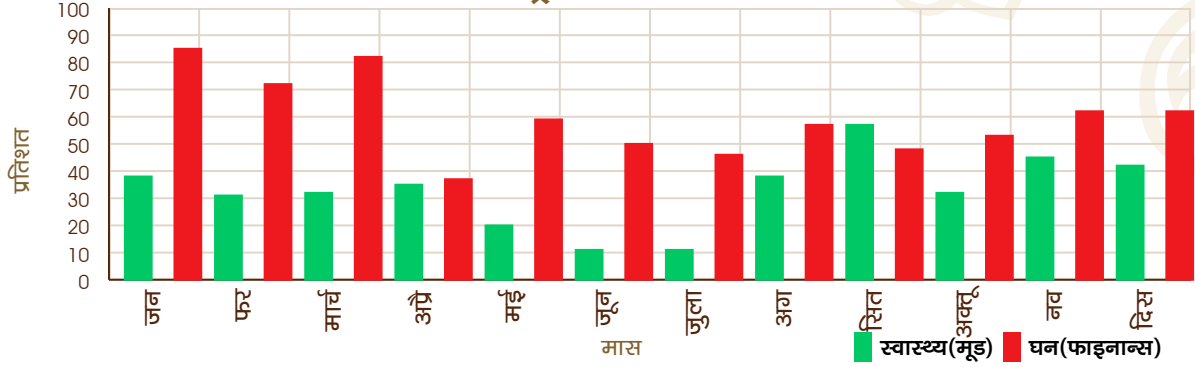
एस्ट्रोग्राफ - 2033



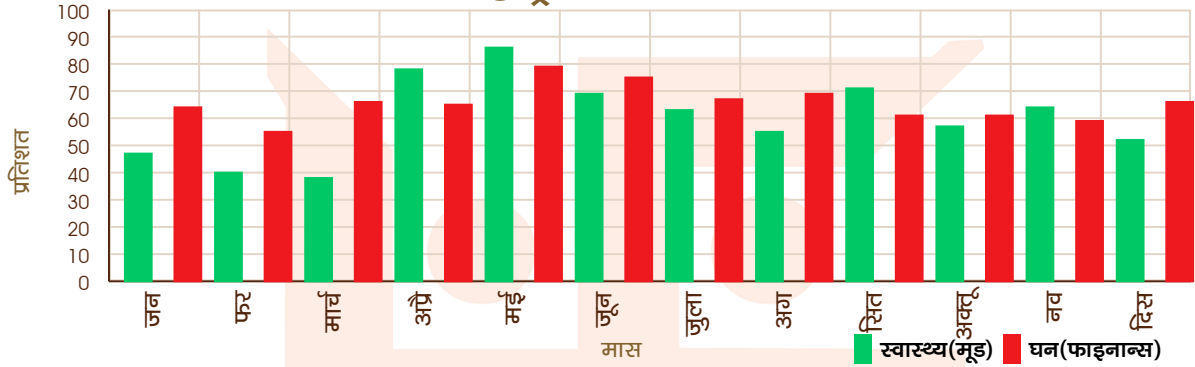
FUTUREPOINT
Astro Solutions



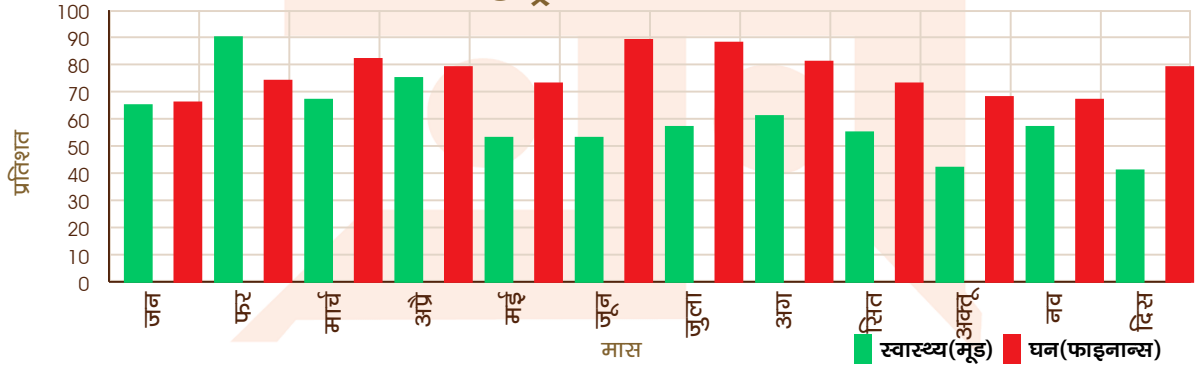
एस्ट्रोग्राफ - 2034



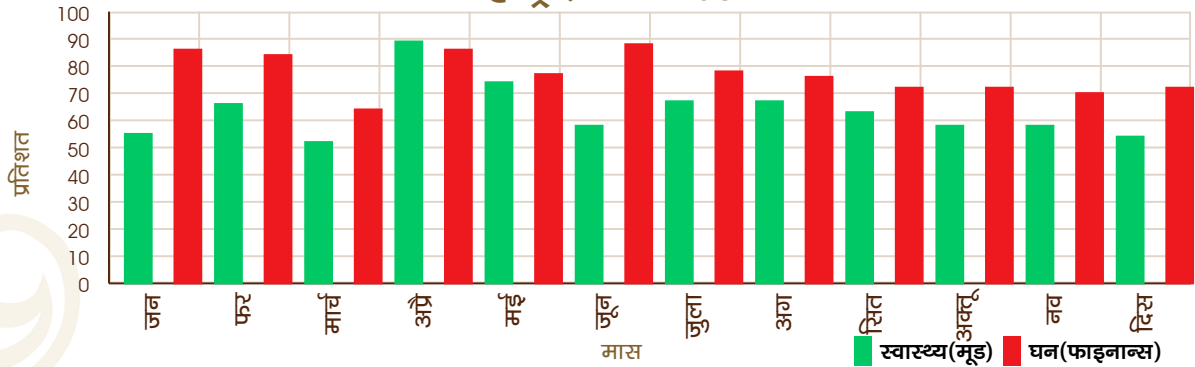
एस्ट्रोग्राफ - 2035



एस्ट्रोग्राफ - 2036



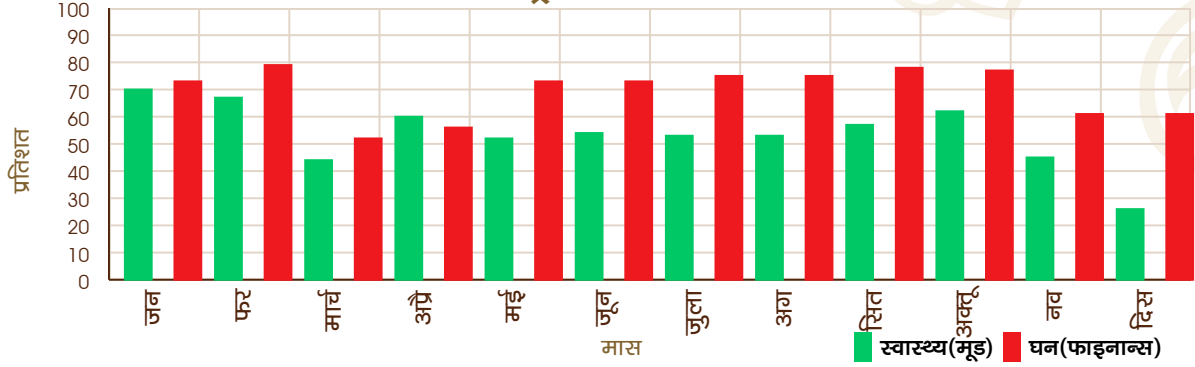
एस्ट्रोग्राफ - 2037



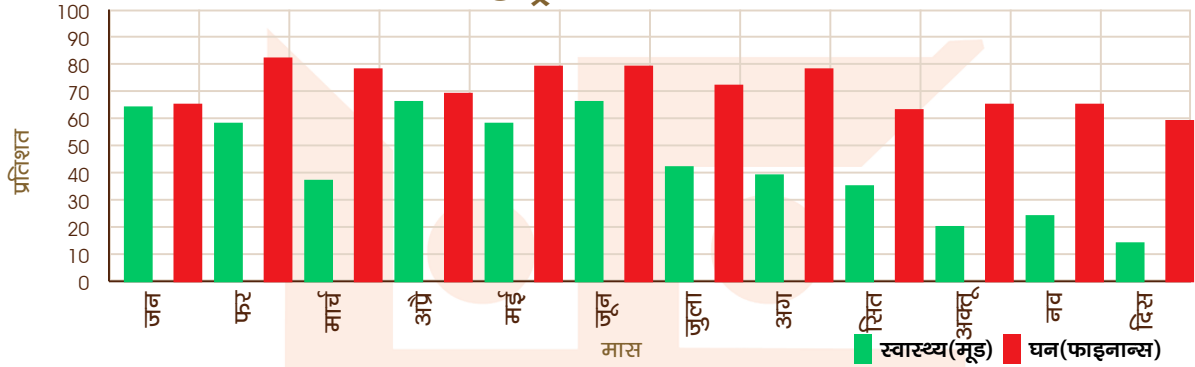
FUTUREPOINT
Astro Solutions



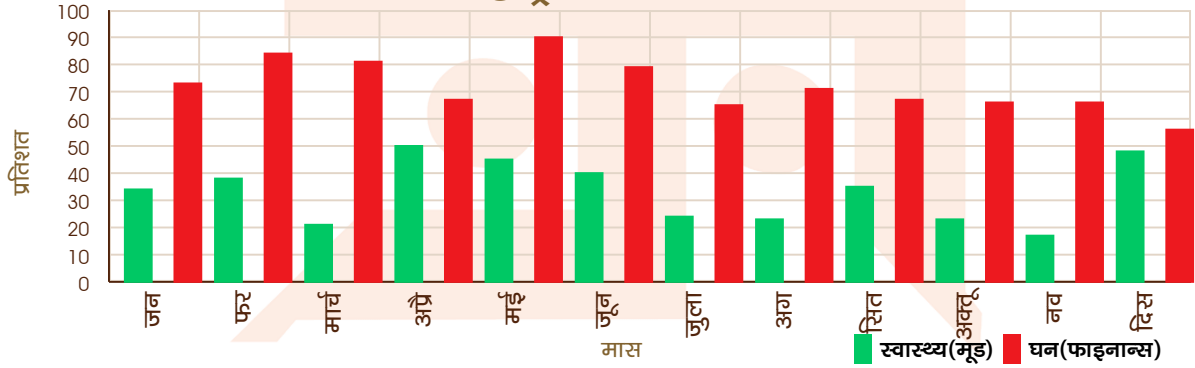
एस्ट्रोग्राफ - 2038



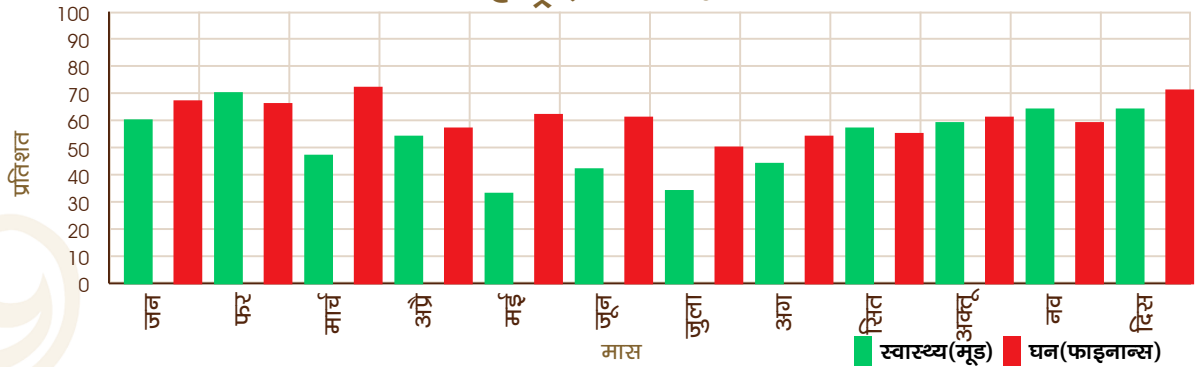
एस्ट्रोग्राफ - 2039



एस्ट्रोग्राफ - 2040



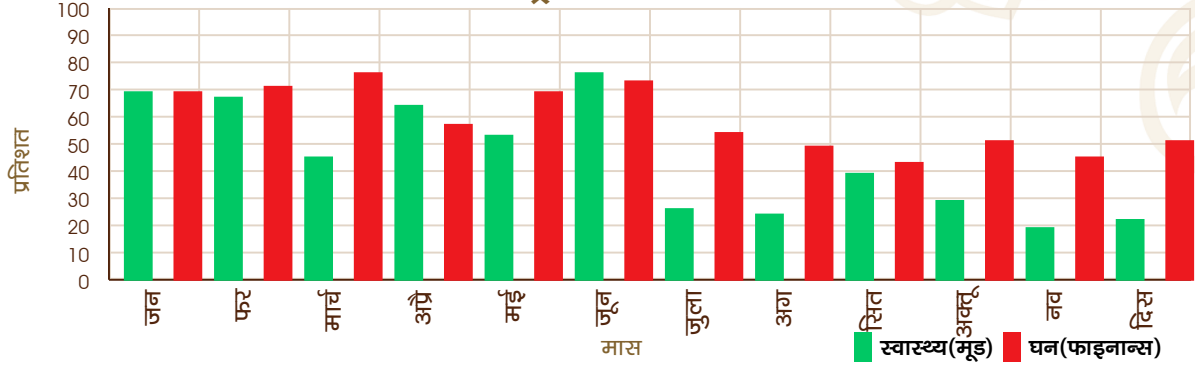
एस्ट्रोग्राफ - 2041



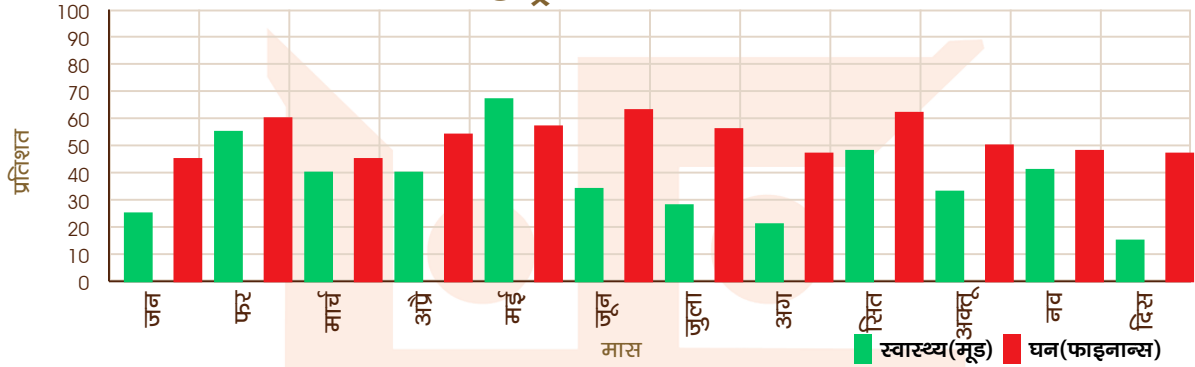
FUTUREPOINT
Astro Solutions



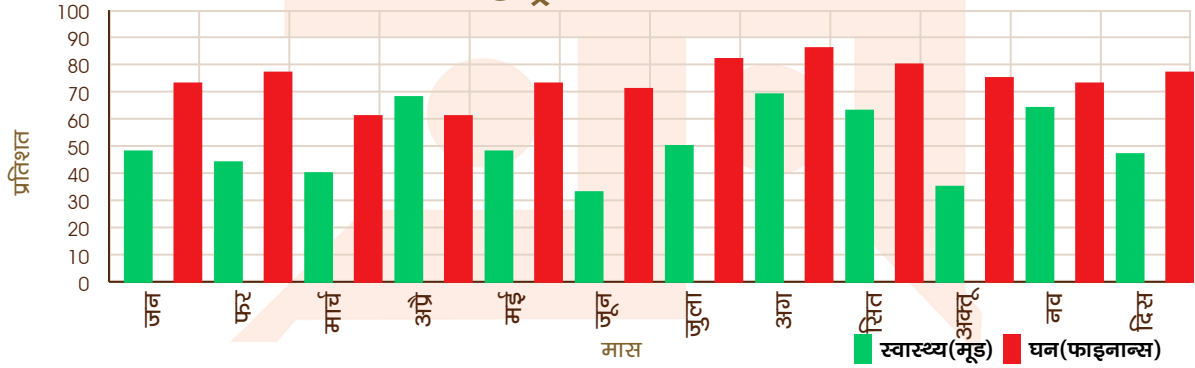
एस्ट्रोग्राफ - 2042



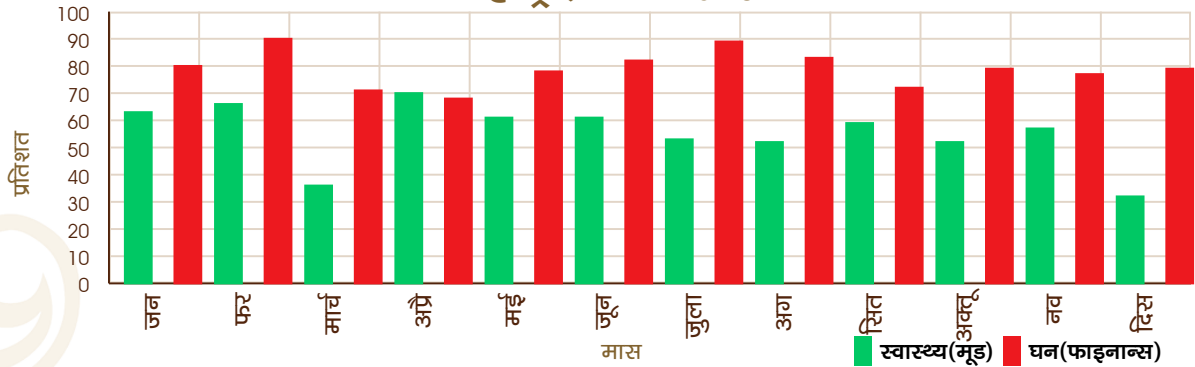
एस्ट्रोग्राफ - 2043



एस्ट्रोग्राफ - 2044



एस्ट्रोग्राफ - 2045



FUTUREPOINT
Astro Solutions



योग

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि ।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक् ।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ ॥

॥ सारावली ॥ अ.14/श्लोक 1, 6 ॥

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है ।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र,सूर्य

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्त्विक प्रवृत्ति वाले होंगे ।

राजकुलोत्पन्न राजयोग

स्वोच्चत्रिकोणगृहगैर्बलसंयुतैश्च
त्रयाद्यैर्नृपो भवति भूपतिवंशजातः ।

॥ सारावली ॥ अ. 35/श्लोक 2 ॥

यदि जन्म के समय में तीन या उससे अधिक ग्रह अपने उच्च में, मूलत्रिकोण तथा स्वराशि में स्थित हों तो ऐसा व्यक्ति राजकुल में उत्पन्न होकर राजा होता है ।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,राहु,केतु

योग की संभावना : 27 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको समाज में श्रेष्ठ मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। अपने परिवार या कुल में आप श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली माने जाएंगे। अपने पारिवारिक प्रतिष्ठा की वृद्धि करेंगे। आप सफल होंगे ।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः ॥
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम् ।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिदुःखी ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 14, 17 ॥

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है ।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

अमलयोग

चन्द्राव्योमन्यमलाहवयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।

क्षमेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।

॥ फलदीपिका ॥ अ. 6/श्लोक 19-20 ॥

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

छत्रयोग

भावैः सौम्युतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः

स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।

सुसंसारसौभाग्यसन्तानलक्ष्मी

निवासो यशस्वी सुभाषी मनीषी।

अमात्यो महीशस्य पूज्यो धनाढ्यः

स्फुरतीक्ष्णबुद्धिर्भवेच्छत्रयोगे ॥

॥ फलदीपिका ॥ अ. 4/श्लोक 44, 49 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव में शुभग्रह हों या शुभ ग्रह से पंचम भाव निरीक्षित हो तथा पंचमेश अस्त न हो और वह स्वराशि या उच्चराशि में स्थित होकर उत्तम स्थान में बैठा हो तो छत्रयोग बनता है।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य

योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सौभाग्यशाली, पुत्रवान, धनवान, यशस्वी, बुद्धिमान, प्रखर वक्ता, तेज बुद्धिवाले और राजसुख से युक्त राजा के मंत्री होंगे। आप राजसरकार से सम्मानित होंगे। आपको पंचम भाव से संबन्धित सभी सुख प्राप्त होंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



भूप योग

तुङ्गव्योमचरे तपःस्थलगते भूपः शुभालोकिते ।

॥ जातकपारिजात ॥ अ. 14/श्लोक 73 ॥

यदि अपनी उच्च राशि में नवम राशि गत कोई ग्रह हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक भूप होता है ।

योग कारक ग्रह : राहु,केतु

योग की संभावना : 288 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप राजकीय सुखों से युक्त होंगे ।

पृथ्वीपति योग

पत्न्यौ कुटुम्बस्य तृतीयराशौ स्थिते यदा पुंग्रहसौम्यदृष्टे ।

शुभ स्थिते खेचरनायके स्यात्स्वतुङ्गगे सर्वजनावनीशः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 3/श्लोक 17 ॥

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव का स्वामी तीसरे शुभ ग्रह तथा पुरुष ग्रह (सूर्य, मंगल, गुरु) से दृष्ट हो और शुभग्रह की राशि में या अपनी उच्च राशि में हो तो जातक पृथ्वी का राजा होता है ।

योग कारक ग्रह : मंगल,शुक्र

योग की संभावना : 72 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कई देशों में सेवा करने वाले राष्ट्राध्यक्ष, राजदूत और उच्चस्तरीय राज्याधिकारी होंगे ।

युद्ध कुशल एवं कलह प्रवीण योग

धैर्यान्वितो विक्रमराशिनाथसंयुक्तराश्यंशपतौ यदंशे ।

तदंशनाथे स्वगृहादिवर्गे युद्धे विदग्धः कलहप्रवीणः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-33 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश जिसकी राशि अंश में है, वह ग्रह अपने राश्यादि वर्ग में हो तो जातक धैर्यवान, युद्ध में चतुर और कलह करने में निपुण होता है ।

योग कारक ग्रह : बुध,सूर्य

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप धैर्यधारण करने वाले, युद्ध में चतुर और कलह प्रिय प्राणी होंगे । ऐसा प्रतीत होता है ।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सात्त्विक बुद्धि योग

शौर्याधिपे सौम्यान्विते सात्त्विकबुद्धियुक्तः ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-40

यदि जन्मकुंडली में तृतीयेश बुध से युक्त हो तो जातक सात्त्विक बुद्धि का होता है ।

योग कारक ग्रह : बुध

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आप सात्त्विक बुद्धि के प्राणी होंगे, ऐसा प्रतीत होता है ।

कंठरोग योग

पापे तृतीये गलरोगमत्र वदन्ति मांघादियुते विशेषात् ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-47 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तीसरे भाव में पाप ग्रह हो विशेषतः मांघंशादि युक्त हो तो कंठरोग होता है ।

योग कारक ग्रह : राहु

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है । फलस्वरूप आपको कंठ रोग होगा । ऐसा प्रतीत होता है ।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्ध्वरोगमत्र ।

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-49 ॥

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है ।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि,केतु,बुध

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा । ऐसा प्रतीत होता है ।

निष्कपट योग

हृदये शुभसंयुक्ते स्वोच्चमित्रगृहान्विते ।

शुभग्रहाणां क्षेत्रे वा निष्कापट्यं विनिर्दिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.4/श्लो.-143 ॥

यदि जन्मपत्रिका में चतुर्थ स्थान में शुभ ग्रह अपने उच्च या मित्र के भवन में हो



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अथवा शुभ ग्रह की राशि में हो तो जातक निष्कपट होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 9 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप निष्कपट प्राणी होंगी, ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।

वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ. 5/श्लो.-35 ॥

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, मंगल

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे ।

अक्लेशजातं मरणं नराणाम् ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः

सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्यराश्यंशतः ।

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो



FUTUREPOINT
Astro Solutions



मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

स्वर्गनिवास योग

भृगुसुतः स्वर्गसम्प्रापयेत्प्राणिनः ।

सम्बन्धाद्व्ययनायकास्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः ॥

॥ फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23 ॥

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में शुक्र स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में शुक्र हो या द्वादश स्थान के स्वामी शुक्र से संबंध स्थापित करता हो तो जातक स्वर्ग में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत स्वर्ग में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ॥

॥ सर्वार्थचिन्तामणि ॥ अ.-6/श्लो.-14 ॥

यदि जन्मकुंडली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : मंगल, शुक्र

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

विकलांग योग

चन्द्रक्षेत्रे यदा भौमो जायते मनुजः सदा ।

रक्तपित्तेन हीनाङ्गो नानाव्याधिसमन्वितः ॥

॥ मानसागरी ॥ अ.4/अरि.-57 ॥

यदि जन्मकुंडली में चन्द्र के क्षेत्र में मंगल स्थित हो तो जातक रक्त-पित्त के विकार



FUTUREPOINT
Astro Solutions



से हीन अद्य और नाना प्रकार की व्याधियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल

योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप रक्त-पित्त दोष से दुखी तथा विकलांग होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

काहल योग- प्रथम विधि

“अन्योन्यकेन्द्रग्रहगौ गुरुबन्धुनाथौ-
लग्नाधिपे बलयुते यदि काहलः स्यात्।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 10 ॥

जिस जातक की पत्रिका में गुरु और चतुर्थेश परस्पर केन्द्र में हों, और लग्नेश बली हो तो काहल योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र, गुरु, मंगल

योग की संभावना : 48 में 1

आपकी पत्रिका के अनुसार काहल योग के प्रथम विधि के अनुसार पत्रिका में काहल योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप तेजस्वी, साहसी, मूर्ख सेना के बल से युक्त, ग्राम पति, मुखिया या ग्राम प्रधान होंगे।

मत्स्य योग

“लग्नधर्मगते पापे पञ्चमे सदसद्युते,
चतुरस्रं गते पापे योगोऽयं मत्स्यसंज्ञकः॥”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 21 ॥

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से नवम भाव में पापग्रह हो, पंचम भाव में शुभग्रह और पापग्रह दोनों हों, चौथे अथवा आठवें भाव में पापग्रह हों तो “मत्स्य” योग होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, केतु

योग की संभावना : 36 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्ण रूपेण “मत्स्य” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप ज्योतिष शास्त्र में निपुण ज्योतिषी, दयावान, गुणवान, बुद्धिमान, शक्तिशाली, रूपवान(सुन्दर), यशस्वी, विद्वान एवं तपस्वी होंगे

पारिजात योग

“सपारिजातद्युचरः सुखानि।”

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिसकी पत्रिका के “पारिजात” भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख

की प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : शुक्र, राहु

योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “पारिजात” वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

उत्तमवर्ग योग

‘‘नीरोगतामुत्तमवर्गयातः।’’

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ॥

जिस जातक की पत्रिका के “उत्तमवर्ग” भाग में ग्रह हों तो वह प्राणी सभी प्रकार से निरोग रहता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य, मंगल, शनि

योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह “उत्तमवर्ग” में स्थित है। फलस्वरूप आप सभी प्रकार से निरोग रहेंगे।

केमद्रुम योग

‘‘चेत्त्वित्तव्ययगाः भवन्ति न खगाः केमद्रुमः स्यात्तदा।

प्राचीनैर्मुनिभिः स्मृताः श्रुतिमिताः योगाः शशाङ्कोद्भवाः।।’’

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 43 ॥

यदि जन्मपत्रिका में चन्द्र से द्वितीय अथवा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हों तो “केमद्रुम” योग का सृजन होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र

योग की संभावना : 32 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “केमद्रुम” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप धन(अर्थ), पुत्र, पत्नी, भाई से हीन, नौकरी पेशा वाले (दास) एवं परदेश में निवास करेंगे।

वासि योग

‘‘व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।’’

॥ बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ॥

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो “वासि” योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : मंगल, शुक्र, सूर्य

योग की संभावना : 3 में 1



FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण “वासि” योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com